

नमः सुगतये तुभ्यं शोभना गतिमीयुषे । नमस्तेऽतीन्द्रियज्ञानसुखायानिन्द्रियात्मने ॥६०॥
 कायबन्धननिर्मादाद् अकायाय नमोऽस्तु ते । नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामधियोगिने ॥६१॥
 श्रवेदाय नमस्तुभ्यम् अकषायाय ते नमः । नमः परमयोगीन्द्र वन्दिताङ्घ्रिद्वयाय ते ॥६२॥
 नमः परमविज्ञान नमः परमसंयम । नमः परमदृग्दृष्टपरमार्थाय तायिने^१ ॥६३॥
 नमस्तुभ्यमलेश्याय^२ शुद्धलेश्याशकस्पृशे । नमो भव्येतरावस्थाव्यतीताय विमोक्षिणे ॥६४॥
^३सञ्ज्ञयसञ्ज्ञितद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने । नमस्ते वीतसञ्ज्ञाय^४ नमः क्षायिकदृष्टये ॥६५॥
 अनाहाराय तृप्ताय नमः परमभाजुषे । व्यतीताशेषदोषाय भवाब्धेः पारमायुषे^५ ॥६६॥
 अजराय नमस्तुभ्य नमस्ते स्तादजन्मने । अमृत्यवे नमस्तुभ्यम् अचलायाक्षरात्मने^६ ॥६७॥
 अलमास्ता गुणस्तोत्रम् अनन्तास्तावका गुणा । त्वा नामस्मृतिमात्रेण पर्युपासिसिषामहे^७ ॥६८॥
 प्रसिद्धाष्ट^८ सहस्रेद्वलक्षणं त्वा गिरा पतिम् । नाम्नामष्टसहस्रेण^९ तोष्टुमोऽभीष्टसिद्धये ॥६९॥

और आपके समस्त राग आदि दोष नष्ट हो गये हैं इसलिये आपको नमस्कार हो ॥८९॥ आप मोक्ष रूपी उत्तम गतिको प्राप्त होनेवाले हैं इसलिये सुगति है अतः आपको नमस्कार हो, आप अतीन्द्रियज्ञान और सुखसे सहित हैं तथा इन्द्रियोसे रहित अथवा इन्द्रियोके अगोचर हैं इसलिए आपको नमस्कार हो ॥९०॥ आप शरीररूपी बन्धनके नष्ट हो जानेसे अकाय कहलाते हैं इसलिये आपको नमस्कार हो, आप योगरहित हैं और योगियो अर्थात् मुनियोमें सबसे उत्कृष्ट हैं इसलिये आपको नमस्कार हो ॥९१॥ आप वेदरहित हैं, कषायरहित हैं, और बड़े बड़े योगिराज भी आपके चरणयुगलकी वन्दना करते हैं इसलिये आपको नमस्कार हो ॥९२॥ हे परमविज्ञान, अर्थात् उत्कृष्ट-केवलज्ञानको धारण करनेवाले, आपको नमस्कार हो, हे परम संयम, अर्थात् उत्कृष्ट-यथाख्यात चारित्रको धारण करनेवाले, आपको नमस्कार हो । हे भगवन्, आपने उत्कृष्ट केवल-दर्शनके द्वारा परमार्थको देख लिया है तथा आप सबकी रक्षा करनेवाले हैं इसलिये आपको नमस्कार हो ॥९३॥ आप यद्यपि लेश्याओसे रहित हैं तथापि उपचारसे शुद्ध-शुक्ललेश्याके अशोका स्पर्श करनेवाले हैं, भव्य तथा अभव्य दोनों ही अवस्थाओसे रहित हैं और मोक्ष-रूप हैं इसलिये आपको नमस्कार हो ॥९४॥ आप सञ्ज्ञी और असञ्ज्ञी दोनों अवस्थाओसे रहित निर्मल आत्माको धारण करनेवाले हैं, आपकी आहार, भय, मैथुन और परिग्रह ये चारो सञ्ज्ञाएँ नष्ट हो गई हैं तथा क्षायिक सम्यग्दर्शनको धारण कर रहे हैं इसलिये आपको नमस्कार हो ॥९५॥ आप आहार रहित होकर भी सदा तृप्त रहते हैं, परम दीप्तिको प्राप्त हैं, आपके समस्त दोष नष्ट हो गये हैं और आप ससाररूपी समुद्रके पारको प्राप्त हुए हैं इसलिये आपको नमस्कार हो ॥९६॥ आप बुढ़ापारहित हैं, जन्मरहित हैं, मृत्युरहित हैं अचलरूप हैं और अविनाशी हैं इसलिये आपको नमस्कार हो ॥९७॥ हे भगवन्, आपके गुणोका स्तवन दूर रहे, क्योंकि आपके अनन्त गुण हैं उन सबका स्तवन होना कठिन है इसलिये केवल आपके नामोका स्मरण करके ही हमलोग आपकी उपासना करना चाहते हैं ॥९८॥ आपके देदीप्यमान एक हजार आठ लक्षण अतिशय प्रसिद्ध हैं और आप समस्त वाणियोके स्वामी हैं इसलिये हम लोग अपनी अभीष्ट सिद्धिके लिये एक हजार आठ नामोसे आपकी स्तुति करते हैं ॥ ९९ ॥ आप अनन्तचतुष्टयरूप अन्तरङ्गलक्ष्मी

१ पालकाय । २ शुक्ललेश्या मुक्त्वा इतरपञ्चलेश्यारहिताय । ३ सञ्ज्ञा सञ्ज्ञि- ल० ।
 ४ विशेषेण प्राप्तसञ्ज्ञानाय । ५ -मीयुषे -ल० । ६ अविनश्वरस्वरूपाय । ७ उपामन कर्तु-
 मिच्छाम । ८ अष्टोत्तरसहस्र । ९ अष्टोत्तरसहस्रेण । १० स्तुतिं कुर्म ।

श्रीमान् स्वयम्भूवृषभः^१ शम्भवः^२ शम्भुरात्मभूः । स्वयंप्रभः^३ प्रभुभोक्ता विश्वभूरपुनर्भवः ॥१००॥
 विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षरः । विश्वविद् विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनन्तरः ॥१०१॥
 विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः । विश्वव्यापी विधिवेधा शाश्वतो विश्वतोमुखः ॥१०२॥

और अष्ट प्रातिहार्यरूप बहिरङ्ग लक्ष्मीसे सहित है इसलिये श्रीमान् १ कहलाते हैं, आप अपने आप उत्पन्न हुए हैं—किसी गुरुके उपदेशकी सहायताके बिना अपने आपही सवुद्ध हुए हैं इसलिये स्वयम्भू २ कहलाते हैं, आप वृष अर्थात् धर्मसे सुशोभित हैं इसलिये वृषभ ३ कहलाते हैं, आपके स्वयं अनन्त सुखकी प्राप्ति हुई है तथा आपके द्वारा ससारके अन्य अनेक प्राणियोंको सुख प्राप्त हुआ है इसलिये शम्भव ४ कहलाते हैं, आप परमानन्दरूप सुखके देनेवाले हैं इसलिये शम्भु ५ कहलाते हैं, आपने यह उत्कृष्ट अवस्था अपने ही द्वारा प्राप्त की है अथवा योगीश्वर अपनी आत्मामे ही आपका साक्षात्कार कर सकते हैं इसलिये आप आत्मभू ६ कहलाते हैं, आप अपने आपही प्रकाशमान होते हैं इसलिये स्वयंप्रभ ७ है, आप समर्थ अथवा सबके स्वामी हैं इसलिये प्रभु ८ है, अनन्त-आत्मोत्थ सुखका अनुभव करनेवाले हैं इसलिये भोक्ता है ९, केवलज्ञानकी अपेक्षा सब जगह व्याप्त है अथवा ध्यानादिके द्वारा सब जगह प्रत्यक्षरूपसे प्रकट होते हैं इसलिये विश्वभू १० है, अब आप पुनः ससारमे आकर जन्म धारण नह। करेंगे इसलिये अपुनर्भव ११ है ॥१००॥ ससारके समस्त पदार्थ आपकी आत्मामे प्रतिबिम्बित हो रहे हैं इसलिये आप विश्वात्मा १२ कहलाते हैं, आप समस्त लोकके स्वामी हैं इसलिये विश्वलोकेश १३ कहलाते हैं, आपके ज्ञानदर्शनरूपी नेत्र ससारमे सभी ओर अप्रतिहत हैं इसलिये आप विश्वतश्चक्षु १४ कहलाते हैं, अविनाशी हैं इसलिये अक्षर १५ कहे जाते हैं, समस्त पदार्थोंको जानते हैं इसलिये विश्वविद् १६ कहलाते हैं, समस्त विद्याओके स्वामी हैं इसलिये विश्वविद्येश १७ कहे जाते हैं, समस्त पदार्थोंकी उत्पत्तिके कारण हैं अर्थात् उपदेश देनेवाले हैं इसलिये विश्वयोनि १८ कहलाते हैं, आपके स्वरूपका कभी नाश नहीं होता इसलिये अनन्तर १९ कहे जाते हैं ॥१०१॥ समस्त पदार्थोंको देखनेवाले हैं इसलिये विश्वदृश्वा २० है, केवलज्ञानकी अपेक्षा सब जगह व्याप्त है अथवा सब जीवोंको ससारसे पार करनेमे समर्थ है अथवा परमोत्कृष्ट विभूतिसे सहित हैं इसलिये विभु २१ है, ससारी जीवोंका उद्धार कर उन्हें मोक्षस्थानमे धारण करनेवाले हैं—पहुँचानेवाले हैं अथवा सब जीवोंका पोषण करनेवाले हैं अथवा मोक्षमार्गकी सृष्टि करनेवाले हैं इसलिये धाता २२ कहलाते हैं, समस्त जगत्के ईश्वर हैं इसलिये विश्वेश २३ कहलाते हैं, सब पदार्थोंको देखनेवाले हैं अथवा सबके हित सन्मार्गका उपदेश देनेके कारण सब जीवोंके नेत्रोंके समान हैं इसलिये विश्वविलोचन २४ कहे जाते हैं, ससारके समस्त पदार्थोंको जाननेके कारण आपका ज्ञान सब जगह व्याप्त है इसलिये आप विश्वव्यापी २५ कहलाते हैं । आप समीचीन मोक्षमार्गका विधान करनेसे विधि २६ कहलाते हैं । धर्मरूप जगत्की सृष्टि करनेवाले हैं इसलिये वेधा २७ कहलाते हैं, सदा विद्यमान रहते हैं इसलिये शाश्वत २८ कहे जाते हैं, समवसरण सभामे आपके मुख चारों दिशाओमे दिखते हैं अथवा आप विश्वतोमुख अर्थात् जलकी तरह पापरूपी पकको

१ स्वयमात्मना भवतीति । २ वृषेण धर्मेण भवतीति । ३ श सुखे भवतीति । ४ स्वय-
 प्रकाश । ५ कारणम् ।

विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिजिनेश्वरः । विश्वदृग्विश्वभूतेशो विश्वज्योतिरनीश्वरः ॥१०३॥
जिनो जिष्णुरमेयात्मा विश्वरीशो जगत्पतिः । अनन्तजिदचिन्त्यात्मा भव्यबन्धुरबन्धनः ॥१०४॥
युगादिपुरुषो ब्रह्मा पञ्चब्रह्ममयः शिवः । परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः ॥१०५॥
स्वयं ज्योतिरजोऽजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः । मोहारिविजयी जेता धर्मचक्री दयाध्वजः ॥१०६॥

दूर करनेवाले, स्वच्छ तथा तृष्णाको नष्ट करनेवाले हैं इसलिये विश्वतोमुख २९ कहे जाते हैं ॥१०२॥ आपने कर्मभूमिकी व्यवस्था करते समय लोगोकी आजीविकाके लिये असि-मपी आदि सभी कर्मों-कार्योंका उपदेश दिया था इसलिये आप विश्वकर्मा ३० कहलाते हैं, आप जगत्मे सबसे ज्येष्ठ अर्थात् श्रेष्ठ हैं इसलिये जगज्ज्येष्ठ ३१ कहे जाते हैं, आप अनन्त गुणमय हैं अथवा समस्त पदार्थोंके आकार आपके ज्ञानमे प्रतिफलित हो रहे हैं इसलिये आप विश्वमूर्ति ३२ हैं, कर्मरूप शत्रुओको जीतनेवाले सम्यग्दृष्टि आदि जीवोंके आप ईश्वर हैं इसलिये जिनेश्वर ३३ कहलाते हैं, आप ससारके समस्त पदार्थोंका सामान्यावलोकन करते हैं इसलिये विश्वदृक् ३४ कहलाते हैं, समस्त प्राणियोंके ईश्वर हैं इसलिये विश्वभूतेश ३५ कहे जाते हैं, आपकी केवलज्ञानरूपी ज्योति अखिल ससारमे व्याप्त है इसलिये आप विश्वज्योति ३६ कहलाते हैं, आप सबके स्वामी हैं किन्तु आपका कोई भी स्वामी नहीं है इसलिये आप अनीश्वर ३७ कहे जाते हैं ॥१०३॥ आपने घांतिया-कर्मरूपी शत्रुओंको जीत लिया है इससे आप जिन ३८ कहलाते हैं, कर्मरूपी शत्रुओको जीतना ही आपका शील अर्थात् स्वभाव है इसलिये आप जिष्णु ३९ कहे जाते हैं, आपकी आत्मा को अर्थात् आपके अनन्त गुणोंको कोई नहीं जान सका है इसलिये आप अमेयात्मा ४० हैं, पृथिवीके ईश्वर हैं इसलिये विश्वरीश ४१ कहलाते हैं, तीनों लोकोके स्वामी हैं इसलिये जगत्पति ४२ कहे जाते हैं, अनन्त ससार अथवा मिथ्यादर्शनको जीत लेनेके कारण आप अनन्तजित् ४३ कहलाते हैं, आपकी आत्माका चिन्तवन मनसे भी नहीं किया जा सकता इसलिये आप अचिन्त्यात्मा ४४ हैं, भव्य जीवोंके हितैषी हैं इसलिये भव्यबन्धु ४५ कहलाते हैं, कर्मबन्धनसे रहित होनेके कारण अबन्धन ४६ कहलाते हैं ॥१०४॥ आप इस कर्मभूमिरूपी युगके प्रारम्भमे उत्पन्न हुए हैं इसलिये युगादिपुरुष ४७ कहलाते हैं, केवलज्ञान आदि गुण आपमे बृहण अर्थात् वृद्धिको प्राप्त हो रहे हैं इसलिये आप ब्रह्मा ४८ कहे जाते हैं, आप पञ्च परमेष्ठीस्वरूप हैं इसलिये पञ्च ब्रह्ममय ४९ कहलाते हैं, शिव अर्थात् मोक्ष अथवा आनन्दरूप होनेसे शिव ५० कहे जाते हैं, आप सब जीवोंका पालन अथवा समस्तज्ञान आदि गुणोंको पूर्ण करनेवाले हैं इसलिये पर ५१ कहलाते हैं, ससारमे सबसे श्रेष्ठ हैं इसलिये परतर ५२ कहलाते हैं, इन्द्रियोंके द्वारा आपका आकार नहीं जाना जा सकता अथवा नामकर्मका क्षय हो जानेसे आपमे बहुत शीघ्र सूक्ष्मत्व गुण प्रकट होने वाला है इसलिये आपको सूक्ष्म ५३ कहते हैं, परमपदमे स्थित हैं इसलिये परमेष्ठी ५४ कहलाते हैं और सदा एकसे ही विद्यमान रहते हैं इसलिये सनातन ५५ कहे जाते हैं ॥१०५॥ आप स्वयं प्रकाशमान हैं इसलिये स्वयंज्योति ५६ कहलाते हैं, ससारमे उत्पन्न नहीं होते इसलिये अज ५७ कहे जाते हैं जन्म रहित हैं इसलिये अजन्मा ५८ कहलाते हैं, आप ब्रह्म अर्थात् वेद (द्वादशांग शास्त्र) की उत्पत्तिके कारण हैं इसलिये ब्रह्मयोनि ५९ कहलाते हैं,

१ विश्वरि मही तस्या ईश । २ ससारजित् । ३ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप । ४ आत्मयोनि ।
५ मोहारिविजयी -द० । ६ जयशील ।

प्रशान्तरिरनन्तात्मा योगी योगीश्वरार्चितः । ब्रह्मविद् ब्रह्म'तत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्या'विद्यतोऽश्वरः ॥१०७॥
 शुद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशामनः । 'सिद्ध-सिद्धान्तविद्धचेयः सिद्धसाध्यो जगद्धितः ॥१०८॥
 सहिष्णुरच्युतोऽनन्तः 'प्रभविष्णुर्भवोद्भवः' । 'प्रभूष्णुरजरोऽजयो' भ्राजिष्णु'र्धोऽश्वरोऽव्ययः ॥१०९॥

चौरासी लाख योनियोमे उत्पन्न नही होते इसलिये अयोनिज ६० कहे जाते हैं, मोहरूपी शत्रुको जीतने वाले हैं इससे मोहारिविजयी ६१ कहलाते हैं, सर्वदा सर्वोत्कृष्ट रूपसे विद्यमान रहते हैं इसलिये जेता ६२ कहे जाते हैं, आप धर्मचक्रको प्रवर्तित करते हैं इसलिये धर्मचक्री ६३ कहलाते हैं, दया ही आपकी ध्वजा है इसलिये आप दयाध्वज ६४ कहे जाते हैं ॥१०६॥ आपके समस्त कर्मरूप शत्रु शान्त हो गये हैं इसलिये आप प्रशान्तरि ६५ कहलाते हैं, आपकी आत्माका अन्त कोई नहीं पा सका है इसलिये आप अनन्तात्मा ६६ हैं, आप योग अर्थात् केवलज्ञान आदि अपूर्व अर्थोंकी प्राप्तिसे सहित हैं अथवा ध्यानमें युक्त हैं अथवा मोक्षप्राप्तिके उपाय भूत सम्यग्दर्शनादि उपायोसे सुशोभित हैं इसलिये योगी ६७ कहलाते हैं, योगियो अर्थात् मुनियोके अधीश्वर आपकी पूजा करते हैं इसलिये योगीश्वरार्चित ६८ है, ब्रह्म अर्थात् शुद्ध आत्मस्वरूपको जानते हैं इसलिये ब्रह्मविद् ६९ कहलाते हैं, ब्रह्मचर्य अथवा आत्मारूपी तत्त्वके रहस्यको जाननेवाले हैं इसलिये ब्रह्मतत्त्वज्ञ ७० कहे जाते हैं, पूर्व ब्रह्माके द्वारा कहे हुए समस्त तत्त्व अथवा केवलज्ञानरूपी आत्मविद्याको जानते हैं इसलिये ब्रह्मोद्यावित् ७१ कहे जाते हैं, मोक्ष प्राप्त करनेके लिये यत्न करनेवाले सयमी मुनियोके स्वामी हैं इसलिये यतीश्वर ७२ कहलाते हैं ॥१०७॥ आप रागद्वेषादि भाव कर्ममल कलक से रहित होनेके कारण शुद्ध ७३ हैं, ससारके समस्त पदार्थोंको जाननेवाली केवलज्ञानरूपी बुद्धिसे सयुक्त होने कारण बुद्ध ७४ कहलाते हैं, आपकी आत्मा सदा शुद्ध ज्ञानसे जगमगाती रहती है इसलिये आप प्रबुद्धात्मा ७५ हैं, आपके सब प्रयोजन सिद्ध हो चुके हैं इसलिये आप सिद्धार्थ ७६ कहलाते हैं, आपका शासन सिद्ध अर्थात् प्रसिद्ध हो चुका है इसलिये आप सिद्धशासन ७७ हैं, आप अपने अनन्तगुणोंको प्राप्त कर चुके हैं अथवा बहुत शीघ्र मोक्ष अवस्था प्राप्त करने वाले हैं इसलिये सिद्ध ७८ कहलाते हैं, आप द्वादशाङ्गरूप सिद्धान्तको जाननेवाले हैं इसलिये सिद्धान्तविद् ७९ कहे जाते हैं, सभी लोग आपका ध्यान करते हैं इसलिये आप ध्येय ८० कहलाते हैं, आपके समस्त साध्य अर्थात् करने योग्य कार्य सिद्ध हो चुके हैं इसलिये आप सिद्धसाध्य ८१ कहलाते हैं, आप जगत्के समस्त जीवोंका हित करनेवाले हैं इससे जगद्धित ८२ कहे जाते हैं ॥१०८॥ सहनशील हैं अर्थात् क्षमा गुणके भण्डार हैं इसलिये सहिष्णु ८३ कहलाते हैं, ज्ञानादि गुणोंसे कभी च्युत नहीं होते इसलिये अच्युत ८४ कहे जाते हैं, विनाश रहित हैं, इसलिये अनन्त ८५ कहलाते हैं, प्रभावशील हैं इसलिये प्रभविष्णु ८६ कहे जाते हैं, ससारमें आपका जन्म सबसे उत्कृष्ट माना गया है इसलिये आप भवोद्भव ८७ कहलाते हैं, आप शक्तिशाली हैं इसलिये प्रभूष्णु ८८ कहे जाते हैं, वृद्धावस्थासे रहित होनेके कारण अजर ८९ हैं, आप कभी जीर्ण नहीं होते इसलिये अजर्य ९० हैं, ज्ञानादि गुणोंसे अतिशय देदीप्यमान हो रहे हैं इसलिये भ्राजिष्णु ९१ हैं, केवलज्ञानरूपी बुद्धिके ईश्वर हैं इसलिये धीश्वर ९२ कहलाते

१ मोक्षस्वरूपवित् । २ ब्रह्मणा वेदितव्यमावेत्तीति । अथवा ब्रह्मणो वदन वचनम् । ३ सिद्ध-सिद्धान्त - ब०, प०, द० । ४ प्रकर्षेण भवनशील । ५ भवात् ससारात् उत् उद्गतो भव उत्पत्तिर्यस्य स । अथवा अनन्तज्ञानादिभवनरूपेण भवतीति । ६ प्रभवतीति । ७ न जीर्यत इति । ८ प्रकाशनशील ।

विभावसु^१रसम्भूष्णुः स्वयम्भूष्णुः पुरातनः । परमात्मा परं ज्योतिस्त्रिजगत्परमेश्वरः ॥११०॥

इति श्रीमदादिशतम् ।

दिव्यभाषापतिर्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः । पूतात्मा परमज्योतिः धर्माध्यक्षो दमीश्वरः^३ ॥१११॥

श्रीपतिर्भगवानर्हंशरजाः विरजाः शुचिः । तीर्थकृत् केवलीज्ञानः पूजार्हः^४ स्नातकोऽमलः ॥११२॥

अनन्तदीप्तिर्ज्ञानात्मा स्वयम्बुद्धः प्रजापतिः । मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः ॥११३॥

है, कभी आपका व्यय अर्थात् नाश नहीं होता इसलिये आप अव्यय ९३ कहलाते हैं ॥१०९॥ आप कर्मरूपी ई धनको जलानेके लिये अग्निके समान है अथवा मोहरूपी अन्धकारको नष्ट करनेके लिये सूर्यके समान है, इसलिये विभावसु ९४ कहलाते हैं, आप ससारमे पुन उत्पन्न नहीं होगे इसलिये असम्भूष्णु ९५ कहे जाते है, आप अपने आप ही इस अवस्थाको प्राप्त हुए है इसलिये स्वयम्भूष्णु ९६ है, प्राचीन है -द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा अनादिसिद्ध है इसलिये पुरातन ९७ कहलाते हैं, आपकी आत्मा अतिशय उत्कृष्ट है इसलिये आप परमात्मा ९८ कहे जाते हैं, उत्कृष्ट ज्योति स्वरूप है इसलिये परज्योति ९९ कहलाते हैं, तीनों लोकोके ईश्वर है, इसलिए त्रिजगत्परमेश्वर १०० कहे जाते हैं ॥११०॥

आप दिव्य-ध्वनिके पति है इसलिये आपको दिव्यभाषापति १०१ कहते हैं, अत्यन्त सुन्दर है इसलिये आप दिव्य १०२ कहलाते हैं, आपके वचन अतिशय पवित्र है इसलिये आप पूतवाक् १०३ कहे जाते हैं, आपका शासन पवित्र होनेसे आप पूतशासन १०४ कहलाते हैं, आपकी आत्मा पवित्र है इसलिये आप पूतात्मा १०५ कहे जाते हैं, उत्कृष्ट ज्योति स्वरूप है इसलिये परमज्योति १०६ कहलाते हैं, धर्मके अध्यक्ष है इसलिये धर्माध्यक्ष १०७ कहे जाते हैं, इन्द्रियोको जीतनेवालोमे श्रेष्ठ है इसलिये दमीश्वर १०८ कहलाते हैं ॥१११॥ मोक्षरूपी लक्ष्मीके अधिपति है इसलिये श्रीपति १०९ कहलाते हैं, अष्टप्राति-हार्यरूप उत्तम ऐश्वर्यसे सहित है इसलिये भगवान् ११० कहे जाते हैं, सबके द्वारा पूज्य है इसलिये अर्हन् १११ कहलाते हैं, कर्मरूपी धूलिसे रहित है इसलिये अरजा ११२ कहे जाते हैं, आपके द्वारा भव्य जीवोके कर्ममल दूर होते हैं अथवा आप ज्ञानावरण तथा दर्शनावरण कर्मसे रहित है इसलिये विरजा ११३ कहलाते हैं, अतिशय पवित्र है इसलिये शुचि ११४ कहे जाते हैं, धर्मरूप तीर्थके करनेवाले है इसलिये तीर्थकृत् ११५ कहलाते हैं, केवलज्ञानसे सहित होनेके कारण केवली ११६ कहे जाते हैं, अनन्त सामर्थ्यसे युक्त होनेके कारण ईशान ११७ कहलाते हैं, पूजाके योग्य होनेसे पूजार्ह ११८ है, घातिया कर्मोंके नष्ट होने अथवा पूर्णज्ञान होनेसे आप स्नातक ११९ कहलाते हैं, आपका शरीर मल रहित है अथवा आत्मा राग द्वेष आदि दोषोसे वर्जित है इसलिये आप अमल १२० कहे जाते हैं ॥११२॥ आप केवलज्ञानरूपी अनन्त दीप्ति अथवा शरीरकी अपरिमित प्रभाके धारक है इसलिये अनन्तदीप्ति १२१ कहलाते हैं, आपकी आत्मा ज्ञानस्वरूप है इसलिये आप ज्ञानात्मा १२२ है, आप स्वयं ससारसे विरक्त होकर मोक्षमार्गमे प्रवृत्त हुए हैं अथवा आपने गुरुओंकी सहायताके विना ही समस्त पदार्थोंका ज्ञान प्राप्त किया है इसलिये स्वयंबुद्ध १२३ कहलाते हैं, समस्त जनसमूहके रक्षक होनेसे आप प्रजापति १२४ है, कर्मरूप बन्धनसे रहित है इसलिये मुक्त १२५ कहलाते हैं, अनन्तबलसे सम्पन्न होनेके कारण शक्त १२६ कहे जाते

१ विभा प्रभा अस्मिन् वसतीति । दहन इति वा । २ महेश्वर -३०, प० । ३ त्रिगिष्ठ-
गानो । ४ समाप्तवेद, सम्पूर्णज्ञानीत्यर्थ ।

निरञ्जनो जगज्ज्योतिर्निर्वृतोवितरनामयः । अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थः^१ 'स्थानुरक्षयः ॥११४॥
 अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता^२ न्यायशास्त्रकृत् । शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत् ॥११५॥
 वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतुर्वृषायुधः । 'वृषो वृषपतिर्भर्ता वृषभाङ्को वृषोद्भवः ॥११६॥
 हिरण्यनाभिर्भूतात्मा^३ भूतभृद् भूतभावनः^४ । प्रभवो विभवो भास्वान् भवो^५ भावो^६ भवान्तकः ॥११७॥

हैं, बाधा-उपसर्ग आदिसे रहित है इसलिये निराबाध १२७ कहलाते हैं, शरीर अथवा मायासे रहित होनेके कारण निष्कल १२८ कहे जाते हैं और तीनो लोकोके ईश्वर होनेसे भुवनेश्वर १२९ कहलाते हैं ॥११३॥ आप कर्मरूपी अजनसे रहित है इसलिये निरञ्जन १३० कहलाते हैं, जगत्को प्रकाशित करनेवाले हैं इसलिये जगज्ज्योति १३१ कहे जाते हैं, आपके वचन सार्थक है अथवा पूर्वापर विरोधसे रहित है इसलिये आप निरुक्तोक्ति १३२ कहलाते हैं, रोग रहित होनेसे अनामय १३३ है, आपकी स्थिति अचल है इसलिये अचल-स्थिति १३४ कहलाते हैं, आप कभी क्षोभको प्राप्त नहीं होते इसलिये अक्षोभ्य १३५ है, नित्य होनेसे कूटस्थ १३६ है, गमनागमनसे रहित होनेके कारण स्थानु १३७ है और क्षय रहित होनेके कारण अक्षय १३८ है ॥११४॥ आप तीनो लोकोमे सबसे श्रेष्ठ हैं इसलिये अग्रणी १३९ कहलाते हैं, भव्यजीवोके समूहको मोक्ष प्राप्त करानेवाले हैं इसलिये ग्रामणी १४० हैं, सब जीवोको हितके मार्गमे प्राप्त कराते हैं इसलिये नेता १४१ है, द्वाद-शांशरूप शास्त्रकी रचना करनेवाले हैं इसलिये प्रणेता १४२ है, न्यायशास्त्रका उपदेश देनेवाले हैं इसलिये न्यायशास्त्रकृत् १४३ कहे जाते हैं, हितका उपदेश देनेके कारण शास्ता १४४ कहलाते हैं, उत्तम क्षमा आदि धर्मोके स्वामी है इसलिये धर्मपति १४५ कहे जाते हैं, धर्मसे सहित हैं इसलिये धर्म्य १४६ कहलाते हैं, आपकी आत्मा धर्मरूप अथवा धर्मसे उपलक्षित है इसलिये आप धर्मात्मा १४७ कहलाते हैं और आप धर्मरूपी तीर्थके करनेवाले हैं इसलिये धर्मतीर्थकृत् १४८ कहे जाते हैं ॥११५॥ आपकी ध्वजामे वृष अर्थात् बैलका चिह्न है अथवा धर्म ही आपकी ध्वजा है अथवा आप वृषभ चिह्नसे अंकित है इसलिये वृषध्वज १४९ कहलाते हैं आप वृष अर्थात् धर्मके पति हैं इसलिये वृषाधीश १५० कहे जाते हैं, आप धर्मकी पताका स्वरूप है इसलिये लोग आपको वृषकेतु १५१ कहते हैं, आपने कर्मरूप शत्रुओको नष्ट करनेके लिये धर्मरूप शस्त्र धारण किये हैं इसलिये आप वृषायुध १५२ कहे जाते हैं, आप धर्मरूप हैं इसलिये वृष १५३ कहलाते हैं, धर्मके स्वामी हैं इसलिये वृषपति १५४ कहे जाते हैं, समस्त जीवोका भरण-पोषण करते हैं इसलिये भर्ता १५५ कहलाते हैं, वृषभ अर्थात् बैलके चिह्नसे सहित है इसलिये वृषभाङ्क १५६ कहे जाते हैं और पूर्व पर्यायोमे उत्तम धर्म करनेसे ही आप तीर्थ कर होकर उत्पन्न हुए हैं इसलिये आप वृषोद्भव १५७ कहलाते हैं ॥११६॥ सुन्दर नाभि होनेसे आप हिरण्यनाभि १५८ कहलाते हैं, आपकी आत्मा सत्यरूप है इसलिये आप भूतात्मा १५९ कहे जाते हैं, आप समस्त जीवोकी रक्षा करते हैं इसलिये पण्डितजन आपको भूतभृत् १६० कहते हैं, आपकी भावनाएँ बहुत ही उत्तम हैं, इसलिये आप भूतभावन १६१ कहलाते हैं, आप मोक्षप्राप्तिके कारण हैं अथवा आपका जन्म

१ प्रामाणिकवचन । २ -निरामय. -प०, व० । ३ नित्य । ४ स्थानशील । ५ ग्रामं समुदाय नयतीति । ६ युक्त्यागम । ७ धर्मवर्षणात् । ८ विद्यमानस्वरूप । ९ प्राणिगणपोषक । १० भूत मद्गल भावयतीति । ११ भवतीति । १२ भावयतीति भाव ।

हिरण्यगर्भः^१ श्रीगर्भः प्रभूतविभवोऽभवः । स्वयंप्रभः प्रभूतात्मा भूतनाथो जगत्पतिः ॥११८॥

सर्वादिः सर्वदिक् सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः । सर्वात्मा सर्वलोकेशः सर्ववित् सर्वलोकजित् ॥११९॥

सुगतिः सुश्रुतः^२ सुश्रुत् सुवाक् सूरिर्वहुश्रुतः । विश्रुतो विश्वतः पादो^३ विश्वशीर्षः शुचिश्रवाः^४ ॥१२०॥

प्रशसनीय है इसलिये प्रभव १६२ कहे जाते हैं, ससारसे रहित होनेके कारण आप विभव १६३ कहलाते हैं, देदीप्यमान होनेसे भास्वान् १६४ है उत्पाद व्यय तथा ध्रौव्यरूपसे सदा उत्पन्न होते रहते हैं इसलिये भव १६५ कहलाते हैं अपने चैतन्यरूप भावमे लीन रहते हैं इसलिये भाव १६६ कहे जाते हैं और ससारभ्रमणका अन्त करनेवाले हैं इसलिये भवातक १६७ कहलाते हैं ॥११७॥ जब आप गर्भमे थे तभी पृथिवी सुवर्णमय हो गई थी और आकाशसे देवने भी सुवर्णकी वृष्टि की थी इसलिये आप हिरण्यगर्भ १६८ कहे जाते हैं, आपके अन्तरङ्गमे अनन्तचतुष्टयरूपी लक्ष्मी देदीप्यमान हो रही है इसलिये आप श्रीगर्भ १६९ कहलाते हैं, आपका विभव बड़ा भारी है इसलिये आप प्रभूतविभव १७० कहे जाते हैं, जन्म रहित होनेके कारण अभव १७१ कहलाते हैं, स्वयं समर्थ होनेसे स्वयंप्रभु १७२ कहे जाते हैं, केवलज्ञानकी अपेक्षा आपकी आत्मा सर्वत्र व्याप्त है इसलिये आप प्रभूतात्मा १७३ है, समस्त जीवोके स्वामी होनेसे भूतनाथ १७४ है, और तीनों लोकोके स्वामी होनेसे जगत्प्रभु १७५ है ॥११८॥ सबसे मुख्य होनेके कारण सर्वादि १७६ है, सर्व पदार्थोके देखनेके कारण सर्वदृक् १७७ है, सबका हित करनेवाले है, इसलिये सार्व १७८ कहलाते हैं, सब पदार्थोको जानते हैं, इसलिये सर्वज्ञ १७९ कहे जाते हैं, आपका दर्शन अर्थात् सम्यक्त्व अथवा केवलदर्शन पूर्ण अवस्थाको प्राप्त हुआ है इसलिये आप सर्वदर्शन १८० कहलाते हैं, आप सबका भला चाहते हैं—सबको अपने समान समझते हैं अथवा ससारके समस्त पदार्थ आपके आत्मामें प्रतिबिम्बित हो रहे हैं इसलिये आप सर्वात्मा १८१ कहे जाते हैं, सब लोकोके स्वामी हैं, इसलिये सर्वलोकेश १८२ कहलाते हैं, सब पदार्थोको जानते हैं, इसलिये सर्वविद् १८३ है, और समस्त लोकोको जीतनेवाले हैं—सबसे बढकर है, इसलिये सर्वलोकजित् १८४ कहलाते हैं ॥११९॥ आपकी मोक्षरूपी गति अतिशय सुन्दर है अथवा आपका ज्ञान बहुत ही उत्तम है इसलिये आप सुगति १८५ कहलाते हैं, अतिशय प्रसिद्ध है अथवा उत्तम शास्त्रोको धारण करनेवाले है इसलिये सुश्रुत् १८६ कहे जाते हैं, सब जीवोकी प्रार्थनाएं सुनते हैं इसलिये सुश्रुत १८७ कहलाते हैं, आपके वचन बहुत ही उत्तम निकलते हैं इसलिये आप सुवाक् १८८ कहलाते हैं, सबके गुरु है अथवा समस्त विद्याओको प्राप्त है इसलिये सूरि १८९ कहे जाते हैं, बहुत शास्त्रोके पारगामी होनेसे बहुश्रुत १९० है, बहुत प्रसिद्ध है अथवा केवलज्ञान होनेके कारण आपका क्षायोपशमिक श्रुतज्ञान नष्ट हो गया है इसलिये आप विश्रुत १९१ कहलाते हैं, आपका सचार प्रत्येक विषयोमे होता है अथवा आपकी केवलज्ञानरूपी किरणे ससारमे सभी ओर फैली हुई हैं इसलिये आप विश्वत पाद १९२ कहलाते हैं, लोकके शिखरपर विराजमान है इसलिये विश्वशीर्ष १९३ कहे जाते हैं, और आपकी श्रवणशक्ति अत्यन्त पवित्र है इसलिये शुचिश्रवा १९४ कहलाते हैं ॥१२०॥

सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः^३ सहस्राक्षः^३ सहस्रपात्^४ । भूतभव्यभवद्भूता विश्वविद्यामहेश्वरः ॥१२१॥

इति दिव्यादिशतम् ।

स्थविष्ठः^५ स्थविरो^५ ज्येष्ठः प्रष्ठः^६ प्रेष्ठो^६ वरिष्ठधीः^७ स्थेष्ठो^८ गरिष्ठो^९ वहिष्ठः^{१०} श्रेष्ठोऽणिष्ठो^{११} गरिष्ठगो

^{१२}विश्वमुद्दिश्वसृष्ट विश्वेष्ट विश्वभुग्विश्वनाथकः । विश्वाशीविश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितान्तक ॥१२३॥

विभवो विभयो वीरो विशोको विजरो जरन्^{१४} । विरागो विरतोऽसृष्टगो विविन्तो वीतमत्सर ॥१२४॥

अनन्त सुखी होनेसे सहस्रशीर्ष १९५ कहलाते हैं, क्षेत्र अर्थात् आत्माको जाननेसे क्षेत्रज्ञ १९६ कहलाते हैं, अनन्त पदार्थोंको जानते हैं इसलिये सहस्राक्ष १९७ कहे जाते हैं अनन्त बलके धारक हैं इसलिये सहस्रपात् १९८ कहलाते हैं, भूत भविष्यन् और वर्तमान कालके स्वामी हैं इसलिये भूतभव्यभवद्भूता १९९ कहे जाते हैं, समस्त विद्याओंके प्रधान स्वामी हैं इसलिये विश्वविद्यामहेश्वर २०० कहलाते हैं ॥१२१॥ इति दिव्यादि शतम् ।

आप समीचीन गुणोंकी अपेक्षा अतिशय स्थूल है इसलिये स्थविष्ठ २०१ कहे जाते हैं, ज्ञानादि गुणोंके द्वारा वृद्ध है इसलिये स्थविर २०२ कहलाते हैं, तीनों लोकोंमें अतिशय प्रशस्त होनेके कारण ज्येष्ठ २०३ है, सबके अग्रगामी होनेके कारण प्रष्ठ २०४ कहलाते हैं, सबको अतिशय प्रिय है इसलिये प्रेष्ठ २०५ कहे जाते हैं आपकी बुद्धि अतिशय श्रेष्ठ है इसलिये वरिष्ठधी २०६ कहलाते हैं, अत्यन्त स्थिर अर्थात् नित्य है इसलिये स्थेष्ठ २०७ कहलाते हैं, अत्यन्त गुरु है इसलिये गरिष्ठ २०८ कहे जाते हैं, गुणोंकी अपेक्षा अनेक रूप धारण करने से बहिष्ठ २०९ कहलाते हैं अतिशय प्रशस्त है इसलिये श्रेष्ठ २१० है, अतिशय सूक्ष्म होनेके कारण अणिष्ठ २११ कहे जाते हैं और आपकी वाणी अतिशय गौरवसे पूर्ण है इसलिये आप गरिष्ठगी २१२ कहलाते हैं ॥१२२॥ चतुर्गतिरूप ससारको नष्ट करनेके कारण आप विश्वमुट् २१३ कहे जाते हैं, समस्त ससारकी व्यवस्था करनेवाले हैं इसलिये विश्वसृष्ट २१४ कहलाते हैं, सब लोकके ईश्वर हैं इसलिये विश्वेष्ट २१५ कहे जाते हैं समस्त ससारकी रक्षा करनेवाले हैं इसलिये विश्वभुक् २१६ कहलाते हैं, अखिल लोकके स्वामी हैं इसलिये विश्वनाथक २१७ कहे जाते हैं, समस्त ससारमें व्याप्त होकर रहते हैं इसलिये विश्वासी २१८ कहलाते हैं, विश्वरूप अर्थात् केवलज्ञान ही आपका स्वरूप है अथवा आपका आत्मा अनेकरूप है इसलिये आप विश्वरूपात्मा २१९ कहे जाते हैं, सबको जीतनेवाले हैं इसलिये विश्वजित् २२० कहे जाते हैं और अन्तक अर्थात् मृत्युको जीतनेवाले हैं इसलिये विजितान्तक २२१ कहलाते हैं ॥१२३॥ आपका ससार-भ्रमण नष्ट हो गया है इसलिये विभव २२२ कहलाते हैं, भय दूर हो गया है इसलिये विभय २२३ कहे जाते हैं, अनन्त बलशाली हैं इसलिये वीर २२४ कहलाते हैं, शोक रहित हैं इसलिये विशोक २२५ कहे जाते हैं, जरा अर्थात् बुढ़ापासे रहित है इसलिये विजर २२६ कहलाते हैं, जगत्के सब जीवोंमें प्राचीन हैं इसलिये जरन् २२७ कहे जाते हैं, राग रहित है इसलिये विराग २२८ कहलाते हैं, समस्त

१ अनन्तसुखी । २ आत्मज्ञ । ३ अनन्तदर्शी । ४ अनन्तवीर्य । ५ अतिशयेन स्थूल ।

६ वृद्ध । ७ अग्रगामी । ८ अतिशयेन प्रिय । ९ अतिशयेन वरबुद्धिः । १० अतिशयेन स्थिर ।

११ अतिशयेन गुरु । १२ अतिशयेन बहु । १३ अतिशयेनाणुः सूक्ष्म इत्यर्थः ।

१४ विश्वपालक । विश्वमुट्-ल० । १५ वृद्ध ।

विनेयजनताबन्धुविलीनाशेषकल्मषः । वियोगो योगविद्विद्वान् विधाता सुविधिः सुधीः ॥१२५॥
 क्षान्तिभाक् पृथिवीमूर्तिः शान्तिभाक् सलिलात्मकः । वायुमूर्तिरसद्गात्मा वह्निमूर्तिरधर्मधक् ॥१२६॥
 सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्रामपूजितः । ऋत्विग् यज्ञपतियज्यो यज्ञाङ्गममृत हविः ॥१२७॥
 व्योममूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः । सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्यमूर्तिर्महाप्रभः ॥१२८॥

पापोसे विरत हो चुके हैं इसलिये विरत २२९ कहे जाते हैं, परिग्रह रहित है इसलिये असग २३० कहलाते हैं, एकाकी अथवा पवित्र होनेसे विविक्त २३१ है और मात्सर्यसे रहित होनेके कारण वीतमत्सर २३२ है ॥१२४॥ आप अपने शिष्य जनोके हितैपी है इसलिये विनेयजनताबन्धु २३३ कहलाते हैं आपके समस्त पापकर्म विलीन-नष्ट हो गये हैं इसलिये विलीनाशेषकल्मष २३४ कहे जाते हैं, आप योग अर्थात् मन वचन कायके निमित्तसे होनेवाले आत्मप्रदेशपरिस्पन्दसे रहित है इसलिये वियोग २३५ कहलाते हैं, योग अर्थात् ध्यानके स्वरूपको जाननेवाले हैं इसलिये योगविद् २३६ कहे जाते हैं, समस्त पदार्थोको जानते हैं इसलिये विद्वान् २३७ कहलाते हैं, धर्मरूप सष्टिके कर्ता होनेसे विधाता २३८ कहे जाते हैं, आपका कार्य बहुत ही उत्तम है इसलिए सुविधि २३९ कहलाते हैं और आपकी बुद्धि उत्तम है इसलिये सुधी २४० कहे जाते हैं ॥१२५॥ उत्तम क्षमाको धारण करनेवाले हैं इसलिये क्षान्तिभाक् २४१ कहलाते हैं, पृथिवीके समान सहनशील हैं इसलिये पृथ्वीमूर्ति २४२ कहे जाते हैं, शान्तिके उपासक हैं इसलिये शान्तिभाक् २४३ कहलाते हैं, जलके समान शीतलता उत्पन्न करनेवाले हैं इसलिये सलिलात्मक २४४ कहे जाते हैं, वायुके समान परपदार्थके ससर्गसे रहित होनेके कारण वायुमूर्ति २४५ कहलाते हैं, परिग्रह रहित होनेके कारण असगात्मा २४६ कहे जाते हैं, अनिके समान कर्मरूपी ई धनको जलानेवाले हैं इसलिये वह्निमूर्ति २४७ है, और अधर्म-को जलानेवाले हैं इसलिये अधर्मधक् २४८ कहलाते हैं ॥१२६॥ कर्मरूपी सामग्रीका अच्छी तरह होम करनेसे सुयज्वा २४९ है, निज स्वभावका आराधन करनेसे यजमानात्मा २५० है, आत्मसुखरूप सागरमे अभिषेक करनेसे सुत्वा २५१ है, इन्द्रके द्वारा पूजित होनेके कारण सुत्रामपूजित २५२ है, ज्ञानरूपी यज्ञ करनेमे आचार्य कहलाते हैं इसलिये ऋत्विक् २५३ है, यज्ञके प्रधान अधिकारी होनेसे यज्ञपति २५४ कहलाते हैं । स्वयं यज्ञ-स्वरूप हैं इसलिये यज्ञ २५५ कहलाते हैं, यज्ञके अग होनेसे यज्ञाङ्ग २५६ कहलाते हैं, विषयतृष्णाको नष्ट करनेके कारण अमृत २५७ कहे जाते हैं, और आपने ज्ञानयज्ञमे अपनी ही अशुद्ध परिणतिको होम दिया है इसलिये आप हवि २५८ कहलाते हैं ॥१२७॥ आप आकाशके समान निर्मल अथवा केवलज्ञानकी अपेक्षा लोक-अलोकमे व्याप्त हैं इसलिये व्योममूर्ति २५९ है, रूप, रस, गन्ध और स्पर्शसे रहित होनेके कारण अमूर्तात्मा २६० है, कर्मरूप लेपसे रहित है इसलिये निर्लेप २६१ है, मलरहित है इसलिये निर्मल २६२ कहलाते हैं, सदा एक रूपसे विद्यमान रहते हैं इसलिये अचल २६३ कहे जाते हैं, चन्द्रमाके समान शान्त, सुन्दर अथवा प्रकाशमान रहते हैं इसलिये सोममूर्ति २६४ कहलाते हैं, आपकी आत्मा अतिशय सौम्य है इसलिये सुसौम्यात्मा २६५ कहे जाते हैं, सूर्यके समान तेजस्वी है इसलिये सूर्यमूर्ति २६६ कहलाते हैं और अतिशय प्रभाके धारक हैं इसलिये

१ क्षमाभाक् तत हेतुर्गर्भितमिदम् । एवमुत्तरत्रापि योग्यम् । २ शोभनहोता । ३ नुनोतीति सुत्वा, पुज् अभिषवणे । कृताभिषेक इत्यर्थः । ४ पूजक । ५ अमूर्तात्मिवान् ।

मन्त्रविन्मन्त्रकृन्मन्त्री मन्त्रमूर्तिरनन्तगः^१ । स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्^२ स्वन्तः^३ कृतान्तान्तः^४ कृतान्तकृत्^५ ॥१२६॥
 कृती कृतार्थ सत्कृत्यः कृतकृत्यः कृतक्रतुः । नित्यो मृत्युञ्जयोऽमृत्युरमृतात्माऽमृतोद्भवः^६ ॥१२७॥
 ब्रह्मनिष्ठः^७ परब्रह्म ब्रह्मात्मा ब्रह्मसंभवेः । महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेड् महाब्रह्मपदेश्वरः ॥१२८॥
 सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्मदमप्रभुः । प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा पुराणपुरुषोत्तमः ॥१२९॥

इति स्थविष्ठादिशतम् ।

महाप्रभ २६७ कहलाते हैं ॥१२८॥ मन्त्रके जाननेवाले हैं इसलिये मन्त्रवित् २६८ कहे जाते हैं, अनेक मन्त्रोंके करनेवाले हैं इसलिये मन्त्रकृत् २६९ कहलाते हैं, मन्त्रोंसे युक्त है इसलिये मन्त्री २७० कहलाते हैं, मन्त्ररूप है इसलिये मन्त्रमूर्ति २७१ कहे जाते हैं, अनन्त पदार्थोंको जानते हैं इसलिये अनन्तग २७२ कहलाते हैं, कर्मबन्धनसे रहित होनेके कारण स्वतन्त्र २७३ कहलाते हैं, शास्त्रोंके करनेवाले हैं इसलिये तन्त्रकृत् २७४ कहे जाते हैं, आपका अन्त करण उत्तम है इसलिये स्वन्त २७५ कहलाते हैं, आपने कृतान्त अर्थात् यमराज-मृत्युका अन्त कर दिया है इसलिये लोग आपको कृतान्तान्त २७६ कहते हैं और आप कृतान्त अर्थात् आगमकी रचना करनेवाले हैं इसलिये कृतान्त कृत् २७७ कहे जाते हैं ॥१२९॥ आप अत्यन्त कुशल अथवा पुण्यवान् हैं इसलिये कृती २७८ कहलाते हैं, आपने आत्माके सब पुरुषार्थ सिद्ध कर चुके हैं इसलिये कृतार्थ २७९ हैं, ससारके समस्त जीवोंके द्वारा सत्कार करनेके योग्य हैं इसलिये सत्कृत्य २८० हैं, समस्त कार्य कर चुके हैं इसलिये कृतकृत्य २८१ हैं, आप ज्ञान अथवा तपश्चरणरूपी यज्ञ कर चुके हैं इसलिये कृतक्रतु २८२ कहलाते हैं, सदा विद्यमान रहनेसे नित्य २८३ हैं, मृत्युको जीतनेसे मृत्युञ्जय २८४ है, मृत्युसे रहित होनेके कारण अमृत्यु २८५ हैं, आपका आत्मा अमृतके समान सदा शान्तिदायक है इसलिये अमृतात्मा २८६ है और अमृत अर्थात् मोक्षमे आपकी उत्कृष्ट उत्पत्ति होनेवाली है इसलिये आप अमृतोद्भव २८७ कहलाते हैं ॥१३०॥ आप सदा शुद्ध आत्मस्वरूपमें लीन रहते हैं इसलिये ब्रह्मनिष्ठ २८८ कहलाते हैं, उत्कृष्ट ब्रह्मरूप है इसलिए परब्रह्म २८९ कहे जाते हैं ब्रह्म अर्थात् ज्ञान अथवा ब्रह्मचर्य ही आपका स्वरूप है इसलिये आप ब्रह्मात्मा २९० कहलाते हैं, आपको स्वयं शुद्धात्मस्वरूपकी प्राप्ति हुई है तथा आपसे दूसरोंको होती है इसलिये आप ब्रह्मसंभव २९१ कहलाते हैं गणवर आदि महाब्रह्माओंके भी अधिपति है इसलिये महाब्रह्मपति २९२ कहे जाते हैं, आप केवलज्ञानके स्वामी हैं इसलिये ब्रह्मेड् २९३ कहलाते हैं, महाब्रह्मपद अर्थात् आर्हन्त्य और सिद्धत्व अवस्थाके ईश्वर है इसलिये महाब्रह्मपदेश्वर २९४ कहे जाते हैं ॥१३१॥ आप सदा प्रसन्न रहते हैं इसलिये सुप्रसन्न २९५ कहे जाते हैं, आपकी आत्मा कषायोंका अभाव हो जानेके कारण सदा प्रसन्न रहती है इसलिये लोग आपको प्रसन्नात्मा २९६ कहते हैं, आप केवलज्ञान, उत्तमक्षमा आदि धर्म और इन्द्रियनिग्रहरूप दमके स्वामी हैं इसलिये ज्ञानधर्मदमप्रभु २९७ कहे जाते हैं, आपकी आत्मा उत्कृष्ट शान्तिसे नहिता है इसलिये आप प्रशमात्मा २९८ कहलाते हैं, आपकी आत्मा कषायोंका अभाव हो जानेसे अतिशय शान्त हो चुकी है इसलिये आप प्रशान्तात्मा २९९ कहलाते हैं, और शलाका पुत्पोंमें सबसे उत्कृष्ट है इसलिये विद्वान् लोग आपको पुराणपुरुषोत्तम ३००

१ अनन्तज्ञानी । २ अनन्तर । ३ आगमकृत् । ४ सुखान्त । ५ यमान्तक ।
 ६ निश्चिन्तान्तर्ता । ७ अविनश्यरोत्पत्ति । ८ आत्मनिष्ठ । ९ ज्ञानेश्वरः ।

महाशोकध्वजोऽशोकः कः^१ स्रष्टा पद्मविष्टरः । पद्मेशः पद्मसम्भूतिः^२ पद्मनाभिरनुत्तरः^३ ॥१३३॥
 पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्यः^४ स्तुत्यः स्तुतीश्वरः । स्तवनाहो हृषीकेशो^५ जितजेयः^६ कृतक्रियः^७ ॥१३४॥
 गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः । गुणाकरो गुणाम्भोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः ॥१३५॥
 गुणादरी गुणोच्छेदी^८ निर्गुणः^९ पुण्यगीर्गुणः । शरण्यः पुण्यवाक्पूतो वरेण्यः पुण्यनायकः ॥१३६॥

कहते हैं ॥१३२॥ बड़ा भारी अशोकवृक्ष ही आपका चिह्न है इसलिये आप महाशोक-
 ध्वज ३०१ कहलाते हैं, शोकसे रहित होनेके कारण अशोक ३०२ कहलाते हैं, सबको
 सुख देनेवाले हैं इसलिये 'क' ३०३ कहलाते हैं, स्वर्ग और मोक्षके मार्गकी सृष्टि करते हैं
 इसलिये स्रष्टा ३०४ कहलाते हैं, आप कमलरूप आसन पर विराजमान हैं इसलिये पद्म
 विष्टर ३०५ कहलाते हैं, पद्मा अर्थात् लक्ष्मीके स्वामी हैं इसलिये पद्मेश ३०६ कहलाते
 हैं, विहारके समय देव लोग आपके चरणोंके नीचे कमलोकी रचना कर देते हैं इसलिये
 आप पद्मसम्भूति ३०७ कहे जाते हैं, आपकी नाभि कमलके समान है इसलिये लोग आपको
 पद्मनाभि ३०८ कहते हैं तथा आपसे श्रेष्ठ अन्य कोई नहीं है इसलिये आप अनुत्तर
 ३०९ कहलाते हैं, ॥१३३॥ हे भगवन्, आपका यह शरीर माताके पद्माकार गर्भा-
 शयमे उत्पन्न हुआ था इसलिये आप पद्मयोनि ३१० कहलाते हैं, धर्मरूप जगत्की
 उत्पत्तिके कारण होनेसे जगद्योनि ३११ है, भव्य जीव तपश्चरण आदिके द्वारा आपको
 ही प्राप्त करना चाहते हैं इसलिये आप इत्य ३१२ कहलाते हैं, इन्द्र आदि देवोंके द्वारा
 स्तुति करने योग्य है इसलिये स्तुत्य ३१३ कहलाते हैं स्तुतियोंके स्वामी होनेसे स्तुतीश्वर
 ३१४ कहे जाते हैं, स्तवन करनेके योग्य है इसलिये स्तवनाह ३१५ कहलाते हैं, इन्द्रियोंके
 ईश अर्थात् वश करनेवाले स्वामी हैं, इसलिए हृषीकेश ३१६ कहे जाते हैं, आपने जीतने
 योग्य समस्त मोहादि शत्रुओंको जीत लिया है इसलिये आप जितजेय ३१७ कहलाते हैं,
 और आप करने योग्य समस्त क्रियाएँ कर चुके हैं, इसलिये कृतक्रिय ३१८ कहे जाते
 हैं ॥१३४॥ आप बारह सभारूप गणके स्वामी होनेसे गणाधिप ३१९ कहलाते हैं,
 समस्त गणोंमें श्रेष्ठ होनेके कारण गणज्येष्ठ ३२० कहे जाते हैं, तीनों लोकोमें आप ही
 गणना करनेके योग्य हैं इसलिये गण्य ३२१ कहलाते हैं पवित्र हैं इसलिये पुण्य ३२२ हैं,
 समस्त सभामें स्थित जीवोंको कल्याणके मार्गमें आगे ले जानेवाले हैं इसलिये गणाग्रणी
 ३२३ कहलाते हैं, गुणोंकी खान हैं इसलिये गुणाकर ३२४ कहे जाते हैं, आप गुणोंके समूह
 हैं इसलिये गुणाम्भोधि ३२५ कहलाते हैं, आप गुणोंको जानते हैं इसलिये गुणज्ञ ३२६
 कहे जाते हैं और गुणोंके स्वामी हैं इसलिये गणधर आपको गुणनायक ३२७ कहते हैं
 ॥१३५॥ गुणोंका आदर करते हैं इसलिये गुणादरी ३२८ कहलाते हैं, सत्त्व, रज, तम
 अथवा काम, क्रोध आदि वैभाविक गुणोंको नष्ट करनेवाले हैं इसलिये आप गुणोच्छेदी
 ३२९ कहे जाते हैं, आप वैभाविक गुणोंसे रहित हैं इसलिये निर्गुण ३३० कहलाते हैं,
 पवित्र वाणीके धारक हैं इसलिये पुण्यगी ३३१ कहे जाते हैं, गुणोंसे युक्त हैं इसलिये गुण
 ३३२ कहलाते हैं, शरणमें आये हुए जीवोंकी रक्षा करनेवाले हैं इसलिये शरण्य ३३३ कहे

१ ब्रह्मा । २ पद्माना सम्भूतिर्यस्मात् स । सप्तपुर. पृष्ठतश्चेति प्रनिद्धे । ३ न विद्यते
 उत्तर श्रेष्ठो यस्मात् । ४ गम्य । ५ इन्द्रियस्वामी । स्ववशीकृतेन्द्रिय इत्यर्थः । ६ जेतुं योग्या
 रेषा, जिता जेया जेनासौ । ७ कृतकृत्य । ८ इन्द्रियच्छेदी । मौर्वी (व्यं) प्रपानपारदेन्द्रिय-
 नश्वत्त्वादिनग्न्यादिहरितादिषु गुण इत्यभिधानात् । ९ अप्रधान । आत्मनः सकामादन्य अप्रधान
 इत्यनं न विद्यत इति यावत् ।

अगण्यः पुण्यधीर्गुण्यः पुण्यकृत् पुण्यशासनः । धर्मरामो गुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः ॥१३७॥
 पापापेत्तो विपापात्मा विपाप्मा वीतकल्मषः । निर्द्वन्द्वो^१ निर्मदः शान्तो निर्मोहो निरुपद्रवः ॥१३८॥
 निर्निमेषो निराहारो निष्क्रियो निरुपप्लवः । निष्कलङ्को निरस्तैना निर्धूतागा^२ निरास्रवः ॥१३९॥
 विशालो विपुलज्योतिः अतुलोऽचिन्त्यवैभवः । सुसवृतः सुगुप्तात्मा सुभुत्^३ सुनयतत्त्ववित् ॥१४०॥

जाते हैं, आपके वचन पवित्र हैं इसलिये पूतवाक् ३३४ कहलाते हैं, स्वयं पवित्र हैं इसलिये पूत ३३५ कहे जाते हैं, श्रेष्ठ हैं इसलिये वरेण्य ३३६ कहलाते हैं और पुण्यके अधिपति हैं इसलिये पुण्यनायक ३३७ कहे जाते हैं ॥१३६॥ आपकी गणना नहीं हो सकती अर्थात् आप अपरिमित गुणोंके धारक हैं इसलिये अगण्य ३३८ कहलाते हैं, पवित्र बुद्धिके धारक होने से पुण्यधी ३३९ कहे जाते हैं, गुणोंसे सहित हैं इसलिये गुण्य ३४० कहलाते हैं, पुण्यको करनेवाले हैं इसलिये पुण्यकृत् ३४१ कहे जाते हैं, आपका शासन पुण्यरूप अर्थात् पवित्र है इसलिये आप पुण्यशासन ३४२ माने जाने हैं, धर्मके उपवन स्वरूप होने से धर्मराम ३४३ कहे जाते हैं, आपमें अनेक गुणोंका ग्राम अर्थात् समूह पाया जाता है इसलिये आप गुणग्राम ३४४ कहलाते हैं, आपने शुद्धोपयोगमें लीन होकर पुण्य और पाप दोनोंका निरोध कर दिया है इसलिये आप पुण्यापुण्यनिरोधक ३४५ कहे जाते हैं ॥१३७॥ आप हिंसादि पापोंसे रहित हैं इसलिये पापापेत्त ३४६ माने गये हैं, आपकी आत्मासे समस्त पाप विगत हो गये हैं इसलिये आप विपापात्मा ३४७ कहे जाते हैं, आपने पापकर्म नष्ट कर दिये हैं इसलिये विपाप्मा ३४८ कहलाते हैं, आपके समस्त कल्मष अर्थात् राग द्वेष आदि भाव कर्मरूपी मल नष्ट हो चुके हैं इसलिये वीतकल्मष ३४९ माने जाते हैं, परियग्रह रहित होनेसे निर्द्वन्द्व ३५० है, अहंकारसे रहित होनेके कारण निर्मद ३५१ कहलाते हैं, आपका खोह निकल चुका है, इसलिये आप निर्मोह ३५२ है और उपद्रव उपसर्ग आदिसे रहित है इसलिये निरुपद्रव ३५३ कहलाते हैं ॥१३८॥ आपके नेत्रोंके पलक नहीं झपटते इसलिये आप निर्निमेष ३५४ कहलाते हैं, आप कवलाहार नहीं करते इसलिये निराहार ३५५ है, सासारिक क्रियाओंसे रहित है इसलिये निष्क्रिय ३५६ है, बाधा रहित है इसलिये निरुपप्लव ३५८ है, कलक रहित होनेसे निष्कलक ३५९ है, आपने समस्त एनस् अर्थात् पापोंको दूर हटा दिया है इसलिये निरस्तैना ३६० कहलाते हैं, समस्त अपराधोंको आपने दूर कर दिया है इसलिये निर्धूतागस् ३६१ कहे जाते हैं, और कर्मोंके आस्रवसे रहित होनेके कारण निरास्रव ३६२ कहलाते हैं ॥१३९॥ आप सबसे महान् हैं इसलिये विशाल ३६३ कहे जाते हैं, केवलज्ञानरूपी विशाल ज्योतिको धारण करनेवाले हैं इसलिए विपुलज्योति ३६४ माने जाते हैं, उपमा रहित होनेसे अतुल ३६५ है, आपका वैभव अचिन्त्य है इसलिये अचिन्त्यवैभव ३६६ कहलाते हैं, आप नवीन कर्मोंका आस्रव रोक कर पूर्ण सवर कर चुके हैं इसलिये सुसवृत ३६७ कहलाते हैं, आपकी आत्मा अतिशय सुरक्षित है अथवा मनोगुप्ति आदि गुप्तियोंसे युक्त है इसलिये विद्वान् लोग आपको सुगुप्तात्मा ३६८ कहते हैं, आप समस्त पदार्थोंको अच्छी तरह जानते हैं इसलिये सुभुत् ३६९ कहलाते हैं और आप समीचीन नयोंके यथार्थ रहस्यको जानते हैं

एकविद्यो महाविद्यो मुनिः^१ परिवृढः पतिः । धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतान्तकः ॥१४१॥
पिता पितामह पातः^२ पवित्रः पावनो गतिः । त्राता भिषग्वरो वर्यो वरद. परमः पुमान् ॥१४२॥
कविः^३ पुराणपुरुषो वर्षीयान्^४ वृषभ.^५ पुरु. । प्रतिष्ठा^६प्रसवो हेतुर्भुवनैकपितामह ॥१४३॥

इति महाविंशतम् ।

श्रीवृक्षलक्षण. श्लेक्ष्णो^७ लक्ष्ण्यः^८ शुभलक्षण. । निरक्ष. पुण्डरीकाक्षणः पुष्कलः पुष्करेक्षण. ॥१४४॥

इसलिये सुनयतत्त्वविद् ३७० कहलाते है ॥१४०॥ आप केवल ज्ञानरूपी एक विद्याको धारण करनेसे एकविद्य ३७१ कहलाते है, अनेक बड़ी बड़ी विद्याएं धारण करनेसे महाविद्य ३७२ कहे जाते है, प्रत्यक्षज्ञानी होनेसे मुनि ३७३ है, सबके स्वामी है इसलिये परिवृढ ३७४ कहलाते है, जगत्के जीवोकी रक्षा करते है इसलिये पति ३७५ है, बुद्धिके स्वामी है इसलिये धीश ३७६ कहलाते है, विद्याओके भण्डार है इसलिये विद्यानिधि ३७७ माने जाते है, समस्त पदार्थोको प्रत्यक्ष जानते है इसलिये साक्षी ३७८ कहलाते है, मोक्षमार्गको प्रकट करनेवाले है इसलिये विनेता ३७९ कहे जाते है और यमराज अर्थात् मृत्युको नष्ट करनेवाले है इसलिये विहतान्तक ३८० कहलाते है ॥१४१॥ आप सब जीवोकी नरकादि गतियोसे रक्षा करते है इसलिये पिता ३८१ कहलाते है, सबके गुरु है इसलिये पितामह ३८२ कहे जाते है, सबका पालन करनेसे पाता ३८३ कहलाते है, अतिशय शुद्ध है इसलिये पवित्र ३८४ कहे जाते है, सबको शुद्ध या पवित्र करते है इसलिये पावन ३८५ माने जाते है, समस्त भव्य तपस्या करके आपके ही अनुरूप होना चाहते है इसलिये आप सबकी गति ३८६ अथवा खण्डाकार छेद निकालनेपर गतिरहित होनेसे अगति कहलाते है, समस्त जीवोकी रक्षा करनेसे त्राता ३८७ कहलाते है जन्म जरा मरण रूपी रोगको नष्ट करनेके लिये उत्तम वैद्य है इसलिये भिषग्वर ३८८ कहे जाते है, श्रेष्ठ होनेसे वर्य ३८९ है, इच्छानुकूल पदार्थोको प्रदान करते है इसलिये वरद ३९० कहलाते है, आपकी ज्ञानादि-लक्ष्मी अतिशय श्रेष्ठ है इसलिये परम ३९१ कहे जाते है, और आत्मा तथा पर पुरुषोको पवित्र करनेके कारण पुमान् ३९२ कहलाते है ॥१४२॥ द्वादशाङ्ग का वर्णन करनेवाले है इसलिये कवि ३९३ कहलाते है, अनादि-काल होनेसे पुराणपुरुष ३९४ कहे जाते है, ज्ञानादि गुणोकी अपेक्षा अतिशय वृद्ध है इसलिये वर्षीयान् ३९५ कहलाते है, श्रेष्ठ होनेसे ऋषभ ३९६ कहलाते है, तीर्थ करोमे आदिपुरुष होनेसे पुरु ३९७ कहे जाते है, आप प्रतिष्ठा अर्थात् सम्मान अथवा स्थिरताके कारण है इसलिये प्रतिष्ठाप्रसव ३९८ कहलाते है, समस्त उत्तम-कार्योके कारण है इसलिये हेतु ३९९ कहे जाते है, और ससारके एकमात्र गुरु है इसलिये भुवनैकपितामह ४०० कहलाते है, ॥१४३॥

श्रीवृक्षके चिह्नसे चिह्नित है इसलिये श्रीवृक्षलक्षण ४०१ कहे जाते है, सूक्ष्मरूप होनेसे श्लेक्ष्ण ४०२ कहलाते है, लक्षणोसे अनपेत अर्थात् सहित है इसलिये लक्ष्ण्य ४०३ कहे जाते है, आपके शरीरमे अनेक शुभ लक्षण विद्यमान है इसलिये शुभलक्षण ४०४ कहलाते है, आप समस्त पदार्थोका निरीक्षण करनेवाले है अथवा आप नेत्रेन्द्रियके द्वारा दर्शन क्रिया नहीं करते इसलिये निरीक्ष ४०५ कहलाते है, आपके नेत्र पुण्डरीककमलके समान मुन्दर

१ प्रत्यक्षज्ञानी । २ पालक । ३ काव्यकर्ता । ४ वृद्ध । ५ ज्ञानी । ६ प्रतिष्ठाया-
संबन्ध प्रसवो यत्मात् । ७ सूक्ष्म । ८ लक्षणवान् ।

सिद्धिद. सिद्धसङ्कल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः । बुद्धबोध्यो^१ महाबोधिः वर्धमानो^२ महर्षिकः ॥१४५॥
 वेदाज्ञो^३ वेदविद्वेद्यो जातरूपो विदावरः । वेदवेद्य. स्वसवेद्यो विवेदो वदता वरः ॥१४६॥
 अनादिनिधनोऽव्यक्तो व्यक्तवाग् व्यक्तशासनः । युगादिकृद् युगाधारो युगादिर्जगदादिजः ॥१४७॥
 'अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो^४ धीन्द्रो^५ महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थदृक् । अतीन्द्रियोऽहमिन्द्राचर्यो महेन्द्रमहितो महान् ॥१४८॥

है इसलिये आप पुण्डरीकाक्ष ४०६ कहलाते हैं, आत्म-गुणोसे खूब ही परिपुष्ट है इसलिये पुष्कल ४०७ कहे जाते हैं और कमल दलके समान लम्बे नेत्रोको धारण करने वाले होनेसे पुष्करेक्षण ४०८ कहे जाते हैं ॥१४४॥ सिद्धिको देनेवाले हैं इसलिये सिद्धिद ४०९ कहलाते हैं, आपके सब सकल्प सिद्ध हो चुके हैं इसलिये सिद्धसकल्प ४१० कहे जाते हैं, आपकी आत्मा सिद्ध अवस्थाको प्राप्त हो चुकी है इसलिये सिद्धात्मा ४११ कहलाते हैं, आपको सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र्य रूपी मोक्ष-साधन प्राप्त हो चुके हैं इसलिये आप सिद्धसाधन ४१२ कहलाते हैं आपने जानने योग्य सब पदार्थोको जान लिया है इसलिये बुद्धबोध्य ४१३ कहे जाते हैं, आपकी रत्नत्रयरूपी विभूति बहुत ही प्रशसनीय है इसलिये आप महाबोधि ४१४ कहलाते हैं आपके गुण उत्तरोत्तर बढ़ते रहते हैं इसलिये आप वर्धमान ४१५ हैं, और बड़ी बड़ी ऋद्धियोको धारण करने वाले हैं इसलिये महर्षिक ४१६ कहलाते हैं ॥१४५॥ आप अनुयोगरूपी वेदोके अग अर्थात् कारण हैं इसलिये वेदाग ४१७ कहे जाते हैं, वेदको जाननेवाले हैं इसलिये वेदवित् ४१८ कहलाते हैं, ऋषियोके द्वारा जाननेके योग्य हैं इसलिये वेद्य ४१९ कहे जाते हैं, आप दिगम्बररूप हैं इसलिये जातरूप ४२० कहे जाते हैं, जाननेवालोमें श्रेष्ठ हैं इसलिये विदावर ४२१ कहलाते हैं, आगम अथवा केवलज्ञानके द्वारा जानने योग्य हैं इसलिये वेदवेद्य ४२२ कहे जाते हैं, अनुभवगम्य होनेसे स्वसवेद्य ४२३ कहलाते हैं, आप तीन प्रकारके वेदोसे रहित हैं इसलिये विवेद ४२४ कहे जाते हैं और वक्ताओमें श्रेष्ठ होनेसे वदतावर ४२५ कहलाते हैं ॥१४६॥ आदि-अन्त रहित होनेसे अनादिनिधन ४२६ कहे जाते हैं, ज्ञानके द्वारा अत्यन्त स्पष्ट हैं इसलिये व्यक्त ४२७ कहलाते हैं, आपके वचन अतिशय स्पष्ट हैं इसलिये व्यक्तवाक् ४२८ कहे जाते हैं, आपका शासन अत्यन्त स्पष्ट या प्रकट है इसलिये आपको व्यक्तशासन ४२९ कहते हैं, कर्मभूमिरूपी युगके आदि व्यवस्थापक होनेसे आप युगादिकृत् ४३० कहलाते हैं, युगकी समस्त व्यवस्था करने वाले हैं, इसलिये युगाधार ४३१ कहे जाते हैं, इस कर्मभूमिरूप युगका प्रारम्भ आपसे ही हुआ था इसलिये आप युगादि ४३२ माने जाते हैं और आप जगत्के प्रारम्भमें उत्पन्न हुए थे इसलिये जगदादिज ४३३ कहलाते हैं ॥१४७॥ आपने अपने प्रभाव या ऐश्वर्यसे इन्द्रोको भी अतिक्रान्त कर दिया है इसलिये अतीन्द्र ४३४ कहे जाते हैं, इन्द्रियगोचर न होनेसे अतीन्द्रिय ४३५ है, बुद्धिके स्वामी होनेसे धीन्द्र ४३६ हैं, परम ऐश्वर्यका अनुभव करते हैं इसलिये महेन्द्र ४३७ कहलाते हैं, अतीन्द्रिय (सूक्ष्म-अन्तरित-दूरार्थ) पदार्थोको देखनेवाले होनेसे अतीन्द्रियार्थदृक् ४३८ कहे जाते हैं, इन्द्रियो से रहित हैं इसलिये अनिन्द्रिय ४३९ कहलाते हैं अहमिन्द्रोके द्वारा पूजित होनेसे अहमिन्द्राचर्य ४४० कहे जाते हैं, बड़े बड़े इन्द्रोके द्वारा पूजित होनेसे महेन्द्रमहित ४४१

१ बोद्धु योग्यो बोध्य, बुद्धो बोध्यो यैनासौ । २ वा विशेषेण ऋद्ध समृद्ध मान प्रमाण यस्य स । ३ वेदज्ञापक । ४ आगमेन ज्ञेय । ५ अतिशयेनेन्द्रः । ६ इन्द्रियज्ञानमतिक्रान्त । ७ पूजाधिप ।

उद्भवः^१ कारणं कर्ता पारगो भवतारकः । अगाह्यो गहन^२ गुह्य^३ परार्ध्यः परमेश्वरः ॥१४६॥

अनन्तद्विरमेयद्विरचिन्त्यद्विः समग्रधीः । प्राग्रयः प्राग्रहरोऽभ्यग्रः प्रत्यग्रोऽग्रचोऽग्रिमोऽग्रजः ॥१४७॥

महातपा महातेजा महोदको महोदयः । महायशा महाधामा महासत्त्वो महाधृतिः ॥१४८॥

महार्घ्यो महावीर्यो महासम्पन्नमहाबलः । महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः^४ ॥१४९॥

कहलाते हैं और स्वयं सबसे बड़े हैं इसलिये महान् ४४२ कहे जाते हैं ॥१४८॥ आप समस्त ससारसे बहुत ऊँचे उठे हुए हैं अथवा आपका जन्म ससारमें सबसे उत्कृष्ट है इसलिये उद्भव ४४३ कहलाते हैं, मोक्षके कारण होनेसे कारण ४४४ कहे जाते हैं, शुद्ध भावोको करते हैं इसलिये कर्ता ४४५ कहलाते हैं, ससाररूपी समुद्रके पारको प्राप्त होनेसे पारग ४४६ माने जाते हैं, आप भव्यजीवोको ससाररूपी समुद्रसे तारनेवाले हैं इसलिये भवतारक ४४७ कहलाते हैं, आप किसीके भी द्वारा अवगाहन करने योग्य नहीं हैं अर्थात् आपके गुणोको कोई नहीं समझ सकता है इसलिये आप अगाह्य ४४८ कहे जाते हैं, आपका स्वरूप अतिशय गम्भीर या कठिन है इसलिये गहन ४४९ कहलाते हैं, गुप्तरूप होनेसे गुह्य ४५० है, सबसे उत्कृष्ट होनेके कारण परार्ध्य ४५१ है और सबसे अधिक समर्थ होनेके कारण परमेश्वर ४५२ माने जाते हैं ॥१४९॥ आपकी ऋद्धिया अनन्त, अनेय और अचिन्त्य है इसलिये आप अनन्तद्वि ४५३, अमेयद्वि ४५४ और अचिन्त्यद्वि ४५५ कहलाते हैं, आपकी बुद्धि पूर्ण अवस्थाको प्राप्त हुई है इसलिये आप समग्रधी ४५६ है, सबमें मुख्य होनेसे प्राग्रय ४५७ है, प्रत्येक माङ्गलिक कार्योंमें सर्वप्रथम आपका स्मरण किया जाता है इसलिये प्राग्रहर ४५८ है, लोकका अग्रभाग प्राप्त करनेके सम्मुख है इसलिये अभ्यग्र ४५९ है, आप समस्त लोगोसे विलक्षण—नूतन है इसलिये प्रत्यग्र ४६० कहलाते हैं, सबके स्वामी है इसलिये अग्रय ४६१ कहे जाते हैं, सबके अग्रेसर होनेसे अग्रिम ४६२ कहलाते हैं और सबसे ज्येष्ठ होनेके कारण अग्रज ४६३ कहे जाते हैं ॥१५०॥ आपने बड़ा कठिन तपश्चरण किया है इसलिये महातपा ४६४ कहलाते हैं, आपका बड़ा भारी तेज चारों ओर फैल रहा है इसलिये आप महातेजा ४६५ है, आपकी तपश्चर्याका उदक अर्थात् फल बड़ा भारी है इसलिये आप महोदक ४६६ कहलाते हैं, आपका ऐश्वर्य बड़ा भारी है इसलिये आप महोदय ४६७ माने जाते हैं, आपका बड़ा भारी यश चारों ओर फैल रहा है इसलिये आप महायशा ४६८ माने जाते हैं, आप विशाल तेज-प्रताप अथवा ज्ञानके धारक है इसलिये महाधामा ४६९ कहलाते हैं, आपकी शक्ति अपार है इसलिये विद्वान् लोग आपको महासत्त्व ४७० कहते हैं, और आपका धीरज महान् है इसलिये आप महाधृति ४७१ कहलाते हैं ॥१५१॥ आप कभी अधीर नहीं होते इसलिये महार्घ्य ४७२ कहे जाते हैं, अनन्त वीर्यके धारक होनेसे महावीर्य ४७३ कहलाते हैं, समवसरणरूप अद्वितीय विभूतिको धारण करनेसे महासत्त्व ४७४ माने जाते हैं, अत्यन्त बलवान् होनेसे महाबल ४७५ कहलाते हैं, बड़ी भारी शक्तिके धारक होनेसे महाशक्ति ४७६ माने जाते हैं, अतिशय कान्ति अथवा केवलज्ञानसे सहित होनेके कारण महाज्योति ४७७ कहलाते हैं, आपका वैभव अपार है इसलिये आपको महाभूति ४७८ कहते हैं और आपके

१ उद्गतसत्तार । २ दुःप्रवेश्यः । ३ रहस्यम् । ४ प्राग्याजपयन्ता श्रेष्ठार्थवाचका ।
५ महोदय—तपः ।

महामतिर्महानीतिर्महाक्षान्तिर्महोदयः । महाप्राज्ञो महाभागो महानन्दो महाकविः ॥१५३॥

महामहा^१ महाकीर्तिर्महाकान्तिर्महावपुः । महादानो महाज्ञानो महायोगो महागुणः ॥१५४॥

महामहपतिः^२ प्राप्तमहाकल्याणपञ्चकः । महाप्रभुर्नृणांप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः ॥१५५॥

इति श्रीवृक्षादिशतम् ।

महामुनिर्महामौनी महाध्यानी^३ महादमः । महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः^४ ॥१५६॥

महाव्रतपतिर्महो^५ महाकान्तिधरोऽधिपः । महामैत्री महामेयो महोपायो महोमयः^६ ॥१५७॥

महाकारणिको^७ मन्ता^८ महामन्त्रो महायतिः । महानादो महाघोषो महोज्यो महसा पतिः ॥१५८॥

शरीरकी द्युति बड़ी भारी है इसलिये आप महाद्युति ४७९ कहे जाते हैं ॥१५२॥ अतिशय बुद्धिमान् है इसलिये महामति ४८० कहलाते हैं, अतिशय न्यायवान् है इसलिये महानीति ४८१ कहे जाते हैं, अतिशय क्षमावान् है इसलिये महाक्षान्ति ४८२ माने जाते हैं, अतिशय दयालु है इसलिये महोदय ४८३ कहलाते हैं, अत्यन्त विवेकवान् होनेसे महाप्राज्ञ ४८४ अत्यन्त भाग्यशाली होनेसे महाभाग ४८५, अत्यन्त आनन्द होनेसे महानन्द ४८६ और सर्व-श्रेष्ठकवि होनेसे महाकवि ४८७ माने जाते हैं ॥१५३॥ अत्यन्त तेजस्वी होनेसे महामहा ४८८, विशाल कीर्तिके धारक होनेसे महाकीर्ति ४८९, अद्भुत कान्तिसे युक्त होनेके कारण महाकान्ति ४९०, उत्तु गशरीरके होनेसे महावपु ४९१, बड़े दानी होनेसे महादान ४९२, केवलज्ञानी होनेसे महाज्ञान ४९३, बड़े ध्यानी होनेसे महायोग ४९४, और बड़े गुणोंके धारक होनेसे महागुण ४९५ कहलाते हैं ॥१५४॥ आप अनेक बड़े बड़े उत्सवोंके स्वामी है इसलिये महामहपति ४९६ कहलाते हैं, आपने गर्भ आदि पाच महाकल्याणको प्राप्त किया है इसलिये प्राप्तमहाकल्याणपञ्चक ४९७ कहे जाते हैं, आप सबसे बड़े स्वामी है इसलिये महाप्रभु ४९८ कहलाते हैं, अशोकवृक्ष आदि आठ महाप्रातिहार्योंके स्वामी है इसलिये महाप्रातिहार्याधीश ४९९ कहे जाते हैं और आप सब देवोंके अधीश्वर है इसलिये महेश्वर ५०० कहलाते हैं ॥१५५॥

सब मुनियोंमें उत्तम होनेसे महामुनि ५०१, वचनालाप रहित होनेसे महामौनी ५०२, शुक्लध्यानका ध्यान करनेसे महाध्यानी ५०३, अतिशय जितेन्द्रिय होनेसे महादम ५०४, अतिशय समर्थ अथवा शान्त होनेसे महाक्षम ५०५, उत्तमशीलसे युक्त होनेके कारण महाशील ५०६ और तपश्चरणरूपी अग्निमें कर्मरूपी हविके होम करनेसे महायज्ञ ५०७ और अतिशय पूज्य होनेके कारण महामख ५०८ कहलाते हैं ॥१५६॥ पाच महाव्रतोंके स्वामी होनेसे महाव्रतपति ५०९, जगत्पूज्य होनेसे मह्य ५१०, विशाल कान्तिके धारक होनेसे महाकान्तिधर ५११, सबके स्वामी होनेसे अधिप ५१२, सब जीवोंके साथ मैत्रीभाव रखनेसे महामैत्रीमय ५१३, अपरिमित गुणोंके धारक होनेसे अमेय ५१४, मोक्षके उत्तमोत्तम उपायोंसे सहित होनेके कारण महोपाय ५१५ और तेज स्वरूप होनेसे महोमय ५१६ कहलाते हैं ॥१५७॥ अत्यन्त दयालु होनेसे महाकारणिक ५१७, सब पदार्थोंको जाननेसे मता ५१८ अनेक मंत्रोंके स्वामी होनेसे महामन्त्र ५१९, यतियोंमें श्रेष्ठ होनेसे महायति ५२०, गम्भीर दिव्यध्वनिके धारक होनेसे महानाद ५२१, दिव्यध्वनिका गम्भीर उच्चारण होनेके कारण महाघोष ५२२, बड़ी बड़ी पूजाओंके अधिकारी होनेसे महोज्य ५२३ और समस्त तेज

१ महतेजा । २ महामहाख्यपूजापतिः । ३ ध्यानी-ल० । ४ महापूज । ५ पूज्य । ६ उत्कृष्टबोध । ७ महाकरणया चरतीति । ८ ज्ञाता ।

‘महाध्वरधरो धुर्यो’ महौदार्यो महिष्ठवाक् । महात्मा महसां धाम महर्षिर्महितोदयः ॥१५६॥
 महाक्लेशाङ्कुश शूरो ‘महाभूतपतिर्गुरु’ । महापराक्रमोऽनन्तो महाक्रोधरिपुर्वशी ॥१६०॥
 महाभवाब्धिसन्तारी महामोहाद्रिसूदनः^१ । महागुणाकरः क्षान्तो महायोगीश्वरः शमी ॥१६१॥
 महाध्यानपतिर्ध्यातमहाधर्म महाव्रतः । ‘महाकर्मारिहात्मज्ञो महादेवो महेशिता ॥१६२॥
 सर्वक्लेशापह साधुः सर्वदोषहरो हर । असङ्ख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः ॥१६३॥
 सर्वयोगीश्वरोऽचिन्त्यः श्रुतात्मा विष्टरश्रवा^२ । दान्तात्मा^३ दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः ॥१६४॥

अथवा प्रतापके स्वामी होनेसे महसापति ५२४ कहलाते हैं ॥१५८॥ ज्ञानरूपी विशाल यज्ञके धारक होनेसे महाध्वरधर ५२५, कर्मभूमिका समस्त भार सभालने अथवा सर्वश्रेष्ठ होनेके कारण धुर्य ५२६, अतिशय उदार होनेसे महौदार्य ५२७, श्रेष्ठ वचनोसे युक्त होनेके कारण महिष्ठवाक् ५२८, महान् आत्माके धारक होनेसे महात्मा ५२९, समस्त तेजके स्थान होनेसे महसाधाम ५३०, ऋषियोमे प्रधान होनेसे महर्षि ५३१, और प्रशस्त जन्मके धारक होनेसे महितोदय ५३२ कहलाते हैं ॥१५९॥ बड़े बड़े क्लेशोको नष्ट करनेके लिये अङ्कुशके समान है इसलिये महाक्लेशाङ्कुश ५३३ कहलाते हैं, कर्मरूपी शत्रुओका क्षय करनेमे शूरवीर है इसलिये शूर ५३४ कहे जाते हैं, गणधर आदि बड़े-बड़े प्राणियों के स्वामी है इसलिये महाभूतपति ५३५ कहे जाते हैं, तीनों लोकोमे श्रेष्ठ है इसलिये गुरु ५३६ कहलाते हैं, विशाल पराक्रमके धारक है इसलिये महापराक्रम ५३७ कहे जाते हैं, अन्त रहित होनेसे अनन्त ५३८ है, क्रोधके बड़े भारी शत्रु होनेसे महाक्रोधरिपु ५३९ कहे जाते हैं और समस्त इन्द्रियोको वश कर लेनेसे व्रगी ५४० कहलाते हैं ॥१६०॥ ससाररूपी महासमुद्रसे पार कर देनेके कारण महाभवाब्धिसन्तारी ५४१ मोहरूपी महाचल-के भेदन करनेसे महामोहाद्रिसूदन ५४२, सम्यग्दर्शन आदि बड़े बड़े गुणोंकी खान होनेसे महागुणाकर ५४३, क्रोधादि कषायोंको जीत लेनेसे क्षान्त ५४४, बड़े बड़े योगियों-मुनियोंके स्वामी होनेसे महायोगीश्वर ५४५ और अतिशय शान्त परिणामी होनेसे शमी ५४६ कहलाते हैं ॥१६१॥ शुक्लध्यानरूपी महाध्यानके स्वामी होनेसे महाध्यानपति ५४७, अहिंसारूपी महाधर्मका ध्यान करनेसे ध्यातमहाधर्म ५४८, महाव्रतोंको धारण करनेसे महाव्रत ५४९, कर्मरूपी महाशत्रुओको नष्ट करनेसे महाकर्मारिहा ५५०, आत्म स्वरूपके जानकार होनेसे आत्मज्ञ ५५१, सब देवोंमे प्रधान होनेसे महादेव ५५२, और महान् सामर्थ्यसे सहित होनेके कारण महेशिता ५५३, कहलाते हैं ॥१६२॥ सब प्रकारके क्लेशोंको दूर करनेसे सर्वक्लेशापह ५५४, आत्मकृत्याण सिद्धि करनेसे साधु ५५५, समस्त दोषोंको दूर करनेसे सर्वदोषहर ५५६, समस्त पापोंको नष्ट करनेके कारण हर ५५७, असङ्ख्यात गुणोंको धारण करनेसे असङ्ख्येय ५५८, अपरिमित शक्तिको धारण करनेसे अप्रमेयात्मा ५५९, शान्तस्वरूप होनेसे शमात्मा ५६०, और उत्तमशान्तिकी खान होनेसे प्रशमाकर ५६१ कहलाते हैं ॥१६३॥ सब मुनियोंके स्वामी होनेसे सर्वयोगीश्वर ५६२, किसीके चिन्तनमे न आनेसे अचिन्त्य ५६३, भावश्रुतरूप होनेसे श्रुतात्मा ५६४, तीनों लोकोके समस्त पदार्थोंको जाननेसे विष्टरश्रवा ५६५, मनको वश करनेमे दान्तात्मा ५६६, सयमरूप तीर्थके स्वामी होनेके कारण दमतीर्थेश ५६७, योगमय

१ महापञ्चधारी । २ धुरन्धर । ३ गणधरचन्द्रशेखरदीनानाथ । ४ नागक । ५ गद्युज्ज ।
 ६ निष्ठ प्रपेश राति ददानीति विष्टर विष्टर श्रवो ज्ञान सत्य स । ७ शिक्षितान्मा ।

प्रधानमात्मा प्रकृति. परम.^१ परमोदयः । प्रक्षीणबन्धः कामारिः क्षेमकृत् क्षेमशासनः ॥१६५॥

^२प्रणव प्रणत प्राण. प्राणदः प्राण^३तेश्वरः । प्रमाणं प्रणि^४धिर्वक्षो दक्षि^५णोऽध्वर्यु^६रध्वरः ॥१६६॥

आनन्दो नन्दनो^७ नन्दो^८ वन्द्योऽनिन्द्योऽभिनन्दनः^९ । कामहा^{१०} कामदः काम्यः कामधेनुररिञ्जयः ॥१६७॥

इति महामुन्यादिशतम् ।

^{११}असंस्कृतः सुसंस्कारः प्राकृतो वैकृतान्तकृत्^{१२} । ^{१३}अन्तकृत् कान्तगु कान्तश्चिन्तामणिरभीष्टदः ॥१६८॥

प्रजितो जितकामारि. अमितोमितशासनः । जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितान्तकः ॥१६९॥

होनेसे योगात्मा ५६८, और ज्ञानके द्वारा सब जगह व्याप्त होनेके कारण ज्ञानसर्वग ५६९ कहलाते हैं ॥१६४॥ एकाग्रतासे आत्माका ध्यान करने अथवा तीनों लोकोमे प्रमुख होनेसे प्रधान ५७०, ज्ञानस्वरूप होनेसे आत्मा ५७१, प्रकृष्ट कार्योंके होनेसे प्रकृति ५७२, उत्कृष्ट लक्ष्मीके धारक होनेसे परम ५७३, उत्कृष्ट उदय अर्थात् जन्म या वैभवको धारण करनेसे परमोदय ५७४, कर्मबन्धनके क्षीण हो जानेसे प्रक्षीणबन्ध ५७५, कामदेव अथवा विषयाभिलाषाके शत्रु होनेसे कामारि ५७६, कल्याणकारी होनेसे क्षेमकृत् ५७७ और मगलमय उपदेशके देनेसे क्षेमशासन ५७८ कहलाते हैं ॥१६५॥ ओकाररूप होनेसे प्रणव ५७९, स्नेहरूप होने अथवा भव्य जीवोको इष्टस्थानके प्राप्त करानेसे प्रणत ५८०, जगत्को जीवित रखनेसे प्राण ५८१, सब जीवोके प्राणदाता अर्थात् रक्षक होनेसे प्राणद ५८२, नम्रीभूत भव्य जनोके स्वामी होनेसे प्रणतेश्वर ५८३, प्रमाण अर्थात् ज्ञानमय होनेसे प्रमाण ५८४, अनन्तज्ञान आदि उत्कृष्ट निधियोके स्वामी होनेसे प्रणिधि ५८५, समर्थ अथवा प्रवीण होनेसे दक्ष ५८६, सरल होनेसे दक्षिण ५८७, ज्ञानरूप यज्ञ करनेसे अध्वर्यु ५८८ और समीचीन मार्गके प्रदर्शक होनेसे अध्वर ५८९ कहलाते हैं ॥१६६॥ सदा सुखरूप होनेसे आनन्द ५९०, सबको आनन्द देनेसे नन्दन ५९१, सदा समृद्धिमान् होते रहनेसे नन्द ५९२, इन्द्र आदिके द्वारा वन्दना करने योग्य होनेसे वन्द्य ५९३, निन्दारहित होनेसे अनिन्द्य ५९४, प्रशसनीय होनेसे अभिनन्दन ५९५, कामदेवको नष्ट करनेसे कामहा ५९६, अभिलषित पदार्थोंको देनेसे कामद ५९७, अत्यन्त मनोहर अथवा सबके द्वारा चाहनेके योग्य होनेसे काम्य ५९८, सबके मनोरथ पूर्ण करनेसे कामधेनु ५९९ और कर्मरूप शत्रुओंको जीतनेसे अरिजय ६०० कहलाते हैं ॥१६७॥

किसी अन्यके द्वारा संस्कृत हुए बिना ही उत्तम संस्कारोंको धारण करनेसे असंस्कृत-सुसंस्कार ६०१, स्वाभाविक होनेसे प्राकृत ६०२, रागादि विकारोंका नाश करनेसे वैकृतान्तकृत् ६०३, अन्त अर्थात् धर्म अथवा जन्ममरणरूप ससारका अवसान करनेवाले होनेसे अन्तकृत् ६०४, सुन्दर कान्ति, वचन अथवा इन्द्रियोंके धारक होनेसे कान्तगु ६०५, अत्यन्त सुन्दर होनेसे कान्त ६०६, इच्छित पदार्थ देनेसे चिन्तामणि ६०७, और भव्यजीवोके लिये अभीष्ट-स्वर्ग मोक्षके देनेसे अभीष्टद ६०८ कहलाते हैं ॥१६८॥ किसीके द्वारा जीते नहीं जा सकनेके कारण अजित ६०९, कामरूप शत्रुको जीतनेसे जितकामारि ६१०, अवधिरहित होनेके कारण अमित ६११, अनुपम धर्मका उपदेश देनेसे अमितशासन ६१२, क्रोधको जीतनेसे जितक्रोध ६१३, शत्रुओंको जीत लेनेसे जितामित्र ६१४,

१ परा उत्कृष्ट मा लक्ष्मीर्यस्य स परम । २ ओकार । ३ प्रकर्षणानतामीश्वर । प्रणतेश्वर-
व०, अ०, प०, न०, द०, ल०, इ० । ४ चार । ५ ऋजु । ६ होता । ७ नन्दयतीति नन्दन ।
८ उपमान । ९ अभिनन्दयतीति । १० काम हन्तीति । ११ असंस्कृतसुसंस्कारोऽप्राकृतो- ल० ।
१२ विराम्य नाशकारी । १३ अन्त नाश कृततीति ।

जिनेन्द्र परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभिस्वन । महेन्द्रवन्द्यो योगीन्द्रो यतीन्द्रो नाभिनन्दन ॥१७०॥
 नाभेयो नाभिजोऽजात सुव्रतो मनुस्त्वम । अभेद्योऽनत्य'योऽनाश्वान'धिकोऽधिगुरु सुधीः^३ ॥१७१॥
 सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो^४ निरुत्सुकः । विशिष्टः^५ शिष्टभुक्^६ शिष्ट प्रत्यय कामनो^७ऽनघ ॥१७२॥
 क्षेमी क्षेमङ्करोऽक्षय क्षेमधर्मपति क्षमी । अग्राह्यो ज्ञाननिग्राह्यो^८ ध्यानगम्यो निरुत्तर ॥१७३॥
 मुक्तो धातु^९रिज्यार्ह सुनयश्चतुरानन । श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुख ॥१७४॥

क्लेशोको जीत लेनेसे जितक्लेश ६१५ और यमराजको जीत लेनेसे जितान्तक ६१६ कहे जाते हैं ॥१६९॥ कर्मरूप शत्रुओको जीतनेवालोमे श्रेष्ठ होनेसे जिनेन्द्र ६१७, उत्कृष्ट आनन्दके धारक होनेसे परमानन्द ६१८, मुनियोके नाथ होनेसे मुनीन्द्र ६१९, दुन्दुभिके समान गभीर ध्वनिमे युक्त होनेके कारण दुन्दुभिस्वन ६२०, बड़े बड़े इन्द्रोके द्वारा वन्दनीय होनेसे महेन्द्रवन्द्य ६२१, योगियोके स्वामी होनेसे योगीन्द्र ६२२, यतियोके अधिपति होनेसे यतीन्द्र ६२३ और नाभिमहाराजके पुत्र होनेसे नाभिनन्दन ६२४ कहलाते हैं ॥१७०॥ नाभिराजाकी गलतान होनेसे नाभेय ६२५, नाभिमहाराजसे उत्पन्न होनेके कारण नाभिज ६२६, द्रव्याधिक नयकी अपेक्षा जन्मरहित होनेसे अजात ६२७, उत्तम व्रतोके धारक होनेसे सुव्रत ६२८, कर्मभूमिकी समस्त व्यवस्था बताने अथवा मनन-ज्ञानरूप होनेसे मनु ६२९, उत्कृष्ट होनेसे उत्तम ६३०, किसीके द्वारा भेदन करने योग्य न होनेसे अभेद्य ६३१, विनाशरहित होनेसे अनत्यय ६३२, तपश्चरण करनेसे अनाश्वान् ६३३, सबमे श्रेष्ठ होने अथवा वास्तविक सुख प्राप्त होनेसे अधिक ६३४, श्रेष्ठ गुरु होनेसे अधिगुरु ६३५ और उत्तम वचनोके धारक होनेसे सुधी ६३६ कहलाते हैं ॥ १७१ ॥ उत्तम बुद्धि होनेसे सुमेधा ६३७, पराक्रमी होनेसे विक्रमी ६३८, सबके अधिपति होनेसे स्वामी ६३९, किसीके द्वारा अनादर हिंसा अथवा निवारण आदि नहीं किये जा सकनेके कारण दुराधर्ष ६४०, सासारिक विषयोकी उत्कण्ठासे रहित होनेके कारण निरुत्सुक ६४१, विशेषरूप होनेसे विशिष्ट ६४२, शिष्ट पुरुषोका पालन करनेसे शिष्टभुक् ६४३, नदाचारपूर्ण होनेसे शिष्ट ६४४, विश्वास अथवा ज्ञानरूप होनेसे प्रत्यय ६४५, मनोहर होनेसे कामन ६४६ और पापरहित होनेसे अनघ ६४७ कहलाते हैं ॥१७२॥ कल्याणसे युक्त होनेके कारण क्षेमी ६४८, भव्य जीवोका कल्याण करनेसे क्षेमकर ६४९, क्षयरहित होनेसे अक्षय ६५०, कल्याणकारी धर्मके स्वामी होनेसे क्षेमधर्मपति ६५१, क्षमासे युक्त होनेके कारण क्षमी ६५२, अल्पज्ञानियोके ग्रहणमे न आनेसे अग्राह्य ६५३, सम्यग्ज्ञानके द्वारा ग्रहण करनेके योग्य होनेसे ज्ञाननिग्राह्य ६५४, ध्यानके द्वारा जाने जा सकनेके कारण ज्ञानगम्य ६५५ और सबसे उत्कृष्ट होनेके कारण निरुत्तर ६५६ हैं ॥१७३॥ पुण्यवान् होनेसे मुनी ६५७, शब्दोके उत्पादक होनेसे धातु ६५८, पूजाके योग्य होनेसे इज्यार्ह ६५९, गभीर नीच नयोसे सहित होनेके कारण सुनय ६६०, लक्ष्मीके निवास होनेसे श्रीनिवाम ६६१, और समवसरणमे अतिशय विशेषसे चारो ओर मुख दिखनेके कारण चतुरानन ६६२, चतुर्वक्त्र ६६३, चतुरास्य ६६४, और चतुर्मुख ६६५ कहलाते हैं ॥१७४॥

१ नाभिराज । 'दिष्टान्त प्रत्ययोज्यय' इत्यभिधानात् । २ अनशनव्रती । ३ मुनी - ३०, ४ धृष्ट । ५ विशिष्ट इति । ६ शिष्टपात्र । ७ कामनीय । ८ ज्ञानेन ग्राह्य । ९ शब्दयोनिः ।

सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक् सत्यशासन । सत्याशी सत्यसन्धानः सत्य सत्यपरायण ॥१७५॥
 स्थेयान्^३ स्थवीयान्^३ नदीयान्^३ दवीयान्^३ दूरदर्शन । अणोरणीयाननणुं^३ हराद्यो गरीयसाम् ॥१७६॥
 सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः । सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्यः सदादयः ॥१७७॥
 सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत् । सुगुप्तो गुप्तिभृद् गोप्ता^४ लोकाध्यक्षो दमोश्चर ॥१७८॥
 इति असंस्कृतादिशतम् ।

बृहद्बृहस्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरुदारधी । मनीषी धिषणो धीमान् शेमुषीशो गिरापतिः ॥१७९॥
 नैकरूपो नयोत्तुङ्गो नैकात्मा नैकधर्मकृत् । अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥१८०॥

सत्य-स्वरूप होनेसे सत्यात्मा ६६६, यथार्थ विज्ञानसे सहित होनेके कारण सत्य विज्ञान ६६७, सत्यवचन होनेसे सत्यवाक् ६६८, सत्यधर्मका उपदेश देनेसे सत्यशासन ६६९, सत्य आशीर्वाद होनेसे सत्याशी, ६७०, सत्यप्रतिज्ञ होनेसे सत्यसन्धान ६७१, सत्यरूप होनेसे सत्य ६७२, और सत्यमे ही निरन्तर तत्पर रहनेसे सत्यपरायण ६७३ कहलाते हैं ॥१७५॥ अत्यन्त स्थिर होनेसे स्थेयान् ६७४, अतिशय स्थूल होनेसे स्थवीयान् ६७५, भक्तोंके समीपवर्ती होनेसे नदीयान् ६७६, पापोंसे दूर रहनेके कारण दवीयान् ६७७, दूरसे ही दर्शन होनेके कारण दूरदर्शन ६७८, परमाणुसे भी सूक्ष्म होनेके कारण अणो अणीयान् ६७९, अणुरूप न होनेसे अनणु ६८० और गुरुओमें भी श्रेष्ठ गुरु होने से गरीयसामाद्यः गुरु ६८१ कहलाते हैं ॥१७६॥ सदा योगरूप होनेसे सदायोग ६८२, सदा आनन्दके भोक्ता होनेसे सदाभोग ६८३, सदा सतृप्त रहनेसे सदातृप्त ६८४, सदा कल्याणरूप रहनेसे सदा शिव ६८५, सदा ज्ञानरूप रहनेसे सदागति ६८६, सदा सुखरूप रहनेसे सदासौख्य ६८७, सदा केवलज्ञानरूपी विद्यासे युक्त होनेके कारण सदाविद्य ६८८ और सदा उदयरूप रहनेसे सदादयः ६८९ माने जाते हैं ॥१७७॥ उत्तमध्वनि होनेसे सुघोष ६९०, सुन्दर मुख होनेसे सुमुख ६९१, शान्तरूप होनेसे सौम्य ६९२, सब जीवोंको सुखदायी होनेसे सुखद ६९३, सबका हित करनेसे सुहित ६९४, उत्तम हृदय होनेसे सुहृत् ६९५, सुरक्षित अथवा मिथ्यादृष्टियोंके लिये गूढ़ होनेसे सुगुप्त ६९६, गुप्तियोंको धारण करनेसे गुप्तिभृद् ६९७, सबके रक्षक होनेसे गोप्ता ६९८, तीनों लोकोंका साक्षात्कार करनेसे लोकाध्यक्ष ६९९, और इन्द्रियविजयरूपी दमके स्वामी होनेसे दमेश्वर ७०० कहलाते हैं ॥१७८॥

इन्द्रोंके गुरु होनेसे बृहद्बृहस्पति ७०१, प्रशस्त वचनोंके धारक होनेसे वाग्मी ७०२, वचनोंके स्वामी होनेसे वाचस्पति ७०३, उत्कृष्ट बुद्धिके धारक होनेसे उदारधी ७०४, मनन शक्तिसे युक्त होनेके कारण मनीषी ७०५, चातुर्यपूर्ण बुद्धिसे सहित होनेके कारण धिषण ७०६, धारण पटु बुद्धिसे सहित होनेके कारण धीमान् ७०७, बुद्धिके स्वामी होनेसे शेमुषीश ७०८, और सब प्रकारके वचनोंके स्वामी होनेसे गिरापति ७०९, कहलाते हैं ॥१७९॥ अनेकरूप होनेसे नैकरूप ७१०, नयोंके द्वारा उत्कृष्ट अवस्थाको प्राप्त होनेसे नयोत्तुङ्ग ७११, अनेक गुणोंको धारण करनेसे नैकात्मा ७१२, वस्तुके अनेक धर्मोंका उपदेश देनेसे नैकधर्मकृत् ७१३, साधारण पुरुषोंके द्वारा जाननेके अयोग्य होनेसे अविज्ञेय ७१४,

१ सत्यप्रतिज्ञ । २ स्थिरतर । ३ स्थूलतर । ४ समीपस्थ । ५ दूरस्थ । ६ रक्षक ।
 ७ सम्पूर्णलक्षण ।

*यहापर 'गरीयसामाद्य' और गरीयसा गुरु' इस प्रकार दो नाम भी निकलते हैं परन्तु इस पक्षमें ६२७ और ६२८ इन दो नामोंके स्थानमें 'जातसुव्रत' ऐसा एक नाम माना जाता है ।

ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः । पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः ॥१८१॥
 लक्ष्मीवास्त्रिदशाध्यक्षो द्रढीयानिन ईशिता । मनोहरो मनोज्ञाङ्गो धीरो गम्भीरशासनः ॥१८२॥
 धर्मयूपो दयायागो धर्मनेमिर्मुनीश्वरः । धर्मचक्रायुधो देवः कर्महा धर्मघोषणः ॥१८३॥
 अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोऽमोघशासनः । सूरूपः सुभगस्त्यागी समयज्ञ समाहितः ॥१८४॥
 सुस्थितः स्वास्थ्यभाक् स्वस्थो नीरजस्को निरुद्धवः^१ । अलेपो निष्कलङ्कः कात्मा वीतरागो गतस्पृहः ॥१८५॥
 वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा नि सपत्नो जितेन्द्रियः । प्रशान्तोऽनन्तधार्मर्षिर्मङ्गलमलहानघः ॥१८६॥

तर्क-वितर्करहित स्वरूपसे युक्त होनेके कारण अप्रतर्क्यात्मा ७१५, समस्त कृत्य जाननेसे कृतज्ञ ७१६ और समस्त पदार्थोंका लक्षणस्वरूप बतलानेसे कृतलक्षण ७१७ कहलाते हैं ॥१८०॥ अन्तरङ्गमे ज्ञान होनेसे ज्ञानगर्भ ७१८, दयालुहृदय होनेसे दयागर्भ ७१९, रत्नत्रयसे युक्त होनेके कारण अथवा गर्भ कल्याणके समय रत्नमयी वृष्टि होनेसे रत्नगर्भ ७२०, देदीप्यमान होनेसे प्रभास्वर ७२१, कमलाकार गर्भाशयमे स्थित होनेके कारण पद्मगर्भ ७२२, ज्ञानके भीतर समस्त जगत्के प्रतिविम्बित होनेसे जगद्गर्भ ७२३, गर्भ-वामके समय पृथिवीके सुवर्णमय होजाने अथवा सुवर्णमय वृष्टि होनेसे हेमगर्भ ७२४ और सुन्दर दर्शन होनेसे सुदर्शन ७२५ कहलाते हैं ॥१८१॥ अन्तरङ्ग तथा बहिरङ्ग लक्ष्मीसे युक्त होनेके कारण लक्ष्मीवान् ७२६, देवोंके स्वामी होनेसे त्रिदशाध्यक्ष ७२७, अत्यन्त दृढ़ होनेसे द्रढीयान् ७२८, सबके स्वामी होनेसे इन ७२९, सामर्थ्यशाली होनेसे ईशिता ७३०, भव्यजीवोंका मनहरण करनेसे मनोहर ७३१, सुन्दर अगोंके धारक होनेसे मनोज्ञाङ्ग ७३२, धैर्यवान् होनेसे धीर ७३३ और शासनकी गम्भीरता से गम्भीरशासन ७३४ कहलाते हैं ॥१८२॥ धर्मके स्तम्भरूप होनेसे धर्मयूप ७३५, दयारूप यज्ञके करनेवाले होनेसे दयायाग ७३६, धर्मरूपी रथकी चक्रधारा होनेसे धर्मनेमि ७३७, मुनियोंके स्वामी होनेसे मुनीश्वर ७३८, धर्मचक्ररूपी शस्त्रके धारक होनेसे धर्मचक्रायुध ७३९, आत्मगुणोंमे शोभा करनेसे देव ७४०, कर्मोंका नाश करनेसे कर्महा ७४१, और धर्मका उपदेश देनेसे धर्मघोषण ७४२ कहलाते हैं ॥१८३॥ आपके वचन कभी व्यर्थ नहीं जाते इसलिये अमोघ वाक् ७४३, आपकी आज्ञा कभी निष्फल नहीं होती इसलिये अमोघाज्ञ ७४४, मल रहित हैं इसलिये निर्मल ७४५, आपका शासन सदा सफल रहता है इसलिये अमोघशासन ७४६, सुन्दर रूपके धारक हैं इसलिये सूरूप ७४७, उत्तम ऐश्वर्य मे युक्त हैं इसलिये सुभग ७४८, आपने पर पदार्थोंका त्याग कर दिया है इसलिये त्यागी ७४९, सिद्धान्त, समय अथवा आपारके ज्ञाता हैं इसलिये समयज्ञ ७५० और समाधानरूप हैं इसलिये समाहित ७५१ कहलाते हैं ॥१८४॥

मुग्धपूर्वक स्थित रहनेसे सुस्थित ७५२, आरोग्य अथवा आत्मस्वरूपकी निश्चलताको प्राप्त होनेसे स्वास्थ्यभाक् ७५३, आत्मस्वरूपमे स्थित होनेसे स्वस्थ ७५४, कर्मरूप रजमे रहित होनेके कारण नीरजस्क ७५५, सासारिक उत्सवोंसे रहित होनेके कारण निरुद्धव ७५६, कर्मरूपी रजमे रहित होनेके कारण अलेप ७५७, कलङ्करहित आत्मासे युक्त होनेके कारण निष्कल-तामा ७५८, राग आदि दोषोंसे रहित होनेके कारण वीतराग ७५९ और नामारिक निषेधोंकी इच्छासे रहित होनेके कारण गतस्पृह ७६० कहलाते हैं ॥१८५॥ आपने रज्जियोंको बग कर लिया है इसलिये वश्येन्द्रिय ७६१ कहलाते हैं आपकी आत्मा धर्मबन्धनमे

१ मनोज्ञाङ्गो- इ० । २ उत्कृष्टो धव उद्धव उद्धव, निःकलन्तो निरुद्धव । ३ अलङ्कृतज्ञा । ४ मल मय हन्तीति ।

प्रनीदृगुपमाभूतो दिष्टिर्देवमगोचर । अमूर्तो मूर्तिमानेको नैकी नानैकतत्त्वदृक् ॥१८७॥

अध्यात्मगम्यो गम्यात्मा योगविद् योगिवन्दितः । सर्वत्रग सदाभावी^१ त्रिकालविषयार्थदृक् ॥१८८॥

शकरः शवदो दान्तो^२ दमी क्षान्तिपरायण । अधिपः परमानन्दः परात्मज्ञ परापर^३ ॥१८९॥

त्रिजगद्वल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मङ्गलोदयः । त्रिजगत्पतिपूज्याङ्घ्रिस्त्रिलोकाग्रशिखामणिः ॥१९०॥

इति बृहदादिशतम् ।

छूट गई है इसलिये विमुक्तात्मा ७६२ कहे जाते हैं, आपका कोई भी शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी नहीं है इसलिये नि सपत्न ७६३ कहलाते हैं, इन्द्रियोको जीत लेनेसे जितेन्द्रिय ७६४ कहे जाते हैं, अत्यन्त शान्त होने से प्रशान्त ७६५ है, अनन्ततेजके धारक ऋषि होनेसे अनन्त धार्मर्षि ७६६ है, मगलरूप होनेसे मङ्गल ७६७ है, मलको नष्ट करनेवाले है इसलिये मलहा ७६८ कहलाते हैं और व्यसन अथवा दुखसे रहित है इसलिये अनघ ७६९ कहे जाते हैं* ॥१८६॥ आपके समान अन्य कोई नहीं है इसलिये आप अनीदृक् ७७० कहलाते हैं, सबके लिये उपमा देने योग्य है इसलिये उपमाभूत ७७१ कहे जाते हैं, सब जीवोंके भाग्यस्वरूप होनेके कारण दिष्टि ७७२ और देव ७७३ कहलाते हैं, इन्द्रियोंके द्वारा जाने नहीं जा सकते अथवा केवलज्ञान होनेके बाद ही आप गो अर्थात् पृथिवीपर विहार नहीं करते किन्तु आकाशमे गमन करते हैं इसलिये अगोचर ७७४ कहे जाते हैं, रस गन्ध स्पर्शसे रहित होनेके कारण अमूर्त ७७५ है, शरीररहित है इसलिये मूर्तिमान् ७७६ कहलाते हैं, अद्वितीय है इसलिये एक ७७७ कहे जाते हैं, अनेक गुणोंसे सहित है इसलिये नैक ७७८ कहलाते हैं और आत्माको छोड़कर आप अन्य अनेक पदार्थोंको नहीं देखते—उनमे तल्लीन नहीं होते इसलिये नानैकतत्त्वदृक् ७७९ कहे जाते हैं ॥१८७॥ अध्यात्मशास्त्रोंके द्वारा जानने योग्य होनेसे अध्यात्मगम्य ७८०, मिथ्यादृष्टि जीवोंके जानने योग्य न होनेसे अगम्यात्मा ७८१, योगके जानकार होनेसे योगविद् ७८२, योगियोंके द्वारा वन्दना किये जानेसे योगिवन्दित ७८३ केवल ज्ञानकी अपेक्षा सब जगह व्याप्त होनेसे सर्वत्रग ७८४, सदा विद्यमान रहनेसे सदाभावी ७८५, और त्रिकालविषयक समस्त पदार्थोंको देखनेसे त्रिकालविषयार्थदृक् ७८६ कहलाते हैं, ॥१८८॥ सबको सुखके करनेवाले होनेसे शकर ७८७, सुखके बतलानेवाले होनेसे शवद ७८८, मनको वश करनेसे दान्त ७८९, इन्द्रियोका दमन करनेसे दमी ७९०, क्षमा धारण करनेसे तत्पर होनेसे क्षान्तिपरायण ७९१, सबके स्वामी होनेसे अधिप ७९२, उत्कृष्ट आनन्दरूप होनेसे परमानन्द ७९३, उत्कृष्ट अथवा पर और निजकी आत्माको जाननेसे परात्मज्ञ ७९४, और श्रेष्ठसे श्रेष्ठ होनेके कारण परात्पर ७९५ कहलाते हैं ॥१८९॥ तीनों लोकोंके प्रिय अथवा स्वामी होनेसे त्रिजगद्वल्लभ ७९६, पूजनीय होनेसे अभ्यर्च्य ७९७, तीनों लोकोंमे मङ्गलदाता होनेसे त्रिजगन्मङ्गलोदय ७९८, तीनों लोकोंके इन्द्रों द्वारा पूजनीय चरणोंसे युक्त होनेके कारण त्रिजगत्पतिपूज्याङ्घ्रि ७९९ और कुछ समयके बाद तीनों लोकोंके अग्रभागपर चूडामणिके समान विराजमान होनेके कारण त्रिलोकाग्रशिखामणि ८०० कह-

१ प्रमाणानुपातिनी मति । २ स्तुत्यम् । ३ अनेकैकतत्त्वदर्शी । ४ ध्यानगोचर ।

५ नित्याभिप्रायवान् । ६ दमित । ७ सार्वकालीनः । परात्पर — ल० ।

*यद्यपि ६४७ वा नाम भी अनघ है इसलिये ७६९ वा अनघ नाम पुनरुक्त सा मालूम होता है परन्तु अध शब्दके 'अध तु व्यसने दुखे दुरिते च नपुसकम्' अनेक अर्थ होनेसे पुनरुक्तिका दोष दूर हो जाता है ।

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढव्रत । सर्वलोकातिग पूज्य सर्वलोकैकसारथि ॥१६१॥
पुराण. पुरुषः पूर्वं कृतपूर्वाङ्गविस्तर । आदिदेव पुराणाद्य पुरुदेवोऽधिदेवता ॥१६२॥
युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादिस्थितिदेशकः । कल्याणवर्णं कल्याण कल्य^२ कल्याणलक्षण ॥१६३॥
कल्याणप्रकृतिर्दीप्त^३कल्याणात्मा विकल्मष । विकलङ्क^४ कलातीत कलिलघ्न. कलाधर. ॥१६४॥
देवदेवो जगन्नाथो जगद्वन्धुर्जगद्विभु । जगद्वितैपी लोकज्ञः सर्वगो^५ जगदग्रज ॥१६५॥
चराचरगुह्योऽप्यो गूढात्मा गूढ^६गोचर. । सद्योजात. प्रकाशात्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभ ॥१६६॥

जाते हैं ॥१९०॥ तीनों कालसम्बन्धी समस्त पदार्थोंको देखनेवाले हैं इसलिये त्रिकालदर्शी ८०१, लोकोंके स्वामी होनेसे लोकेश ८०२, समस्त लोगोंके पोषक या रक्षक होनेसे लोकधाता ८०३, व्रतोंको स्थिर रखनेसे दृढव्रत ८०४, सब लोकोंसे श्रेष्ठ होनेके कारण सर्वलोकातिग ८०५, पूजाके योग्य होनेसे पूज्य ८०६, और सब लोगोंको मुख्यरूपसे अभीष्ट स्थान तक पहुँचानेमें समर्थ होनेसे सर्वलोकैकसारथि ८०७ कहलाते हैं ॥१९१॥ सबसे प्राचीन होनेसे पुराण ८०८, आत्माके श्रेष्ठ गुणोंको प्राप्त होनेसे पुरुष ८०९, सर्व प्रथम होनेसे पूर्व ८१०, अङ्ग और पूर्वोंका विस्तार करनेसे कृतपूर्वाङ्गविस्तर ८११, सप्त देवोंमें मुख्य होनेसे आदिदेव ८१२, पुराणोंमें प्रथम होनेसे पुराणाद्य ८१३, महान् अथवा प्रथम तीर्थ कर होनेसे पुरुदेव ८१४, और देवोंके भी देव होनेसे अधिदेवता ८१५, कहलाते हैं ॥१९२॥ इस अवसरपिणी युगके मुख्य पुरुष होनेसे युगमुख्य ८१६, इसी युगमें सबसे बड़े होनेसे युगज्येष्ठ ८१७, कर्मभूमिरूप युगके प्रारम्भमें तत्कालोचित मर्यादाके उपदेशक होनेसे युगादिस्थितिदेशक ८१८, कल्याण अर्थात् सुवर्णके समान कान्तिके धारक होनेसे कल्याणवर्ण ८१९, कल्याणरूप होनेसे कल्याण ८२०, मोक्ष प्राप्त करनेमें सज्ज अर्थात् तत्पर अथवा निरामय-नीरोग होनेसे कल्य ८२१, और कल्याणकारी लक्षणोंसे युक्त होनेके कारण कल्याणलक्षण ८२२ कहलाते हैं ॥१९३॥ आपका स्वभाव कल्याणरूप है इसलिये आप कल्याण प्रकृति ८२३ कहलाते हैं, आपकी आत्मा देदीप्यमान सुवर्ण के समान निर्मल है इसलिये आप दीप्तकल्याणात्मा ८२४ कहे जाते हैं, कर्मकालिमासे रहित है इसलिये विकल्मष ८२५ कहलाते हैं, कलङ्करहित है इसलिये विकलङ्क ८२६ कहे जाते हैं, शरीररहित है इसलिये कलातीत ८२७ कहलाते हैं, पापोंको नष्ट करने वाले हैं इसलिये कलिलघ्न ८२८ कहे जाते हैं, और अनेक कलाओंको धारण करने वाले हैं इसलिये कलाधर ८२९ माने जाते हैं ॥१९४॥ देवोंके देव होनेसे देवदेव ८३०, जगत् के स्वामी होनेसे जगन्नाथ ८३१, जगत्के भाई होनेसे जगद्वन्धु ८३२, जगत्के स्वामी होनेमें जगद्विभु ८३३, जगत्का हित चाहनेवाले होनेसे जगद्वितैपी ८३४, लोकोंको जाननेसे लोकज्ञ ८३५, सब जगह व्याप्त होनेसे सर्वग ८३६ और जगत्में सबमें ज्येष्ठ होनेके कारण जगदग्रज ८३७ कहलाते हैं ॥१९५॥ चर, स्थावर मभीके गुह्य होनेमें चराचर-गुह्य ८३८, बड़ी सावधानीके साथ हृदयमें सुरक्षित रखनेसे गोप्य ८३९, गूढ स्वरूपके भाग्य होनेसे गूढात्मा ८४०, अत्यन्त गूढ विषयोंको जाननेमें गूढगोचर ८४१, तत्कालमें प्रकट हुएके समान निर्विकार होनेसे सद्योजात ८४२, प्रकाशस्वरूप होनेमें प्रकाशात्मा ८४३ और जलती हुई अग्निके समान शरीरकी प्रभाके धारक होनेमें ज्वलज्ज्वलनसप्रभ

१ सर्वलोकेश्वर एक एव नेता । २ प्रशस्त । ३ दीप्तमानात्मा ज० । ४ सर्वगो - २० । ५ सर्वगो - २०, ३०, ४० । ६ गूढेन्द्रिय ।

आदित्यवर्णो भर्माभिः सुप्रभः कनकप्रभः । सुवर्णवर्णो रुक्माभिः सूर्यकोटिसमप्रभः ॥१९७॥
 तपनीयनिभस्तुङ्गगो वालार्काभोजनलप्रभः । सन्ध्याभ्रवभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरच्छवि ॥१९८॥
 निष्टप्तकनकच्छायः कनत्काञ्चनसन्निभः । हिरण्यवर्णः स्वर्णाभिः शातकुम्भनिभप्रभः ॥१९९॥
 द्युम्नाभो जातरूपाभस्तप्तजाम्बूनदद्युतिः । सुधौतकलधौतश्री प्रदीप्तो हाटकद्युतिः ॥२००॥
 शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरः क्षमः । शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघा प्रशास्ता शासिता स्वभू ॥२०१॥
 शान्तिनिष्ठो मुनिज्येष्ठः शिवतातिः^१ शिवप्रदः । शान्तिदः शान्तिकृच्छान्तिः कान्तिमान्कामितप्रदः ॥२०२॥
^२श्रेयानिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठा प्रतिष्ठितः^३ । सुस्थिरः स्थावरः स्थास्तुः^४ प्रथीयान्^५ प्रवित पृथु ॥२०३॥
 इति त्रिकालदर्श्यादिशतम् ।

८४४ कहलाते है ॥१९६॥ सूर्यके समान तेजस्वी होनेसे आदित्यवर्ण ८४५, सुवर्णके समान कान्तिवाले होनेसे भर्माभि ८४६, उत्तमप्रभासे युक्त होनेके कारण सुप्रभ ८४७, सुवर्णके समान आभा होनेसे कनकप्रभ ८४८, सुवर्णवर्ण ८४९ और रुक्माभ ८५० तथा करोडो सूर्योके समान देदीप्यमान प्रभाके धारक होनेसे सूर्यकोटिसमप्रभ ८५१ कहे जाते है ॥१९७॥ सुवर्णके समान भास्वर होनेसे तपनीयनिभ ८५२, ऊचा शरीर होनेसे तुङ्ग ८५३, प्रातः कालके सूर्यके समान वालप्रभाके धारक होनेसे वालार्काभि ८५४, अग्निके समान कान्तिवाले होनेसे अनलप्रभ ८५५, सन्ध्याकालके वादलोके समान सुन्दर होनेसे सन्ध्याभ्रवभ्रु ८५६, सुवर्णके समान आभावाले होनेसे हेमाभ ८५७ और तपाये हुए सुवर्णके समान प्रभासे युक्त होनेके कारण तप्तचामीकरप्रभ ८५८ कहलाते है ॥१९८॥ अत्यन्त तपाये हुए सुवर्णके समान कान्तिवाले होनेसे निष्टप्तकनकच्छाय ८५९, देदीप्यमान सुवर्णके समान उज्ज्वल होनेसे कनत्काञ्चनसन्निभ ८६० तथा सुवर्णके समान वर्ण होनेसे हिरण्यवर्ण ८६१, स्वर्णाभि ८६२, शातकुम्भनिभप्रभ ८६३, द्युम्नाभ ८६४, जातरूपाभ ८६५, तप्तजाम्बूनदद्युति ८६६, सुधौतकलधौतश्री ८६७ और हाटकद्युति ८६८ तथा देदीप्यमान होनेसे प्रदीप्त ८६९ कहलाते है ॥१९९-२००॥ शिष्ट अर्थात् उत्तम पुरुषोके इष्ट होनेसे शिष्टेष्ट ८७०, पुष्टिको देनेवाले होनेसे पुष्टिद ८७१, बलवान् होनेसे अथवा लाभान्तराय कर्मके क्षयसे प्रत्येक समय प्राप्त होनेवाले अनन्त शुभ पुद्गलवर्गणाओसे परमौदारिक शरीरके पुष्ट होनेसे पुष्ट ८७२, प्रकट दिखाई देनेसे स्पष्ट ८७३, स्पष्ट अक्षर होनेसे स्पष्टाक्षर ८७४, समर्थ होनेसे क्षम ८७५, कर्मरूप शत्रुओको नाश करनेसे शत्रुघ्न ८७६, शत्रु रहित होनेसे अप्रतिघ ८७७, सफल होनेसे अमोघ ८७८, उत्तम उपदेशक होनेसे प्रशास्ता ८७९, रक्षक होनेसे शासिता ८८० और अपने आप उत्पन्न होनेसे स्वभू ८८१ कहलाते है ॥२०१॥ शान्त होनेसे शान्तिनिष्ठ ८८२, मुनियोमे श्रेष्ठ होनेसे मुनिज्येष्ठ ८८३, कल्याण परम्पराके प्राप्त होनेसे शिवताति ८८४, कल्याण अथवा मोक्ष प्रदान करनेसे शिवप्रद ८८५, शान्तिको देनेवाले होनेसे शान्तिद ८८६, शान्तिके कर्ता होनेसे शान्तिकृत् ८८७, शान्तस्वरूप होनेसे शान्ति ८८८, कान्तियुक्त होनेसे कान्तिमान् ८८९ और इच्छित पदार्थ प्रदान करनेसे कामितप्रद ८९० कहलाते है ॥२०२॥ कल्याणके भण्डार होनेसे श्रेयोनिधि ८९१, धर्मके आधार होनेसे अधिष्ठान ८९२, अन्यकृत प्रतिष्ठासे रहित होनेके कारण अप्रतिष्ठ ८९३, प्रतिष्ठा अर्थात् कीर्तिसे युक्त होनेके कारण प्रतिष्ठित ८९४, अतिशय स्थिर होनेसे सुस्थिर ८९५, विहार रहित होनेसे स्थावर ८९६, अचल होनेसे स्थाणु ८९७,

१ सन्ध्याकालमेघवत् पिङ्गलः । २ कनकप्रभा । ३ सुखपरम्पर । ४ श्रेयोनिधि अ०, ल०, स० । ५ स्थैर्यवान् । ६ सुस्थितः द०, ल०, अ०, प०, इ० । स्थाणुः ल०, अ० । ७ -अतिशयेन पृथुः ।

दिग्वासा वातरशनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः । निष्किञ्चनो निराशंसो^१ ज्ञानचक्षुरमो^२मुह ॥२०४॥
 तेजोराशिरनन्तोजा ज्ञानाद्धिः शीलसागरः । तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्तमो^३पह^४ ॥२०५॥
 जगच्चूडामणिर्दीप्त शब्दा^५न्विघ्नविनायक^६ । कलिघ्न^७ कर्मशत्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशक ॥२०६॥
 अनिद्रालु रतन्द्रालुर्जगरुकः^८ प्रनामय^९ । लक्ष्मीपतिर्जगज्योतिर्धर्मराजः प्रजाहितः ॥२०७॥
 मुमुक्षुर्बन्धमोक्षज्ञो जिताक्षो जितमन्मथः । प्रशान्तरसशैलूपो^{१०} भव्यपेटक^{११}नायक ॥२०८॥
 मूलकर्त्ता^{१२}खि^{१३}लज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणम् । आप्तो वागीश्वर श्रेयान् श्रायसोक्ति^{१४}निस्तवाक् ॥२०९॥

अत्यन्त विस्तृत होनेसे प्रथीयान् ८९८, प्रसिद्ध होनेसे प्रथित ८९९ और ज्ञानादि गुणोकी अपेक्षा महान् होनेसे पृथु ९०० कहलाते हैं ॥२०३॥

दिशास्त्र वस्त्रोको धारण करने—दिगम्बर रहनेसे दिग्वासा ९०१, वायुरूपी कण्ठनीको धारण करनेसे वातरशन ९०२, निर्ग्रन्थ मुनियोके स्वामी होनेसे निर्ग्रन्थेश ९०३, वस्त्र रहित होनेसे निरम्बर ९०४, परिग्रह रहित होनेसे निष्किञ्चन ९०५, इच्छा रहित होनेसे निराशंस ९०६, ज्ञानरूपी नेत्रके धारक होनेसे ज्ञानचक्षु ९०७ और मोहसे रहित होनेके कारण अमोमुह ९०८ कहलाते हैं ॥२०४॥ नेत्रके समूह होनेसे तेजोराशि ९०९, अनन्त प्रतापके धारक होनेसे अनन्तोज ९१०, ज्ञानके समुद्र होनेसे ज्ञानाद्धि ९११, शीलके समुद्र होनेसे शीलसागर ९१२, तेजस्वरूप होनेसे तेजोमय ९१३, अपरिमित ज्योतिके धारक होनेसे अमितज्योति ९१४, भास्वर शरीर होनेसे ज्योतिर्मूर्ति ९१५ और अज्ञानरूप अन्धकारको नष्ट करनेवाले होनेसे तमोऽपह ९१६ कहलाते हैं ॥२०५॥ तीनों लोकोमें मस्तकके रत्नके समान अतिशय श्रेष्ठ होनेसे जगच्चूडामणि ९१७, देदीप्यमान होनेसे दीप्त ९१८, सुखी अथवा शान्त होनेसे शिवान् ९१९, विघ्नोके नाशक होनेसे विघ्नविनायक ९२०, कलह अथवा पापको नष्ट करनेसे कलिघ्न ९२१, कर्मरूप शत्रुओके घातक होनेसे कर्मशत्रुघ्न ९२२ और लोक तथा अलोकको प्रकाशित करनेसे लोकालोकप्रकाशक ९२३ कहलाते हैं ॥२०६॥ निद्रा रहित होनेसे अनिद्रालु ९२४, तन्द्रा-आलस्य रहित होनेसे अतन्द्रालु ९२५, सदा जागृत रहनेसे जागरुक ९२६, ज्ञानमय रहनेसे प्रनामय ९२७, अनन्त चतुष्टयरूप लक्ष्मीके स्वामी होनेसे लक्ष्मीपति ९२८, जगत् को प्रकाशित करनेसे जगज्ज्योति ९२९, अहिंसा धर्मके राजा होनेसे धर्मराज ९३० और प्रजाके हितैषी होनेसे प्रजाहित ९३१ कहलाते हैं ॥२०७॥ मोक्षके मुमुक्षु होनेसे मुमुक्षु ९३२, बन्ध और मोक्षका स्वरूप जाननेसे बन्ध मोक्षज्ञ ९३३, इन्द्रियो को जीतनेसे जिताक्ष ९३४, कामको जीतनेसे जितमन्मथ ९३५, अत्यन्त गान्तरूपी रसको परीक्षण करनेके लिये नष्टके समान होनेसे प्रशान्तरसशैलूप ९३६ और भव्यममहके स्वामी होनेसे भव्यपेटकनायक ९३७ कहलाते हैं ॥२०८॥ धर्मके आद्यवक्ता होनेसे मूलकार्त्ता ९३८, समस्त पदार्थोंको प्रकाशित करनेसे अखिलज्योति ९३९, कर्ममलको नष्ट करनेसे मूलघ्न ९४०, मोक्षमार्गके मुख्य कारण होनेसे मूलकारण ९४१, यथार्थवक्ता होनेसे आप्त ९४२, वाग्वक्ता होनेसे वागीश्वर ९४३, कल्याणस्वरूप होनेसे श्रेयान् ९४४, कल्याणरूप वाणीके होनेसे श्रायसोक्ति ९४५ और सार्थकवचन होनेसे निस्तवाक् ९४६ कहलाते हैं ॥२०९॥

१ निर्ग्रन्थ । २ भृश निर्मोह । ३ आश्रित्य । ४ शब्द नृत्तमन्मथनीति । ५ अन्तराश्रित्य । ६ दीप्यमान । ७ जागरुकोति । ८ ज्ञानमय । ९ उपायानन्तरं । १० मन्मथ । ११ अखिलज्योति । १२ प्रशस्तवाक् ।

प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्वभाववित् । सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः ॥२१०॥
 श्रीश. श्रीश्रितपादाब्जो वीतभीरभयङ्करः । उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सल ॥२११॥
 लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधी । धीरधीर्बुद्धसन्मार्गः शुद्धः सूनृतपूतवाक् ॥२१२॥
 प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिर्नियमितेन्द्रियः । भदन्तो^१ भद्रकृ^२द्भद्रः^३ कल्पवृक्षो वरप्रद ॥२१३॥
 समुन्मूलितकर्मारिः कर्मकाष्ठाशु^४शुक्षणिः । कर्मण्यः^५ कर्मठ^६ प्राशु^७हेयादेयविचक्षणः ॥२१४॥
 अनन्तशक्तिरच्छेद्यः त्रिपुरारि^८स्त्रिलोचनः^९ । त्रिनेत्रस्त्र्यम्बकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः ॥२१५॥

श्रेष्ठवक्ता होनेसे प्रवक्ता ९४७, वचनोके स्वामी होनेसे वचसामीश ९४८, कामदेवको जीतनेके कारण मारजित् ९४९, ससारके समस्त पदार्थोको जाननेसे विश्वभाववित् ९५०, उत्तम शरीरसे युक्त होनेके कारण सुतनु ९५१, शीघ्र ही शरीर बन्धनसे रहित हो मोक्षकी प्राप्ति होनेसे तनुनिर्मुक्त ९५२, प्रशस्त विहायोगति नामकर्मके उदयसे आकाशमे उत्तम गमन करने, आत्मस्वरूपमे तल्लीन होने अथवा उत्तमज्ञानमय होनेसे सुगत ९५३ और मिथ्यानयोको नष्ट करनेसे हतदुर्नय ९५४ कहलाते हैं ॥२१०॥ लक्ष्मीके ईश्वर होनेसे श्रीश ९५५ कहलाते हैं, लक्ष्मी आपके चरण कमलोकी सेवा करती है इसलिये श्रीश्रित-पादाब्ज ९५६ कहे जाते हैं, भयरहित है इसलिये वीतभी ९५७ कहलाते हैं, दूसरोका भय नष्ट करनेवाले है इसलिये अभयकर ९५८ माने जाते हैं, समस्त दोषोको नष्ट कर दिया है इसलिये उत्सन्नदोष ९५९ कहलाते हैं, विघ्न रहित होनेसे निर्विघ्न ९६०, स्थिर होनेसे निश्चल ९६१ और लोगोके स्नेहपात्र होनेसे लोक-वत्सल ९६२ कहलाते हैं ॥ २११ ॥ समस्त लोगोमे उत्कृष्ट होनेसे लोकोत्तर ९६३, तीनों लोकोके स्वामी होनेसे लोकपति ९६४, समस्त पुरुषोके नेत्रस्वरूप होनेसे लोकचक्षु ९६५, अपरिमित बुद्धिके धारक होनेसे अपारधी ९६६, सदा स्थिर बुद्धिके धारक होनेसे धीरधी ९६७, समीचीन मार्गको जान लेनेसे बुद्धसन्मार्ग ९६८, कर्ममलसे रहित होनेके कारण शुद्ध ९६९ और सत्य तथा पवित्र वचन बोलनेसे सत्यसूनृतवाक् ९७० कहलाते हैं ॥२१२॥ बुद्धिकी पराकाष्ठाको प्राप्त होनेसे प्रज्ञापारमित ९७१, अतिशय बुद्धिमान् होनेसे प्राज्ञ ९७२, विषय कषायोसे उपरत होनेके कारण यति ९७३, इन्द्रियोको वश करनेसे नियमितेन्द्रिय ९७४, पूज्य होनेसे भदन्त ९७५, सब जीवोका भला करनेसे भद्रकृत् ९७६, कल्याणरूप होनेसे भद्र ९७७, मनचाही वस्तुओका दाता होनेसे कल्पवृक्ष ९७८ और इच्छित वर प्रदान करनेसे वरप्रद ९७९ कहलाते हैं ॥२१३॥ कर्मरूप शत्रुओको उखाड़ देनेसे समुन्मूलितकर्मारि ९८०, कर्मरूप ई धनको जलानेके लिये अग्निके समान होनेसे कर्मकाष्ठाशुशुक्षणि ९८१, कार्य करनेमे निपुण होनेसे कर्मण्य ९८२, समर्थ होनेसे कर्मठ ९८३, उत्कृष्ट अथवा उन्नत होनेसे प्राशु ९८४ और छोड़ने तथा ग्रहण करने योग्य पदार्थोके जाननेमे विद्वान् होनेसे हेयादेयविचक्षण ९८५ कहलाते हैं ॥२१४॥ अनन्त-शक्तियोके धारक होनेसे अनन्तशक्ति ९८६, किसीके द्वारा छिन्न-भिन्न करने योग्य न होनेसे अच्छेद्य ९८७, जन्म जरा और मरण इन तीनोंका नाश करनेसे त्रिपुरारि ९८८, त्रिकालवर्ती पदार्थोके जाननेसे त्रिलोचन ९८९, त्रिनेत्र ९९०, त्र्यम्बक ९९१ और त्र्यक्ष ९९२ तथा केवलज्ञानरूप नेत्रसे सहित होनेके कारण केवलज्ञानवीक्षण ९९३ कहलाते

१ निरस्तदोषः । २ पूज्यः । ३ सुखकरः । ४ शोभनः । ५ कर्मेन्धनकृशानुः । ६ कर्मणि साधु । ७ कर्मशूरः । ८ उन्नतः । ९ जन्मजरामरणत्रिपुरहरः । १० त्रिकालविषयावबोधार्थ त्रिलोचनः ।

समन्तभद्र^१ शान्तारिः धर्माचार्यो दयानिधिः । सूक्ष्मदर्शी जितानङ्गः कृपालुर्वर्मदेशकः ॥२१६॥

शुभ^२ सुखसाद्भूतः^३ पुण्यराशि^४ रनामयः । धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायकः ॥२१७॥

इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम् ।

पान्मा पते तवामूनि नामान्यागमकोविदैः । समुच्चितान्यनुध्यायन् पुमान् 'पूतस्मृतिर्भवेत् ॥२१८॥

गोचरोऽपि गिरामासा त्वमवागोचरो मतः । स्तोता तथाप्यसन्दिग्धं त्वत्तोऽभीष्टफल भजेत् ॥२१९॥

त्वमतोऽसि जगद्वन्धुः त्वमतोऽसि जगद्भिषक् । त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः ॥२२०॥

त्वमेक जगता ज्योति त्वं 'द्विरूपोपयोगभाक् । त्वं 'त्रिरूपैकमुक्त्यङ्गः स्वोत्थानन्तचतुष्टयः ॥२२१॥

त्वं 'पञ्चब्रह्मतत्त्वात्मा पञ्चकल्याणनायकः । 'षड्भेदभावतत्त्वज्ञ त्वं सप्तनयसङ्ग्रहः ॥२२२॥

'दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्व नवकेवललब्धिकः । दशावतार^{११} निर्धार्यो मा पाहि परमेश्वर ॥२२३॥

युष्मन्नामावलीदृग्ध^{१२} विलसत्स्तोत्रमालया । भवन्त परिवस्याम^{१३} प्रसीदानुगृहाण नः ॥२२४॥

हं ॥२१५॥ सब ओरसे मगलरूप होनेके कारण समन्तभद्र ९९४, कर्मरूप गन्धुओके शान्त हो जानेसे शान्तारि ९९५, धर्मके व्यवस्थापक होनेसे धर्माचार्य ९९६, दयाके भण्डार होनेसे दयानिधि ९९७, सूक्ष्म पदार्थोंको भी देखनेसे सूक्ष्मदर्शी ९९८, कामदेवको जीत लेनेसे जितानङ्ग ९९९, कृपायुक्त होनेसे कृपालु १०००, और धर्मके उपदेशक होनेसे धर्मदेशक १००१ कहलाते हैं ॥२१६॥ शुभ युक्त होनेसे शुभयु १००२, सुखके आधीन होनेसे सुखसाद्भूत १००३, पुण्यके समूह होनेसे पुण्यराशि १००४, रोग रहित होनेसे अनामय १००५, धर्मकी रक्षा करनेसे धर्मपाल १००६, जगत्की रक्षा करनेसे जगत्पाल १००७ और धर्मरूपी साम्राज्यके स्वामी होनेसे धर्मसाम्राज्यनायक १००८ कहलाते हैं ॥२१७॥

हे तेजके अधिपति जिनेन्द्रदेव, आगमके ज्ञाता विद्वानोंने आपके ये एक हजार आठ नाम सचित किये हैं, जो पुरुष आपके इन नामोंका ध्यान करता है उसकी स्मरणशक्ति अत्यन्त पवित्र हो जाती है ॥२१८॥ हे प्रभो, यद्यपि आप इन नामसूचक वचनोंके गोचर हैं तथापि वचनोंके अगोचर ही माने गये हैं यह सब कुछ है परन्तु स्तुति करनेवाला आपसे निःसन्देह अभीष्ट फलको पा लेता है ॥२१९॥ इसलिये हे भगवन्, आप ही इस जगत्के बन्धु हैं, आप ही जगत् के वैद्य हैं, आप ही जगत्का पोषण करनेवाले हैं और आप ही जगत्का हित करनेवाले हैं ॥२२०॥ हे नाथ, जगत्को प्रकाशित करनेवाले आप एक ही हैं । ज्ञान तथा दर्शन इस प्रकार द्विविध उपयोगके धारक होनेसे दो रूप हैं, सम्यग्दर्शन सम्मज्ज्ञान और सम्यक्चारित्र्य इस प्रकार त्रिविध मोक्षमार्गमय होनेसे तीन रूप हैं, अपने आप में उत्पन्न हुए अनन्तचतुष्टयरूप होनेसे चार रूप हैं ॥२२१॥ पञ्च परमेष्ठी रूप होने अथवा गर्भादि पञ्च कल्याणकोंके नायक होनेसे पांच रूप हैं, जीव-पुद्गल, धर्म-धर्म, आकाश और काल इन छह द्रव्योंके ज्ञाता होनेसे छह रूप हैं, तंगम आदि सात नयोंके सगहस्वरूप होने से सात रूप हैं, सम्यक्त्व आदि आठ अशौकित गुणरूप होनेसे आठ रूप हैं, नौ केवललब्धियोंमें सहित होनेके कारण नव रूप हैं और दशवतार आदि दश अवतारोंसे आपका निर्धार होता है इसलिये दश रूप हैं उन प्रकार परमेश्वर, मसारके दुश्मनों मेरी रक्षा कीजिये ॥२२२-२२३॥ हे भगवन् हम

१ समन्तात् मज्जतः । २ शुभ युक्तीति । ३ सुखसाद्भूतः । ४ पुण्यराशिर्निगमयः । ५ जितानङ्गः । ६ शान्तारिः । ७ धर्मसाम्राज्यनायकः । ८ पञ्चकल्याणनायकः । ९ षड्भेदभावतत्त्वज्ञः । १० सप्तनयसङ्ग्रहः । ११ दशावतारः । १२ विलसत्स्तोत्रमालया । १३ परिवस्यामः । १४ प्रसीदानुगृहाण नः ।

प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विष्वभाववित् । सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः ॥२१०॥

श्रीश श्रीश्रितपादाब्जो वीतभीरभयङ्करः । उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सल ॥२११॥

लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधी । धीरधीर्बुद्धसन्मार्गः शुद्धः सूनृतपूतवाक् ॥२१२॥

प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिर्नियमितेन्द्रियः । भदन्तो^१ भद्रकृ^२द्भद्रः^३ कल्पवृक्षो वरप्रदः ॥२१३॥

समुन्मीलितकर्मारिः कर्मकाष्ठाशु^४शुक्षणिः । कर्मण्यः^५ कर्मठः^६ प्राशु^७हेयादेयविचक्षणः ॥२१४॥

अनन्तशक्तिरच्छेद्यः त्रिपुरारि^८स्त्रिलोचनः^९ । त्रिनेत्रस्त्र्यम्बकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः ॥२१५॥

श्रेष्ठवक्ता होनेसे प्रवक्ता ९४७, वचनोके स्वामी होनेसे वचसामीश ९४८, कामदेवको जीतनेके कारण मारजित् ९४९, ससारके समस्त पदार्थोंको जाननेसे विष्वभाववित् ९५०, उत्तम शरीरसे युक्त होनेके कारण सुतनु ९५१, शीघ्र ही शरीर बन्धनसे रहित हो मोक्षकी प्राप्ति होनेसे तनुनिर्मुक्त ९५२, प्रशस्त विहायोगति नामकर्मके उदयमें आकाशमें उत्तम गमन करने, आत्मस्वरूपमें तल्लीन होने अथवा उत्तमज्ञानमय होनेमें सुगत ९५३ और मिथ्यानयोको नष्ट करनेसे हतदुर्नय ९५४ कहलाते हैं ॥२१०॥ लक्ष्मीके ईश्वर होनेसे श्रीश ९५५ कहलाते हैं, लक्ष्मी आपके चरण कमलोकी सेवा करती है इसलिये श्रीश्रित-पादाब्ज ९५६ कहे जाते हैं, भयरहित है इसलिये वीतभी ९५७ कहलाते हैं, दूसरोका भय नष्ट करनेवाले है इसलिये अभयकर ९५८ माने जाते हैं, समस्त दोषोंको नष्ट कर दिया है इसलिये उत्सन्नदोष ९५९ कहलाते हैं, विघ्न रहित होनेसे निर्विघ्न ९६०, स्थिर होनेसे निश्चल ९६१ और लोगोके स्नेहपात्र होनेसे लोक-वत्सल ९६२ कहलाते हैं ॥ २११ ॥ समस्त लोगोमें उत्कृष्ट होनेसे लोकोत्तर ९६३, तीनों लोकोके स्वामी होनेसे लोकपति ९६४, समस्त पुरुषोंके नेत्रस्वरूप होनेसे लोकचक्षु ९६५, अपरिमित बुद्धिके धारक होनेसे अपारधी ९६६, सदा स्थिर बुद्धिके धारक होनेसे धीरधी ९६७, समीचीन मार्गोंको जान लेनेसे बुद्धसन्मार्ग ९६८, कर्ममलसे रहित होनेके कारण शुद्ध ९६९ और सत्य तथा पवित्र वचन बोलनेसे सत्यसूनृतवाक् ९७० कहलाते हैं ॥२१२॥ बुद्धिकी पराकाष्ठाको प्राप्त होनेसे प्रज्ञापारमित ९७१, अतिशय बुद्धिमान् होनेसे प्राज्ञ ९७२, विषय कषायोंसे उपरत होनेके कारण यति ९७३, इन्द्रियोको वश करनेसे नियमितेन्द्रिय ९७४, पूज्य होनेसे भदत् ९७५, सब जीवोंका भला करनेसे भद्रकृत् ९७६, कल्याणरूप होनेसे भद्र ९७७, मनचाही वस्तुओंका दाता होनेसे कल्पवृक्ष ९७८ और इच्छित वर प्रदान करनेसे वरप्रद ९७९ कहलाते हैं ॥२१३॥ कर्मरूप शत्रुओंको उखाड़ देनेसे समुन्मीलितकर्मारि ९८०, कर्मरूप ई धनको जलानेके लिये अग्निके समान होनेसे कर्मकाष्ठाशुशुक्षणि ९८१, कार्य करनेमें निपुण होनेसे कर्मण्य ९८२, समर्थ होनेसे कर्मठ ९८३, उत्कृष्ट अथवा उन्नत होनेसे प्राशु ९८४ और छोड़ने तथा ग्रहण करने योग्य पदार्थोंके जाननेमें विद्वान् होनेसे हेयादेयविचक्षण ९८५ कहलाते हैं ॥२१४॥ अनन्त-शक्तियोंके धारक होनेसे अनन्तशक्ति ९८६, किसीके द्वारा छिन्न-भिन्न करने योग्य न होनेसे अच्छेद्य ९८७, जन्म जरा और मरण इन तीनोंका नाश करनेसे त्रिपुरारि ९८८, त्रिकालवर्ती पदार्थोंके जाननेसे त्रिलोचन ९८९, त्रिनेत्र ९९०, त्र्यम्बक ९९१ और त्र्यक्ष ९९२ तथा केवलज्ञानरूप नेत्रसे सहित होनेके कारण केवलज्ञानवीक्षण ९९३ कहलाते

१ निरस्तदोषः । २ पूज्यः । ३ सुखकरः । ४ शोभनः । ५ कर्मन्धनकृशानुः । ६ कर्मणि साधु । ७ कर्मशूरः । ८ उन्नतः । ९ जन्मजरामरणत्रिपुरहरः । १० त्रिकालविषयावबोधात् त्रिलोचनः ।

समन्तभद्रः^१ शान्तारिः धर्माचार्यो दयानिधिः । सूक्ष्मदर्शी जितानङ्गः कृपालुर्धर्मदेशकः ॥२१६॥

शुभयुः^२ सुखसाद्भूतः^३ पुण्यराशि^४ रनामयः । धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायकः ॥२१७॥

इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम् ।

धाम्नां पते तवामूनि नामान्यागमकोविदः । समुच्चितान्यनुध्यायन् पुमान् पूतस्मृतिर्भवेत् ॥२१८॥

गोचरोऽपि गिरामासा त्वमवागोचरो मतः । स्तोता तथाप्यसन्दिग्धं त्वत्तोऽभीष्टफलं भजेत् ॥२१९॥

त्वमतोऽसि जगद्बन्धुः त्वमतोऽसि जगद्भिषक् । त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः ॥२२०॥

त्वमेक जगता ज्योति त्वं द्विरूपोपयोगभाक् । त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यङ्गः स्वोत्थानन्तचतुष्टयः ॥२२१॥

त्वं पञ्चब्रह्मत्त्वात्मा पञ्चकल्याणनायकः । षड्भेदभावतत्त्वज्ञ त्वं सप्तनयसङ्ग्रहः ॥२२२॥

द्विव्याष्टगुणमूर्तिस्त्व नवकेवललब्धिकः । दशावतार^{११} निर्धार्यो मा पाहि परमेश्वर ॥२२३॥

युष्मन्नामावलीदुग्ध^{१२} विलसत्स्तोत्रमालया । भवन्त परिवस्थामः^{१३} प्रसीदानुगृहाण नः ॥२२४॥

है ॥२१५॥ सब ओरसे मगलरूप होनेके कारण समन्तभद्र ९९४, कर्मरूप शत्रुओके शान्त हो जानेसे शान्तारि ९९५, धर्मके व्यवस्थापक होनेसे धर्माचार्य ९९६, दयाके भण्डार होनेसे दयानिधि ९९७, सूक्ष्म पदार्थोंको भी देखनेसे सूक्ष्मदर्शी ९९८, कामदेवको जीत लेनेसे जितानङ्ग ९९९, कृपायुक्त होनेसे कृपालु १०००, और धर्मके उपदेशक होनेसे धर्मदेशक १००१ कहलाते हैं ॥२१६॥ शुभ युक्त होनेसे शुभयु १००२, सुखके आधीन होनेसे सुखसाद्भूत १००३, पुण्यके समूह होनेसे पुण्यराशि १००४, रोग रहित होनेसे अनामय १००५, धर्मकी रक्षा करनेसे धर्मपाल १००६, जगत्की रक्षा करनेसे जगत्पाल १००७ और धर्मरूपी साम्राज्यके स्वामी होनेसे धर्मसाम्राज्यनायक १००८ कहलाते हैं ॥२१७॥

हे तेजके अधिपति जिनन्द्रदेव, आगमके ज्ञाता विद्वानोंने आपके ये एक हजार आठ नाम सचित किये हैं, जो पुरुष आपके इन नामोका ध्यान करता है उसकी स्मरणशक्ति अत्यन्त पवित्र हो जाती है ॥२१८॥ हे प्रभो, यद्यपि आप इन नामसूचक वचनोंके गोचर हैं तथापि वचनोंके अगोचर ही माने गये हैं यह सब कुछ है परन्तु स्तुति करनेवाला आपसे नि सन्देह अभीष्ट फलको पा लेता है ॥२१९॥ इसलिये हे भगवन्, आप ही इस जगत्के बन्धु हैं, आप ही जगत् के वैद्य हैं, आप ही जगत्का पोषण करनेवाले हैं और आप ही जगत्का हित करनेवाले हैं ॥२२०॥ हे नाथ, जगत्को प्रकाशित करनेवाले आप एक ही हैं । ज्ञान तथा दर्शन इस प्रकार द्विविध उपयोगके धारक होनेसे दो रूप हैं, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र्य इस प्रकार त्रिविध मोक्षमार्गमय होनेसे तीन रूप हैं, अपने आप मे उत्पन्न हुए अनन्तचतुष्टयरूप होनेसे चार रूप हैं ॥२२१॥ पञ्च परमेष्ठी स्वरूप होने अथवा गर्भादि पञ्च कल्याणकोके नायक होनेसे पांच रूप हैं, जीव-पुद्गल, धर्म-अधर्म, आकाश और काल इन छह द्रव्योंके ज्ञाता होनेसे छह रूप हैं, नैगम आदि सात नयोंके सग्रहस्वरूप होने से सात रूप हैं, सम्यक्त्व आदि आठ अलौकिक गुणरूप होनेसे आठ रूप हैं, नौ केवललब्धियोंसे सहित होनेके कारण नव रूप हैं और महाबल आदि दश अवतारोंसे आपका निर्धार होता है इसलिये दश रूप हैं इस प्रकार हे परमेश्वर, ससारके दुखोंसे मेरी रक्षा कीजिये ॥२२२-२२३॥ हे भगवन्, हम

१ समन्तात् मङ्गल । २ शुभ युनक्तीति । ३ सुखाधीनः । ४ पुण्यराशिर्निरामय । ५ पवित्रज्ञानी । ६ ज्ञानदर्शनोपयोग । ७ रत्नत्रयस्वरूप । ८ पञ्चपरमेष्ठीस्वरूपः । ९ षड्द्रव्य-स्वरूप । १० सम्यक्त्वाद्यष्टगुणमूर्ति । अथवा पृथिव्याद्यष्टगुणमूर्ति । ११ महाबलादिपुरुजिन-पर्यन्तदशावतार । १२ रचित । १३ आराधयाम ।

इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः । यः संपाठ पठत्येनं स स्यात् कल्याणभाजनम् ॥२२५॥
 ततः सदेव पुण्यार्थी पुमान् पठतु पुण्यधीः । पौरुहूती श्रियं प्राप्तुं परमामभिलाषुकः ॥२२६॥
 स्तुत्वेति मधवा देवं चराचरजगद्गुरुम् । ततस्तीर्थविहारस्य व्यधात् प्रस्तावनामिमाम् ॥२२७॥
 भगवन् भव्यसस्यानां पापावग्रहशोषिणाम् । धर्मामृतप्रसेकेन त्वमेधि^१ शरणं विभो ॥२२८॥
 भव्यसार्थाधिपप्रोद्यद्दयाध्वजविराजितः । धर्मचक्रमिदं सज्जं त्वज्जयोद्योगसाधनम् ॥२२९॥
 निर्धूय मोहपतना मुक्तिमार्गोपरोधिनीम् । तवोपदेष्टुं सन्मार्गं कालोऽयं समुपस्थितः ॥२३०॥
 इति प्रबुद्धतत्त्वस्य स्वयं भर्तुर्जिगीषतः । पुनरुक्ततरा वाचः प्रादुरासन् शतक्रतोः ॥२३१॥
 अथ त्रिभुवनक्षोभी तीर्थं कृत् पुण्यसारथिः । भव्याब्जानुग्रहं कर्तुम् उत्तस्थे^२ जिनभानुमान् ॥२३२॥
 मोक्षाधिरोहनिःश्रेणीभूतच्छत्रत्रयोद्वुरः^३ । यशः क्षीरोदफेनाभसितचामरवीजितः ॥२३३॥
 ध्वनन्मधुरगम्भीरधीरदिव्यमहाध्वनिः । भानुकोटिप्रतिस्पर्धिप्रभावलयभास्वरः ॥२३४॥
 भूरुप्रहृतगम्भीरध्वनद्दुन्दुभिः प्रभुः । सुरोत्करकरोन्मुक्तपुष्पवर्षाचितक्रमः ॥२३५॥

लोग आपकी नामावलीसे बने हुए स्तोत्रोकी मालासे आपकी पूजा करते हैं, आप प्रसन्न होइए, और हम सबको अनुगृहीत कीजिये ॥२२४॥ भक्त लोग इस स्तोत्रका स्मरण करने मात्रसे ही पवित्र हो जाते हैं और जो इस पुण्य पाठका पाठ करते हैं वे कल्याणके पात्र होते हैं ॥२२५॥ इसलिये जो बुद्धिमान् पुरुष पुण्यकी इच्छा रखते हैं अथवा इन्द्रकी परम विभूति प्राप्त करना चाहते हैं वे सदा ही इस स्तोत्रका पाठ करे ॥२२६॥ इस प्रकार इन्द्रने चर और अचर जगत्के गुरु भगवान् वृषभदेवकी स्तुति कर फिर तीर्थ विहारके लिये नीचे लिखी हुई प्रार्थना की ॥२२७॥ हे भगवन्, भव्य जीवरूपी धान्य पापरूपी अनावृष्टिसे सूख रहे हैं सो हे विभो, उन्हें धर्मरूपी अमृतसे सींचकर उनके लिये आप ही शरण होइए ॥२२८॥ हे भव्य जीवोके समूहके स्वामी, हे फहराती हुई दयारूपी वज्रासे सुशोभित, जिनेन्द्रदेव, आपकी विजयके उद्योगको सिद्ध करनेवाला यह धर्मचक्र तैयार है ॥२२९॥ हे भगवन्, मोक्षमार्गको रोकनेवाली मोहकी सेनाको नष्ट कर चुकनेके बाद अब आपका यह समीचीन मोक्षमार्गके उपदेश देनेका समय प्राप्त हुआ है ॥२३०॥ इस प्रकार जिन्होंने समस्त तत्त्वोका स्वरूप जान लिया है और जो स्वयं ही विहार करना चाहते हैं ऐसे भगवान् वृषभदेवके सामने इन्द्रके वचन पुनरुक्त हुए से प्रकट हुए थे । भावार्थ—उस समय भगवान् स्वयं ही विहार करनेके लिये तत्पर थे इसलिये इन्द्र द्वारा की हुई प्रार्थना व्यर्थ सी मालूम होती थी ॥२३१॥

अथानन्तर—जो तीनो लोकोमे क्षोभ उत्पन्न करनेवाले हैं और तीर्थंकर नामक पुण्य प्रकृति ही जिनका सारथि—सहायक है ऐसे जिनेन्द्रदेवरूपी सूर्य भव्य जीवरूपी कमलोका अनुग्रह करनेके लिये तैयार हुए ॥२३२॥ जो मोक्षरूपी महलपर चढ़नेके लिये सीढियोंके समान छत्रत्रयसे सुशोभित हो रहे हैं, जिनपर क्षीर समुद्रके फेनके समान सुशोभित चमर ढोले जा रहे हैं, मधुर, गभीर, धीर तथा दिव्य महाध्वनिसे जिनका शरीर शब्दायमान हो रहा है, जो करोड़ों सूर्योंसे स्पर्धा करनेवाले भामण्डलसे देदीप्यमान हो रहे हैं, जिनके समीप ही देवताओंके द्वारा वजाये हुए दुन्दुभि गभीर शब्द कर रहे हैं, जो स्वामी हैं, देव-समूहके हाथोंसे छोड़ी हुई पुष्पवर्षासे जिनके चरण कमलोकी पूजा हो रही है, जो मेरु पर्वतकी शिखरके समान अतिशय ऊँचे सिंहासनके स्वामी हैं, छाया और फल सहित अशोकवृक्षसे

१ ज्वत्तरम् ।

२ अनावृष्ट्या इत्यर्थः । 'वृष्टिर्वर्षं तद्विधातेव ग्रहावग्रही समी' इत्यमरः ।

३ 'अन भुवि' । भव ।

४ उदोनूर्ध्वहीतीति तद्, उद्युक्तोऽभूत् ।

५ उत्कट ।

६ सुरताड्यमानः ।

पञ्चविंशतितमं पर्व

मेरुशृङ्गसमुत्तुङ्गसिंहविष्टरनायकः । सच्छायसफलाशोकप्रकटीकृतचेष्टितः ॥२३६॥
 धूलिसालवृतास्थानजगतीपरिमण्डलः । मानस्तम्भनिरुद्धान्यकुदृष्टिमदविभ्रमः ॥२३७॥
 स्वच्छाभ्रखातिकाभ्यर्णव्रततीवनवेष्टिताम् । सभाभूमिमलङ्कुर्वन् अपूर्वविभवोदयाम् ॥२३८॥
 समग्रगोपुरोदग्रैः प्राकारवलपैस्त्रिभिः । परार्धरचनोपैतैः आविष्कृतमहोदयः ॥२३९॥
 अशोकादिवनश्रेणीकृतच्छायसभावनिः । लग्नस्त्राविध्वजोल्लाससमाहूतजगज्जनः ॥२४०॥
 कल्पद्रुमवनच्छायाविश्रान्तामरपूजितः । प्रासादरुद्धभूमिष्ठकिन्नरोद्गीतसद्यशाः ॥२४१॥
 ज्वलन्महोदयस्तूपप्रकटीकृतवैभवः । नाट्यशालाद्वयेद्विसर्वाधितजनोत्सवः ॥२४२॥
 धूपामोदितदिग्भागमहागन्धकुटीश्वरः । त्रिविष्टपपतिप्राज्यपूजार्हः परमेश्वरः ॥२४३॥
 त्रिजगद्वल्लभ श्रीमान् भगवानादिपुरुषः । प्रचक्रे विजयोद्योगधर्मचक्राधिनायकः २४४॥
 ततो भगवदुद्योगसमये समुपेयुषि । प्रचेलुः प्रचलन्मौलिकोटयः सुरकोटयः ॥२४५॥
 तदा सम्भ्रान्तनाकीन्द्रतिरोटोच्चलिता ध्रुवम् । जगन्नीराजयामासुः मणयो दिग्जये विभो ॥२४६॥
 जयत्युर्चंगिरो देवाः प्रोणुवाना नभोज्झणम् । दिशा मुखानि तेजोभिर्द्योतयन्तः प्रतस्थिरे ॥२४७॥
 जिनोद्योगमहावात्याक्षुभिता देवनायकाः । चतुर्निकायाश्चत्वारो महाव्यय इवाभवन् ॥२४८॥
 प्रतस्थे भगवानित्यम् अनुयातः सुरासुरैः । अनिच्छापूर्विकां वृत्तिम् आस्कन्दन्मानुमानिव ॥२४९॥

जिनकी शान्त चेष्टाए प्रकट हो रही है, जिनके समवसरणकी पृथिवीका घेरा धूली-साल नामक कोटसे घिरा हुआ है, जिन्होंने मानस्तम्भोके द्वारा अन्य मिथ्यादृष्टियोंके अहंकार तथा सन्देहको नष्ट कर दिया है, जो स्वच्छ जलसे भरी हुई परिखाके समीपवर्ती लतावनोसे घिरी हुई और अपूर्व वैभवसे सम्पन्न सभाभूमिको अलंकृत कर रहे हैं, समस्त गोपुरद्वारोसे उन्नत और उत्कृष्ट रचनासे सहित तीन कोटोसे जिनका बड़ा भारी माहात्म्य प्रकट हो रहा है, जिनकी सभाभूमिमें अशोकादि वनसमूहसे सघन छाया हो रही है, जो माला वस्त्र आदिसे चिह्नित ध्वजाओकी फडकनसे जगत्के समस्त जीवोको बुलाते हुए से जान पड़ते हैं, कल्प-वृक्षोके वनकी छायामें विश्राम करनेवाले देव लोग सदा जिनकी पूजा किया करते हैं, बड़े बड़े महलोसे घिरी हुई भूमिमें स्थित किन्नरदेव जोर जोरसे जिनका यश गा रहे हैं, प्रकाशमान और बड़ी भारी विभूतिको धारण करनेवाले स्तूपोसे जिनका वैभव प्रकट हो रहा है, दोनो नाट्यशालाओकी बड़ी हुई ऋद्धियोंसे जो मनुष्योका उत्सव बढ़ा रहे हैं, जो धूपकी सुगन्धिसे दशो दिशाओको सुगन्धित करनेवाली बड़ी भारी गन्धकुटीके स्वामी हैं, जो इन्द्रोके द्वारा की हुई बड़ी भारी पूजाके योग्य हैं, तीनो जगत्के स्वामी हैं और धर्मके अधिपति हैं ऐसे श्रीमान् आदिपुरुष भगवान् वर्षभदेवने विजय करनेका उद्योग किया—विहार करना प्रारम्भ किया ॥२३३-२४४॥, तदनन्तर भगवान्के विहारका समय आनेपर जिनके मुकुटोके अग्रभाग हिल रहे हैं ऐसे करोडो देव लोग इधर उधर चलने लगे ॥२४५॥ भगवान्के उस दिग्विजयके समय घबड़ाये हुए इन्द्रोके मुकुटोसे विचलित हुए मणि ऐसे जान पड़ते थे मानो जगत्की आरती ही कर रहे हो ॥२४६॥ उस समय जय जय इस प्रकार जोर जोरसे शब्द करते हुए, आकाशरूपी आगनको व्याप्त करते हुए और अपने तेजसे दिशाओके मुखको प्रकाशित करते हुए देव लोग चल रहे थे ॥२४७॥ उस समय इन्द्रो सहित चारो निकायके देव जिनेंद्र भगवान्के विहाररूपी महावायुसे क्षोभको प्राप्त हुए चार महासागरके समान जान पड़ते थे ॥२४८॥ इन प्रकार सुर और असुरोसे सहित भगवान्ने सूर्यके समान इच्छा रहित वृत्तिको धारण

अर्धमागधिकाकारभाषापरिण^१ताखिल^२ । त्रिजगज्जनतामैत्रीसम्पादितगुणाद्भुतः ॥२५०॥
 स्वसन्निधानसम्कुलफलिताङ्कुरितद्रुमः । आदर्शमण्डलाकारपरि^३वर्तितभूतल ॥२५१॥
 सुगन्धिशिशिरानुच्चै^४रनुयायिसमीरणः । अकस्माज्जनतानन्दसम्पादिपरमोदय ॥२५२॥
 मरुत्कुमार^५सम्पृष्टयोजनान्तररम्यभू^६ । स्तनितामरससिक्तगन्धाम्बुविरजोवनि ॥२५३॥
 मृदुस्पर्शसुखाम्भोजविन्यस्तपदपङ्कजः । शालिव्रीह्यादिसम्पन्नवसुधासूचितागम ॥२५४॥
 शरत्सरोवरस्पर्धिव्योमोदाहृत^७सन्निधि^८ । ककुब्जन्तरवैमल्यसन्दर्शितसमागम ॥२५५॥
 द्युस^९त्परस्परह्वानध्वानरुद्धहरिन्मुख^{१०} । सहस्रारस्फुरद्धर्मचक्ररत्नपुर सर^{११} ॥२५६॥
 पुरस्कृताष्टमा^{१२}ङ्गल्यध्वजमालातताम्बर^{१३} । सुरासुरानुयातोऽभूद्^{१४} विजिही^{१५}र्षुस्तदा विभु ॥२५७॥
 तदा मधुरगम्भीरो जजृम्भे दुन्दुभिध्वनि^{१६} । नभ^{१७} समन्तादापूर्य क्षुब्धदध्विस्वनोपम ॥२५८॥
 ववृषु^{१८} सुमनोवृष्टिम् आपूरितनभोज्झणम् । सुरा भव्यद्विरेफाणा सौमनस्य^{१९}विधायिनीम् ॥२५९॥
 समन्ततः स्फुरन्ति स्म पालिके^{२०}तनकोटय^{२१} । आह्वातुमिव भव्योधान् एतैतेति^{२२} मरुद्धताः ॥२६०॥

कर प्रस्थान किया ॥२४९॥ जिन्होंने अर्धमागधी भाषामे जगत्के समस्त जीवोको कल्याणका उपदेश दिया था जो तीनों जगत्के लोगोमे मित्रता कराने रूप गुणोसे सबको आश्चर्यमे डालते है, जिन्होंने अपनी समीपतासे वृक्षोको फूल फल और अकुरोसे व्याप्त कर दिया है, जिन्होंने पृथिवीमण्डलको दर्पणके आकारमे परिवर्तित कर दिया है, जिनके साथ सुगन्धित शीतल तथा मन्द मन्द वायु चल रही है, जो अपने उत्कृष्ट वैभवसे अकस्मात् ही जन-समुदायको आनन्द पहुँचा रहे है, जिनके ठहरनेके स्थानसे एक योजन तककी भूमिको पवनकुमार जातिके देव भाड-बुहारकर अत्यन्त सुन्दर रखते है, जिनके विहारयोग्य भूमिको मेघकुमार जातिके देव सुगन्धित जलकी वर्षा कर धूलि-रहित कर देते है, जो कोमल स्पर्शसे सुख देनेके लिये कमलोपर अपने चरण-कमल रखते है, शालि व्रीहि आदिसे सपन्न अवस्थाको प्राप्त हुई पृथिवी जिनके आगमनकी सूचना देती है, शरद्ऋतुके सरोवरके साथ स्पर्धा करनेवाला आकाश जिनके समीप आनेकी सूचना दे रहा है, दिशाओके अन्तरालकी निर्मलतासे जिनके समागमकी सूचना प्राप्त हो रही है, देवोके परस्पर-एक दूसरेको बुलानेके लिए प्रयुक्त हुए शब्दोसे जिन्होंने दिशाओके मुख व्याप्त कर दिये है, जिनके आगे हजार अरवाला देदीप्यमान धर्मचक्र चल रहा है, जिनके आगे आगे चलते हुए अष्ट मगल-द्रव्य तथा आगे आगे फहराती हुई ध्वजाओके समूहसे आकाश व्याप्त हो रहा है और जिनके पीछे अनेक सुर तथा असुर चल रहे है ऐसे विहार करनेके इच्छुक भगवान् उस समय बहुत ही अधिक सुशोभित हो रहे थे ॥२५०-२५७॥ उस समय क्षुब्ध होते हुए समुद्रकी गर्जनाके समान आकाशको चारो ओरसे व्याप्त कर दुन्दुभि बाजोका मधुर तथा गभीर शब्द हो रहा था ॥२५८॥ देव लोग भव्य जीवरूपी भ्रमरोको आनन्द करनेवाली तथा आकाशरूपी आगनको पूर्ण भरती हुई पुष्पोकी वर्षा कर रहे थे ॥२५९॥ जिनके वस्त्र वायुसे हिल रहे है ऐसी करोडो ध्वजाएँ चारो ओर फहरा रही थी और वे ऐसी जान पड़ती थी मानो 'इधर आओ इधर आओ' इस प्रकार भव्य जीवोके समूहको बुला ही रही हो

१ परिणमितसर्वजीव । २ परिणमित । ३ मन्द मन्दम् । ४ कारणमन्तरेण । ५ वायु-कुमारसम्मार्जित । ६ मेघकुमार । ७ शरत्कालसरोवर । ८ उदाहरणीकृतसन्निधि । ९ अमर । १० दिङ्मुख । ११ अष्टमङ्गल । १२ -यातोऽभाद्-ब०, प०, अ०, स०, द०, इ०, ल० । १३ विहर्तुमिच्छ । १४ प्रसन्नचित्तवृत्तिम् । १५ ध्वज । १६ आगच्छताऽगच्छतेति ।

पञ्चविंशतितमं पर्व

तर्जयन्निव कर्मांरोन् ऊर्जस्वी रुद्धदिङ्मुखः । ठङ्कार एष ढक्कानाम् अभूत्प्रतिपदं विभोः ॥२६१॥
 नभोऽङ्गे नटन्ति स्म प्रोल्लसद्भ्रूपताकिकाः । सुराङ्गना विलिम्पत्यः स्वदेहप्रभया दिशः ॥२६२॥
 विदुषा पेटुहत्साहात् किन्नरा मधुरं जगुः । वीणावादनमातेनुर्गन्धर्वाः सहखेचरैः ॥२६३॥
 प्रभामयमिवाशेष जगत्कतुं समुद्यताः । प्रतस्थिरे सुराधीशा ज्वलन्मुकुटकोटयः ॥२६४॥
 दिशः प्रसेदुर्नुक्तधूलिकाः^१ प्रमदादिव । बभ्राजे घृतवैमल्यम् अनभ्रं^२ वर्त्म वामु^३ चाम् ॥२६५॥
 परिनिष्पन्नशाल्यादिसस्यसम्पन्नमही तदा । उद्भूतहर्षरोमाञ्च स्वामिलाभादिवाभवत् ॥२६६॥
 ववुः सुरभयो वाताः स्वर्धु^४ नोशीकरस्पृशः । आकीर्णपङ्कजरजःपटवासपटावृताः^५ ॥२६७॥
 मही समतला रेजे सम्मुखीन^६ तलोज्ज्वला । सुरैर्गन्धाम्बुभिः सिक्ता स्नातेव विरजाः सती ॥२६८॥
 अकालकुसुमोद्भेद दर्शयन्ति स्म पादपाः । ऋतुभिः सममागत्य संरुद्धाः^७ साध्वसादिव ॥२६९॥
 सुभिक्ष क्षेममारोग्यं गव्यूतीना^८ चतुःशती । भजे भर्जिनमाहात्म्याद् अजातप्राणिहिंसना ॥२७०॥
 अकस्मात् प्राणिनो भेजुः प्रमदस्य परम्पराम् । तेनुः^९ परस्परं मैत्रौ बन्धु^{१०} भूयमिवाश्रिताः ॥२७१॥
 मकरन्दरजोर्वाष प्रत्यप्रोद्भिन्नकेसरम् । विचित्ररत्ननिर्माणकर्णिकं विलसद्दलम् ॥२७२॥

॥२६०॥ भगवान्के विहारकालमे पद पदपर समस्त दिशाओको व्याप्त करनेवाला और ऊँचा जो भेरियोका शब्द हो रहा था वह ऐसा जान पड़ता था मानो कर्मरूपी शत्रुओको तर्जना ही कर रहा हो—उन्हे धौस ही दिखला रहा हो ॥२६१॥ जिनकी भौहरूपी पताकाएँ उड रही है ऐसी देवागनाए अपने शरीरकी प्रभासे दिशाओको लुप्त करती हुई आकाशरूपी रगभूमिमें नृत्य कर रही थी ॥२६२॥ देव लोग बड़े उत्साहके साथ पुण्यपाठ पढ रहे थे, किन्नरजातिके देव मनोहर आवाजसे गा रहे थे और गन्धर्व विद्याधरोके साथ मिलकर वीणा बजा रहे थे ॥२६३॥ जिनके मुकुटोके अग्रभाग देदीप्यमान हो रहे हैं ऐसे इन्द्र समस्त जगत्को प्रभामय करनेके लिये तत्पर हुए के समान भगवान्के इधर उधर चल रहे थे ॥२६४॥ उस समय समस्त दिशाए मानो आनन्दसे ही धूमरहित हो निर्मल हो गई थी और मेघरहित आकाश अतिशय निर्मलताको धारण कर सुशोभित हो रहा था ॥२६५॥ भगवान्के विहारके समय पके हुए शालि आदि धान्योसे सुशोभित पृथ्वी ऐसी जान पड़ती थी मानो स्वामीका लाभ होनेसे उसे हर्षके रोमाञ्च ही उठ आये हो ॥२६६॥ जो आकाशगगाके जलकणोका स्पर्श कर रही थी और जो कमलोके पराग-रजसे मिली हुई होनेसे सुगन्धित वस्त्रोसे ढकी हुई सी जान पड़ती थी ऐसी सुगन्धित वायु बह रही थी ॥२६७॥ उस समय पृथ्वी भी दर्पणतलके समान उज्ज्वल तथा समतल हो गई थी, देवोने उसपर सुगन्धित जलकी वर्षा की थी जिससे वह धूलिरहित होकर ऐसी सुशोभित हो रही थी मानो रजोधर्मसे रहित तथा स्नान की हुई पतिव्रता स्त्री ही हो ॥२६८॥ वृक्ष भी असमयमे फूलोके उद्भेदको दिखला रहे थे अर्थात् वृक्षोपर बिना समयके ही पुष्प आ गये थे और उनसे वे ऐसे जान पड़ते थे मानो सब ऋतुओने भयसे एक साथ आकर ही उनका आलिगन किया हो ॥२६९॥ भगवान्के माहात्म्यसे चार सौ कोश पृथ्वी तक सुभिक्ष था, सब प्रकारका कल्याण था, आरोग्य था और पृथिवी प्राणियोकी हिसासे रहित हो गई थी ॥२७०॥ समस्त प्राणी अचानक आनन्दकी परम्पराको प्राप्त हो रहे थे और भाईपनेको प्राप्त हुएके समान परस्परकी मित्रता बढा रहे थे ॥२७१॥ जो मकरन्द और परागकी वर्षा कर रहा है, जिसमे नवीन केशर उत्पन्न हुई हैं जिसकी कर्णिका अनेक प्रकारके रत्नोसे बनी हुई है

भगवच्चरणन्यासप्रदेशोऽधिनभ स्थलम् । मृदुस्पर्शमुदारश्चि पङ्कज हैममुद्वभौ ॥२७३॥
 पृष्ठतश्च पुरश्चास्य पद्मा सप्त विकासिनः । प्रादुर्बभूवुर्दग्धसाम्द्रकिञ्जल्करेणवः ॥२७४॥
 तथान्यान्यपि पद्मानि तत्पर्यन्तेषु रेजिरे । लक्ष्म्यावसथ सौधानि सञ्चारीणीव खान्जने ॥२७५॥
 हेमाम्भोजमया श्रेणीम् अलिश्रेणिभिरन्विताम् । सुरा वयरचयन्नेना सुरराजनिदेशत ॥२७६॥
 रेजे राजीवराजी^१ सा जिनपत्पङ्कजोन्मुखी । आदित्सुरिव तत्कान्तिम् अतिरेकादध स्नुताम् ॥२७७॥
 ततिविहारपद्माना जिनस्योपाङ्गि सा बभौ । नभःसरसि सम्फुल्ला त्रिपञ्चककृतप्रभा ॥२७८॥
 तदा हेमाम्ब्रुजैर्व्योम समन्तादातत बभौ । सरोवरमिवोत्फुल्लपङ्कज जिनदिग्जये ॥२७९॥
 प्रमोदमयमातन्वन् इति विश्वं जगत्पति । विजहार मही कृत्स्ना प्रीणयन् स्ववचोमृतैः ॥२८०॥
 मिथ्यान्धकारघटना विघटय्य वचोऽशुभिः । जगदुद्योतयामास जिनाको जनतातिहृत् ॥२८१॥
 यतो विजह्ये भगवान् हेमाब्जन्यस्तसत्क्रमः । धर्माभूताम्बुसवर्षस्ततो भव्या धृत दधुः ॥२८२॥
 जिने घन इवाभ्यर्णं धर्मवर्षं प्रवर्षति । जगत्सुखप्रवाहेण पुप्लुवे^२ धृतनिर्वृति^३ ॥२८३॥
 धर्मवारि जिनाम्भोदात्पाय^४ पायं कृतस्पृहा । चिर धृततृषो^५ दधु तदानीं भव्यचातका ॥२८४॥

जिसके दल अत्यन्त सुशोभित हो रहे हैं, जिसका स्पर्श कोमल है और जो उत्कृष्ट शोभासे सहित है ऐसा सुवर्णमय कमलोका समूह आकाशतलमे भगवान्‌के चरण रखनेकी जगहमे सुशोभित हो रहा था ॥२७२-२७३॥ जिनकी केशरके रेणु उत्कृष्ट सुगन्धिसे सान्द्र है ऐसे वे प्रफुल्लित कमल सात तो भगवान्‌के आगे प्रकट हुए थे और सात पीछे ॥२७४॥ इसी प्रकार और कमल भी उन कमलोके समीपमे सुशोभित हो रहे थे, और वे ऐसे जान पड़ते थे मानो आकाशरूपी आगनमे चलते हुए लक्ष्मीके रहनेके भवन ही हो ॥२७५॥ भ्रमरोकी पङ्क्तियोसे सहित इन सुवर्णमय कमलोकी पङ्क्तिको देवलोग इन्द्रकी आज्ञासे बना रहे थे ॥२७६॥ जिनेन्द्र भगवान्‌के चरणकमलोके सन्मुख हुई वह कमलोकी पङ्क्ति ऐसी जान पड़ती थी मानो अधिकताके कारण नीचेकी ओर बहती हुई उनके चरणकमलोकी कान्ति ही प्राप्त करना चाहते हो ॥२७७॥ आकाशरूपी सरोवरमे जिनेन्द्रभगवान्‌के चरणोके समीप प्रफुल्लित हुई वह विहार कमलोकी पङ्क्ति पन्द्रहके वर्ग प्रमाण अर्थात् २२५ कमलोकी थी ॥२७८॥ उस समय, भगवान्‌के दिग्विजयके कालमे सुवर्णमय कमलोसे चारो ओरसे व्याप्त हुआ आकाश ऐसा सुशोभित हो रहा था मानो जिसमे कमल फूल रहे हैं ऐसा सरोवर ही हो ॥२७९॥ इस प्रकार समस्त जगत्‌के स्वामी भगवान् वृषभदेवने जगत्‌को आनन्दमय करते हुए तथा अपने वचनरूपी अमृतसे सबको संतुष्ट करते हुए समस्त पृथिवीपर विहार किया था ॥२८०॥ जनसमूहकी पीडा हरनेवाले जिनेन्द्ररूपी सूर्यने वचनरूपी किरणोके द्वारा मिथ्यात्वरूपी अन्धकारके समूहको नष्ट कर समस्त जगत् प्रकाशित किया था २८१॥ सुवर्णमय कमलोपर पैर रखनेवाले भगवान्‌ने जहा जहांसे विहार किया वही वहीके भव्योने धर्माभूतरूप जलकी वर्षासे परम सन्तोष धारण किया था ॥२८२॥ जिस समय वे जिनेन्द्ररूपी मेघ समीपमे धर्मरूपी अमृतकी वर्षा करते थे उस समय यह सारा ससार सतोष धारण कर सुखके प्रवाहसे प्लुत हो जाता था—सुखके प्रवाहमे डूब जाता था ॥२८३॥ उस समय अत्यन्त लालायित हुए भव्य जीवरूपी चातक जिनेन्द्ररूपी मेघसे धर्मरूपी जलको बार बार पी

१ निवासहर्म्याणि । २ रचयन्ति स्म । ३ पक्तिः । ४ जिनपादकमलोन्मुखी । ५ आदा-
 तुमिच्छ । ६ पदकमलकान्तिम् । ७ यस्मिन् । ८ तस्मिन् । ९ मेघ इव । १० मज्जति स्म ।
 ११ धृतसुखम् । १२ पीत्वा पीत्वा । १३ धृतिमाययुः ।

पञ्चविंशतितमं पर्व

वसन्ततिलकावृत्तम्

इत्थं चराचरगुरुजंगदुज्जिहीर्षन्^१

संसारखञ्ज^२ननिमग्नमभग्नवृत्तिः ।

देवासुरैरनुगतो विजहार पृथ्वीं

हेमाब्जगर्भविनिवेशितपादपद्मः ॥२८५॥

तीव्राजवञ्जवदवानलवह्यमानम्

श्राद्धादयन् भुवनकाननमस्ततापः ।

धर्मामृताम्बुपूषतैः^३ परिषिच्य देवो

रेजे घनागम इवोदितदिव्यनादः ॥२८६॥

काशीमवन्तिकुरुकोसलसुहृपुण्ड्रान्

चेद्यङ्गवङ्गमगधान्ध्रुकलिङ्गमद्रान् ।

पाञ्चालमालवदशार्णविदर्भदेशान्

सन्मार्गदेशनपरो विजहार धीरः ॥२८७॥

देवः प्रशान्तचरितः^४ शनकैर्विहृत्य

देशान् वहूनि विबोधितभव्यसत्त्वः ।

भेजे जगत्त्रयगुरुविद्युवीधु^५मुच्चैः

कैलासमात्मयशसोऽनुकृतिं^६ दधानम् ॥२८८॥

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्

तस्याग्रे सुरनिर्मिते सुरचिरे श्रीमत्सभामण्डले

पूर्वोक्ताखिलवर्णना^७परिगते स्वर्गश्चिं तन्वति ।

श्रीमान् द्वादशभिर्गणैः परिवृतो भक्त्या नतः सादरैः

आसामा^८सविभुजिन प्रचिलसत्सत्प्रातिहाय्यवटकः ॥२८९॥

कर चिरकालके लिये सन्तुष्ट हो गये थे ॥२८४॥ इस प्रकार जो चर और अचर जीवोंके स्वामी हैं, जो ससाररूपी गर्तमें डूबे हुए जीवोंका उद्धार करना चाहते हैं, जिनकी वृत्ति अखण्डित है, देव और असुर जिनके साथ है तथा जो सुवर्णमय कमलोंके मध्यमें चरण कमल रखते हैं ऐसे जिनेन्द्र भगवान्ने समस्त पृथ्वीमें विहार किया ॥२८५॥ उस समय, ससाररूपी तीव्रदावानलसे जलते हुए ससाररूपी वनको धर्मामृतरूप जलके छीटोंसे सींचकर जिन्होंने सबका सताप दूर कर दिया है और जिनके दिव्यध्वनि प्रकट हो रही है ऐसे वे भगवान् वृषभदेव ठीक वर्षाऋतुके समान सुशोभित हो रहे थे ॥२८६॥ समीचीन मार्गके उपदेश देनेमें तत्पर तथा धीर वीर भगवान्ने काशी, अवन्ति, कुरु, कोशल, सुहृ, पुण्ड्र, चेदि, अग, वग, मगध, आध्र, कलिङ्ग, मद्र, पाञ्चाल, मालव, दशार्ण और विदर्भ आदि देशोंमें विहार किया था ॥२८७॥ इस प्रकार जिनका चरित्र अत्यन्त शान्त है, जिन्होंने अनेक भव्य जीवोंको तत्त्वज्ञान प्राप्त कराया है और जो तीनों लोकोंके गुरु हैं ऐसे भगवान् वृषभदेव अनेक देशोंमें विहार कर चन्द्रमाके समान उज्ज्वल, ऊँचे और अपना अनुकरण करनेवाले कैलास पर्वतको प्राप्त हुए ॥२८८॥ वहाँ उसके अगभागपर देवोंके द्वारा बनाये हुए, सुन्दर, पूर्वोक्त समस्त वर्णनसे सहित और स्वर्गकी शोभा बढ़ानेवाले सभामण्डपमें विराजमान हुए । उस समय वे जिनेन्द्रदेव

१ उद्यत्मिच्छन् । २ गर्त । ३ विन्दुभिः । ४ पृषन्ती विन्दु पृषता स पुमासो विप्रुषस्त्रियः ।

५ चेदि प्रजा । ६ प्रकर्षेण शान्तवर्तन । ७ विमल । ८ अनुकरणम् । ९ वर्णनायुक्ते । १० आस्ते स्म ।

तं देवं त्रिदशाधिपार्चितपदं घातिक्षयानन्तर-

प्रोत्थानन्तचतुष्टयं जिनमिन^१ भव्याब्जिनीनामिनम्^२ ।

मानस्तम्भविलोकनानतजगन्मान्यं त्रिलोकीपतिं

प्राप्ताचिन्त्यबहिर्विभूतिमनघं भक्त्या प्रवन्दामहे ॥२६०॥

इत्यार्षे भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसङ्ग्रहे

भगवद्विहारवर्णनं नाम पञ्चविंशतितमं पर्व ।

अनन्तचतुष्टयरूप लक्ष्मीसे सहित थे, आदरके साथ भक्तिसे नम्रीभूत हुए बारह सभाके लोगोसे घिरे हुए थे और उत्तमोत्तम आठ प्रातिहार्योसे सुशोभित हो रहे थे ॥२८९॥ जिनके चरणकमल इन्द्रोके द्वारा पूजित है, घातियाकर्मोका क्षय होनेके बाद जिन्हे अनन्तचतुष्टयरूपी विभूति प्राप्त हुई है, जो भव्यजीवरूपी कमलिनियोको विकसित करनेके लिये सूर्यके समान है, जिनके मानस्तम्भोके देखने मात्रसे जगत्के अच्छे अच्छे पुरुष नम्रीभूत हो जाते हैं, जो तीनो लोकोके स्वामी हैं, जिन्हे अचिन्त्य बहिरङ्ग विभूति प्राप्त हुई है, और जो पाप रहित हैं ऐसे श्रीस्वामी जिनेन्द्रदेवको हमलोग भी भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं ॥२९०॥

इस प्रकार भगवज्जिनसेनाचार्य प्रणीत त्रिषष्टिलक्षण महापुराणसङ्ग्रहमे भगवान्के-
विहारका वर्णन करनेवाला पञ्चीसवा पर्व समाप्त हुआ ।

महापुराण-प्रथमभागस्थ-

श्लोकानामकाराद्यनुक्रमः

अ		अच्छिन्नधारमाच्छन्दा-	४१२	अथ काय समुत्सृज्य	३६७
असावभ्युन्नती तस्य	२१६	अच्युत कल्पमासाद्य	१४१	अथ क्रमाद्यशस्वत्या	३४६
असावलम्बिना ब्रह्म	३४२	अच्युतेन्द्रसमायोग-	१४६	अथ गतवति तस्मिन्नागराजे	४४३
अकम्पनोऽपि सृष्टीशात्	३६६	अजय्यममित तीर्थ्ये	४८६	अथ घातिजये जिष्णो	५०६
अकम्प्रस्थितिमुत्तुङ्ग-	४०६	अजराय नमस्तुभ्यम्	६०३	अथ चक्रधर पूजा-	१७०
अकस्मात्तारका दृष्ट्वा	५२	अजितञ्जयभूपालाद्	१४६	अथ तत्रावसद् दीर्घं	१६७
अकस्मात् प्राणिनो भेजु	६३३	अजितादीन् महावीर-	७	अथ तद्वचनादार्या	५३
अकारादिहकारान्त-	४६६	अजितो जितकामारि-	६२०	अथ तस्मिन् दिव मुक्त्वा	२२७
अकारादिहकारान्ता	३५५	अजीवलक्षण तत्त्वम्	५८७	अथ तस्मिन् महापूरे	२६८
अकालकुमुदभेदम्	६३३	अट्टप्रमितं तस्य	५३	अथ तस्मिन् महाभागे	२४६
अकालहरण तस्मात्	१७५	अराव कार्यलिङ्गा स्यु	५८६	अथ त्रिभुवनक्षोभी	६३०
अकृतवत्कलाश्चामी	३०	अणिमादिगुरौ श्लाघ्या	२३६	अथ त्रिमेखलस्यास्य	५४०
अकृत्रिमाननाद्यन्तान्	११०	अणिमादिगुरौर्युक्तम्	५००	अथ त्रिवर्गससर्ग-	१६०
अकृष्टपच्यै कलमै	४२६	अणिमादिगुरोपेताम्	२३४	अथ दिग्विजयाच्चक्री	१३६
अक्षयाम दहन्त्येते	१७३	अत कल्याणभागित्व	१६१	अथ निर्वर्तितस्नान	३६६
अक्षरत्वादभेद्यत्वाद्	४१३	अतत्तदित्यतत्त्वज्ञो	४७६	अथ पण्डितिकान्येद्यु	१२६
अक्षरानिमेषमात्रञ्च	२१५	अतन्द्रित च देवीभि	३२३	अथ परमविभूत्या वज्रजङ्घ	१८८
अगण्य पुण्यधीर्गुण्य	६१४	अतिरेचिरतराङ्गी कल्प-	२८१	अथ पवनकुमारा स्वामिव	३०१
अगोपदेष्टव्यरूपे	४६५	अतिशेषाश्चतुस्त्रिंशत्	१३१	अथ प्रथमकल्पेन्द्र	२६२
अग्रणीश्रीमणीर्नैता	६०८	अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो	६१६	अथ प्रदक्षिणीकृत्य	१४८
अग्नेनरी जरातद्रका	१७३	अतो भजन्ति भव्यास्त्वा	१६३	अथ प्रयाणसक्षोभाद्	१७०
अग्नेनरीषु लक्ष्मीषु	३८३	अतोऽमी परलोकार्यं	६५	अथ भरतनरेन्द्रो	३६५
अङ्ग पुत्र त्वर मा गा	१४०	अत्यन्तविरला जाता	५५	अथवा ध्येयमध्यात्म-	४७६
अङ्ग पुत्र ममाङ्गेषु	१०२	अत्र वनान्ते पत्रिगणोऽयम्	४३४	अथवा पुरुषार्थस्य	४८६
अङ्ग पुत्रि परिष्वङ्ग	१२८	अत्रानील मणितटमुच्चै	४३६	अथवा प्रश्रयी सिद्धान्	४६३
अङ्गनाभि सुरेन्द्राणाम्	२८७	अत्रान्तरे किलायाताम्	४०५	अथवा बोधितोऽप्यस्मान्	३७८
अङ्गान्धानियान्वाप्यो	४६६	अत्रान्तरे पुराणार्थ-	२४६	अथवा श्रुतमस्माभि	४४६
अङ्गारभारिषी नास्वित्	२६६	अत्रान्तरे महोदय-	५४	अथवा सर्वमप्येतत्	५७३
अङ्गारिरोनर्गन्ध-	५४	अत्रान्तरे महोपध्यो-	३५८	अथवा स्नातकावस्थाम्	४८७
अथानि शिमुत्तुङ्ग-	४१३	अत्रापि पूर्ववद् वेद्यम्	५३०	अथ विज्ञापयामासु	३५८
अथवात्मा भित्तेव	६६	अत्रायमुन्मदमधुव्रतसेव्यमान-	४३६	अथवैतत् खलूक्त्वाय	१५५
अथवात्मा भित्तेव	१५०	अत्रास्मद्भवसम्बन्ध	१४८	अथ सम्प्रस्थिते देवे	३८७
अथवात्मा भित्तेव	५६८	अत्रैते पशवो वन्या	३०		

अथ सरसिजवन्धौ	३६६	अदृष्टपूर्वं लोकेऽस्मिन्	४५६	अनारतश्चकुन्देन्दु	३२३
अथ सा कृतनेपथ्या	११८	अदृष्टपूर्वौ तौ दृष्ट्वा	५१	अनाशितम्भवानेतान्	२४४
अथ सामानिका देवा	१२०	अदेवमातृका केचिद्	३६०	अनाशुषोऽपि नास्यासीत्	४०५
अथ सुप्तैकदा देवी	२५६	अद्भुतार्थामिमा दिव्या	१७	अनाशुपोऽस्य गात्राणा	११४
अथ सुललितवेषा दिव्य-	२२५	अद्यापि चारणौ साक्षात्	२०४	अनाश्वान्यस्तपस्तेपे	७
अथ सेनाम्बुधे क्षोभम्	५७४	अथ प्रतिमया तानि	५२६	अनाहता पृथुध्वाना	२८३
अथ सोभप्रभो राजा	४५१	अथ प्रवृत्तकरणम्	४६६	अनाहाराय तृप्ताय	६०३
अथ सौधर्मकत्पेशो	२८४	अधरीकृत्य नि शेष-	५३७	अनित्यानशुचीन् दु खान्	४८४
अथ स्वयप्रभादेवी	१२४	अधरै पक्वबिम्बाभै	४१६	अनिद्रालुजिगरूक	६२७
अथात श्रेणिको नम्रो	४७४	अधिकन्धरमावद्ध-	२५२	अनिर्द्वय तमो नैश	२००
अथातो धर्मजिज्ञासा	२६	अधिक्षोणिपदन्यासै	३५३	अनिवर्ती गुरु सोऽयम्	४००
अयासौ नवमासानाम्	२८३	अधिष्ठिता विरेजुस्ते	५१५	अनीदृगुपमाभूतो	६२४
अयासौ वज्रजडधार्य	१६८	अधुना जगतस्तापम्	२७१	अनीदृशवपुश्चन्द्र-	१३६
अथाद्यस्य पुराणस्य	६८	अधुना दरमुत्सृज्य	२७१	अनुचितमशिवाना स्थातुमद्य	३०२
अथाधिराज्यमासाद्य	३६७	अधुना मरसर्गस्य	२७१	अनुन्धरी च सोत्कण्ठा	१८८
अथानुध्यानमात्रेण	३५६	अधृत च यस्मात्परतो	५५२	अनुराग सरस्वत्या	१२३
अथान्यदा पुराधीश	१८३	अधोग्रैवेयकस्याधो	१६८	अनुत्लङ्घ्य पितुर्वाक्य	१०३
अथान्यदा महादेवी	३३४	अधोमध्योर्ध्वमध्याग्रे	७३	अनेकोपद्रवाकीर्णौ	३६६
अथान्यदा महाराजो	१७२	अध्यधित्यकमावद्ध-	४१२	अनेहसि लसद्विद्युद्-	१६१
अथान्यदा स्वयबुद्धो	१०७	अध्यवात्ता तदानी तौ	२५७	अन्त परिपदस्याद्या	२२४
अथान्येद्युरबुद्धासौ	२०८	अध्यात्मगम्योऽगम्यात्मा	६२४	अन्त प्रकृतिसक्षोभ-	४६६
अथान्येद्युरमुष्याङ्गो	१०२	अध्युपत्यकमारूढ-	४१२	अन्तरिक्षस्थिता काश्चिद्	२६६
अथान्येद्युरसौ राजा	८४	अनङ्गत्वेन तन्नूनम्	३३४	अन्तर्मुहूर्तमातन्वन्	४६५
अथान्येद्युरसौ सुप्ता	१२७	अनञ्जितासिते भर्तुं	३०४	अन्तर्वर्ण क्वचिद्वाप्य	५२३
अथान्येद्युर्महाराजो	१७१	अनट्टहासहुङ्कारम्	५६६	अन्तर्वल्नीमपश्यत् ताम्	३३६
अथान्येद्युर्महास्थान-	३७३	अनन्त कालमित्यज्ञ	३७५	अन्तर्वल्नीमथाभ्यर्णौ	२६६
अथापरेद्युरुद्यानम्	१६२	अनन्तज्ञानदृग्वीर्य-	४७१	अन्तर्वर्णमथाभूवन्	५३१
अथापश्यदुच्चैर्ज्वलत्पीठ-	५५३	अनन्तदीप्तिर्ज्ञानात्मा	६०७	अन्नप्राशनचौलोप-	३३६
अथाभिपेकनिर्वृत्तौ	३०४	अनन्तरञ्च लौकान्तिका-	२३१	अन्यत्वमात्मनो देह-	२३६
अथावसाने नैर्ग्रन्थी	२२२	अनन्तद्विरमेर्यद्वि	६१७	अन्यप्रेरितमेतस्य	६६
अथासाववधिज्ञान-	२६३	अनन्तविजयायाख्यद्	३५७	अन्यानन्ये विनिघ्नन्ति	२१३
अथासौ पुत्रनिर्दिष्ट-	१०५	अनन्तशक्तिरच्छेद्य	६२८	अन्यायध्वनिरुत्सन्न	८७
अथास्य मेखलामाद्याम्	४१६	अनन्तानन्तभेदस्य	७३	अन्या वल्लभिकास्तस्य	२२४
अथास्य यौवनारम्भे	८७	अनन्तास्त्वद्गुणा स्तोतुम्	१६२	अन्येद्युश्च त्वमज्ञानात्	१३१
अथास्य यौवने पूर्णौ	३२५	अनभ्यस्तमहाविद्या	१३	अन्येद्युरवधिज्ञान-	१०४
अथाहूय सुता चक्री	१३६	अनादिनिधन कालो	४५	अन्वर्थवेदी कल्याण	५१०
अथैकदा सुखासीनो	३५२	अनादिनिधन तुङ्ग-	८	अपत्रपिष्णव केचिद्	४०१
अथैनयो पदज्ञान-	३५६	अनादिनिधन सूक्ष्मम्	४८६	अपप्तत् कौसुमी वृष्टि	५४३
अथोच्चै सुरेशा गिरामी-	५५६	अनादिनिधनोऽव्यक्तो	६१६	अपराजितसेनान्य	१८५
अथोत्थाय तुष्ट्या सुरेन्द्रा	५५५	अनादिवासनोद्भूत-	२४	अपरिस्पन्दताल्वादे-	२५
अथोत्थायासनादाशु	५०७	अनानृशस्य हिंसोप-	४७६	अपरे भस्मनोद्गुण्ठय	४०२
अयोपमृत्य तत्रैन	२६	अनापृच्छ्य गुरु केचिद्	४०१	अपाङ्गवीक्षितैर्लीला	१६७
अदृश्यो मदनोऽनङ्गो	८७	अनायतो यदि व्योम्नि	८०	अपाङ्गशरसन्धानै	२६७

अपापाद्गावलोकं ते	५६५	अमी च भीषणाकाराः	२१४	अशक्यं प्रार्थनीयत्वं-	४५३
अपास्तानपसम्बन्धम्	४२४	अमी चैत्यगृहा भान्ति	११०	अशन पानक खाद्य	१६४
अपास्य लोकपापण्ड-	२०२	अमीषामुपश्लेषु	६३	अशन मधुरालापै-	१३६
अपि चण्डानिलाकाण्ड-	१६५	अमुष्मिन्नधिदेशोऽय	६८	अशेषज्ञेयसङ्क्रान्त-	५८०
अपि चास्य महानस्ति	३२६	अमूर्तमक्षविज्ञान	६७	अशोककलिका कर्णौ	१६०
अपि चोद्भूतसवेग	४८४	अमूर्तो निष्कलोऽप्येष	४८६	अशोकपल्लवच्छाय	२५३
अपिप्यता च मा धर्म-	२०४	अमूर्तो निष्क्रियो व्यापी	७०	अशोकपल्लवाताम्र-	५१०
अपि व्युत्सृष्टकायस्य	४८१	अमूर्तोऽप्ययमन्त्याङ्ग-	४६६	अशोकपल्लवै कुम्भ-	२६४
अपूर्वकरण श्रित्वा	२३५	अमेयमपि ते वीर्यम्	५६७	अशोकपल्लवैर्वक्त्र-	१६०
अपूर्वकरणोऽप्येवम्	४७०	अमोघवागमोघाज्ञो	६२३	अशोकलतिका यत्र	५१८
अपृथग्विक्रियास्तेषाम्	२१७	अमोघशासने तस्मिन्	१३६	अशोकवनमध्येऽभूद्	५२४
अपृष्टकार्यनिर्देशौ	४०८	अम्लानशोभमस्याभात्	२३८	अशोकवनिकामध्ये	१२६
अपृष्ट कार्यमाचष्टे	४०८	अय गिरिरसम्भूणु	४१६	अशोक सप्तपर्णश्च	५२६
अप्यमी रूपसौन्दर्य-	५६६	अय जलनिघेर्जल स्पृशति	४४०	अशोकसप्तपर्णाहि-	५२२
अप्यस्थानकृतो स्थान-	१६५	अय मतिवरोऽत्रैव	१८३	अशोकादिवनश्रेणी	६३१
अप्रतिक्रमणो धर्म	४६१	अय मन्दानिलोद्भूत	५६६	अश्वकर्णाक्रियाकृष्टि	४७१
अप्रमेयमहावीर्यम्	३२५	अय सन्मतिरेवास्तु	५३	अष्टदण्डोच्छ्रिता ज्ञेया	५३८
अप्रशस्ततम लेश्या	४७८	अय स भगवान् दूर	३८४	अष्टमङ्गलधारीणि	४४८
अप्राकृताकृतिदिव्य-	३४४	अय स भगवान् दूरात्	४४६	अष्टयोजनगम्भीरै	२६३
अप्राप्तस्त्रैणसस्कारा	३३५	अय हसयुवा हस्या	३३५	अष्टाक्षर पर बीजम्	४६६
अप्सर कुङ्कुमारवत्-	५१२	अयुतप्रमिताश्चास्य	२२४	अष्टावस्य महादेव्यो	२२४
अप्सर परिवारोऽयम्	११७	अये, तप फल दिव्यम्	११७	अष्टाविंशतिमप्येका	१३१
अप्सरस्सु नटन्तीषु	५०८	अयोगवाहपर्यन्ता	३५५	अष्टाशीतिश्च वर्णा स्यु	४०
अवुद्धिपूर्वमुत्सृज्य	६१	अरजोऽमलसङ्गाय	३०८	अष्टाशीत्यङ्गुलान्येषाम्	५२८
अब्जिनीयमितो धत्ते	३३५	अरालैरालिनीलाभै	४१६	अष्टोत्तरशत ज्ञेया	५२८
अभव्यस्तद्विपक्ष स्यात्	५८६	अरुष्करद्रवापूर्ण-	२१२	अष्टोत्तरशत नाम्नाम्	५७७
अभावेऽपि विवन्धूणा	१४४	अर्जुनी चारुणी चैव	४२६	असकृत सुसस्कार	६२०
अभिजानासि तत्पुत्रि	१४६	अर्थादर्थान्तर गच्छन्	४६३	असख्यातगुणश्रेण्या	४६२
अभिन्नदशपूर्वित्वात्	३६	अर्धमागधिकाकार-	६३२	असता दूयते चित्त	१४
अभिमानधना केचित्	४०१	अर्धेन्दुनिभसुश्लिष्ट-	५०६	असद्वेद्यविष घाति	५६७
अभिराम वपुर्भर्तु	३२८	अलकरिष्णु रोचिष्णु	२०१	असद्वेद्योदयाद् भुक्तिम्	५६७
अभिरूप कुमारोऽयम्	१५६	अलका तिलकाख्या च	४२६	असद्वेद्योदयो घाति	५६८
अभिपिच्य विभु देवा	३७६	अलकाली लसद्भृङ्गा	४१७	असह्य तनुसन्ताप	११५
अभिप्रेक्षतुमिवारब्धा-	६०	अलक्ष्येणातपत्रेण	३६८	असिपत्रवनान्यन्ये	२१२
अभूत्पूर्वरद्भूतं	३६०	अलब्धपूर्वमास्वाद्या	२०३	असिर्मणि कृषिर्विद्या-	३६२
अभ्या भयनाद् देहे	६७	अलमास्ता गुणस्तोत्रम्	६०३	असुमता सुमताम्भसमातताम्	४३०
अभूत्याभाव उत्पादो	५८४	अवधिञ्च मन पर्यय-	१३२	असुतरा सुतरा पृथुम्भसाम्	४३०
अनेयमभितरक्ष्य	७८	अवधूय चला लक्ष्मी-	३६३	असृज्योऽयमसह्य	७२
अनेयमभितरक्ष्य	४६६	अवश्यमवशोऽप्येष-	२३३	अस्ति कायश्रुतिर्वक्ति	४६
अनुतिष्ठन्तो रेजे	१६८	अविलिप्तसुगन्धिस्त्वम्	३०७	अस्नातपूतगात्रोऽपि	३०६
अनुभूतगन्धपापाङ्ग-	३६७	अवेदाय नमस्तुभ्यम्	६०३	अस्नातलिप्तादीप्ताङ्ग	२३८
अनुगन्तस्य माले	३८७	अव्युत्पन्नतरा केचिद्	१२	अस्पृष्टवन्धलालित्य-	१५
अनुमात्रान्तो ज्ञेय-	६६	अशक्ता पदवी गन्तुम्	३६८	अस्मत्स्वामी खगाधीश	१११

अस्य पर्यन्तभूभाग	११०	आ	आराधयन्ति य नित्यम्	२८६	
अस्य पादाद्रयोऽप्यस्मादा-	१०६	आकानाच्च तदेक्षणा	३७०	आराम तस्य पश्यन्ति	३०७
अस्य महाद्वेरेनुतटमुच्चै	४३५	आकिञ्चन्यमथ ब्रह्म	२३६	आरिराधयिषुर्देव	३७३
अस्य महाद्वेरेनुतटमेषा	४३५	आक्रामन् वनवेदिकान्तर-	१३८	आरुह्याराधनानाव	११४
अस्य महाद्वेरुपतटमृच्छन्	४३६	आक्रोश वधयाञ्चे च	२३६	आरूढयौवनस्यास्य	१२२
अस्य सानूनिमे रम्य-	१०६	आक्षिप्ताशेषतन्त्रार्था	१७	आर्तो मृत्वा वराहोऽभूत	१८६
अस्यात्मा किन्तु मोक्षोऽस्य	५८५	आक्षेपिणी कथा कुर्यात्	१६	आलवालीकृताम्भोधि-	३३
अस्यानुसानुवनराजि-	४३८	आगमस्तद्वचोऽशेष-	५८६	आश्लिष्य पृथिवी दोभ्यां	३३८
अस्यानुसानुसुरपन्नगखे-	४३६	आजन्मनो यदेतेन	१२०	आपाढमासवहुल-	३६३
अस्या सुदति पश्येद	१२८	आजानुलम्बमानेन	१५६	आसीच्छतवलो नाम्ना	१०५
अस्वेदमलमाभाति	५६७	आजिघ्रन् मुहुरभ्येत्य	२७०	आस्थानमण्डलस्यास्य	५१४
अह पण्डितिका सत्य	१२६	आज्ञामूहु खचरनरपा	४४४	आस्रव पुण्यपापात्म-	२३६
अह पूर्वभवेऽभूव	१३०	आज्ञाविचय एष स्यात्	४८६	आहारकशरीर यत्	२४१
अह ममास्रवो बन्ध	४८६	आज्ञाधिचयमाद्य तद्	४६७		
अह सुधर्मो जम्बवाख्यो	४२	आज्ञैश्वर्याद् विनान्यैस्तु	५०८	इ	
अह हि श्रीमतीनाम	४५७	आत्मादिमुक्तिपर्यन्त-	२००	इक्षुयत्रेषु निक्षिप्य	२११
अहमद्य कृती धन्यो	१५५	आत्मरक्षा शिरोरक्ष-	५०८	इत कल कमलवनेषु रुयते	४३२
अहमिन्द्रोऽस्मि नेत्रोऽन्यो	२३६	आत्मरक्षाश्च तस्योक्ता	२२४	इत किं नामित नाम्ना	४२२
अहम्पूर्वमहम्पूर्वम्	४५०	आदित्यगतिमग्रण्य	१११	इत परुषसम्पात-	२१४
अहिंसा सत्यवादित्व-	६२	आदित्यवर्णो भर्माभ	६२६	इत प्रभृत्यहोरात्र-	५३
अहो किमृषयो भग्ना	४०२	आदिष्टोऽस्म्यहमीशेन	४१०	इत प्रेक्षस्व सप्रेक्ष्या	११७
अहो गुरुरय धीर	४००	आद्य प्रतिश्रुति प्रोक्त	६६	इत शरद्धनघनकालमेषयो	४३२
अहो चक्रधर पुण्य-	१७६	आद्यन्तौ देहिना देही	६८	इत शृणु खगाधीश	६२
अहो जगदिद भङ्गि	३७४	आद्यसहननेनैव	४८५	इत स्वरति यद्घोषो	२१४
अहो दुरासदा भूमि	२१३	आधूनकल्पतरुवीथि-	४३४	इतश्चेत स्वदोर्जाले	३१८
अहो धर्मस्य माहात्म्य	१६१	आध्यान स्यादनुध्यानम्	४६६	इतस्ततश्च विक्षिप्तान्	२५६
अहो धिगस्तु भोगाङ्ग-	१७२	आनन्दो नन्दनो नन्दो	६२०	इति कतिपर्यैरेवाऽहोभि	१३७
अहो धीमन् महाभाग	५२	आनीलचूचुकौ तस्या	१२५	इति कर्तव्यतामूढा	६३
अहो धैर्यमहो स्थैर्यम्	३६८	आनुपूर्वी तथा नाम	४०	इति कालोचिता क्रीडा	३२३
अहो निन्द्यतरा भोगा	४०७	आनुपूर्व्यादिभेदेन	३६	इति केचिदितो देव	६३
अहो परममाश्चर्यं	३०	आपातमात्ररम्याणाम्	४०७	इति कैचित्तदाश्चर्य-	३८५
अहो परममैश्वर्यं	११७	आपातमात्ररम्याश्च	१७१	इति गदति गरोन्द्रे	५०५
अहो पृण्यवना पुत्रा	१७६	आपातमात्ररसिका	२४२	इति चक्रधरेणोक्ता	१५६
अहो प्रसन्नगम्भीर	३२	आप्तपाशमतान्यन्ये	१३	इति चारणयोगीन्द्र-	१८७
अहो भग्ना महावशा	४४५	आप्तागमपदार्थाना श्रद्धान	२००	इति चिन्तयतस्तस्य	११७
अहो मदालिरेषोऽत्र	१७२	आप्तागमपदार्थाना	५८५	इति चिन्तयतोऽस्यासीत्	२०५
अहो महेच्छता यूनो	४१०	आप्तो गुरुर्युतो धूत	५८६	इति जीवपदार्थस्ते	५८७
अहो विपयिणा व्यापत्	२४५	आभुग्नमुदर चास्य	११५	इति तत्कृतया देवी	२६६
अहो श्रेय इति श्रेय	४५६	आमनन्त्यात्मविज्ञानम्	३६४	इति तत्र चिर भोगै	१६६
अहो मुनिपुण चित्र	१४८	आममात्रे यथाक्षिप्तम्	४५८	इति तत्राहमिन्द्रास्ते	२४१
अहो स्त्रीरूपमत्रेद	१४८	आयासमात्रमत्राज्ञ	२४३	इति तद्वचन श्रुत्वा	४६८
अहो स्त्रीरूपमत्रेद	१४८	आयुष्मन् शृणु तत्त्वार्थान्	५८२	इति तद्वचनस्यान्ते	४०८
अहो स्त्रीरूपमत्रेद	२६६	आरचय्य तदा कृत्स्नम्	४६८	इति तद्वचनाज्जातसौहार्दो	५४

इति तद्वचनाज्जातविस्मयो	१८४	इति प्रबुद्धतत्त्वस्य	६३०	इति सुकृतविपाकादान-	६०
इति तद्वचनाज्जाता	१०१	इति प्रमदविस्तारम्	१५६	इति स्तुत्वार्यस्ते त	५२
इति तद्वचनात्तेपा	५२	इति प्रमाणभूतेय	३३	इति स्तुत्वा सुरेन्द्रास्त्वम्	३२६
इति तद्वचनात्प्रीती	४४६	इति प्रमोदमातन्वन्	५०७	इति स्थविरकल्पोऽयम्	४६०
इति तद्वचनादेतत्	११८	इति प्रमोदमुत्पाद्य	३३६	इति स्वनामनिर्दिष्टा	४६
इति तद्वचनाद् देवी	२६४	इति प्रश्नमुपन्यस्य	२४, १११	इति स्वभावमधुराम्	३३३
इति तद्वचनाद्वैर्यम्	२२१	इति प्रश्नावसानेऽस्य	१६६	इति स्वभावमाधुर्य-	६०
इति तद्वचनाद् भीता	४०२	इति प्रश्रयिणी वाच-	३१	इति स्वान्तर्गतं केचित्	४००
इति तद्वचनाद् विद्या	१०२	इति प्रसाध्य त देवम्	३०५	इति स्वार्था परार्था च	३६५
इति तन्त्रनियुक्ताना	१७८	इति प्रस्पष्ट एवायम्	२६२	इति हाधीतनिश्शेष-	३६५
इति तन्मयता प्राप्तम्	३४०	इति प्रस्पष्टमाहात्म्य	३०	इतिहास इतीष्ट तद्	८
इति तम्य मुनीन्द्रस्य	१८५	इति प्रह्लादिनी वाचम्	४५६	इतीत्य स्वभक्त्या सुरैरर्चिते	५५६
इति ताभि प्रयुक्तानि	२७६	इति प्रीतस्तदात्मीयम्	४१०	इतीदं प्रमुख नाम	२७
इति तेषु तथाभूताम्	४०३	इति प्रीतिङ्कराचार्य-	२०२	इतीदमन्यदप्यासाम्	२६७
इति दीनतर केचित्	३६६	इति प्रोत्साह्य त धर्मो	३३	इतीरयन् वचो भूय	१५१
इति धर्मकथाद्रगत्वात्	२०	इति वाह्य तप षोढा	४६३	इतोऽतीतभवञ्चास्य	१११
इति धीरतया केचित्	४०१	इति ब्रुवन्तमभ्येत्य	१३१	इतो दुःस्वप्ननिर्गति	२७
इति ध्यानविधिं श्रुत्वा	४६७	इति ब्रुवाण एवासौ	१२८	इतो धूपघटामोदम्	५२२
इति ध्यानाग्निनिर्दग्ध-	४७२	इति ब्रुवाणा ता भूय	१४७	इतो नन्दनमुद्यानमित	११०
इति नागरिकत्वेन	१४८	इति भिन्नाभिसन्धित्वाद्	१४	इतो नाधिकमस्त्यन्यत्	५८६
इति नानाविधैर्जल्पै	४५०	इति भुवनपतीनाम्	३२४	इतो निजगृहे देवि	३३५
इति निर्विद्य भोगेभ्य	३७६	इति भूयोऽपि तेनैव	२४६	इतो नृत्यमितो गीतम्	३८५
इति निर्विद्य भोगेषु	१७३	इति मातृचरस्यास्य	१४०	इतो मधुरगम्भीरम्	३८५
इति निश्चितलेखार्थ	१७६	इति यदेव यदेव निरूप्यते	४३१	इतोऽमुत समाकीर्णम्	२८७
इति निश्चित्य तत्सर्व	११७	इति यावान् जगत्यस्मिन्	३४४	इतोऽय प्रध्वनद्ध्वाक्ष-	२१४
इति निश्चित्य धीरोऽसौ	८५	इति रम्यतरानेष	४२१	इतो रज्जू षडुत्पत्य	२२४
इति निश्चित्य लक्ष्मीवान्	३२६	इति राज्ञानुयुक्तोऽसौ	१८५	इतोऽर्द्धचन्द्रवृत्ताङ्गा	११०
इति परममुदार दिव्य-	११६	इति लक्ष्मीपरिष्वङ्गाद्	२२६	इतो वन वनगजयूथसेवितम्	४३२
इति पुण्यादयात्तेपा	२०६	इति लोकान्तिकैर्देवै	३७६	इतोऽष्टमे भवे भावि	१८७
इति पुण्यि पुराणकवीशिनाम्	४२७	इति वाचिकमादाय	१७५	इतोऽस्तमेति शीताशु	३३४
इति पृष्टवते तस्मै भगवान्	४७४	इति विघ्नतविघ्नौघ	१६५	इतोऽह पञ्चमेऽभूवम्	१३६
इति पृष्टपते तस्मै सोऽवोचत्	२०८	इति विज्ञापितस्तेन	२५, १५६	इत्य गिर फणिपतौ सनय	४४२
इति पृष्टा नया किञ्चित्	१३०	इति विशेषपरम्परयान्वहम्	४२८	इत्य चराचरगुरु	६३५
इति पृष्टो मुनीन्द्रोऽसौ	१३०	इति वृत्त पुराकल्पे	२६	इत्य तदा त्रिभुवने	४७३
इति प्रार्थितोदारमहिमा	११०	इति वृषभकवीन्द्रै-	२७	इत्य निष्क्रमणं गुरो समुचितं	३६६
इति प्रत्यतात्मीयम्	३१६	इति व्यावर्णितारोह-	५११	इत्य भूता देवराड् विश्वभर्तु	५४६
इति प्रवर्त जनतामनस्वदो	५४५	इति श्रुत्वा वचो भर्तु	३३६	इत्य मुनिवच पथ्यम्	१३२
इति प्रवर्तनेष	१५०	इति श्लाघ्य प्रसन्न च	३८४	इत्य यस्य सुरासुरै प्रमुदितै	३०२
इति प्रतीतमाहात्म्या	८२	इति श्लाघ्यतमे मेरौ	३०१	इत्य युगादिपुरुषोद्भवमादरेण	६७
इति प्रतीतमाहात्म्यो	१०७	इति पण्मातृनिर्वर्त्यत्	४०५	इत्य विकल्पपुरुषार्थ-	११६
इति प्रत्यजान्तिगिन्या यान्त्या	३५४	इति सनारचक्रेऽस्मिन्	३७६	इत्य सुरासुरगुरु	३७०
इति प्रत्यजान्तिगिन्य-	३८८	इति तश्लाघ्यमाने ते	३५४	इत्य सुरासुरनरोरगयक्षसिद्ध-	५६४
इति प्रत्यजान्तिगिन्या यमो	३६७	इति सप्तगुणोपेतो	४५२	इत्य स्तुवद्भिरोधेन	३८

इत्यकृत्रिमनिशेष-	२३८	इत्यात्ततोषैः स्फुरदक्षयक्षै-	५४७	इत्युच्चैरुत्सवद्वैत-	३८१
इत्यदीनतरा वाचम्	४१०	इत्यादि जनसजल्पै	१६१	इत्युच्चैर्गणनायके निगदति	५३८
इत्यनन्तसुखे तस्मिन्	१६७	इत्यादि तद्गतालापै	१५४	इत्युच्चैर्वन्दिवन्देपु	३३५
इत्यनल्पगुणे तस्मिन्	३८६	इत्यादि दुराणानेतान्	५८५	इत्युदारतर विभ्रद्	२२४
इत्यनुध्यायता तेषा	२१५	इत्यादि दोषसद्भावान्	४५३	इत्युदारैर्गुणैरेभि	५६८
इत्यनुश्रूयते देव	२२	इत्यादि भूतवादीष्ट-	६६	इत्युदीर्य गिर धीरो	३३०
इत्यन्त पुरवृद्धानि	३८८	इत्यादियुक्तिभिर्जीव-	१४५	इत्युदीर्य ततोऽन्तर्द्धिम्	११३
इत्यन्वर्थानि नामानि	५०४	इत्यादि वर्णनातीत	२४१	इत्युदीर्य स्थिते तस्मिन्	६५
इत्यपारमिद दु ख	२१५	इत्याद्य कालभेदोऽव-	४६	इत्युद्गाह्य कुट्टान्त-	६६
इत्यभिष्टुत्य गूढाङ्गी	२८५	इत्याद्यस्य भिदे स्याताम्	४६२	इत्युन्मुग्धै प्रवृद्धैश्च	३८६
इत्यभिष्टुत्य तौ देवम्	३१२	इत्याद्याभरणौ कण्ठचै	३५२	इत्येकशोऽपि विषये	२४५
इत्यभिष्टुत्य नाकीन्द्रा	३६५	इत्याद्युपायकथनै	६४	इत्येकशोऽपि सम्प्रीत्यै-	३१४
इत्यभिव्यक्तवैशिष्ट्या	४०६	इत्यानन्दपरम्परा प्रतिदिनम्	३४५	इत्येकान्नशत पुत्रा	३४६
इत्यमी केतवो मोहनिर्जयो	५३०	इत्यापतत्सु देवेषु	५१३	इत्येवमनुवध्न्तौ	४०५
इत्यमीषा पदार्थानाम्	५६०	इत्याप्तवच स्तोत्रै	८	इद खाद्यमिद स्वाद्यम्	४४७
इत्यमीषु विशेषेषु	३८३	इत्याप्तोक्त्यनुसारेण	२१	इद ध्यानफल प्राहु	४६७
इत्यमुष्या व्यवस्थायाम्	४८३	इत्याम्नातैर्जलैरेभि	३६५	इद पुण्यमिद पूत-	२७
इत्यमूनि कथाङ्गानि	१८	इत्यायोजितसैन्यस्य	४६८	इदं पुण्याश्रमस्थान	३०
इत्यमूनि महाधैर्यौ	२३४	इत्यालोच्य कथायुक्ति-	१६	इद पुरो विमोचाख्यम्	४२३
इत्यमूनि युगारम्भे	३५२	इत्याविष्कृतमङ्गला भगवती	२८२	इद रूपमदीनानाम्	४०२
इत्यमूनि वनान्यासन्	५२३	इत्याविष्कृतमाहात्म्य	३८४	इद वपुर्वयश्चेद	३५५
इत्यशाश्वतिक विश्व-	१७३	इत्याविष्कृतरूपेण	२२०	इद स्तोत्रमनुस्मृत्य	६३०
इत्यष्टधा निकायाख्या	३७७	इत्युक्त प्रेमनिघ्नेन	१५४	इदमतिमानुष तव	५५६
इत्यसहचतरा धोरा	२१३	इत्युक्तखातिकावप्र-	४२५	इदमत्र तु तात्पर्यं प्राय-	४६३
इत्यसाधनमेवैतदी-	७२	इत्युक्तपरिवारेण	२२५	इदमत्र तु तात्पर्यं श्रुत-	४६३
इत्यस्मद्वचनाज्जात-	१४३	इत्युक्तमात्र एवासौ	१४१	इदमध्यवसायाह	१७
इत्यस्य परमा चर्याम्	४४७	इत्युक्तमार्तमार्तमा	४७८	इदमर्चयता शान्ति-	२७
इत्यस्य रूपमुद्भूत-	८७	इत्युक्तवन्तौ प्रत्याय्य	४११	इदमर्पयता नूनम्	१५२
इत्यस्य वचनात् प्रीतौ	४१०	इत्युक्तलक्षणा धर्म्यम्	४६२	इदमाश्चर्यमाश्चर्यम्	४४६
इत्यस्या गर्भचिह्नानि	३३७	इत्युक्तस्तु मया साधु	१५१	इदमेव युगस्यादौ	३३
इत्यस्याविरभूत् कान्ति.	३२७	इत्युक्तेन विभागेन	५३८	इदमेवार्हत तत्त्व	१०७
इत्यसौ तेन सम्पृष्ट	४५६	इत्युक्तवाथ स्वयबुद्धे	६३	इदानी तु विना हेतो	५४
इत्यसौ परमानन्द	६२	इत्युक्त्वा पण्डिताऽवोचत्	१३४	इन्द्रगोपचिता भूमि	१६१
इत्यसौ परमोदार	३४८	इत्युक्त्वा पण्डिताश्वास्य	१३४	इन्द्रच्छन्द महाहार-	३२६
इत्यसौ बोधितस्तेन	२१७	इत्युक्त्वा पुनरप्येवम्	१३३	इन्द्रच्छन्दादिहारास्ते	३५१
इत्यसौ मदनोन्माद-	१२६	इत्युक्त्वा मुहुराशास्य	३५५	इन्द्रनीलमयाहार्य-	५१२
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य	५४	इत्युक्त्वाऽस्मिन् गते पुत्र	१८७	इन्द्रनीलमयी यत्र	२३७
इत्याकलय्य तत्क्षेम-	३५६	इत्युच्चकै स्तुतिमुदारगुणानु-	५६४	इन्द्रनीलोपलै सौध-	३१०
इत्याकलय्य नाकेशा	३६१	इत्युच्चावचसञ्जल्पै	४०१	इन्द्रप्रतीन्द्रपदयो	१४५
इत्याकलय्य मनसा	५६५	इत्युच्चै प्रणिपत्य त जिनपति	१६६	इन्द्रसामानिकत्राय-	५०७
इत्याकलय्य मनसा	२३२	इत्युच्चै प्रमदोदयात्सुरवर-	२०६	इन्द्रस्तम्बेरम कीदृग्	५०६
इत्याक्रीड्य क्षण भूयो	३५४	इत्युच्चै सङ्गृहीता समवसृति	५७२	इन्द्राणीप्रमुखा देव्य	२६२
इत्याचार्यपरम्परीणममल	४४	इत्युच्चै स्तोत्रसपाठै-	३८	इन्द्रादीनामथैतेषाम्	५०८

ऐ		कदाचित् श्रान्तपर्यस्त	४६६	कर्णिकाभरणन्यास	१५८
ऐकाग्र्येण निरोधो य	४७४	कदाचित् सौधपृष्ठेषु	१६६	कर्णोत्पल स्वमित्यस्या	१६६
ऐशानेन्द्रोऽपि रुद्रश्री	२६२	कदाचिदथ गत्वाह	१४१	कर्णौ सहोत्पलौ तस्या	१२६
ऐशानो लिखित कल्पो	१४६	कदाचिदथ तस्यासन्	१२०	कर्मणाऽनेन दी स्थित्य	२४६
औ		कदाचिदथ तस्याऽऽसीद्	६१	कर्मबन्धनिर्मुक्त	५८६
औरभ्रश्च रणैरन्यान्	२१३	कदाचिद् गिरिकुञ्जेषु	४६५	कर्मबन्धननिर्मुक्तो	१४२
क		कदाचिद् गीतगोष्ठीभि	२६७	कर्मबन्धविनिर्मुक्त	१६५
क कीदृग् न नृपैर्दण्ड्य	२७७	कदाचिद् दीर्घिकाम्भ सु जल-	१६६	कर्मभूमिनियोगो य	४२०
क पञ्जरमध्यास्ते	२७४	कदाचिद् दीर्घिकाम्भ सु सम	३२३	कर्मभूरद्य जातेय	३५६
क समुत्सृज्यते धान्ये	२७६	कदाचिद् वहिरुद्याने	१६८	कर्मशत्रुहण देवम्	६००
क एषामुपयोग स्याद्	६३	कदाचिद् वृत्तिसख्यानम्	४६१	कर्मापेक्ष शरीरादि-	७१
कचग्रहैर्मृदीयोभि	१६८	कदाचिन्नन्दनस्पर्द्धि तरु-	३२३	कर्माहितीर्महाध्यान-	४०६
कचभारो बभौ तस्या	२५४	कदाचिन्नन्दनस्पर्द्धि परा-	१६८	कर्मेन्धनदहे तुभ्यम्	३०८
कच्चिज्जीवति मे माता	४००	कदाचिन्निम्नगातीरे	४६६	कर्मेन्धनानि निर्दग्धम्	४६२
कच्छाद्या यस्य सद्बृत्त	७	कदाचिल्लिपिसख्यान-	३२२	कर्हिचिद् गीतगोष्ठीभि	३२२
कटकाङ्गदकेयूरभूषिता	३६७	कनकाद्रितटे क्रीडा	१४६	कर्हिचिद् वह्निगाराव-	४६५
कटकाङ्गदकेयूरमुद्रिका	१५६	कनत्कनकभृङ्गार-	२६६	कर्हिचिद् वह्निरूपेण	३२२
कटीतट वभावस्य	३४७	कन्धरस्तन्मुखाञ्जस्य	२१६	कलत्रस्थानमेतस्या	२५२
कटीतट कटीसूत्रघटित	५६	कपोलफलके चास्या	१५०	कलशावमृतापूर्णा	२६३
कटीमण्डलमेतस्या	२५२	कपोलावलकानस्या	२५३	कलाकुशलता कत्य-	१६७
कटीसूत्रश्रिय तन्वन्	५१४	कपोलावस्य सशुष्यत्	११४	कलाधरकलास्पर्द्धि-	५०
कठिनेऽपि शिलापट्टे	३६७	कमलदलविलसदनिमिष-	५६५	कलाश्च सकलास्तस्य	३२१
कण्टकालग्नवालाग्रा	४०४	कमलप्रमित तस्य	५५	कलासमाप्तिषु प्राय	७५
कण्ठाभरणभाभार	३८३	कमलिनीवनरेणुविकर्षिभि	४३०	कलासु कौशल शौर्यं	८३
कण्ठाभरणरत्नाशु	३४२	कम्पते हृदय पूर्वं	१२१	कलासु कौशल इलाध्य	३२१
कण्ठे हारलता विभ्रत्	३६७	कम्पमाग्रवन रेजे	५२४	कल्पद्रुम इवोत्तुङ्ग-	५७
कण्ठे हारलतारम्ये	३४२	कर वाम स्वपर्यंके	३६	कल्पद्रुममिवाभीष्ट-	५६४
कथ च स सृजेल्लोक	६६	कर सुदीर्घनिश्वास-	५१०	कल्पद्रुमवनच्छाया-	६३१
कथ तु पालयाम्येन	१७४	करटक्षरदुद्गम-	१६५	कल्पद्रुमस्य शाखासु	३१७
कथ भर्तुरभिप्रायो	४५६	करणात्रययाथात्म्य-	४७०	कल्पद्रुमा समुत्तुङ्गा	५३०
कथ मूर्तिमतो देहाच्चैतन्य-	६७	करणा परिणामा ये	४७०	कल्पद्रुमेषु कात्स्न्येन	६२
कथाकथकयोरत्र	१८	करणे त्वनिवृत्ताख्ये	४७०	कल्पाङ्घ्रिपादिवोत्तुङ्गा-	१७
कथोपोद्घात एष स्यात्	४४	करण्डस्थिततत्कार्य-	१७५	कल्पाङ्घ्रिपा यदा जाता	५५
कदम्बानिलसवास-	१६१	करहाटमहाराष्ट्र-	३६०	कल्पानोकहमुत्सृज्य	४०६
कदम्बामोदसवादि-	४१५	कराङ्गुलीषु शक्रस्य	३१७	कल्पानोकहवीथीयम्	१४६
कदलीस्तम्भनिर्भासौ	३४७	करिकेसरिदावाहि-	१६५	कल्पानोकहवीथीरणा	५०
कदाचिच्च नरेन्द्रेण	१४४	करिणा मदधाराभि	१७६	कल्पेऽनल्पद्विरैशाने	१३२
कदाचिज्जलकेलीभि	२६७	करीन्द्रकुम्भनिर्भेद-	१६५	कल्याणत्रितये वर्या	१४६
कदाचित् कानन रम्ये	१३०	करीन्द्रपृथुयादोभि	१७६	कल्याणप्रकृतिर्दीप्ति-	६२५
कदाचित् पदगोष्ठीभि.	३२२	करौ करिकराकारावूरु	८३	कल्याणाभिषवे तस्मिन्	१५८
		कर्णपूरोत्पल तस्या	१२६	कवय सिद्धसेनाद्या	१०
		कर्णाभरणदीप्राशु-	३४१	कवयोऽन्येऽपि सन्त्येव	१२
		कर्णाविविद्धसच्छिद्रौ	३०४	कवि पुराणमाश्रित्य	८

श्लोकानामकाराद्यनुक्रमः

कवि पुनरापुनरो	६१५	कायाकारेण भूताना	६७	किञ्चिद् दृष्टिमुपावर्त्य	४८५
कविप्रसन्नस्य परा सीमा	११	कायात्मक न चैतन्य	६६	किणीभूतदृढस्कन्धान्	१८०
कविप्रमादजान् दोषान्	६	कायासुखतितिक्षार्थम्	४५६	किन्नु तेऽद्य पुरो नाह	१३०
कवीना कृतिनिवाहे	१५	कायेनातिक्रमस्तेषा	१३२	किन्त्वत्र कतिचित् कस्मात्	१४६
कवीना गणकाना च	१०	कारण परिणाम स्यात्	४५४	किन्त्वन्तर पुराण स्यात्	४३६
कवीना तीर्थकृद्देव	११	कारणान्न विना कार्यम्	१२१	किन्नराणा कलक्वाणौ	५२१
कवेर्वीरिव मुश्लिष्टम्	१३४	कारवोऽपि मता द्वेधा	३६२	किन्नामानश्च ते सर्वे	२४
कवेर्भोत्रोऽयवा कर्म	१५	कारिणारुणारणेण	१०३	किमत्र बहुना यो-	४७६
कपायमलविश्लेषात्	४६२	कारीषाग्नीष्टकापात-	२४६	किमत्र बहुनोक्तेन धर्म-	४१
कम्पादगिमञ्जनाकीर्णं	१८५	कार्येषु प्राग्विधेयम्	५७३	किमत्र बहुनोक्तेन यद्यत्	२१५
कन्मिन् युगे कियन्तो वा	२४	कालचक्रपरिभ्रान्त्या	४७	किमत्र बहुनोक्तेन शास्त्र	३५७
कन्दारवारिभिर्भूत-	१०२	कालश्च नातिशीतोष्ण-	४६५	किमत्र बहुनोक्तेन सर्वो	४६१
काश्चिच्च शुकलपेण	३२२	कालानुभवसम्भूत-	४६	किमप्यन्तर्गत जल्पन्	३६७
काश्चिदुत्तुङ्गशैलाग्रात्	२१३	कालान्ते नरकाद् भीमात्	२१७	किमयममरनाथ किंस्विदीशो	१८६
काश्चिन्निशातशूलाग्र-	२१३	कालोऽन्यो व्यवहारात्मा	४६	किमयममरसर्गं	५३६
का क श्रयते नित्यम्	२७६	काव्यानुचिन्तने यस्य	११	किमस्य लक्षण योगिन्	४७४
काकला स्वरभेदेषु	२७५	काशीमवन्तिकुरुकोशल-	६३५	किमालम्बनमेतस्य	४७४
काकली स्वरभेदेषु	२७५	काश्चनोच्चलिता व्योम्नि	२६४	किमाहु सरलोत्तुङ्ग-	२७१
काकलीस्वरमामन्द्र-	३१५	काश्चित् प्राबोधिकैस्तूयै	२६६	किमिन्दुरेको लोकेऽस्मिन्	२६६
काचित् सीगन्धिकाहृत-	२६५	काश्चित् प्रेक्षणगोष्ठीषु	२६७	किमिन्द्रजालमेतत् स्यात्	३८५
काचिदाभरणन्यस्यै	२६५	काश्चित् सङ्गीतगोष्ठीषु	२६८	किमिमे परिहर्तव्या	६३
का चेद् दानस्य सशुद्धि-	४५७	काश्चिदन्तर्हिता देव्यो	२६६	किमिमे श्रीसरस्वत्यौ	३५४
काञ्चीदामपरिक्षिप्त-	३८४	काश्चिदरचितै स्थानै	२६७	किमेतत् पितृदाक्षिण्यम्	३३०
काञ्चीदाममहानाग-	१६८	काश्चिदुच्चिक्षिपुज्योति	२६६	किमेतदिति पृच्छन्ती	५०७
काञ्ची यष्टिर्वनस्येव	५२७	काश्चिदैरावती पिण्डीम्	३१७	किमेते दिव्यकन्ये स्ता	३५४
का याग्या किमाध्यातम्	४६८	काश्चिदोष्ठाग्रसदष्ट-	२६८	किमेष भगवान् भानु	३८५
कान्ताना कण्ठलवैर्मुदुतलै	२०७	काश्चिद्दर्शितदिव्यानु	२६६	किमेष मदनोन्माद	१२६
कान्तार्चयौ सङ्गीर्य	१८१	काश्चिन्महानसे युक्ता	२६५	किमेष हासस्तनुते	५४५
कान्त्यामवमिवापातुम्	२२८	काश्चिन्नीराजयामासु	२६६	किमेपा वैद्युती दीप्ति	२५८
कान्तिप्यु वा भुक्त्वा	३६६	काश्चिन्मृतविनोदेन	२६७	कियत्यपि गते काले	३६३
कान्त्य कामन्वी च	५०६	काश्चिन्मद्गलधारिण्य	२६५	कियन्तमथवा काल	३६८
कान्त्यानिमय स्त्रीणा	३५७	काश्मीरेशीनरान्त-	३५६	कियन्मात्रमिद देव	१५५
कान्त्यागमनस्यश्च	१२१	काश्यपोऽपि गुरो प्राप्त-	३७०	किरणैर्यत्र रत्नाना	२३७
काश्चिद्विनिर्दिष्टे	१५१	काश्यमित्युच्यते तेज	३७०	किरीटोत्सङ्गसङ्गिन्या	३८३
काश्चिद्विनिर्दिष्टे	२२८	का स्वरभेदेषु	२७५	कीदृश नरके दुःख	२०६
काश्चिद्विनिर्दिष्टे	१६३	कि किलाभरणैर्भारै	३७६	कीदृश वृत्तक तेषा	२४
काश्चिद्विनिर्दिष्टे	२७६	कि केन साधित तत्स्यात्	६६	कुट्टकुमालिप्तसर्वाङ्गीम्	१६०
काश्चिद्विनिर्दिष्टे	३६०	कि गौर्यन्निदशैर्मुक्तो	२६६	कुचकुम्भै सुरस्त्रीणा	२६६
काश्चिद्विनिर्दिष्टे	४८५	कि तेषामायुषो मान	२४	कुञ्चितास्तस्य केशान्ता-	३४७
काश्चिद्विनिर्दिष्टे	६६	कि महादन्तिनो भारम्	४०२	कुञ्जरकराभभुजमिन्दुसमवक्रम्	५६५
काश्चिद्विनिर्दिष्टे	६०३	कि वात्र बहुनोन्नेन	१०५	कुण्डलद्वयसशोभि-	३४७
काश्चिद्विनिर्दिष्टे	१८१	कि वा बहुभिरालापै	२०१	कुण्डलार्ककरस्पृष्ट-	२२८
काश्चिद्विनिर्दिष्टे	६८८	कि विप्रेषिणैषा मे	२३	कुण्डलोद्भासि तस्याभात्	२१६

कुदृष्टयो व्रतैर्हीना	१६७	कृतप्रथममाङ्गल्ये	३५६	केचित् स्रग्वस्त्रगन्धादीन्	४४६
कुन्थो सप्तदश ज्ञेय-	४२	कृतमतिरिति धीमान्	२८८	केचित् स्वान्येव मासानि	२११
कुन्देन्दीवरमन्दार-	१६२	कृतरङ्गवलौ रत्न-	३३६	केचिदन्यकृतेरर्थे	१२
कुमानुषत्वमाप्नोति	४५८	कृतव्यलीककोप मा	१४६	केचिदन्यवचोलेशान्	१२
कुमार परमो धर्मो	१०६	कृताञ्जलिपुटो भक्त्या	१८१	केचिदर्थमपि प्राप्य	१३
कुमारेण तपस्तप्त	१६१	कृताना कर्मणामार्ये	१३१	केचिदर्थस्य सौन्दर्य-	१५
कुमारो वज्रजडघोष्यम्	१५६	कृतानुकरणा नाट्यम्	३१३	केचिद् मानेषु	५३२
कुमुदप्रमित तस्य	५६	कृतान्त शुद्धिरुद्धत-	४६८	केचिद् बल्कलिनो भूत्वा	४०२
कुमुदाङ्गमतो विद्धि	६५	कृताभिवन्दनास्तस्मात्	१२६	केचिद् वर्णोज्ज्वला वारणी	१३
कुमुदाङ्गमितायुष्को	५६	कृताभिषेको रुरुचे	३६६	केचिन्मज्जनसामग्र्या	४४६
कुम्भौ हिरण्मयौ पद्म-	२५६	कृताभिषेचना सिद्ध-	१७८	केचिन्मिथ्यादृश काव्य	१२
कुरुत तपसि तृष्णा	११६	कृताभिषेचनानेतान्	३६६	केनासि कर्मणा जाता	१३०
कुरुपवृ हण धर्म	२००	कृतार्चनस्तत स्तोतु	१६२	के मधुरारावा	२७५
कुर्वते बलिबिन्द्यासम्	२६६	कृतार्थतरमात्मानम्	४५४	केयूररुचिरावमौ	८८
कुर्वन्ति स्मापरासान्द्र-	२६६	कृतार्थस्य विनिर्मित्सा	७०	केवली केवलालोक-	४८७
कुर्वन्त्यो वा जिनस्तोत्रम्	५१७	कृतार्था निष्ठिता सिद्धा	४६६	केशलोचश्च भूगय्या	४०३
कुर्वन्नीलोत्पल कर्णे	१६०	कृतावगाहना स्नातु	१८०	केशवश्च परित्यक्त-	२२३
कुलजात्याश्रिता विद्या	४२०	कृतावगाहनो भूय	३६६	केशान् भगवतो मूर्ध्नि	३६१
कुलशैलायितानस्य	३१७	कृतावतारमुद्बोध-	४६४	केपाञ्चिच्छीर्षक यष्टि	३५०
कुलाचलपृथूत्तुङ्गवीची-	१०६	कृती कृताभिषेकाय	२३१	कोकिलो मञ्जुलालाप	२७५
कुलाचलाश्चलन्ति स्म	३१६	कृती कृतार्थ सत्कृत्य	६१२	कोटीकोटयो दशैकस्य	४७
कुलाना धारणादेते	६४	कृतेर्या शुद्धिरिद्धि	१६२	कोऽभ्युपायो महाभाग	५४
कुलायेषु शकुन्ताना	७५	कृतेष्टय कृतानिष्टविधाता	३०१	को मञ्जुलालाप	२५७
कुलिथत्रिपुटौ चेति	६२	कृतोपशोभमभवत	३६३	कोशादसेरिवान्यत्व	११५
कुशलै पात्रदानाद्यै	६४	कृतोपशोभे नगरे	१५८	कोष्ठबुद्धे नमस्तुभ्य	३५
कुशीला कुत्सिताचाराः	१६७	कृतो मुनिवधानन्द-	३१	कोष्ठागारनियुक्ताश्च	१८६
कुशेशयशय देवम्	२८०	कृत्वा गन्धोदकैरित्थम्	३००	कोसलादीन् महादेशान्	३५६
कुसुमरचितभूषणावतसा	४३३	कृत्वा तनुस्थिति धीमान्	४५५	कोऽस्य भावो भवेत् कि वा	४७४
कुसुमरसपिपासया निलीनै	४३३	कृत्वाऽऽदित प्रजासर्ग	३६७	क्रमाच्चक्रधरो भूत्वा	१४५
कुसुमापचये तेषा	१८०	कृत्वानशनसच्चर्या	१०६	क्रमात् कैवल्यमुत्पाद्य	१०६
कुसुमितवनषण्डमध्यमेता	४३३	कृत्वाष्टाल्लिकमिद्धि	११३	क्रमादथ सुरानीकान्यम्बराद-	२८५
कुस्तुति कामतत्त्वस्य	२५४	कृत्वा समवतार तु	३१४	क्रमादवापततामेतौ	१७६
कूजद्विरेफा वनराजिरेषा	४३५	कृत्स्नस्य मोहनीयस्य	२३५	क्रमोन्नत सुवृत्तञ्च	३४०
कूटनाटकमेतत्तु	३७६	कृत्स्नाद् विरम्य सावद्यात्	३६०	क्रमोपधानपर्यन्त-	३८४
कूटस्थोऽपि न कूटस्थ	३०६	कृत्स्नामिति जगन्नाडीम्	२६८	क्रमौ मृदुतलौ तस्य	३४७
कूटागारसभागोह-	५३२	कृष्णा च मध्यमोत्कृष्टा	२१६	क्रियानि श्रेयसोदार्का	४८४
कूटैर्नवभिरुत्तुङ्गै	४१४	कृष्यादि कर्मषट्कञ्च	३६८	क्रूरैरपि मृगैर्हिंस्रै	५६७
कृत सोपानमामेरो	२८८	केकिनो मधुरारावा	२७५	क्रोधलोभभयत्याग-	४६०
कृतचरणसपर्यो	३६५	केचित् कन्या समानीय	४४६	क्रोश रुद्रा महावीर्यो	५३७
कृतपुष्पाञ्जलेरस्य	३१५	केचित् त्वमेव शरणम्	४०१	क्रोशद्विक्रोशसीमानो	३६१
कृतप्रणयकोपेय	१४६	केचित्परावरे ज्ञस्य	४४६	क्रोशार्धपीठमूर्धा	५३७
कृतप्रणाममागीर्भि	२०३	केचित् पादानुपादाय	४४७	क्रौञ्चसारसरूपेण	३२३
कृतप्रणामो तौ तस्य	१७६	केचित्सीशब्दमिच्छन्ति	१३	क्लिष्टोऽसौ मुहुरार्त स्यात्	२४५

श्लोकानामकाराद्यनुक्रमः

स कोदृक् गम्यते रेखा	२७०	क्वेद तपोवन शान्तम्	४०७	खातिका जलविहङ्गविरावै	५५०
स गम्भीर पुगणाच्च	८	क्षणमक्षणनीयेषु	२६६	खाद् भ्रष्टा रत्नवृष्टि सा	२५८
स चनर्वतिनो राज्य	१७५	क्षणाददृश्यता प्राप	३७३	खेचरीजनसचार-	७८
सचन सञ्चनभित्तिपराहते	४२८	क्षणादेक क्षणान्नैक	३१६	ग	
सचिच्च चतुर्दश्व-	४१५	क्षणात्रयन् क्षणाज्जीर्यन्	३७५	गगनाङ्गणपुष्पोपहार-	२६७
सचिच्च चिचरद्विच-	४१५	क्षणिकाना च चित्तानाम्	५००	गगनाङ्गणमारुध्य	२६१
सचिच्च शाठना भूमि	५२३	क्षत्रिया गस्त्रजीवित्वम्	३६२	गगनादिचरीय सा	४२३
सचिच्छित्रीमुगोद्गीर्ण	४१४	क्षमागुणप्रधानाय	३०७	गगनानुगत यानम्	५६७
सचिच्छुक्लदक्ष्यै	५१४	क्षमाधनाना क्रोधाग्नि	१३२	गङ्गासिन्धू हृदयमिवास्य	४४१
सचिज्जनधगस्तुद्रगान्	१७५	क्षरद्भि शिखरोपान्ताद्	४११	गङ्गासिन्ध्वोर्महानद्यो	३६४
सचिन् कण्ठीग्वाराव-	४१४	क्षान्तिभाक् पृथिवीमूर्ति	६११	गजकुम्भस्थले तेन	११०
सचिन् किञ्चिन्नगूढान्त	१३४	क्षायिक दर्शन तस्य	३२१	गजदन्ताद्रयोऽस्यैते	३२२
सचिन् कुडाहिमूत्कारे	४१५	क्षायिकानन्तदृग्बोध-	४८६	गजविक्रियया काचित्	२६३
सचिन् स चित्तजन्मासौ	५१५	क्षायोपशमिक भावम्	४६१	गजेन्द्रमवदाताङ्गम्	२५६
सचित्तयोजरगेन्द्र-	५१५	क्षायोपशमिकोऽस्य स्यात्	४७८	गजेन्द्रमैन्द्रमाम्न्द्र-	५५७
सचिन्पुलिनममुप्त-	४१५	क्षारमम्बु यथा पीत्वा	२४४	गणभृद्भिरप्यगणितातन-	६
सचिन् प्रेक्षागृह्यासन्	५२३	क्षालयन्निव दिग्भित्ती	२३६	गणाधीशै प्रणीतेऽपि	२३
सचिदकाण्डविनितकेकिभि	४२८	क्षालिताग परागस्य	४६७	गणेशमथवोल्लङ्घ्य	४४०
सचिदज्जनपुञ्जाभ	५१४	क्षितिरकृष्टपचेलिमसस्यसू	४२६	गण्डोपल वनकरीन्द्रकपोल-	२०८
सचिदनज्जनवेश इवामरी	४२८	क्षिपन्ति निवसन्त्यस्मिन्	६६	गत शतमति श्वभ्र	४५०
सचिदनेकपयूयनिषेवितै	४२८	क्षीरोदवारिभिर्भूय	२६०	गतानुगतिका केचित्	५६०
सचिदुन्नतमानिम्नम्	४१४	क्षीरोदोदकधौताङ्गी	५२६	गतिमागतिमुत्पत्तिम्	३८७
सचिदुपोटपय कणाशीतलै	४२८	क्षुतजृम्भितमात्रेण	१६६	गतिस्थितिमतामेतौ	५८७
सचिद्गिगिरित्पूरा	६१	क्षुत्पिपासादिवाधश्च	३५८	गतीन्द्रिये च कायश्च	५८३
सचिद् द्विपहृग्व्याघ्र	५२०	क्षुदादिवेदना भावात्	४६७	गतेऽथ चारणद्वन्द्वे	२०३
सचिद् धरिन्मगितटरोचिपा	४३२	क्षुध पिपासा शीत च	२३६	गते भरतराजषौ	५६४
सचिद् ब्रह्मकरोत्तप्त	४१४	क्षुन्दन्तो लवलीलतास्तट-	१३७	गतेष्वशु क्रसधानम्	२६६
सचिद् वनद्विरदकपोलघट्टनै	४३२	क्षुभ्यन्तमव्धिमुद्गेलम्	२६०	गत्योरथाद्ययोर्नाम	४७१
सचिद् वाप्य वचिन्नय	५३२	क्षुरक्रियाया तद्योग्य-	४५३	गत्वा गुहनिदेशेन	२१७
सचिद् किनतुरग्रीडाम्	४१५	क्षेत्र त्रैलोक्यविन्यास	३२	गदादिपाणयस्तेषु	५३४
सचिद् मिचित्रस्ताम्	४१५, ५१६	क्षेमकृकर क्षेमकृदार्यवर्ग	६६	गन्धर्वनायकारवध-	३१६
सचिद् मित्रमग्न्यात	५१६	क्षेमन्धर इति स्याति	५४	गन्धर्वपुरनाथस्य	१४१
सचिद् मित्रमग्न्यात	५२३	क्षेमवृत्ति ततस्तेपा	५५	गन्धर्वारव्यसगीतमृदङ्गा	३६४
सचिद् मित्रमग्न्यात	५२३	क्षेत्री क्षेमकृरोऽक्षय्य	६२१	गन्धर्वारव्यसगीतमृदङ्ग-	२६६
सचिद् मित्रमग्न्यात	५१६	ख		गन्धर्वारव्यसगीता	२८७
सचिद् मित्रमग्न्यात	५१२	खगेन्द्रैम्पमेव्यत्वात्	५३४	गन्धर्वारव्यसगीता	५२५
सचिद् मित्रमग्न्यात	२६५	खचर सह सम्बन्धाद्	४१३	गन्धानामिव सा सूति	५४२
सचिद् मित्रमग्न्यात	२६५	खननोत्तापनज्वालि-	३७५	गन्धाम्बुस्तपनस्यान्ते	३००
सचिद् मित्रमग्न्यात	३८०	खमिव सतार कुमुमाटय वा	५५२	गन्धारपन्नगपदोपपदे च विद्ये	४४३
सचिद् मित्रमग्न्यात	२६५	खगरदितमुन्प्रोथ	२१४	गन्धिले विषयेऽयोध्या-	१४२
सचिद् मित्रमग्न्यात	२६५	खलु भुक्त्वा लघत्तिष्ठ	४५०	गन्धेनामोदिना भर्तु	३०४
सचिद् मित्रमग्न्यात	२६५	खग्न्यग्रे गगनातीता	२५८	गन्धैर्गन्धमयी वासीत्	५४१
सचिद् मित्रमग्न्यात	२६५	खग्न्यग्रे विप्रकीर्णानि	२५८		

गन्धधूपैश्च दीपैश्च	३०१	गुरोर्वा गुरुपुत्राद्वा	४०१	घनागमे घनोपान्त-	१६१
गन्धं सुगन्धिभि सान्द्रै	३०४	गुरोस्तस्यैव पाञ्चै तौ	१४५	घनाघनघनध्वानं	६०
गम्भीरनाभिक मध्ये	८८	गुरौ भक्ति परा तन्वन्	५७४	घर्मांस्ववर्षससिक्त-	५६४
गरीयसी गुरौ भक्ति	३६१	गुहाद्वय च यो धत्ते	७६	घर्मारम्भे यथा यद्वत्	६५
गरुडध्वजसज्ञ च	४२२	गुहानिलं क्वचिद् व्यक्तम्	४१५	घर्मे घर्मांस्वविच्छेदि	१६०
गरुडध्वजदण्डाग्रा-	५२६	गुहापुलिनगिर्यग्र-	४६५		
गर्भगेहे शुचौ मातु	३३०	गुहामुखैरिवापीत	२६५	च	
गर्भात्प्रभृत्यसौ देवो	४६२	गूथकृमेर्यथा गूप्य-	२४३	चक्रच्छत्रासिदण्डादि-	३४३
गलिताभरणन्यासे	१६८	गृहप्रदीपयोर्यद्वत्	६६	चक्रध्वजा सहस्रारै	५३०
गवा गणा यथाकाल-	७७	गृहमेधी गृहीताणुव्रत	१३६	चक्रपूजा तत कृत्वा	१२६
गवेन्द्र दुन्दुभिस्कन्ध	२५६	गृहाङ्गणानि रथ्याश्च	१८४	चक्रवर्तिकृता प्राप्य	१५४
गव्यूतिप्रमिजोच्छ्राया	५०	गृहाङ्गण सौधमुत्तुङ्ग	१६३	चक्रवर्ती महाभाग	१६१
गात्रमनङ्गभङ्गकृदतिसुरभि	५६६	गृहीतमरणारम्भ-	११४	चक्रवर्ती वन जात	१७५
गायन्ती जिनराजस्य	५२१	गृहीत्वाह च तद्वार्ताम्	१५२	चक्रिणोऽभयघोषस्य	२२०
गायन्तीना किन्नराणा वनान्ते	४३८	गृहे गृहे महास्तोष	१६२	चक्रेभवृषभाम्भोज-	५३६
गायन्तीषु सुकण्ठीषु	३८२	गृहेषु दीर्घिका यस्या	८०	चक्रिसूनु तमासाद्य	१७६
गारुडोपलनिर्माणै	५२५	गेह गेह यथायोग्यम्	४५१	चक्षुश्चारो विचारश्च	८७
गिरिकूटतटानीव सौधकूटानि	३१०	गोक्षीरफेनमक्षोभ्यम्	४२६	चक्षुषी परमात्मानम्	११५
गिरिरय गुरुभि शिखरैर्दिवम्	४२७	गोचरोऽपि गिरामासाम्	६२६	चक्षुषी रेजतुस्तस्य	८७
गिरीन्द्रोऽय स्वशृङ्गाग्रै	१०६	गोतमा गौ प्रकृष्टा स्यात्	३३	चक्षुष्मानिति तेनाभूत्	५६
गिरेरिव विभोर्मूर्ध्नि	२६४	गोतमादागतो देव	३३	चतसृष्वपि दिक्ष्वस्य	५१५
गीर्वाणेन्द्रस्तमिन्द्राण्या	२८६	गोपुरादालयोर्मध्ये	४२५	चतस्र कटुका कर्म	४७१
गुणमणीस्त्वमनन्ततयान्विताम्	५५८	गोहससदृशान् प्राहु	२१	चतु शरणमाङ्गल्य-	६०१
गुणवान् कर्मनिर्मुक्ता	५८२	गौ स्वर्गं सप्रकृष्टात्मा	३७०	चतु षष्ट्यार्धहारा स्यात्	३५१
गुणा सैनिकता नीता	४६८	ग्रन्थप्रमाणनिश्चित्यै	४०	चतु सहस्रगणना	३६१
गुणाकारविधि सोऽय	६५	ग्रहणग्रहविक्षेप-	५३	चतुर्गोपुरसम्बद्धत्रिसाल-	५२४
गुणादरी गुणोच्छेदी	६१३	ग्रहमण्डलमाकृष्टम्	१६८	चतुर्गोपुरसम्बद्धसाल-	५१५
गुणाधिपो गणज्येष्ठो	६१३	ग्रामा (ग्राम) कुलशतेनष्टो	३६०	चतुर्थे जन्मनीतस्व	१८२
गुणानामाकर प्रोद्यत्	२६४	ग्रामाणा कोटिरेका स्यात्	४२५	चतुर्दण्डान्तरश्चातो	४२४
गुणानाश्रित्य सामग्री	६२	ग्रामावृत्तिपरिक्षेपमात्रा	३६०	चतुर्दशमहाविद्यास्थानाकूपा-	३३
गुणान् गुणास्थया पश्येत्	४५६	ग्रीवास्या राजिभिर्भेजे	१२६	चतुर्दशमहाविद्यास्थानाना	४३
गुणिन त्वामुपासीना	५६६	ग्रैवेयमालया कण्ठम्	५११	चतुर्धा तत्खलु ध्यानम्	४७७
गुणैरस्यैव शेषाश्च	२३०			चतुर्भि स्वैरमात्यैस्तै	८६
गुणैर्द्वादशभिर्युक्तो	४६७	घ		चतुर्भिश्चामलैर्बोधै-	३४
गुणास्ते गणनातीता	३६२	घटयिष्यामि ते कार्यम्	१३४	चतुर्भिर्रुजितैर्बोधै-	३६८
गुप्तयो गुप्तिरस्यासन्	४०३	घटिकाजलधारेव	३७४	चतुर्विंशत्यार्द्धगुच्छो-	३५१
गुरु प्रमाणमस्माकम्	३६२	घटीद्वन्द्वमुपात्तधूपकम्	५५१	चतुष्काणा सहस्र स्यात्	४२५
गुरुप्रवाहसम्भूति-	१७	घण्टाकण्ठीरवध्वान-	२८४	चत्वारो लोकपालाश्च	२२४
गुरुप्रसादन श्लाघ्यम्	४०६	घण्टाजालानि लम्बानि	५२७	चन्दनद्रवसिक्ताङ्गी	१६०
गुरुब्रुवोऽह तद्देव	३३०	घण्टाद्वयेन रेजेऽसौ	५११	चन्दनेनानुलिप्ता तौ	१५८
गुहसाक्षि तयोरित्थ	१६०	घनकोणहता सुरपाणविकै	५४७	चन्द्रकान्तमये चन्द्र-	३८६
गुरुणा यदि ससर्गो	२०५	घनञ्च जघन तस्य	८८	चन्द्रकान्तशिलाचूर्णै	५१४
गुरो ममरामि कैवल्य	१४६	घनध्वनिमिव श्रुत्वा	५६१	चन्द्रकान्तशिलानद्ध-	४२१

चन्द्रगन्तोर्पलञ्चन्द्र-
चन्द्रानुग्रयवाम
चन्द्रार्कगन्दिमगोधि-
चन्द्रोदयवृत्तनम्य
जम्ना गन्तकक्षा म्यु
चन्द्रगन्तव्य मोञ्चान्
चन्द्रादिस्तृतीय ग्याद-
चन्द्रमाङ्गतयैत्राग्य
चराचरगुर्गाण्यो
चराचरगुर्गोर्ध्व
चलच्चामरमद्रघातप्रति-
चलच्चामरमद्रघातवी-
चलच्चारीरोदवीवीभ्य
चलच्चामीलिस्तानु-
चलन्ति न्य तदेन्द्राणाम्
चलच्चिघ कटीप्वामाम्
चलत्पताकमायद्ध-
चलपतयत्रैरवान्तं
चातका मधुर रेण-
चामीकरमयप्रस्थ-
चामीकरमया स्तम्भा
चामीकरमयेध्वने
चामीकरमर्वा पोता-
चामीकरनिर्माण
चाम्पक वनमराभात्
चारगा चरणद्वन्द्वे
चारित्र्य दर्शनज्ञान-
चारिभि ररणोदिवत्रै
चारित्र्य रचितमञ्जुषे
चारित्र्य रचोद चित्रम्
चारित्र्य रचोद चित्रम्
चारित्र्य रचोद पाद-
चारित्र्य रचोद पाद-
चारित्र्य रचोद पाद-

८१२
१०
६०
११
२२५
१०३
३६
३४४
६२५
३६५
५४०
५७५
५६६
३१६
४०५
३१८
३१२
४३४
६०
४१५
१५७
१६६
५०
१६४
५२४
२०४
५८५
२६८
५६६
३१५
१०५
७
१५०
१६५
१६
५०३
१६६
१०८
१०८
१०८
१०८

चेतनालक्षणो जीव
चेतया सोऽभिसन्वाय
चैतन्य भूतमयोगाद्
चैत्यद्रुमेपु पूर्वोक्ता
चैत्याधिष्ठितवृद्धत्वाद्
चेत्रे मास्यसिते पक्षे
चोदयन्त्यसुराञ्चनान्

छ

छत्र धवल रुचिमत्कात्या
छत्र ध्वज सकलशम्
छत्रचामरभृङ्गार-
छत्रत्रितयमाभाति
छत्राकार दधदिव चान्द्रम्
छत्राणा निकुरम्बेण
छत्रस्थानुपलब्धिभ्य
छत्रस्थेपु भवेदेतत्
छन्दानुवर्तन भर्तु
छन्दोऽवचित्यलङ्कार-
छन्दोविचितिमप्येव
छन्दोविच्छन्दसा कर्ता
छन्दोपस्थापनाभेद-

ज

जगच्चूडामणिर्दीप्ति
जगच्चूडामणोरस्य मूर्ध्नि
जगज्जयी जितानङ्ग
जगता जनितानन्दो
जगत्त्रयनिवेशश्च
जगत्पद्माकरस्यास्य
जगत्प्रबोधनोद्योगे
जगत्प्रीतिद्वकरो योऽभ्य
जगत्पाटारमीशानम्
जगदानन्दनेत्राणा
जगदापूर्य विश्वज्ञ
जगद्गुरु समादाय
जगद्गुरोर्गुणानत्र
जगद्गृहमहाद्वारि
जगाद श्रीमती सत्य
जग्राह जगभूमिं ताम्
जग्ने कयापि सोत्कण्ठम्
जघनाभोगमामुक्त-
जघने रमतावेष्ट
जघन्य शीलवान् मिथ्या

५८२
४६६
६६
५३१
५२६
३६०
२११
५४४
२८६
२६१
५७८
५४४
१७८
१४४
४७४
३६१
३२२
३५६
५७६
४६१

जङ्घाद्वयञ्च सुश्लिष्ट
जङ्घे मदनमातङ्ग-
जङ्घे रराजतुस्तस्या
जङ्घे वज्रस्थिरे नास्य
जङ्घे सुरुचिराकारे
जज्ञाते तनयौ राम-
जनतापच्छिदो यत्र
जननी पुण्यवत्यस्या
जनानुरागमुत्साह
जनानुरागास्ताद्रूप्यम्
जनापराग एवादौ
जनितेति तृतीयेऽङ्गि
जनैरत्युत्सुकैर्वीक्ष्य
जन्म दुःख ततो दुःख
जन्मभूमिस्तपोलक्ष्म्या
जन्मनन्तरमेव यस्य मिलितं
जन्मान्तरनिवद्धेन
जन्मान्तरानुबद्धञ्च
जम्बूद्वीपमहामेरो
जम्बूद्वीपविशालोरु-
जम्बूद्वीपसमायाम-
जम्बूद्वीपस्थलीमध्ये
जम्बूद्वीपस्य पूर्वस्मिन् विदेहे
जम्बूद्वीपस्य पूर्वस्मिन् विदेहे
जम्बूद्वीपे महामेरो
जम्बूनामा तत कृत्स्न
जयकोलाहल भर्तु
जयति वृषभो यस्योत्तुङ्ग
जयत्यजय्यमाहात्म्य
जयत्यमरनायकैरसकृत्
जयत्युच्चैर्गिरो देवा
जय त्वमीश कर्मरीन्
जयलक्ष्म्यानपायिन्या
जयवर्माथ निक्षिप्य
जयवर्माथ निर्वेद पर
जयवर्माह्वय सोऽय
जयश्रीभुजयोरभ्य
जयसेनश्रुतिर्वुद्ध्वा
जयेति प्रथमा धाराम्
जयेत्यमानुषी वाक्च
जयेश नन्द वर्द्धस्व
जयेश विजयिन् नन्द
जलकेलिविधावेनम्

२२०
३२७
१२५
१२३
३४३
१४५
७६
१६१
११२
५३३
१२१
१४७
८१
३७५
१२
३०२
२०३
१५६
१६३
५११
२३७
५२४
१६६
१४३
१२२
४२
३८२
५६७
६
५६७
६३१
३७६
३४०
१४२
११२
१११
३४२
२१८
२६३
३३८
२८७
११७
३२३

जलक्रेलिविधौ तस्या-	१६७	जीव प्राणी च जन्तुश्च	५८४	ज्योतिर्विटपिना भूयो	५२
जनजङ्घाफनश्रेणी	३७	जीवपुद्गलयोर्यत्स्यात्	५८७	ज्योतिश्चक्र क्षरज्ज्योति	२६८
जलस्थलचरा क्रूरा	२१०	जीवभेदोश्च तत्रत्यान्	४६०	ज्योतिश्चक्रमिद शश्वत्	५३
जलाद्योदधिन्मप्राप्ति	२३४	जीववादिन ते कश्चिद्	६४	ज्योतिष्का ज्योतिरङ्गेषु	५३१
जलैरन्ताविलैर्भर्तुं	३६६	जीवशब्दाभिधेयस्य	१४४	ज्योत्स्नमन्यानि तान्युच्चै	५२०
जाज्ज्वल्यमानमकुटो	५१	जीवशब्दोऽयमभ्रान्त	१३५	ज्योत्स्नाम्भसि चिर तीर्त्वा	३३४
जानन्मोत्सव भूय	३१२	जीवादीना पदार्थाना याथात्म्य	५८२	ज्वलत्कुण्डलकेयूर-	११६
जानत्पमिवोदार-	३६२	जीवादीना पदार्थानामव-	५८७	ज्वलद्भासुरनिर्धूम-	२६०
जात्यनुस्मरणाज्जीव-	६६	जीवापाये तयोर्देहौ	१६२	ज्वलद्भासुराङ्ग स्फुरद्भानु-	५५३
जात्या हेतुतदाभास-	१४३	जीवाम कथमेवाद्य	६३	ज्वलन्महोदयस्तूप-	६३१
जानुगुणस्पृशौ जटघे	२२६	जीवितान्ते स दुर्ध्यान-	१०४		
जानुद्वय समाश्लिष्ट	२५१	जीवितान्ते सुख प्राणान्	२०५	भ	
जिगीषु बलवद्गुप्त्या	८५	जीवो मुक्तश्च ससारी	५८२	भषौ कुम्भौ च कूर्मश्च	३२८
जित मदा विकासिन्या	३४१	जृम्भिकारम्भमात्रेण	४६	भषौ सरसि सम्फुल्ल-	२६०
जितमदनस्य तवेश महत्त्वम्	५५८	जंन मतमिव प्राय	१०५	त	
जितेन्द्रुकान्तिभि कान्तै	४१६	जैनालयेषु सङ्गीत-	७७	त तदा प्रीतमालोक्य	६२
जित्वा रक्ताब्जमेतस्या	२५०	जैनी प्रमाणयन्त्राज्ञाम्	४८६	त प्रत्यनुग्रह भर्तु-	२६
जिनकत्याणसम्बन्धि-	२६८	जैनी किमङ्गद्युतिरद्भवन्ती	५४६	त देव त्रिदशाधिपार्चितपदम्	६३६
जिनजन्माभिपेकार्थप्रतिवद्धै	२६६	ज्ञ स्याज्ज्ञानगुणोपेतो	५८४	त एव कवयो लोके	१२
जिनदेहृचावमृताब्धिश्चौ	५४८	ज्ञात्वा च भवमागत्य	१०५	त एव कालसयुक्ता	५८२
जिननाथ सस्तवकृतौ भवतो	५५७	ज्ञात्वा चावधिबोधेन	४०६	तच्च पूर्वानुपूर्व्येद	४४
जिन प्रवचनाभ्यास-	५०३	ज्ञात्वा हेयमुपेय च	३६४	तटित्कलत्रसक्तै	६१
जिनप्रमवभूमित्वात्	३१०	ज्ञान जीवादिभावानाम्	५८५	तडिदुन्मिषिता लोला	१७२
जिनमाता तदा शच्या	२८५	ज्ञानगर्भो दयागर्भो	६२३	तत कतिपयैर्देवै	३११
जिनमानमनाकौ को	२७७	ज्ञानमप्रतिघ विश्वम्	५७६	तत कर प्रसार्यार्थे	१५२
जिनमुपगतदलमनिमिपनयन-	५६५	ज्ञानमष्टतय ज्ञेयम्	५८३	तत करतले देवी	२८६
जिनवरमोहमहापूतनशान्	५५८	ज्ञानविज्ञानसम्पन्न-	४३	तत करीन्द्रैस्तुरगै	१७८
जिनम्यादधिपद्मौ नखाशु-	५५४	ज्ञानवैराग्यसम्पन्नि-	३६५	तत कलत्रमन्त्रेष्ट	३३०
जिगानामभिपेकाय	२६१	ज्ञानदर्शनचारित्रतपोवीर्य-	४६३	तत कल्पेश्वरैस्सर्वै	२६३
जिनाभिपेकमम्बन्वात्	१०८	ज्ञानदर्शनचारित्रतपोवीर्य-	४६१	तत कत्याणि कल्याण	१३१
जिनार्चा स्तुतिवादेपु	२३६	ज्ञानदर्शनवीर्याणि	५७८	तत कालात्यये धीमान्	२३५
जिने घन इवाभ्यर्णै	६३४	ज्ञानदर्शनवीर्यादि	४७१	तत किन्नरगीताख्य	४२२
जिनेन्द्र परमानन्दो	६२१	ज्ञानशक्तित्रयीमूढ्वा	३६४	तत किमत्र कर्तव्यम्	१२८
जिनेन्द्र तव वक्त्राब्जम्	५६६	ज्ञानादिपरिणामेषु	४६७	तत कुतोऽस्ति वो जीव	६५
जिनेन्द्रभात्या सुरनिम्नगेव	५४६	ज्ञानावरणनिर्हासात्	६०२	तत कुमार, कालोऽस्य	३५७
जिनेन्द्रमानेवितुमागतेयम्	५४६	ज्ञेया पूर्ववदत्रापि	५३४	तत कुमारमादाय	२८५
जिनेन्द्रादधिभामा पवित्रीकृत	५५४	ज्योति पटलमित्यासीत्	२६८	तत कृच्छ्राद्विनि सृत्य	३७५
जिनेश्वराणामिति चामराणि	५४७	ज्योति पटलमुल्लङ्घ्य	२८८	तत कृतमतिर्भुक्त्वा	२३२
जिनो निष्पुग्मेयान्मा	६०५	ज्योतिर्गणपरीतत्यात्	५३७	तत कृताभिपेकोऽसौ	८६
जिनोऽप्रेगनहावात्रा	६३१	ज्योतिर्गणश्च सातत्यात्	२८६	तत कृतार्थता तस्या	१५२
जिनोऽदिष्टनन्मागम्	१११	ज्योतिर्मण्डलमुत्सर्पत्	१६४	तत क्रमभुवो वात्य-	३३६
जिना मोहान्निजवाद्	५०३	ज्योतिर्मय इवैतन्मिन्	५१३	तत क्रमात्प्रहायेद	४३
जिनाऽनेन्द्र नरनिगन्तु	५६८	ज्योतिर्गोकि महान् मिह-	५०६	तत क्षीणकपायत्वम्	४७१
				तन खम्फटिकात् मालाद्	५३४

नन परमनिर्वाणनाग्रनम्	४५८	तत सुखोपविष्टौ तौ	१६८	ततो दीवारिकैर्देवै	५७४
नन परमनञ्चकु	५२७	तत सीमनसोद्यान-	१२४	ततो द्वात्रिंशदिन्द्राणाम्	५१२
नन परीत्य त प्रीत्या	२६०	तत स्थिरपदन्यासै	१६५	ततो द्वितीयपीठस्थान्	५७४
नन परीपट्टभंगना	४०२	तत स्वाभाविक कर्म	२४४	ततो धर्मौषध प्राप्य	१०५
नन पर्याकुला सत्य	१२७	तत स्वायम्भुवी वारणी	२६	ततोऽधिकमिद दिव्य	२४६
नन पाणिगृहीती ना	१६०	तत स्वायु क्षय बुद्ध्वा	११३	ततो धिगिदमत्यन्त-	१०४
नन पाणो महाबाहु.	१६०	तत स्वासनकम्पेन	४०५	ततो धूपघटौ द्वौ द्वौ	५२१
नन पुण्यवती काचिद्	३२६	ततश्चक्रवरापायात्	१७४	ततोऽध्वानमतीत्यान्त	५१६
नन पुगकरग्रामान्	४४६	ततश्चाव प्रवृत्तास्यम्	४७०	ततो नक्षत्रनामा च	४३
नन पुराद् विनिर्यान्ती	१७६	ततश्च्युत्वाधुनाऽभूस्त्व	१८२	ततो न चेतनाकाय-	६३
नन पुरोधा कल्याणम्	४४८	ततस्त स्तोतुमिन्द्राद्या	३०५	ततो न धर्म पाप वा	६३
नन पूर्वमुख स्थित्वा	३६०	ततस्तत्त्वपरिज्ञानात्	४५६	ततोऽनन्तरमेवान्तर्भागे	५३०
नन पूर्वविद्रामाद्ये	४६४	ततस्तदवलोक्यासौ	१८४	ततोऽनशनमत्युग्रम्	४६१
नन पृथनया सार्द्धम्	१२६	ततस्तद्दर्शनानन्दम्	२६३	ततो निभृत्मासीने	५८
नन प्रच्युत्य कानान्ते	१३६	ततस्तद्रागतद्वेष-	२४६	ततो निरुद्धयोग सन्न-	४६५
नन प्रच्युत्य शार्दूल-	१८५	ततस्तद्वचन सोढु-	६३	ततो निर्भत्स्य तान् दुष्टान्	११२
नन प्रजा निवेश्येषु	३६२	ततस्तद्वञ्चनोपायम्	१८६	ततो निष्पत्य पूर्वोक्त-	१८३
नन प्रदक्षिणीकुर्वन्	५७४	ततस्तद्विक्रियारब्धम्	५०७	ततो नीरधारा शुचि स्वानु-	५५५
नन प्रभृत्यविच्छिन्न-	२६	ततस्तन्निश्चय ज्ञात्वा	१७४	ततो नीलाञ्जना नाम	३७३
नन प्रयागकै कश्चित्	१८८	ततस्तमृपयो दीप्त-	३१	ततो नृपतिना तस्मै	१८४
नन प्रशान्तमजल्पे	३३८	ततस्तमृपयो भक्त्या	४६८	ततो नृपमुवाचेत्थम्	१८४
नन प्रमेतजिज्जज्ञे	५८	ततस्तस्मिन् सरस्यस्य	१८०	ततोऽन्तरन्तर किञ्चिद्	५१५
नन प्रस्थानगम्भीर-	१७०	ततस्तस्य सपर्याया	१८४	ततोऽन्तरमतिक्रम्य	५६
नन प्रतगम्भीरपटह-	१७१	ततस्तृतीयकालेऽस्मिन्	५०	ततोऽन्तरममूद् भूयो	५५
नन प्राग मुरेन्द्राणाम्	३८६	ततस्तेषा निकृन्तन्ति	२११	ततोऽन्तरमसंख्येया	५३
नन प्रापु मुराधीश	२८८	ततस्ती जगता पूज्यौ	३११	ततोऽन्य कुरुविन्दाख्य	१०२
नन प्रायोधिकैस्तुयै	२६०	ततस्त्रिजगदीशानम्	३६२	ततो न्यपाति करकाद्	१६०
नन शयय शुभ तस्मात्	१२८	ततामोदेन धूपेन	३४८	ततो अलमिद दैव	११७
नन शयाज्ञया देव-	२८४	ततिविहारपद्माना	६३४	ततोऽबुद्ध सुराधीश	२८३
नन शुभदिने माम्ये	१५७	ततो गज इवापेत-	८५	ततोऽबोधि सुरेन्द्रोऽसौ	२२७
नन शय्य च दृश्य च	३१३	ततो गन्धकुटीमध्ये	१६२	ततोऽब्दमुक्तवारिष्मा-	६१
नन शयमभिदयाम्	४६१	ततो गीतैश्च नृत्यैश्च	३१३	ततो ब्रह्मेन्द्रता सोऽजात्	२१८
नन शय्यारे पर्यो	८४७	ततोऽन्युतस्य कल्पस्य	१२१	ततो ब्राह्मी यशस्वत्या	३४६
नन मञ्जरावनमोदम्	८६६	ततोऽन्युतेन्द्र प्रच्युत्य	२२७	ततो ब्रूहि महायोगिन्	३०
नन तदेव पुण्यार्णि	६३०	ततो जन्माभिषेकाय	२८३	ततो ब्रूहि मिथ कन्ये	१२६
नन तपदि मञ्जरा-	५६	ततोऽजितज्जयश्चक्री	१४२	ततो भगवतो वक्रात्	३५५
नन त ननानादि-	३६२	ततोऽत्र मूलतन्त्रस्य	२६	ततो भगवदुद्योग-	६३१
नन तनीगुनापे-	१०६	ततो दण्डधरानेतान्	३६६	ततो भग्नैकरदनो	१०३
नन तनयतन्त्राद्विज्य	५६०	ततो दध्यावनुप्रेक्षा	४६७	ततो भरतराजर्षे	४५८
नन तनयोर्षा तीक्ष्णो	३६६	ततो दमधराभिग्न-	१८१	ततो भरतराजेन	४५६
नन तनयनभक्त्य-	३६७	ततो दर्शनमन्त्रता	२२२	ततो भरतराजेन्द्रो	५६२
नन तनयनभक्त्य-	३६७	ततो दिव्यान्मनानेन	४६५	ततो भरतराजोऽपि	३६५
नन तनयनभक्त्य-	३६७	ततो शालान् नेपाम्	१६५	ततो भव्यजनै श्राद्धै	४४

ततो भागवतादीनाम्	४६८	ततोऽस्ति बहिरर्थोऽपि	१००	तत्प्रहाणान्मनोवृत्ति-	३५८
ततोऽभिचन्द्र इत्यासीद्	५७	ततोऽस्मद्गुरुरेवासीत्	१४३	तत्फलाभ्युदयादगत्वाद्	१८
ततोऽभिवन्द्य योगीन्द्रौ	१८८	ततोऽस्माक यथाद्य स्यात्	३५८	तत्र कर्ममलापायात्	४६६
ततोऽभिवन्द्य सम्पूज्य	१८२	ततोऽस्य चेतसीत्यासीत्	३७४	तत्र कत्पतरून् धुन्वन्	१०२
ततोऽभिपिच्य साम्राज्ये	३७६	ततोऽस्य परिनिष्क्रान्ति-	३७६	तत्र गन्धकुटी पृथ्वीम्	५०४
ततोऽभिषेक द्वारिषत्	१३६	ततोऽस्य मतिरित्यासीत्	४४५	तत्र तोरणमादगत्वा-	५३२
ततोऽभिषेचन भर्तु रेभिरे	३६४	ततोऽस्य योग्यता मत्वा	२३०	तत्र देवसभे देव	२२
ततोऽभिषेचन भर्तु कर्तुमिन्द्र-	२६२	ततोऽस्य सवयोरूप-	३१६	तत्र धर्मफल तीर्थ	५७३
ततो भूतमयाद् देहात्	६८	ततोऽस्या दृढधर्मास्थि	१२४	तत्र नन्दनपूर्वाशा-	१४१
ततोऽभून्महती चिन्ता	१७४	ततोऽस्यानुमति मत्वा	३३०	तत्र पट्टकशालाया	१३६
ततो भोगेष्वसावेव	११२	ततो व्यजेष्ट निश्शेषा	२३१	तत्र पुर्या प्रभाकर्याम्	१८३
ततो मतिवरानन्दो	१७७	ततो व्युत्सर्गपूर्वोऽस्य	४६४	तत्र पूर्वमुख स्थित्वा	४६६
ततो मधुरगम्भीरम्	१५६	तत्कण्ठमालिकाम्लानि-	१२०	तत्र प्रभाकरी पुर्या	१४१
ततो मनुरसौ मत्वा	५५	तत्कन्यामृतमासाद्य	१६८	तत्र वीभत्सुनि स्थाने	२१०
ततोऽमी चक्रिणान्येद्यु	२२१	तत्कर्तु भोक्तृनियमो	३६१	तत्र वातायनद्वार-	१६२
ततो मुनिरसौ त्यक्त्वा	१८४	तत्कल्याण समालोक्य	१६१	तत्र वीथ्यन्तरेष्वास-	५२२
ततोऽमूर्ध्वना सम्यग्	२३४	तत्कार्यद्वैतमासाद्य	१२८	तत्र वृत्ति प्रजाना म	३६२
ततो यथाक्रम तस्मिन्	४६	तत्कालकामदेवोऽभूत्	३४६	तत्र श्रीभवने रम्ये	१७१
ततो यथाक्रम विष्णु-	४२	तत्कालोपनतैर्मन्यै	३८६	तत्र पोडशशोपान-	५३६
ततो यथोक्तपल्यङ्क-	४८१	तत्कीदृश कथा वेति	१३०	तत्रस्थ एव चाशेष-	२३६
ततो यथोचित स्थानम्	३७३	तत्क्रमाब्ज मृदुस्पर्श	२२०	तत्रस्थो गुरुमादरात् परिचरन्	३६६
ततो युगन्धरस्यान्ते	१४१	तत्क्रमौ रेजतु कान्त्या	३४३	तत्राधातिस्थितेभिरिगान्	४६५
ततो युगान्ते भगवान्	२६	तत्क्षण सत्कथाप्रश्नात्	२५	तत्राज्ञेत्यागम सूक्ष्म-	४८६
ततो रक्ष मम प्राणान्	१३३	तत्र क्षणमिवासीनो	३८६	तत्राद्य शुक्लमापूर्य	४६६
ततो रत्नदीपैर्जिनाङ्गद्युतीना	५५६	तत्तदातप्तयोगीन्द्र	४६२	तत्राद्ये करणे नास्ति	४७०
ततोऽलमुपरुद्धचैनम्	४०८	तत्तदानुस्मृत तत्र	२६	तत्राद्य पञ्चभिर्नृणा	६५
ततो लोकान्तरप्राप्ति-	५७	तत्तपोऽतिशयात्तस्मिन्	४०४	तत्राधिरोप्य परिविष्टरमीशि-	४४२
ततोऽवतीर्ण स्वर्गाग्रात्	१४६	तत्त्व जैनेश्वरीमाज्ञा	२०१	तत्रानपेत यद्धर्मात्	४८६
ततो बधूवर सिद्ध-	१६०	तत्त्वार्थसग्रह कृत्स्नम्	५६०	तत्रानीतश्च तन्मध्ये	१०३
ततो वनाना पर्यन्ते	५२७	तत्पदाम्बुजयोर्युग्मम्	३४३	तत्रापि विविध दुःख	३७५
ततो बलाहकाकारम्	५०७	तत्पर्यन्ते च या धत्ते	२६१	तत्रापीष्टवियोगोऽस्ति	३७६
ततोऽवसर्पिणीकाल-	२६	तत्पादनखभाभारम्	६००	तत्राभिपिच्य जैनेन्द्री	५३१
ततो विनि सृतो जन्तु	३७४	तत्पादौ प्रणमन्नेव	१२६	तत्रामरकृतानेक-	३१३
ततो विकृतिरेषा स्याद्	१२८	तत्पुण्यतो गुरुवियोगनिरूप-	४४३	तत्राष्टगुणमैश्वर्य	२२३
ततो विज्ञानसन्तान-	६५	तत्पुण्यसाधने जैने	१२१	तत्रासिकर्मसेवाया	३६२
ततो विविक्तशायित्वम्	४८३	तत्पुर विष्वगावेष्टय	२८५	तत्रासीत् पाटलीग्रामे	१३०
ततो वीथ्यन्तरेष्वस्याम्	५०३	तत्पुराणकवीनेव	६	तत्रासीन च त देवा	२२
ततोऽवोचमह ताभ्याम्	१४३	तत्पुराधिपते श्रीमद्	१४३	तत्रासीन तमिन्द्राद्या	५४३
ततोऽष्टौ च कषायास्तान्	४७१	तत्प्रयोगविधौ पूर्वम्	३१४	तत्रासौ सुखमावसत् स्वरुचि-	१८६
ततोऽसावकृतोऽनादि-	७२	तत्प्रश्नावसितानित्य	२४६	तत्रास्ति मन्दरात्पूर्वाद्	१३०
ततोऽसौ भावयामास	२३३	तत्प्रश्नावसितावित्य	५८१	तत्रैकस्मिन् शिलापट्टे	३८६
ततोऽसौ बलिता किञ्चिद्	११६	तत्प्रसीद विभो दातु	१५५	तत्रैव विषये भूय	१८३
ततोऽसौ स्मितमातन्वन्	३२०	तत्प्रसीद विभो वक्तु	३१	तत्रोपपादशय्याया	११६

श्लोकानामकाराद्यनुक्रमः

तन्मन्त्रमयुना स्वरम्	४५०	तदप्रमत्ततालम्बम्	४६१	तदा मर्त्या ह्यमर्त्याभा	४६
तन्मन्त्राग्राहनामात्	२६६	तदभावे च न ध्यानम्	५०२	तदा महानकध्वान-	१५८
तन्मन्त्रं विभुर्त्याक्षी-	३६०	तदभ्यन्तरभूभाग	५१८	तदामोद समाधाय	५२२
तन्मन्त्रानुमन्त्रियत्र	२४४	तदमुत्रात्मनो दुःख-	६५	तदायुर्जलधर्मध्ये	११८
तन्मन्त्राशुक्रमाहृत्य	१६७	तदम्बुशीकरैर्व्योम-	२६५	तदाहर्तृप्रणामे समुत्फुल्लनेत्रा	५५४
तत्रा कुनधरोत्पत्ति	२४६	तदम्भ कलशास्यस्थै	२६४	तदा वनलतापुष्प-	१७६
तत्राप्यप्युचिता वृत्ति	३५६	तदर्धं तद्विशत्यग्निमाणि	४२५	तदा विचकर पुष्प-	३८२
तत्रात्रैव भवद्वयं	१०४	तदर्धप्रमितो यस्तु	३५१	तदा विशुद्धयस्तस्य	३७६
तत्रान्यान्यपि पद्मानि	६३४	तदल राज्यभोगेन	८५	तदाश्चर्यं महद् दृष्ट्वा	१८५
तत्रा परिचरत्येते	३६४	तदवस्थ तमालोक्य	१५०	तदासस्तापसा पूर्वं	४०२
तत्रापि काललब्धि स्यात्	३२६	तदवस्थाद्वयस्यैव	४८१	तदा सम्भ्रान्तनाकीन्द्र-	६३१
तत्रापि किमपि प्रष्टु-	२३	तदस्य ध्यानशास्त्रस्य	४६८	तदासनानि देवाना	२८३
तत्रापि यौवनारम्भे	२२६	तदस्य रुचे गात्रम्	३२७	तदा सर्वगत सार्व	४६५
तत्रापि मुखसादभूता	२२७	तदस्यालपित शून्य-	१०१	तदासीत्तव मिथ्यात्त्र	२१७
तत्राप्यनुद्यते किञ्चित् तद्गत	३६३	तदा कच्छमहाकच्छ-	३७०	तदा सुरभिरम्लानि-	३३८
तत्राप्यनुद्यते किञ्चिदस्य	५१४	तदा कार्यद्वय तस्य	१२८	तदास्ता ते गुणस्तोत्रम्	५८०
तत्राप्यस्मिञ्जनाकीर्णं	४५१	तदा किल जगद्विश्व	३६३	तदा स्थितिर्मनुष्याणा	४८
तत्राप्यस्य जगत्सर्गं	७०	तदा कोलाहलो भूयान्	४४६	तदास्मान् स्वामिकार्येऽस्मिन्	४००
तत्राप्यत्र तपोऽप्त	४६२	तदा जलधरोन्मुक्ता-	६१	तदास्मिन् भारते वर्षे	४६
तत्रा गुक्ता चिर भोगा-	४६	तदाज्ञापायसस्थान-	४८६	तदास्य सर्वमप्येतत्	३७६
तत्रा मतिवराद्याश्च	१६७	तदादि तदुपज्ञ तद्	४५६	तदास्याविरभूद् द्यावा-	३६३
तत्रा युष्मत्पिता युष्मन्	१०६	तदा दिव्याङ्गरूपं	५१३	तदा स्वायम्भुव नाम	३५६
तत्रा रत्नपरीक्षा च	३५७	तदा ध्यानमयी शक्ति	४६७	तदा हेमाम्बुजैर्व्योम-	६३४
तत्राग्नी च त देव	३७३	तदानन्दमहाभेयं प्रणेदु-	३६३	तदिमे परिहर्तव्या	५४
तत्राग्नीस्य चेद्यान-	१७२	तदानन्दमहाभेयं प्रहता	३३८	तदिय प्रस्तुता यात्रा	३८६
तत्राहीन पुराण न	४२	तदा निमेषविमुखै	३०५	तदियमीडिडिषन् विदधाति न	५५७
तत्रे पट्टक प्राप्य	१५२	तदाऽप्येतद् दिवो देव-	४५४	तदीयरूपलावण्य-	३२६
तत्रागदमभिर्मानै	२२५	तदा पापास्त्रवद्धार-	१४२	तदुत्तिष्ठ्य तमापृच्छ्य	४१०
तत्रे प्रहता भेयं	३०६	तदा पितृव्यतिक्रान्ता-	६२	तदुदाहरणं पुष्टम्	४५८
तत्रैवमपर राजन्	१०५	तदापीदमनुस्मर्तु	४३	तदुन्नतेरिद वित्त-	४१०
तत्रापरमकायोऽपि	५८७	तदा पुराणमेतत्तु	४३	तदुन्मुखी दृश चेतो	४५५
तत्राप्योर्षकादीनामपि	३५२	तदा पुष्करवाद्यानि	३१५	तदुन्मुद्रय तदन्तस्थ	१७६
तत्राह्यमन्तान-	१००	तदा प्रक्षुभिताम्भोधि-	५०६	तदुपज्ञ गजादीना	५६
तत्राशिरहाद् भेजु	३६०	तदा प्रयुक्तमन्यच्च	३१४	तदुपज्ञमभूद् योग-	४०३
तत्रा भगवो नैव	१३४	तदा प्रशान्तगम्भीर	३८	तदुपायञ्च तेऽद्याह	१३३
तत्रागरे वन्तु	१५४	तदा प्रीतिङ्करस्येति	२१७	तदुपालम्भमित्युच्चै	१४४
तत्राग्नेवा भू-	५६	तदा भगवतो रूपम्	३६२	तदुरोजसरोजातमुकुलानि	२६७
तत्रावगन्त यत्त-	५८	तदा भट्टारके याति	४४६	तदेक तत्त्वसामान्यात्	५८२
तत्रावगन्तियन्ता	५५	तदाभूदभकोत्पत्ति-	५८	तदेकदेशदेशाद्रि-	६८
तत्रावगन्तदेवाश्च	३६०	तदाभूवस्तयोरेक	२२८	तदेकपैतृक यातम्	३४०
तत्रावगन्त नान्ते	४२५	तदा मङ्गलधारिण्यो	२८६	तदेतत्कर्मवैचित्र्यात्	७२
तत्रावगन्ताना	३६०	तदा मङ्गलसगीतै	३८२	तदेतत् स्त्रैणमुत्सृज्य	२०२
तत्रावगन्ताना	४६०	तदा मधुगम्भीरो	६३२	तदेतत् स्वैरसम्भोग्यम्	१५५

तदेति मद्बच श्रुत्वा	१४६	तपनीयनिभस्तुङ्गो	६२६	तरुषण्डनिरुद्धत्वाद्	२६६
तदेद परिकर्मेट	४८०	तपस्तनूनपात्तापात्	११५	तरूणामेव तावच्चेद्	५२६
तदेव वस्तु वस्तुष्टयै	१५५	तपो जिनगुणद्विञ्च	१४२	तर्जयन्निव कर्मासीन्	६३३
तदेव स्नातक रम्य	३७४	तपोऽनशनमाद्य स्यात्	४०३	तलपुद्गलवादेऽपि	५०१
तदेवा परलोकार्था-	६३	तपोऽनुभावसञ्जात-	३८	तल्लोभादिष्टका भूयो	१८७
तदैतदभवत्तस्या	१२७	तपोवनमधो भेजे	४५६	तव जिनततदेहरुचिशरवण-	५६३
तद्गन्धलोलुप तत्र	१७२	तपोवनमिद रम्य	३०	तव जिनाकं विभान्ति गुणा-	५५८
तद्गात्रस्पर्शमासाद्य	२८५	तप्तलोहासनेष्वन्यान्	२१३	तव दिव्यध्वनिं धीर.	५६६
तद्गुणोन्नतिमन्ये च	४४८	तम प्रलयलीनस्य	२२	तव दीप्ततपोलब्धे	२६
तद्गृहाणाद्य सम्यक्त्व	१६६	तम शार्वरमुभिद्य	२६२	तव देहप्रभोत्सर्प	५६६
तद्धूपधूपसरुद्ध	५५२	तमदभूतश्रिय पश्यन्	१०६	तव देहप्रभोत्सर्पे	५७८
तद्गूहि धरणाधीश	४१०	तमन्वीयुर्नृपा जन्म	२३२	तव धर्माभूत स्रष्टुम्	३७६
तद्यौवनमभूत्तेषु	३४८	तमस्यन्धे निमज्जन्ति	२०८	तव लोकातिगा प्रज्ञा	३४
तद्गुरुक्षेत्रमव्यस्था-	५३६	तमादिदेव देवानाम्	२६	तव वपुरामिलत्सकलशोभा-	५५६
तद्रूपसौष्ठव तस्या-	२५०	तमादिदेव नाभेय	७	तव वाक्किरणैर्नूनम्	३०६
तद्वक्त्रेन्दो स्मितज्योत्स्ना	२५५	तमालोक्य तदाध्वस्त-	१२०	तव वाक्प्रकरो दिव्यो	३४
तद्वक्षसि पृथाविन्द्र-	६१	तमासाद्य सुरा प्रापु	२६०	तव वाक्प्रसरो दिव्य-	५७८
तद्वक्ष्ये शृणु सीम्याङ्गि-	१३०	तमित्यद्रीन्द्रमुदभूत-	४०७	तव वागमृत पीत्वा	५६६
तद्वाताकिर्णनात्तूर्ण	१२८	तमित्यावर्णयन् दूरात्	११०	तव वागशवो दीप्रा	३७७
तद्वाताकिर्णनाद् राज्ञा	१८६	तमिदानीमनुस्मृत्य	१३३	तव हर्यासन भाति	५७८
तद्विद्यागहणे यत्न	३५५	तमुपेत्य सुखासीना	३३६	तवाभिज्ञानमन्यच्च	१४३
तद्वियोगे पुनर्दुःख	२४४	तमूर्ध्वचयमिच्छन्ति	४२४	तवामी चामरव्राता	५७८
तनुच्छाया च तस्यासीत्	१२०	तमेव बहुमन्येते	१५३	तवाम्ब किं वसत्यन्त	२७६
तनुच्छायामिवाग्लानि	११८	तमैरावणमारुद्ध-	५११	तवाय प्रचलच्छाख	५७७
तनु भगवत प्राप्य	३००	तमोमयैरिवारब्ध-	२१६	तवाय शिशिरच्छायो	१६४
तनुमध्य वभारासौ	२५२	तमोविधूतमुदभूत	२६२	तवारिजयमाचष्टे	५६५
तनुमध्ये कृशोदर्या-	३५३	तयानुकूलया सत्या	२२०	तवाविष्कुरुते देव	१६४
तनुमान् विषयानीप्सन्	१७३	तया परिवृत प्राप	५७४	तवेदमानन धत्ते	५६६
तनूदरं कृशैर्मध्यै	४१६	तयो पुत्री बभूवासौ	१२४	तवोच्छिखा स्फुरन्त्येता	२६
तनोति विषयासङ्ग	२०६	तयो प्रहसिताख्योऽय	१४३	तवोद्धोषयतीवोच्चै	१६४
तन्त्र्यो मधुरमारेणु	२८	तयो सूनुरभूद्देवो	१२२	तस्मात्ते दर्शन सम्यग्	१६६
तन्नाम्ना भारत वर्ष	३३६	तयोरत्यन्तसम्प्रीत्या	२२०	तस्मात् पुण्यकथामेना	३३
तन्निर्वर्णं चिर जात-	१५२	तयोरधिपद द्वन्द्व	१६८	तस्मादभ्यस्य शास्त्रार्थ-	१३
तन्निवृत्ती कुतो ध्यानम्	५००	तयोरपि मनस्तेन	३३३	तस्मादाशयशुद्धचर्यम्	४७७
तन्नृत्य सुरनारीणा	३७३	तयोरेव सुता जाता	२२८	तस्माद् दुःखमनिच्छूना-	२१७
तन्मात्रा विज्रिया कर्तु	२४०	तयोर्महाबलख्याति-	८३	तस्माद् दृष्टसुख त्यक्त्वा	६३
तन्मामुदङ्कुरुन् पुत्र	१०२	तयोस्तथाविधैर्भागै	१६७	तस्माद् धर्मजुषा पुसाम्	१०७
तन्मुग्धाज्जाद् रमामोदा-	१६७	तरत्सरोजकिञ्जल्क-	२६०	तस्माद् धर्मफल ज्ञात्वा	६३
तन्मुनामोदमाघातुम्	३४६	तरलप्रतिबन्ध स्यात्	३५१	तस्माद् धिग् धिगिद रूप	३७६
तन्मुजाम्मुहलन्ना	५६६	तरलप्रतिबन्धश्च	३५०	तस्माद् बुधा कुरुत	३७१
तन्वद्भी पञ्चविम्बोष्ठी	२५०	तरलापाङ्गभासास्य	३४१	तस्माद् विषयजामेना	२४६
तन्व्य नृचिगताग	५१२	तस्च्छाया यथा मर्त्य	५८७	तस्मान् मास्म गम शोक	१२१
तन्व्या रच्छमहाकन्द-	३३१	तरुणार्कैश्च नु तिरोदधति	५८८	तस्मिन्लक्ष्मीसरस्वत्यो	२३०

श्लोकानामकाराद्यनुक्रमः

नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	३३६	तस्येति परमानन्दात्	१२४	तासामाराधनोपाय	४२०
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५६	तस्येमे मार्गणोपाया	५५३	तासामिन्दुकलामले	२२६
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	११७	तस्यैव काले कुशैला	५७	तासामुपरि विस्तीर्णो	५३४
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	२२१	तस्यैव काले जलदा	६०	तास्तस्या परिचर्याया	२६५
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	३१६	तस्योत्तमाङ्गमुत्तुङ्ग-	३४०	तिरस्करिण्येव सितभ्रपङ्क्त्या	४३१
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	४०४	तस्योपरितले रेजु	५३६	तिरस्कृताधरच्छायै	३५३
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५७	तस्योपरि स्फुरद्ग्ल-	५३६	तिरीटाङ्गदकेयूर-	२३६
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५६	तस्योपशमिको भाव-	५५३	तिर्यगायुरतो वद्ध्वा	१५६
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५५	ता तदा वर्धयामासु	३३५	तिर्यग्लोकस्य विस्तार	७३
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५७	ता पीठिकामलञ्चक्रु	५३६	तिर्यग्लोलायतस्थूल-	५०६
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५६	ता विद्धि मदनस्येव	१५०	तिर्यग्विसारिण केचित्	२६४
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	६०	तास्तदालिङ्गनासङ्गाद्	२१२	तिलकञ्च ललाटेऽस्य	३०४
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	३४६	ता सञ्चरन्ति कुसुमापचये	४३३	तिलातस्थौ मसूराश्च	६२
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	२३०	तानि श्रीवृक्षशङ्खाब्ज-	३२५	तिष्ठेदेक दिन द्वे वा	३६६
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	१२०	तानि स्थानीयसत्त्वानि	३६०	तिसृणामपि खातानाम्	४२४
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	२००	ताभिर्बुद्धिभिरिद्धिद्धि	२३४	तिसृभिर्भूमभिर्नाट्य-	५२१
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५१४	ताभ्यामलङ्कृते पुण्ये	२५५	तीर्थकर्तृपुराणेषु	४१
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	४४७	ताभ्यामिति सम भोगान्	३३४	तीर्थकृच्चक्रवर्तीन्द्र-	४१
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	२२४	तामाह्वय पुरी विष्वग्	३११	तीर्थकृत्वस्य पुण्यस्य	१३१
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	२००	तामावेष्टय सुरास्तस्यु	२६१	तीर्थेशाना पुराणानि	५६०
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	२६०	तामाशीर्भिरथाश्वास्य	१६५	तीर्थेशामपि चक्रेशाम्	५
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	२२४	ताम्बूलदायिका काचिद्	२६५	तीव्र ज्वलन्मसी श्रेणी	४७१
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	११६	ताम्बूलमिव समयोदादि	१०५	तीव्र तपस्यतस्तस्य	११४
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	६१	तारका क्षणमध्यास्य	२६७	तीव्राजवञ्जवदवा-	६३५
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	३३६	तारका गगनाम्भोवौ	३३६	तीव्रायामशनायाया-	६२
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	२४६	तारागतिरिय व्योम्नि	२६१	तुष्टिताब्दमित तस्य	५४
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	३४७	ताराफेनग्रहग्राह-	५१	तुटीपटहभल्लयं	३३५
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	२५४	तारालीतरला दधत्समुचिताम्	३२४	तुभ्य नम सकलघातिमलव्य-	५६४
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	६३५	तात्त्वोष्टमपरिस्पन्दि	५५१	तुभ्य नमस्त्रिभुवनैकपितामहाय	५६४
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	४४७	तावच्च चक्रिणा वन्धु-	१५४	तुभ्य तमोधिगुरवे	२५६
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५२	तावच्च नाकिनो नैक-	३७६	तुरङ्गमकुलञ्चेदम्	१७७
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५७	तावच्च पुत्रिके भर्तु	३५२	तुरङ्गमखुरोद्धूत-	१५१
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	३०५	तावच्चाभ्युदय सौख्य	१५७	तुरङ्गमखुरोद्धूता	१७६
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५६	तावच्चारणयोर्युग्म	१६५	तुर्यो द्रव्यानुयोगस्तु	३६
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५४३	तावत्तैव नियोजेन	३७६	तुलाकोटिकेयूर-	१६३
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	२६५	तावदुच्छिन्नमन्त्यञ्च	५३५	तुष्टिर्विशिष्टपीठादि-	४५३
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	१६५	तावभ्येत्य समभ्यर्च्य	१११	तृणाग्रलग्नविन्दु	१७३
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५२	तावित्य प्रविभज्य राजतनयो	४४४	तृतीये करणेऽप्येवम्	४७०
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	२५३	तासा नाम स्वरूपञ्च	४६७	तृपित पयसीब्दात्	११३
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	१५१	तासा पयोयनानानि	२१०	ते च किञ्चिदिवोद्भिन्न	३५३
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	६५०	तासा मृदुकरस्पर्श	२२५	ते च सारस्वतादित्यौ	३७७
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	१२	तासा सहान्यशृङ्गार-	५१२	तेज पुञ्जमिवोद्भूतम्	३११
नन्मिदृशान्मन्त्रे गन्तोत्	५०	तासा स्मेरारि वन्त्रारि	५१३	तेजोराशिरनन्तीजा-	६२७

ते तदारोपणोर्ध्वाध	२१२	तोपादिव खमुत्पत्य	२६४	त्रिलोकपावनी पुण्या	३६३
तेन त्व विश्वविज्ञेय	५७६	तोष्ये त्वा परम ज्योति-	५६४	त्रिवर्गफलसम्भूति	५७३
तेन पत्राणि पात्यन्ते	२१२	तौ तथा सुखसाद्भूतौ	१६२	त्रिवलीभङ्गुर तस्या	२८०
ते नरा पापभारेण	२१०	तौ तु वासवदुर्दान्तौ	१४८	त्रिवलीवीचिरम्येऽसौ	१६७
तेनाधिष्ठितमस्येद	१७४	तौ दम्पती कृतानन्द-	२०३	त्रिषष्टिपटल स्वर्गम्	५६०
तेनावुद्धाच्युतेन्द्रत्वम्	१२६	तौ दम्पती तदा तत्र	२५५	त्रिषष्टिलक्षा पूर्वाणा	३७०
तेनाभीष्ट मुनीन्द्राणा	४६२	तौ दम्पती सदाकारौ	१६०	त्रिषष्ट्यवयव सोऽय	४१
तेनाम्भसा सुरेन्द्राणाम्	२६४	तौ देवदर्शनात् प्रीतौ	४५१	त्रिषु कालेषु योगी सन्	४६१
तेनोपशमभावेन	१३१	तौ देही यत्र त विद्धि	६६	त्रिष्वेकद्वयविश्लेषाद्	५८६
तेऽन्तर्मुहूर्ततो गात्र	२१०	तौ पश्यन्तौ नदीर्दूरात्	१७५	त्रिसहस्राधिकत्रिंशत्	२४०
तेऽप्यष्टौ भ्रातरस्तस्य	२४१	तौ प्रीत प्रशशसेति	३११	त्रैलोक्यनिर्जयावाप्त-	६००
तेभ्य श्रेयान् यथाचख्यौ	४५८	तौ राजसम्मतौ वाद-	१४४	त्र्यशीतिशतमब्दाना	४३
तेऽभ्यर्च्य भगवत्पादौ	३७७	तौ शक्रेण यथावृत्तम्	३१२	त्व जिन कामजिज्जेता	५७७
ते ललाटतटालम्बान्	३३३	त्यक्ताहारशरीर सन्	१३६	त्व तीर्थकृत्सकलपापमलाप-	५६३
तेषा छिन्नानि गात्राणि	२११	त्रय समुदित मुक्ते	५८५	त्व दानतीर्थकृच्छ्रेयान्	४५६
तेषा तदातनी शोभाम्	५२६	त्रय षष्टिरिहार्थाधि-	४१	त्व दिष्ट्या वर्द्धसे कन्ये	१४७
तेषा प्रत्यङ्गमत्युद्धा	३५०	त्रयस्त्रिंशदथास्य स्यु	२२४	त्व देव जगता ज्योति	२८६
तेषा विक्रियया सान्त-	५३	त्रयाणामस्मदादीना	४२	त्व देव परम ज्योति	३७७
तेषा विभूषणान्यासन्	३५०	त्रयोदश च विमले	४२	त्व देव परमानन्दम्	३०६
तेषा शुश्रूषणाच्छूद्रास्ते	३६२	त्रयोदशास्य प्रक्षीणा	४६६	त्व देव सर्वमप्येतद्	६३
तेषा समुचितैर्वाक्यै	१३६	त्रयोविंश शत तेषु	२२४	त्व देवि पुत्रमाप्तासि	३३६
तेषा स्वकृतकर्मानुभावो	४६१	त्रसकायेष्वपि प्राणी	३७५	त्व धातासि त्रिभुवनभर्ता	५६०
तेषा स्वभावसिद्धत्वे	७०	त्रायस्त्रिंशास्त्रयस्त्रिंशद्	५०८	त्व पञ्चब्रह्मतत्त्वात्मा	६२६
तेषा सत्यानभेदाना	६५	त्रिंशत्पञ्चहता पञ्च	२१५	त्व पूतस्त्व पुनानोऽसि	३०६
तेषाञ्च नामनिर्देशो	४२६	त्रिंशद्दण्डान्तराश्चैषा	४२५	त्व पूतात्मा जगद्विश्व	३०६
तेषामतीन्द्रिग्र सौख्यम्	४६६	त्रिकालगोचरानन्त-	४८७	त्व प्रष्टा भगवान् वक्ता	३३
तेषामथ स्थलच्छायाम्	५३१	त्रिकालदर्शी लोकेशो-	६२५	त्व बुद्धोऽसि स्वयबुद्ध	३७८
तेषामन्तर्भिदा वक्ष्ये	४७७	त्रिकालविषयाशेष-	६०१	त्व ब्रह्मा परमज्योति	५७५
तेषामन्तर्महावीथ्या-	५२१	त्रिजगत्प्रभुणा नूनम्	५२१	त्व मित्र त्वमसि गुरुस्त्वमेव	५६१
तेषामन्योन्यहस्ताग्र-	२६३	त्रिजगत्सन्निवेशेन	४६०	त्व योगात्मा सयोगश्च	५७६
तेषामापतता यानविमानै	२८४	त्रिजगत्समवस्थानम्	५६०	त्व विद्धि मा स्वयबुद्ध	१६६
तेषामाहारसम्प्रीति-	४८	त्रिजगद्वल्लभ श्रीमान्	६३१	त्व विबुध्यस्व कल्याणि	३३४
तेषामुद्भिन्नवेलानाम्	२८४	त्रिजगद्वल्लभोऽभ्यर्च्य	६२४	त्व शम्भु शम्भव शयु	५७६
तेषु तेजस्विना धुर्यो	३५२	त्रिज्ञानविमलालोक	१४०	त्व सर्वग सकलवस्तुगताव-	५६३
तेषु देवा सगन्धर्वा	५३२	त्रिदशासुरमर्त्यानाम्	५६१	त्व सार्व सर्वविद्येश	१६६
तेष्वन्त्यो भवती भर्ता	१४३	त्रिदोषजा महातङ्का	३२७	त्व स्रष्टा त्व विधातासि	५७५
तेष्वभरणविन्यस्त-	५३०	त्रिधा प्राणिवधात् मिथ्या	२३२	त्व स्वयम्भू स्वयम्बुद्ध	३७८
ते सम्यग्दर्शनज्ञान-	१६७	त्रिधा विपाट्य मिथ्यात्व-	२००	त्व ह भव्याब्जिनीबन्धु	५७७
ते सर्वे सदृशाकार-	२२१	त्रिदोषकिरणोद्भासि-	२८३	त्व हि ब्रह्मविदा ध्येय	५७७
ते स्वपुण्योदयोद्भूत-	४८	त्रिभिस्तलैरुपेताया-	५४१	त्वक पुत्रि सुख स्नाहि	१३६
तैर्गिन्यध्यप्यमागोऽपि	४४७	त्रिमेखलमद पीठम्	५३६	त्वगस्थिभूतसर्वाङ्गो	२३६
तैनादेर्याचन तस्य	४५३	त्रिमेखलाङ्किते पीठे	५४०	त्वगस्थीभूतदेहोऽपि	११५
तैश्च तस्य किलाद्रगानि	१०२	त्रियोग पूर्वविद् यस्माद्	४६३	त्वत्त कल्याणमाप्स्यन्ति	३०६

नम्र प्रवाधमायान्ती	२२	त्वयावतारिता तुङ्गा-	३४	दन्तालग्नैर्मृणालैर्यो	५१०
नम्र प्ररोधमिच्छन्त	२८६	त्वया ससारदुर्वली	१६३	दम्पत्योरिति सम्प्रीत्या	२०५
नम एव पर श्रेयो	३७	त्वयि प्रणयमाधत्ते	२८६	दयाङ्गनापरिष्वङ्ग	४५६
नमना जाम्य गम्भीरा	२७८	त्वयि भक्ति कृताल्पापि	५६५	दयामूले भवेद् धर्मो	६२
नम्रदाग्नानां पुण्य	३८	त्वयि सत्या सरोजाक्षि-	१३३	दयालुनापि दु साध्य-	१६३
नम्रादाम्युहच्छाया	६००	त्वयि स्वर्गं गतेऽस्मासु	२०८	दयालुर्वत्सलो धीमान्	१६
नम्रा कति सर्वज्ञा	२४	त्वयोत्यादीनि नामानि	५८०	दयावल्ली परिष्वक्तो	१६३
नम्रमूर्ता नृकर्ममुक्ता	५६०	त्वयेश पुत्रनप्तृभ्य	४०५	दशग्राम्यास्तु मध्ये यो	३६२
नम्रमग्नद्वैविगद्रक्ष	५६२	त्वयैव भगवन् विश्वा	३७	दशनच्छदरागोऽस्या	२५३
नम्रम्यानम्यितोदेशम्	५६७	त्वयोदिते पथि जिन ये	५६१	दशयोजनविस्तीर्ण-	७८
नम्रदिव्यवागियमशेषपदार्थ-	५६३	त्वयोपदर्शित मार्गम्	५८१	दशाङ्गतस्सम्भूत-	१६६
नम्रदृगागमना दीप्ति	५६५	त्वयोपदर्शिते तत्त्वे	२३	दशावतारचरम-	३०६
नम्रदन्त सुवमभ्येति	१६३	त्वयोपदिशता तत्त्व	२३	दाता श्रद्धादिभिर्युक्तो	४५७
नम्रदन्तिचोदितामेना	५८०	त्वय्यनन्तमुखोत्सर्पत्	५६८	दातुराहारदानस्य	४५४
नम्रद्विषोविस्तरे कृत्स्न	२३	त्वय्यसाधारणी प्रीति	१४१	दातुर्विशुद्धया देयम्	४५७
नम्रद्विषागादह जात	१६६	त्वय्यता चर्यता देवि	३८८	दान पूजाञ्च शीलञ्च	१८२
नम्रद्विषान् प्रमृता वाणी	२५	त्वा प्रत्यक्षविदा बोधै-	३३	दान प्रदत्तं मुदिता-	३७१
नम्रद्विषादुद्यती दीप्ति	५६६	त्वा देवमादिकर्तार	३५८	दानाद् दानानुमोदाद् वा	१६७
नम्रद्विषारणवन्धुन-	२६	त्वा देवमित्यमभिवन्द्य	१६६	दानानुमोदनात् पुण्य	४५४
नम्रद्विषाग्नमक्षय्य	५७६	त्वा निष्क्रान्तौ मणिमययाना-	५६०	दामनी कुसुमामोद-	२५६
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	६२६	त्वा विनोदयितु देवि	२७८	दामनी लम्बमाने खे	२६३
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	२०२	त्वामन्यकान्तक प्राहु	६०१	दार्यन्ते क्रकचैस्तीक्ष्णै	२१३
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	२८५	त्वामभिष्टुवता भक्त्या	५६४	दार्वाभिसारसौवीर-	३६०
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	२७८	त्वामादिपुरुष दृष्ट्वा	३३०	दासीदासगवाश्वादि-	३६०
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	५५७	त्वामापतन्ति परित	५७८	दाहज्वरपरीताङ्ग	१०२
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	१६५	त्वामामनन्ति मुनय पुरुष-	५६३	दिक्कुमारीभिरित्यात्त-	२६६
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	३०६	त्वामामनन्ति मुनयो	३३	दिक्चतुष्टयमाश्रित्य	५१६
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	५७६	त्वामामनन्ति योगीन्द्रा	३०७	दिक्पालाश्च यथायोग्य-	२६१
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	५५८	त्वामामनन्ति सुधिय	२८६	दिक्षु सालोत्तमस्यास्य	५३४
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	१५४	त्वामीडमहे जिन भवन्तमनु-	५६४	दिगङ्गनामुखानिन्दु	२६१
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	६२६	द		दिग्जयप्रसवागार	४१४
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	६०१	दध्वनद् दुन्दुभिध्वानं	१२७	दिग्देशानर्थदण्डेभ्यो	२२२
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	१६५	दग्धव्रणे यथा चान्द्र-	२४२	दिग्नागस्पर्द्धिनो	७६
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	३०६	दण्डभीत्या हि लोकोऽयम्	३६६	दिग्मुखेपूलसन्ति स्म	३०७
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	३७	दण्डमुच्चै कपाटञ्च	४६५	दिग्वासा वातरशनो	६२७
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	१६३	दत्त्वाऽपू निगूट स्व	१८७	दिदीपे लब्धसस्कारो	५६१
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	३३०	ददा धूपमिदञ्च पीयूषपिण्ड	५५६	दिध्यासापूर्विका ध्यान	५०१
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	२६	दद्यात्पुञ्चै त्वकूटानि	७६	दिनाना शतमस्येष्टम्	१३२
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	२८६	दधाने जघनाभोग	३५३	दिने दिने महास्तोषो	१६२
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	३७७	दधाने रचिर हार	३५३	दिवाकरकराश्लपम्	२८७
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	५६५	दध्वान ध्वनदम्भोद-	५०६	दिवामन्या निशा कर्तु	१३५
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	१६३	दध्वेज्जो नानिन्नावश	८८	दिवोऽप्यत्तदा पौष्णी-	३०१
नम्रद्विषाग्नमि जगद्वन्धु	१६३	दध्वेज्ज नानिन्नानुज्ञा	३२६	दिव्यध्वनिमनुश्रुत्य	५६१

दिव्य भावे किलैतेषा	३७५	दृष्टेऽस्मिन् सफले नेत्रे	४४६	देहोद्योतस्तदेन्द्राणा	३८२
दिव्यभाषा तवाशेष-	१६४	दृष्ट्वा तदातनी भूतिम्	२८८	दो सहस्रोद्धृतं कुम्भं	२६३
दिव्यभाषापतिर्दिव्य	६०७	दृष्ट्वा तद्विलय सद्यो	१७१	दोषधानुमलस्पर्श-	२३८
दिव्यमहाध्वनिरस्य मुखाब्जात्	५४६	दृष्ट्वा तौ सहसास्यासीत्	१६८	दोषनिर्हरणायेषा	४४५
दिव्यमानुपतामस्य	३४०	दृष्ट्वा देवा समवसृतिमहीम्	५५०	दोषाद् दु समकालस्य	४२
दिव्यस्येवौषधस्यास्य	१२४	दृष्ट्वा प्रमुदित तेषाम्	३१३	दोषान् गृह्णन्तु वा काम	१४
दिव्यहस स तत्तल्पम्	२३८	दृष्ट्वा भागवत रूपम्	४५७	दोहद परमोदात्तम्	३३७
दिव्यहसा विरेजुस्ते	३७७	दृष्ट्वा स्वप्नावतिस्पष्ट	११२	द्व्यणुकादिमहास्कन्ध	५८६
दिव्याननुभवन् भोगान्	१४०	दृष्ट्वैतान् षोडशस्वप्नान्	२६३	द्युभूमितिलके पुर्यो	४२६
दिव्यानुभावमस्यासीत्	२२३	दृष्ट्वैनयोरदो रूपम्	३३३	द्युन्ताभो जातरूपाभ	६२६
दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वम्	६२६	देव साक्षात्सकल वस्तुतत्त्वम्	५५०	द्युसत्परस्पराह्वान-	६३२
दिष्ट्या कल्याणि कल्याण-	१५२	देव किञ्चिद् विवक्षामि	३२६	द्युसदा प्रतिबिम्बानि	२३७
दिष्ट्या स्म वद्धंते देवी	३३१	देवकृतो ध्वनिरित्यसदेतत्	५४६	द्रवद्रव्य जलादि स्यात्	५८६
दिश प्रति चतस्रस्ता	५१६	देवतालोकपाषण्ड-	२००	द्रव्य क्षेत्र तथा तीर्थं	१८
दिश प्रसत्तिमासेदुरासीन्	२८३	देवदत्त पिता च स्यात्	५०३	द्रव्य जीवादि षोढा स्यात्	१८
दिश प्रसत्तिमासेदु बभ्राणे	५०६	देवदेवो जगन्नाथो	६२५	द्रव्य प्रमाणमित्युक्त	४३
दिश प्रसेदुरुन्मुक्त-	६३३	देवधिष्यमिवागारम्	३१२	द्रव्याण्यप्यनुकूलानि	४६५
दिश सुरभयन्धूपो	५२२	देव प्रशान्तचरित	६३५	द्वयोरट्टालयोर्मध्ये	४२५
दिश्येकस्या ध्वजा सर्वे	५३०	देवस्य वज्रदन्तस्य	१५१	द्वा स्थै प्रणीयमानौ च	१७६
दीक्षाङ्गना परिष्वङ्ग-	३८१	देवाङ्गद्युतिविद्युद्भि	५१३	द्वात्रिंशत्प्रसवास्तस्याम्	५११
दीक्षानन्तरमुद्भूत	३६८	देवागमे क्षणात्तस्या	१२७	द्वात्रिंशद्वदनान्यस्य	५११
दीर्नैर्दन्य समुत्सृष्ट	१६१	देवाद्य यामिनीभागे	२६३	द्वादशात्मकमेतद्धि	२२२
दीप्ता दिशश्च दिग्दाह-	२१३	देवाभरणमुक्तौघ-	५१२	द्वाविंशतिदिनान्येष	११५
दीप्तामेका च सज्ज्वाला	११२	देवेम गृहिण धर्मम्	३३०	द्वितीय सालमुत्क्रम्य	५७४
दीप्तोग्रतपसे तुभ्य	३६	देवो जगद्गुरुरसौ वृषभो-	४४३	द्वितीय करणादि स्यात्	३६
दीप्तोद्धतरसप्रायम्	३१८	देवोत्तरकुरुक्षमासु	४७	द्वितीयक्षणसम्बन्धि-	४७०
दीप्राकार स्फुरद्ग्लन-	५२०	देवोत्तरकुरुन् यश्च	२६६	द्वितीयमभवत् पीठम्	५३६
दीयतेऽद्य महादान	३८६	देवोदककुरवो नूनम्	५३१	द्वितीयमाद्यवज्ज्ञेयम्	४६४
दीर्घदर्शी सुदीर्घायु	३२२	देवोऽयमतिकान्ताङ्ग	३२६	द्वितीयवारमारुह्य	२३७
दीर्घिकाम्भो भुवो न्यस्त-	१७६	देवोऽर्हन् प्राङ्मुखो वा	५७१	द्विरुक्तसुषमाद्यासीत्	४७
दुनोति कृकवाकूणाम्	२६१	देव्य षष्टिसहस्राणि	१७४	द्विरेफगुञ्जनैर्मञ्जु	५१७
दुन्दुभीना महाध्वानै	२८४	देव्या वसुन्धराख्याया	१४५	द्विषट्कयोजनैर्लोक-	२३७
दुरन्त कर्मणा पाको	२०६	देशनाकाललब्ध्यादि	१६६	द्विषड्भेदगणाकीर्णा-	४८७
दुर्जना दोषमिच्छन्ति	१४	देशा सुकोसलावन्ती-	३५६	द्विषड्योजनभूभागम्	५४३
दुर्वला स्व जहु स्थान	१८०	देशादिनियमोऽप्येवम्	४८२	द्विषड्योजनविस्तारम्	५१४
दुष्टव्रणो यथा क्षार-	२४२	देशाधिकारिणो गत्वा-	१७८	द्विस्तौडग्याद् विस्तृतो	७७
दुष्टाना निग्रह शिष्ट-	३६६	देशै साधारणानूप-	३६०	द्वीप नन्दीश्वर देवा	२७३
दुस्सहा वेदनास्तीव्रा	२१५	देहभारमथोत्सृज्य	११६	द्वीपाब्धिभिरसख्यातै-	७३
दूरमुत्सारयन् स्वैरम्	२६५	देहाद् विविक्तमात्मानम्	४६४	द्वीपाब्धिवलयानद्रीन्	४६०
दूरादेव मुनीन्द्री तौ	१८१	देहावस्था पुनर्येव	४८२	द्वीपान्तराद् दिशामन्तान्	१५१
दूरोत्सारितदुर्व्यानो	४८३	देहाहारपरित्याग-	११४	द्वीपे जम्बूमतीहैव	१११
दृग्धर्वीक्षितैस्तस्य	३४२	देहे जिनस्य जयिन कनकाव-	५६५	द्वेधाद्य स्यात् पृथक्त्वादि	४६२
दृष्टतत्त्ववरीवृष्टि.	३६५	देहोच्छ्राय नृणा यत्र	१६६	द्वे लक्षे पञ्चपञ्चाशत्	४०

श्लोकानामकाराद्यनुक्रमः

३१ नमो नमो
३२ निगानास्पद यार्ता

ध

३३ नम नमिना रेखाः
३४ नमो नानां कुमुमाचितेय
३५ धनदमनगे वाजो
३६ धनदेशीय नम्यासीत्
३७ धनुरन्ध्रमिवोद्भासि
३८ धनपा यद्गतीमेपा
३९ धनीय नम्र तिम्र स्यु
४० धन्या वेया जगद्भर्तु
४१ धन्यय न्यका मान्या
४२ धम्मिनभारमानन्त
४३ धम कामदुषा धेनु
४४ धम प्रपाति दु खेभ्यो
४५ धनं प्राणिदया सत्य
४६ धनगायीप्यनाहूत-
४७ धनदृष्ट्य ये नित्य
४८ धनस्रो दयायागो
४९ धमयारि जिनाम्भोदात्
५० धमध्वतो नियुक्ता ये
५१ धनं धानुगा हृद्या
५२ धनं भाद् गुस्फैवत्यम्
५३ धनस्य नम्य लिङ्गानि
५४ धनप्राप्त्यातता चेति
५५ धमात्तुयमधर्माच्च
५६ धर्माश्चर कामश्च
५७ धनादिष्टायनम्पत्ति-
५८ धनाश्च नृगेन्द्रत्वम्
५९ धर्माधोऽप्यन्येते
६० धनाधर्माश्चिद्वान्-
६१ धनोऽर्थागो या स्यात्
६२ धनोऽर्थो नमामाया
६३ धनं तया ज्ञातुर्ध्वम्
६४ धनं नुष्योऽगो
६५ धर्मा च नुष्य मित्रज्य
६६ धनं भागी तय
६७ धनप्राप्त्यानि तया
६८ धनप्राप्त्यानि तया
६९ धनं तया ज्ञातुर्ध्वम्
७० धनं तया ज्ञातुर्ध्वम्

२२५
२०८
३२६
४३१
४४८
२३२
५१४
४४२
२१६
३६१
१६१
१२६
३२
२१७
२०६
२३६
२१०
६२३
६३४
२०
११
५७३
६२
२३७
२०६
३२
६२
२१७
१०६
५८८
१२
३२
३०६
२२५
२१७
१२
३७८
८७६
३१६
६२६
१६६
२०६

धीवलायतवृत्तित्वाद्
धीमान्निमा चला लक्ष्मी
धीरध्वान प्रवर्पन्तम्
धीरा काश्चिदधीराक्ष्यो
धुततटवनाभोगा
धुनोति दवयु स्वान्तात्
धुन्वानाश्चामराण्यस्य
धूपगन्धैर्जिनेन्द्राङ्ग-
धूपामोदितदिग्भागात्
धूपामोदैदिशो रुद्धा
धूपेषु दह्यमानेषु
धूलिसालवृतास्थान-
धृतकमल वने वने तरङ्गान्
धृतजन्माभिपेर्काद्वि
धृतमङ्गलनाकस्त्री
धृतमौलिर्विभात्युच्चै
धृताशुकमसौ दध्ने
धृतिमत्ता क्षमावत्ता
ध्यानद्रुषणनिर्भिन्न-
ध्यानद्वय विसृज्याद्य
ध्यानस्यालम्बन कृत्स्नम्
ध्यानस्यैव तपोयोगा
ध्यानाभ्यास तत कुर्वन्
ध्यानेऽप्युपरते धीमान्
ध्यायत्यर्थाननेनेति
ध्यायेद् द्रव्यादियाथात्म्यम्
ध्येयतत्त्वेऽपि नेतव्या
ध्येयमध्यातमत्तत्त्व स्यात्
ध्येयमस्य श्रुतस्कन्ध-
ध्रुवमक्षीणपुष्पद्वि-
ध्वजाशुकपरामृष्ट-
ध्वजाम्बरतताम्बरं परिगता
ध्वनद्भिर्मधुर मौल्यम्
ध्वनन्ति मधुरध्वाना
ध्वनन्तीषु नभो व्याप्य
ध्वनन्तो ववृषुर्मुक्त-
ध्वनन्मधुरगम्भीर-
ध्वनिरम्बुमुचा किमय स्फुरति

४७५
६३
५७५
३८७
४१७
२०३
२३०
५४२
६३१
३१२
२६८
६३१
४३४
३८६
३६४
३८५
२५२
४६०
६००
४८०
४७६
४६७
४६४
४६२
४७५
४८१
५०२
४८५
४६३
१७६
५२५
५५२
३१५
५६६
३८२
६१
६३०
५४८

न केवलमय काय
न केवलमसौ रूप-
नक्त नक्तञ्चरैर्भीमै
नखकेशमितावस्था
नखताराभिरुद्भूत-
नखदर्पणसङ्क्रान्त-
नखाशवस्तवाताम्ना
नखाशूत्करव्याजमव्याजशोभ
नखै कुरवकच्छाया
नखैरापाटलैस्तस्या
नखोज्ज्वलैस्ताम्रतलै-
नगर्या केशवोऽत्रैव
नगर्या पुण्डरीकिण्या
नगर्यामलकारस्याया
नगर्यामिह धुर्योऽह
नगर्या दक्षिणश्रेण्याम्
न चाहोरात्रसन्ध्यादिलक्षण
न जरास्य न खेदो वा
न ज्योत्स्ना नाप्यहोरात्र-
नटन्तीषु नभोरङ्गो
न तत्सुख परद्रव्य-
न तदा कोप्यभूद् दीनो
नत्वा देवमिम चराचरगुरुम्
नदीपुलिनदेशेषु
न दीनोऽभूत्तदा कश्चित्
न निद्रा नातितन्द्राण
नन्दश्च नन्दिमित्रश्च
नन्दिषेणमहीभर्तु
नन्दीश्वरमहाद्वीपे
नन्दोत्तरादिनामान
नन्दावर्तविमानेऽभूद्
न वद्धो भ्रकुटिन्यासो
न बाह्याभ्यन्तरे चास्मिन्
नभ परिमृजन्तो वा
नभ सरसि नाकीन्द्रदेहो
नभ सरसि हाराशु
नभ स्पृशो महामाना
नभ स्फटिकनिर्माणा
नभ स्फटिकसालस्य
नभ स्फटिकसालात्तु
नभन्तरोवरेऽन्विष्य
न भुक्ति क्षीणमोहस्य
न भूतकार्यं चैतन्य

४४५
८६
४६६
५६८
२१६
३५३
६००
५५५
२५१
१२५
४१६
२२८
२२८
१८२
१४७
४२३
४८३
३२७
१६५
३८२
४६७
३१३
४४४
१६६
३३६
१६६
१३०
२२१
११६
५१७
२०६
१६३
४६४
५३०
२८४
५१२
५१५
५३४
५३७
५३७
३३४
५६७
६६

न

न कारणाद् विना कार्य-
नकुलोऽय भवेज्यन्मिन्
न केवन परिम्वानि-

६३
१८६
१२१

नभोऽङ्गण तदा कृत्स्नम्	२८४	न यत्र विरहोन्मादो	१६६	नाडकुर स्याद् विना बीजाद्	६२
नभोऽङ्गणमथापूर्य	५२	नयनयुगमताम्न वक्ति-	५६६	नाडगुलीभञ्जन कुर्यान्न	१६
नभोऽङ्गणमथारुध्य	३७६	नयनानन्दिनी रूप-	२७१	नाट्यमण्डपरद्रगेपु	५२१
नभोऽङ्गणमथोत्पेतु	२८७	नयनोत्पलयो कान्ति	२५३	नाति दूर खमुत्पत्य-	३८८
नभो नीरन्ध्रमारुन्धन्	६२	नयनोत्पलयोरस्य	३२५	नातिदूरे पुरस्यास्य	३८८
नभोऽम्बुधौ सुरावीश	२८५	नयप्रमाणजीवादि-	४८६	नातिवृष्टिरवृष्टिर्वा	६२
नभोरङ्गो नटन्ति स्म	६३३	नयुतप्रमितायुष्को	५७	नात्यर्थमभवत्तीर्थी	८६
नभो व्यापिभिरुद्धोप	५७५	नयोपनयसम्पात-	४६८	नात्यासन्नविदूरेऽस्मान्	४६६
नभोऽशेष तदापूर्य	२६२	नरकादिप्रभेदेन	६८	नात्युन्मिषन्न चात्यन्त	४८१
नम क्षीणकलङ्काय	६०२	नरकायुरपर्याप्त	१०३	नात्र प्रतिभय तीव्र	८१६
नम परमयोगाय	६०२	नरकेषु विलानि स्यु	२१६	नाथानाथ जन त्रातु	३८४
नम परमरूपाय	६०२	नरकेषु यदेतेन दुःख-	३७४	नाधर्मात्सुगमम्प्राप्ति-	६२
नम परमविज्ञान-	६०३	नरगीत विभातीत	८२२	नानद्विभूषण दृष्ट्वा	१३०
नम परमविद्याय	६०२	न रात्रिर्न दिवा तत्र	५२३	नानादु खशनावर्ते	२१५
नम पुराणकारेभ्यो	१०	नरा सुरा कुमाराभा-	४२७	नानानुषोऽप्यभूद् भर्तु	४०४
नम समन्तभद्राय	१०	नरेन्द्रभवन चास्या	२५६	नानाभरणभाभार-	५१
नम सिद्धेभ्य इत्येतत्	४६६	नर्तयन्नेकतो यूनो	३१८	नानाभरणविन्यासम्	१३८
नम सुगतये तुभ्यम्	६०३	नलिन कमलाद्ग च	६६	नानारत्नप्रभोत्सर्पे	५४०
नम स्तादार्य ते शुद्धि श्रिते	३०६	नलिनप्रमितायुष्को	५५	नानोपान्यानकुशलो	१६
नम स्थगितमस्माभि	१६१	नलिनाभ मुख तस्य	२४०	नान्दीतुर्यग्वे विष्वग्	२६६
नमत्त्वचरराजेन्द्र-	१०६	नव वयो न दोषाय	४०८	नाभि कामरमस्यैक-	३३१
नमस्कारपदान्यन्त-	११५	नवकेवललब्धीस्ता-	४७२	नाभि शोभानिधानोर्वी	३४६
नमस्कारपदान्युच्चै	१२२	नवकेवललब्ध्यादि-	४८८	नाभिकालोद्भवत्कल्प-	८५
नमस्तम पटच्छन्न-	६	न वनस्पतयोऽप्येते	१६४	नाभिपार्थिवमन्वेति	२७०
नमस्तुभ्यमलेश्याय	६०३	नवम पुष्पदन्तस्य	४२	नाभिरन्धादधस्तन्वी	१२५
नमस्ते जगता पत्ये	६००	नवमास स्थिता गर्भे	१६६	नाभिराज सम देव्या	३१६
नमस्तेऽनन्तदानाय	६०२	नवमासेष्वतीतेषु	३३७	नाभिराज समुद्भिन्न-	३११
नमस्तेऽनन्तबोधाकात्	३०८	नवयौवनपूर्णो ना	११६	नाभिराज स्वहस्तेन	३६७
नमस्तेऽनन्तवीर्याय	६०२	नवयौवनमासाद्य-	१२४	नाभिराजाज्ञया सष्टु-	३५८
नमस्ते विक्रियर्द्धिनाम-	३६	नवसयत एवासी	११२	नाभिराजोऽन्यदा दृष्ट्वा	३२६
नमिरनमयदुच्चैर्भोग-	४४४	न वाञ्छन् बलमायुर्वा	४५८	नाभिश्च तन्नाभिनिकेतनेन	६७
नमिश्च विनमिश्चेति	४०५	न विकारोऽपि देहस्य	६६	नाभेयो नाभिजो जात	६३१
न मुखे भ्रुकुटीन्यासो	५६५	न विनाऽभ्युदय पुण्याद्	३४४	नाभेरभिमतो राज्ञ	२७०
न मूर्ध्नि कबरीबन्धो	५६५	न विना यानपात्रेण	२०५	नामकर्मविनिर्माण-	३३२
न मेरुरयमुत्फुल्ल-	२६७	न विना वाङ्मयात् किञ्चित्	३५६	नामग्रहणमात्र च	४४
नमो जिनेशने तुभ्यम्	१६२	न विषादो भय ग्लानि	१६६	नामृष्टभाषिणी जिह्वा	४०८
नमो दर्शनमोहघ्ने	६०२	न विहन्त्यापद यच्च	२४२	नारकी वेदना घोरा	२१८
नमोऽमृतमधुक्षीर-	३६	न शिष्ये जागरूकोऽसी	४६२	नारीरूपमय यन्त्रम्	३७६
नमोऽवधिजुषे तुभ्य	३५	न स्पृशन्ति कराबाधा	७७	नासिका घ्रातुमस्येव	२१६
नमो विश्वात्मने तुभ्य	५७८	न स्वद्यन्न परिश्राम्यन्	३६	नासिकास्य रुचि दध्ने	२२८
नमोऽस्तु तद्रसासङ्ग-	१०५	न हि लोहमय यान-	४५८	नासूया परनिन्दा वा	२३६
नमोऽस्तवृजुमते तुभ्य	३६	नाकालय व्यलोकिष्ट	२६०	नास्त्यात्मेत्याहुरेकेऽन्ये	५८५
न यत्र परलिङ्गाना-	७४	नाकीन्द्रा क्षालयाञ्चक्रु	३६५	नि शेषकर्मनिर्माक्षो	५८५

निर्भयमभिनिर्भयं	४८६	निर्निमेषो निराहारो-	६१४	नून पापपरागस्य	५३६
निर्भयं वदु गनारे	३७४	निर्भयश्च निराकाङ्क्षो	४८८	नून सालनिभेनैत्य	५१६
निर्भयं वदु गनारे	२८०	निर्भुक्तमाल्यवद् भूयो	८४	नून सुराङ्गनानेत्र	५१८
निर्भयं गच्छित्वान्	२५१	निर्भूयमपि कान्त ते	५६५	नून स्वयप्रभाचर्या	१५०
निर्भयमदभाव-	१४६	निर्मले श्रीपतेरङ्गो	२६४	नूनमाभ्या कृता पूजा	१६१
निर्भयमदियापादे	२६६	निर्माणकर्मनिर्मातृ	७२	नूनमामोदलोभेन	४११
निर्भयमगरेण	४६१	निर्लुच्य बहुमोहाग्र-	३६०	नूनमार्तधिया भुक्ता	३७४
निर्भयमग्रे पुत्रो	२३१	निर्लोपो निष्कल शुद्धो	४६६	नूनमेतन्निभे नास्मद्	२१४
निर्भयमग्निने तस्या	१६७	निर्वर्ण्य पट्टक तत्र	१४८	नूनमेन प्रकाशात्मा	३३३
निर्भयमग्निमेतस्या	१२५	निर्वाणमगमत्पद्मा	१४१	नृणा दानफलादेते	१६४
निर्भयमग्निमग्नौ	११५	निर्वापिता मही कृत्स्ना	२६८	नृत्तक्षोभान्महीक्षोभे	३१६
निर्भयमग्निं काश्चित्	२६७	निर्वृत्तावभिषेकस्य	३०१	नृत्तारम्भे महेन्द्रस्य	३१३
निर्भयमग्निं यत्र	७८	निर्व्यपेक्ष व्रजन्त त	४५५	नृत्य नीलाञ्जनाख्याया	३८६
निर्भयमदलाभेन	१६६	निर्व्यायामा निरातङ्का	४८	नृत्यतोऽस्य भुजोत्लासै	३१६
निर्भयमदलाभायै	५१६	निलीनानिकुलै रेजु	५१६	नृत्यत्सुराङ्गनापाङ्ग-	३६५
निर्भयमदलाभक जीव-	५०३	निशाविरहसन्तप्त	२६१	नृत्यन्ति सलय स्मेर-	५११
निर्भयमदलाभकालोक्य	१२१	निश्चिचायेति राजेन्द्रो	५७३	नृत्यन्नाकाङ्गनापाठ्य	३६४
निर्भयमदलाभादात्मा	५०३	निश्चितो यो गुणैरेभि	५८३	नृप वनानि रम्याणि	१७६
निर्भयमदलाभविग	२६१	निश्चित्येति समाह्वय	१७५	नृपदानानुमोदेन	१८५
निर्भयमदलाभित्यो वा	५००	निश्चयस्य दीर्घमुष्ण च	३८८	नृपप्रश्नवशात्तस्मिन्	१४४
निर्भयमदलाभित्यो	४७७	निष्कर्मा विवृताशेष-	४६६	नृपवल्लभिकाना च	१७७
निर्भयमदलाभित्ये	१४५	निष्टप्तकनकच्छाय	३२५	नृपस्तु सुविधि पुत्र-	२२२
निर्भयमदलाभित्ये	३३४	निष्टप्तकनकच्छाय सप्त-	११८	नृपाङ्गणमहीरङ्गो	३६४
	१३७	निष्टप्तकनकच्छाय कनत्-	६२६	नृपा मूर्धाभिषिक्ता ये	३६६
	५२१	निसर्गजा गुणास्तस्य	१२३	नृपासनस्थमेनञ्च	२३०
	४२७	निसर्गरुचिर भर्तु	३०५	नृपैरष्टादशाभ्यस्त-	२२१
	४११	निसर्गरुचिराकारो	३४४	नृपोऽपि तद्गुणाध्यान-	१८८
	२१०	निसर्गरुचिराप्येषा	३५०	नृपोऽभिषेकमस्योच्चै	२३०
	१८१	निसर्गसुन्दर तस्य	३२७	नेदुरप्सरस शक्त-	३१६
	४१५	निसर्गमुभगा नार्यो	७४	नेदुरैरावतालान-	३१७
	७१	निसर्गमुरभिष्यङ्गो	३००	नेदुस्तद्भुजरङ्गेषु	३१८
	५६८	निमर्गाच्च धृतिस्तस्या	२७६	नेतयो नोपसर्गश्च	५६८
	२८३	निस्तनन् कतिचिच्छ्लोकान्	१६	नेत्रभृङ्गो मुखाब्जे स	१२२
	४८८	निस्तद्गतत्वादिवाम्यस्त-	८६	नेत्रयोद्वितय रेजे	१२२
	१४६	निस्तद्गतवृत्तये तुभ्य	३०८	नेदु सुरानका मन्द	४५४
	४४३	नोचैवृत्तिरधर्मण	२१८	नेत्रैर्मधुमदाताम्	४१६
	६८	नोर्गन्ध रोदसी रुद्ध्वा	२५७	नेत्रोत्पलद्वय तेषा	३४६
	६०८	नीलादिष्वचलेन्द्रेषु	११६	नेत्रोत्पलद्वयेनास्य	३४७
	२८७	नीलिमा तत्कुचापाग्रम्	३३७	नैकरूपो नयो तुङ्गो	६२२
	५०४	नीलोत्पलवनत्सेन	३३३	नैको विश्वात्मकस्यास्य	६६
	१६२	नीलोत्पलनोपहारेषु	५३५	नैरात्म्यवादपक्षेऽपि	५०२
	२५६	नून तद्गुणमग्न्यान्	२३०	नैकिञ्चन्यप्रधान यत्	४५३
	६३०	नूनं तस्या कलात्पापे	२५०	नैस्तद्गुणमास्थितश्चर्या-	३६४

पदभाष्यन् यद्वि ज्ञान-	२२	पञ्चप्रमितमस्यायु	५५	परिनिष्क्रान्तिराज्यानु-	३७६
पदो विवृति त्वानि	२८०	पञ्चयोनिर्जगद्योनि-	६१३	परिनिष्पन्नशाल्यादि-	६३३
पदार्थान् पञ्चमुत्त	७१	पञ्चरागमयस्तस्मिन्	१५७	परिपृष्टापि साशङ्क	१२७
पदवृत्ति दीनानि-	१६५	पञ्चरागमयैरुच्चै	५२०	परिवारद्विसत्तैव	२४४
पदार्थान् देव-	१६५	पञ्चरागरुचा व्याप्तम्	५१२	परिवारद्वि सामग्या	२४४
पदार्थान् क्रमादीनि	५८	पञ्चरागसमुत्सर्पन्	५४०	परिहासेष्वमर्मस्पृक्	२५५
पदार्थान् स्वामिन्	३८४	पद्मा पञ्चमयोत्तुङ्ग-	२५६	परीत्य पूजयन् मानस्तम्भान्	५७४
पदार्थान् स्वामिन्	४६६	पद्माकर इव श्रीमान्	५१०	परीत्य प्रणतो भक्त्या	४०७
पदार्थान् नियमान् शूद्रान्	३६८	पद्माङ्गप्रमितायुष्क-	५६	परीषहमहावातै-	४०७
पदार्थान् नृणाङ्गम्	२६०	पद्मेष्वेव विकोशत्व	८१	परेण सप्तरात्रेण	१६५
पदार्थान् भगवन्तेषु	८८	पद्मोत्पलवतसिन्यो	४२४	परे तुष्यन्तु वा मा वा	१३
पदार्थान् भगवन्तेषु	३२	पय पयोधरासक्तै	६१	परे परावरज्ञ तम्	३६६
		पय पयोधेरिव वीचिमाला	५४५	परे परार्थ्यरत्नानि	४४६
		पय पूरे वहत्यस्मिन्	२६७	परेषा दूषणाज्जातु	१३
		पयस्विन्या यथा क्षीर	३६६	परेषा बुद्धिमालोक्य	४०६
		पर पद परमसुखोदयास्पद	५६१	परोपकृतये विभ्रति	१५५
		पर प्रवचन सूक्त	४८६	पर्यानि सप्त विभ्राण	५२४
		पर सवेगनिर्वेद-	२२१	पर्यन्ततृशाखाग्रै	३६८
		पर साधनमाम्नात	४७४	पर्यन्तवर्तिन क्षमाजा	४०४
		पर स्वास्थ्य सुख नैनद्	२४२	पर्यन्तवर्तिनोर्मध्ये	४५२
		परक्षेत्रविहारस्तु	२३६	पर्याकुल इवासीच्च	५७३
		परचक्रनरेन्द्राणा-	६२	पर्याप्तदभित्सङ्गाद्	२६८
		परप्रकृतिसक्रान्ति	४६६	पर्याप्तमिदमेवास्य	३८१
		परम भेजुपे धाम	६०२	पर्याप्ताश्च महीपृष्ठे	२१०
		परमायुरथास्याभूत्	३२२	पर्याप्त्यनन्तर सोऽभात्	२३८
		परवादिनगास्तेऽपि	१०१	पर्वप्रमितमाम्नात	५८
		परा प्रवचने भक्तिम्	२३३	पलालपर्वतगामे	१३१
		परा विशुद्धिमास्तु	३८१	पत्यङ्क इव दिव्यासो	४८१
		पराधीन मुख हित्वा	३६४	पत्यङ्कमासन वद्ध्वा	४८०
		परानुग्रहकारिणि	३८४	पत्यत्रयमित यत्र	१६६
		परानुग्रहबुद्ध्या तु	२०४	पत्यस्य दशमो भाग-	५१
		पराराधनदारिद्र्य-	३७५	पत्योपमपृथक्त्वाव-	११८
		परार्थं मो कृतार्थाऽपि	२५	पवनान्दोलितस्तेषा	५२८
		परार्थ्यं रचनोपेत	१७०	पवित्रो भगवान् पूतै	२६४
		परार्थ्यं रत्ननिर्माण	३८३	पश्चाच्च नवमासेषु	२५८
		परा स्थितिर्नृणा पूर्व-	४२०	पश्चात् क्षायिकसम्यक्त्व-	६४
		परिष्ठा गोपुराट्टाल-	३६१	पश्य जन्मान्तराज्जन्तुन्	१५१
		परिष्ठापनामङ्गो	४५६	पश्य धर्मतरोरर्थ	३१
		परिष्ठापनफलभेदै	३६५	पश्य धर्मस्य माहात्म्य	३२
		परिष्ठापनप्रदानाङ्गम्	४५५	पश्य न पश्यतामेव	१७१
		परिष्ठापनविभिन्नद्वये	११६	पश्य निर्विषया तृप्तिम्	१८२
		परिष्ठापनविभिन्नद्वये	३१७	पश्यन् पाणिगृहीत्यो ते	३३१
		परिष्ठापनविभिन्नद्वये	३६३	पश्यामीव सुगम्पयं	१३३

२४४	पुण्डरीकस्तु संपुल्ल-	१३६	पुराणकवय केचित्	१३
१३७	पुण्ड्रेक्षुरस्तधारान्ता	४५४	पुराणकविभिः क्षुण्णे	६
२२१	पुण्यकल्पतरोरुच्चैः	१३७	पुराणगणभृतप्रोक्त	८
४१२	पुण्यपाठान् पठत्सूच्चैः	२२८	पुराणमन्तरं चात्र	४२६
४५८	पुण्यपापप्लावापि-	६८	पुराणमितिहासाख्य	८
४५८	पुण्यसम्पत्तिरेवान्या	२५५	पुराणमिदमेवाद्य	४३
४५७	पुण्यात्सुत न नुत्तमन्ति	३७१	पुराणमुनिमानस्य	४५
१२३	पुण्यात् सुरासुररोग-	३७१	पुराणमृषिभिः प्रोक्त	२७
४५७	पुण्याभिषेकमभित	२२	पुराणश्रुतितो वर्मो	३७
३०	पुण्येऽहनि मूर्तते च	२५७	पुराणस्यास्य वक्तव्यं	४१
४०१	पुत्रतपुभिरत्यैश्च	१०६	पुराणस्त कविर्वाग्मी	३२१
३२७	पुत्रागा च यथाभ्यायं	३५७	पुराणान्येवमेतानि	४२
३०५	पुत्रानपि तथा योग्य	३७०	पुराणि दक्षिणश्रेण्याम्	४२६
६१४	पुत्रिके च तयोजते	१३०	पुराणीन्द्रपुराणीव	४२७
३४	पुत्रि मा स्त गनः	१३६	पुरातन पुराणं स्यात्	८
३५	पुत्रैरिष्टैः कलत्रैश्च	३५७	पुरा पगङ्गनासङ्ग-	२१२
५२	पुनः प्रशान्तगन्भीरे	१०१	पुनःपुन्यामवनपिन्यां	४७
२४	पुनरन्तरनवानुद-	५६	पुरी न्वर्गपुरीवार्मा	३१२
१०४	पुनरन्तनुल्लङ्घ्य	५७	पुरदेवस्य कल्याणे	३३१
१२६	पुनरन्तनुद्गेन	४२४	पुरप पुरप्रार्थञ्च	५६०
१४०	पुनरप्यन्तर नावद्	५६	पुरप पुनमोगेयु	५८४
३१५	पुनरप्यवदत्तञ्च-	१०३	पुरपाद्योऽयोगित्वात्	१८
३३८	पुनरत्नां तयाप्यन्य	२४३	पुरपेक्षनुरन्तान्ते	४८
१३२	पुनर्दग्धेननन्वार्य	२०३	पुरहन पुन देवन्	३१६
१०४	पुनर्नन्तरं तत्र	५४	पुरोद्योवचनानुष्टो	१८४
१०४	पुनर्नन्तर प्रावद्-	५४	पुरेऽङ्गवल्या तते मृनिमाने	४५५
५०८	पुरं नगाध्यगोमानि-	४५६	पुरो विव ह्यत्यागे-	३३१
३४०	पुरः कित्तिपिस्तेषुच्चैः	१०८	पुराणि स्वचित्कान्	५०३
११२	पुरः पुरगुणो देवः	३३१	पुरा स्वयंयोगिष्य-	५०६
३१	पुरः प्रशान्तनुच्चैः	२६०	पुरावन्तावयाप्रोद्या	५०
१२४	पुरमेवविषं दन्तान्	३६१	पुरावन्तावयाप्रोद्या	५००
१४६	पुरवीथ्यन्तानुवन्	३१०	पुरावन्तावयाप्रोद्या	१३६
३००	पुरवीथ्यन्तानुवन्	३३८	पुरावन्तावयाप्रोद्या	११८
५१६	पुरावन्तावयाप्रोद्या	३३०	पुरावन्तावयाप्रोद्या	१०३
३६६	पुरावन्तावयाप्रोद्या	३००	पुरावन्तावयाप्रोद्या	११८
३२०	पुरा विनगान्तिषुच्चैः	३६०	पुरावन्तावयाप्रोद्या	१३५
१४५	पुरा विनगान्तिषुच्चैः	१३	पुरावन्तावयाप्रोद्या	१३५
२२७	पुरा विनगान्तिषुच्चैः	६०६	पुरावन्तावयाप्रोद्या	१०७
३६३	पुरा विनगान्तिषुच्चैः	३१	पुरावन्तावयाप्रोद्या	११६
१०३	पुरा विनगान्तिषुच्चैः	६०	पुरावन्तावयाप्रोद्या	१६०
३३१	पुरा विनगान्तिषुच्चैः	६०	पुरावन्तावयाप्रोद्या	१३०
१३५	पुरा विनगान्तिषुच्चैः	१०३	पुरावन्तावयाप्रोद्या	२६०
१००	पुरा विनगान्तिषुच्चैः	३०३	पुरावन्तावयाप्रोद्या	२६०

पुष्पाञ्जलि सुरैर्मुक्त	३८०	पौर्णमासीविलासिन्या	५०	प्रतीच्छ प्रथम नाथ	११७
पुष्पाञ्जलिमिवातेनु	५६०	प्रकटीकृतविश्वास	१०५	प्रतीतलिङ्गमेवैतद्	४८०
पुष्पामोदसमाहूतै	५२२	प्रकाण्डक क्रमस्थूलै	३५१	प्रतीहि धर्मसर्वस्व	२१०
पुष्पोपहारै सजलै	४०२	प्रकारवलयो यस्या	३१०	प्रतोली तामथोल्लङ्घ्य	५३२
पूजान्ते प्रणिपत्येशम्	५७५	प्रकीर्णकप्रतानेन	३८४	प्रत्यक्षमिव तत्सर्व	१४७
पूजाविभूति महती	१६२	प्रकीर्णकयुग भाति	१६४	प्रत्यक्षश्च परोक्षश्च	३४
पूत स्वायम्भुव गात्रम्	२६३	प्रकृत स्यात् कथावस्तु	१८	प्रत्यङ्गममरेन्द्रस्य	३१८
पूतस्तीर्थाम्बुभि स्नात	२६६	प्रकृतस्यार्थतत्त्वस्य	४०	प्रत्यङ्गमिति विन्यस्तै-	३०५
पूता गन्धाम्बुधारासौ	२६६	प्रकृतीरपि सामाद्यै	१८८	प्रत्यबूबुधमित्युच्चै	१४१
पूतात्मने नमस्तुभ्यम्	३०७	प्रकृत्या सुन्दराकारो	१५६	प्रत्यभिज्ञादिक भ्रान्त-	६४
पूर्णन्दुना जनाह्लादी	२६३	प्रकृष्टतरदुर्लेश्या	४७६	प्रत्याश्वासमथानीत	१५०
पूर्व चतुरशीतिघ्न	६५	प्रक्षालयत्यखिलमेव मनोमल	५६३	प्रत्यासन्नच्युतेरेव	१२१
पूर्व व्यावर्णिता ये ये	६४	प्रक्षालिताङ्घ्री सपूज्य	१८१	प्रत्यासन्नमृति बुद्ध्वा	१०३
पूर्वकोटिमित तस्य	५६	प्रचकम्पे तदा वास-	१२०	प्रत्यासन्नमृतेस्तस्य	१०१
पूर्वरङ्गप्रसङ्गेन	३१४	प्रचक्रुरुत्तमाङ्गेषु	३००	प्रत्युक्तश्च मयेत्यस्ति	१५०
पूर्ववद्गोपुराण्यस्य	५३०	प्रचचाल मही तोषात्	२८३	प्रत्युद्गम्य ततो भक्त्या	४५१
पूर्वाङ्गवर्षलक्षाणा-	६५	प्रजा दण्डधराभावे	३६६	प्रत्येक भोजन ज्ञेयम्	५३७
पूर्वाङ्गञ्च तथा पूर्वं	६५	प्रजाना जीवनोपाय-	६४	प्रथम पृथिवीमध्ये	३६४
पूर्वानुपूर्व्या प्रथम-	४०	प्रजाना दधदानन्द	३२०	प्रथमस्यानुयोगस्य	१७
पूर्वापरविदेहेषु	३५६	प्रजाना पूर्वसुकृतात्	६२	प्रदित्सतामुना राज्य	१७४
पूर्वापरावधी तस्य	७३	प्रजाना ववृधे हर्ष	२८३	प्रदृश्याथ दूरात्तत्स्वोत्तमाङ्गा	५५४
पूर्वापरेण रुन्द्रा स्यु	४२६	प्रजाना हितकृद् भूत्वा	६४	प्रदेशप्रचयापायात्	४६
पूर्वोक्तकुलकृत्स्वन्त्यो	२४६	प्रजानामधिक चक्षु-	५८	प्रदेशप्रचयायोगाद्	५८८
पूर्वोक्तसप्रवीचार	२४१	प्रजासन्तत्यविच्छेदे	३३०	प्रधानपुरुषश्चान्ये	१७७
पूर्वोक्ता नृपपुत्राश्च	२२३	प्रज्ञापारमित प्राज्ञो	६२८	प्रधानमात्मा प्रकृति	६२०
पृथक्त्व विद्धि नानात्व	४६३	प्रज्ञापारमितो योगी	४८३	प्रनृत्यदिव सौमुख्यमिव	३१३
पृथक्त्वेन वितर्कस्य	४६२	प्रज्ञामूलो गुणोदग्र-	१६	प्रपश्यन् विकसन्नेत्र-	५६४
पृथक्पृथगुभे श्रेण्यौ	४२१	प्रज्ञावेल प्रसादोर्मि-	१६	प्रपूर्यन्ते स्म षण्मासा	४४५
पृथिव्यप्पवनाग्नीना	६३	प्रणते ते समुत्थाप्य	३५४	प्रबुद्धा च शुभस्वप्न-	२६२
पृथिव्यामप्सु वह्नौ च	३७५	प्रणव प्रणत प्राण	६२०	प्रबुद्धो मानसी शुद्धि	५६०
पृथिव्यादिष्वनुद्भूत	६८	प्रणामक्षणे ते सुरेन्द्रा विरेजु	५५५	प्रबोधसमयोज्य ते	२६१
पृथु पञ्चाशत मूले	४१४	प्रणिगदति सतीत्य	४४	प्रबोधितश्च सोऽज्येद्यु	१४२
पृथुप्रदीप्तदेहक	५४२	प्रतस्थेऽथ महाभागो	५७४	प्रभञ्जननृपाच्चित्र-	२२१
पृथुवक्ष स्थल हारि	८३	प्रतस्थे भगवानित्य	६३१	प्रभञ्जनश्च्युतस्तस्मात्	१८५
पृथुवक्ष स्थलच्छन्न-	६१	प्रतिग्रहणमत्युच्चै	४५२	प्रभञ्जनोऽभूत् सेनानी	१८५
पृथुवक्षो वभारासौ	८८	प्रतिदिनममरेन्द्रो	३२४	प्रभया परितो जिनदेहभुवा	५४८
पृष्ठनश्च पुरञ्चास्य	६३४	प्रतिपादिकविन्यस्त-	१६१	प्रभाकरविमानेऽभूत्	३०६
पैतृप्नन्वीय एवाय	१४७	प्रतिप्रतीकमित्यस्य	८३	प्रभातमङ्गले काश्चित्	२६६
पोगण्डा हुण्डसस्थाना	२१६	प्रतिप्रसवमासीन-	५१८	प्रभातरलिता काश्चित्	२६६
पौरजानपदप्रस्या	५०८	प्रतिवा ह्वमरेन्द्रस्य	३१८	प्रभामयमिवाशेषम्	६३३
पौरवर्गं तथा मन्त्रि-	१७०	प्रतिश्रुति प्रत्यश्रुणोत्	६६	प्रभो प्रबोधमावातु	३७७
पौराह्णना महावीथी-	१७०	प्रतिश्रुतिरय धीरो	५२	प्रमाणमधुना तस्य	४०
पौराह्ण ननिनीपत्रपुटै	३६६	प्रतिश्रुतिरिति ख्यात-	५१	प्रमृद्यैनान् महाध्यान-	४६६

८५१	प्रसा प्रसूति सरोधादिन-	५६	प्राहुर्धर्मकथाङ्गानि	१८
३३६	प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्ध-	६०३	प्रियाङ्गनाङ्गससर्गात्	२४३
६३८	प्रसीदति भवत्पाद-	१६४	प्रियास्तनतटस्पर्श-	१६२
३३१	प्रसीद देव कि कृत्यमिति	४४६	प्रीत सम्पूज्य त भूय	४५६
४८०	प्रसेनजित् पर तस्माद-	६६	प्रीतिकण्टकिता भेजे	३३६
५०७	प्रस्तार नष्टमुद्दिष्ट	३५६	प्रीतिवर्द्धनमारोप्य	१४१
५१२	प्रस्थानमङ्गल भङ्गकुम्	३८७	प्रीतेरद्य परा कोटिम्	१५४
३३४	प्रस्थानमङ्गलान्युच्चै	३८२	प्रीत्या भरतराजेन	५८१
१६२	प्रस्थानमङ्गले जातम्	३८८	प्रेक्षका नाभिराजाद्या	३१४
२१०	प्रस्तुवाना महाव्याघ्री	४०४	प्रेक्षन्त केचिदागत्य	१३६
१६	प्रहीणा वृक्षवीर्यादि	५०	प्रोक्ता ध्यातुरवस्थेयम्	४८३
३१५	प्राकारात् परतो विभाति	५६६	प्रोक्ता सिद्धगुणा ह्यष्टौ	४६७
३१४	प्रागुक्ताश्च मृगा जन्म	१६७	प्रोक्तास्तीर्थकृदुत्सेधाद्	५२८
३६८	प्रागेव चिन्तित कार्यं	१५६	प्रोच्चचार महाध्वानो	४५४
६२८	प्रागेवोत्सर्पिणीकाल-	२६	प्रोत्तुङ्गो मेरुरेकान्तात्	४१३
५८१	प्राचीव बन्धुमञ्जानाम्	२८३	प्रोद्यद्विद्रुमसन्निभै	५६६
४०७	प्राग्जन्मानुभव कोऽपि	१२८		
१०	प्राग्भाषिते विदेहेऽस्ति	१२४		
५५८	प्राग्मेरोर्गन्धिले देशे	१८३		
५५४	प्राग्विदेहमहाकच्छ-	१११		
५२६	प्राणा दशास्य सन्तीति	५८४		
४४८	प्राणायामेऽतितीन्ने स्यात्	४८१		
४०५	प्राणायामो भवेद् योगे	४६८		
४८८	प्राणिना रोदनाद् रुद्र	४७८		
८७७	प्राणिना सुखमल्पीयो	१७३		
१०७	प्राणैरातस्तिदेत्यादि-	४०२		
४६८	प्रातिहार्यमयी भूति	१६४		
२८०	प्रातिहार्याण्यहार्याणि	५७८		
६०६	प्रातिहार्याष्टकोपेतम्	५६४		
३६०	प्रादु प्यद्वाङ्मयूखै	५७१		
२५	प्रादुरासन्नभोभागे	२६३		
८६३	प्राप्त्यप्राप्त्योर्मनोज्ञेत-	४७८		
८४	प्राप्य सूचानुगा हृद्या	२०२		
५८०	प्राय प्राणेषु निर्विण्णो	३६६		
४६१	प्रायश्चित्त तपस्तप्तिन्	४६३		
३८३	प्रायश्चित्तादिभेदेन	४०३		
१७	प्रायेण राज्यमासाद्य	८७		
२८५	प्रायेणास्माज्जनस्थानाद्	२३६		
२५	प्रायेणोपगमो यस्मिन्	२३५		
१५८	प्रायोपगमन कृत्वा	११४		
८५०	प्रारम्भे चापवर्गे च	४२०		
१५६	प्रार्थयेऽह तथाप्येतत्	१५५		
१६५	प्रानादान्ते स्म राजन्ने	५३२		
			फ	
			फणीकृतफणो रोषात्	१६५
			फणीन्द्रभवन भूमिम्	२६०
			फल ध्यानवरस्यास्य	४६०
			फल यथोक्तबीजानि	४६६
			फलमस्य भवेद् घाति-	४६४
			फलान्याभरणान्येषाम्	५३१
			फलप्यति विपाके ते	१३१
			फलेग्रहीनिमान् दृष्ट्वा	४०२
			फलैरप्यनल्पैस्ततामोदहृद्यै	५५६
			फलैरलङ्कृता दीप्रा	५२६
			फाल्गुने मासि तामिस्र-	४७२
			व	
			वद्धकक्षस्तपोराज्ये	३८०
			वद्धो मुक्तस्तथा बन्धो	४१
			वद्ध्वायुर्नारक जात	१८३
			बन्ध प्रत्येकता विभ्रदा-	६७
			बन्धवो गुरवश्चेति	२०५
			बन्धवो बन्धनान्येते	८५
			बन्धवो मानिता सर्वे	१६१
			बभारोरुद्वय धीर	३२७
			बभासे वनमाशोकम्	५२४
			बभुर्नीलमणिश्मास्था	५२६
			बभुस्ता मणिसोपाना.	५१७
			बभौ पय कणाकीर्ण-	३४२

वभौ फणिकुमाराभ्याम्	४११	भ	भवा परिषदीत्यासन्	५०८	
वभौ राजीवमारक्तम्	४०५	भगण प्रगणीभूतकिरणम्	२६८	भवायुष्कायकर्मादि	४६
वभो सुकोशला भावि	२५७	भगवच्चरणन्यास-	६३४	भवेत् फलकहाराख्यो	३५२
वर्हिध्वजेपु वर्हलिम्	५२८	भगवच्चरणोपान्ते	४५२	भवेदपि भवेदेतत्	३८५
वलव्यसनरक्षार्थम्	४६८	भगवति जितमोहे	४७२	भवेद् द्रोणमुख नाम्ना	३६१
वहि स्फुरत् किमप्यन्त	४०६	भगवत्परिनिष्क्रान्ति-	३८०	भवेद् रत्नपुरञ्चान्त्यम्	४२६
वहिरन्तर्मलापायात्	३६२	भगवत्पादसस्पर्श-	४५५	भवेयुर्गिरयो रुद्रा	५२८
वहुकेतुकमेतच्च	४२२	भगवन्तमनुव्रज्य	४५५	भवेष्वातति सातत्यात्	५८४
वहुनात्र किमुक्तेन मुक्त-	३८८	भगवन्तौ युवा क्वत्यौ	१६८	भव्यसार्थाधिपप्रोद्यद्	६३०
वहुनात्र किमुक्तेन श्लाघ्या	२८०	भगवन्तौ युवा ब्रूत	१११	भव्याभव्यौ तथा मुक्त	५८६
वहुभि खेचरै सार्द्ध	१४१	भगवन्नर्थत कृत्स्न	२६	भस्त्राग्निदीपितान् केचित्	२१२
वहुमुत्थरजस्का च	४२३	भगवन् बोद्धुमिच्छामि	५८१	भानु ह्येपि श्रीमद्धैमम्	५४२
वहुविधवनलतिकाकान्तम्	५५१	भगवन् भव्यसस्याना	६३०	भान्ति पुष्पस्रजो यत्र	२३७
वहुशो भग्नमानोऽपि	३३३	भगवन् भव्यसार्थस्य	३३	भावनाभिरसम्मूढो	४८४
वह्माननो बहुरदो	५०६	भगवन् भारते वर्षे	२४६	भावनासंस्कृतान्येवम्	४६०
वालोऽयमवले चावा	१७५	भगवन्मुखबालार्क-	४५०	भावमात्राभिधित्साया	४७५
वालार्कसमनिर्भासा	१६६	भगवन्मुखसम्प्रेक्षा-	४५१	भावलेख्या तु कापोती	२१६
वालावस्थामतीतस्य	३२०	भगवन् योगशास्त्रस्य	४६८	भिदेलिमदले शश्वत्	१५३
वाल्यात्प्रभृति सर्वासा	२१८	भगवन् श्रोतुकामोऽस्मि	२४	भुक्त्वापि सुचिरान् भोगान्	१०४
वाहुदण्डेऽस्य भूलोक-	३४२	भगवानथ सज्जात-	४५६	भुक्त्वामरी श्रिय तत्र	१४५
वाहुल्यापेक्षया तस्माद्	४८२	भगवानयमद्य श्व	४०१	भुजयो शोभया दीप्र-	३८४
वाहुशाखोज्ज्वल श्रीमत्त-	११६	भगवानादिकर्तास्मान्	४४६	भुञ्जिष्या सर्वकर्मिणा	१७७
वाहू केयूरसघट्ट-	३२६	भगवानिति निश्चिन्वन्	४४५	भुवनस्योपकाराय	३७८
वाहू तस्य महावाहो	३४७	भगवास्त्यक्तरागादि-	४०८	भूतवादमथालम्ब्य	६३
वाह्यञ्च लिङ्गमार्तस्य	४७८	भजन्त्येकाकिनो नित्य	७८	भूतवादिन् मृषा वक्ति	६६
वाह्यञ्च लिङ्गमङ्गानाम्	४६२	भट्टाकलङ्कश्रीपाल-	११	भूतेषूद्भवहर्षेषु	३८२
वाह्यन्तु लिङ्गमस्याहु	४८०	भट्टारकवरीभृष्टि	३६५	भूम्युष्मणा च सन्तप्ता	२११
वाह्याभ्यन्तरभेदेषु	४६०	भद्रकास्तदिमे भोग्या	६३	भूयोऽपि भगवानुच्चै	३६०
वाह्योर्गुञ्च केयूर-	३०५	भरतपतिमथाविर्भूत-	५६२	भूयोऽप्यचिन्तयद् धीमान्	८४
विभ्रच्छ्रेणीद्वितयविभागे	४३८	भरतस्य गुरोश्चापि	४०६	भूयोऽप्रमत्तता प्राप्य	४६६
वीजान्येतान्यजानानो	५००	भरतस्यानुजा ब्राह्मी	५६१	भूयो भुक्तेषु भोगेषु	१४२
बुद्धिमद्वेतुसान्निध्ये	७१	भरतादिषु वर्षेषु	६८	भृत्याचारोऽयमस्माभि	४००
बुद्ध्यावधिमय चक्षु	१६६	भरताद् विभ्यता तेषा	४०२	भेजे वर्षसहस्रेण	११८
बुभुन्मावेदन प्रश्न	३१	भरतायार्थशास्त्रञ्च	३५७	भेदग्रहणमाकार	५८३
बृहद् बृहस्पतिर्वाग्मी	६२२	भरतो वा गुरु त्यक्त्वा	४००	भो केतकादिवर्णेन	२७७
बोधयन्ति वलादस्मान्	२१४	भर्ता नमिर्भवतु सम्प्रति	४४२	भोग काम्यन् त्रिसृष्टासु	११२
ब्रह्मचर्यमथारम्भ-	२२२	भवता किन्तु दृष्टोऽसौ	१४४	भोगाङ्गोनापि धूपेन	१६२
ब्रह्मनिष्ठ पर ब्रह्म	६१२	भवद्दानानुमोदेन	१८७	भोगाङ्गैरपि जन्तूना	१६२
ब्रह्मलोकादथागत्य	२१८	भवद्भविष्यद्भूतञ्च	५६०	भोगान् वो गाढुमीहन्ते	१७३
ब्रह्मलोकानया सौम्या	३७७	भवन्तमित्यभिष्टुत्य नान्य-	३०६	भोगान् षड्भुजानित्य	१६१
ब्रह्मोद्या निश्चिला विद्या	३५	भवन्तमित्यभिष्टुत्य विष्ट-	५८१	भोगेषु सतृषावेती	४०५
ब्रुवन्तोऽयम् मुखान्भोज-	२२	भवन्तु सुखिन सर्वे	२०४	भोगैरनागतैरेव	१७१
ब्रुवन्तोर्भर्तुराज्ञेति	३८८	भवन्त्येतानि लिङ्गानि	४६१	भोगैरिन्द्रैर्न यस्तृप्त	१४२

१६४	मदनननन्मृद्वे	४७२	मनोहरातद्रमयो	१४०
१६०	मदननविग्नैर्भृङ्गौ	५४३	मनोहरा मयि स्नेहात्	१४०
३१२	मदनज्वग्नमन्त	२४१	मनो याति दिव तस्मिन्	५२
१११	मदनद्रुममञ्जरी	६१	मन्त्रविन्मन्त्रकृन्मन्त्री	६१२
५१८	मदनाग्नेरिवोद्बोव-	३४२	मन्त्रशक्त्या प्रतिध्वस्त-	८६
७३१	मदनिर्भग्नमिन्न-	५१०	मन्त्रशक्त्या यथा पूर्वं	११६
८३	मदन्य करण मय	१६३	मन्त्रिणश्च तदामात्य-	६१
३७५	मद्यतूर्यविभूषात्रग्-	४६	मन्त्रिमुख्यमहामात्य-	१५६
३८१	मद्याद्रा मधुमैरेय-	१६३	मन्थर व्रजति काननमध्यात्	४३६
३८६	मदन्य करण मय	१६३	मन्दगन्धवहाधूत-	४६
५७५	मद्यतूर्यविभूषात्रग्-	४६	मन्दगन्धवहाधूता-	७५
३१५	मद्याद्रा मधुमैरेय-	१६३	मनमाधूतमन्दार-	१२७
	मद्यातोयविभूषात्रग्-	१६३	मन्दरस्थविरस्यान्ते	१४२
	मद्यपानादिव क्रुद्धा	१८१	मन्दारमालयोत्तसम्	३०४
५६६	मधुव्रतो मदामोदम्	२८५	मन्द्रदुन्दुभिनिर्घोषै	१८२
६३०	मयी मधुमदाग्न-	१६०	मन्द्रध्वानैर्मृदङ्गानाम्	५२२
२०३	मध्य स्तनभरात्रान्ति-	१२५	मन्वानो दूरभावेन	१७५
२३०	मध्यमध्यान्य लोहस्य	७३	मया तत्र विचित्रस्य	१४७
२८८	मध्यमस्य जगन्मध्य-	२१६	मया सुनिपुण चित्ते	१२६
३७५	मध्येगायमनी नाभिम्	३२६	मयि सत्या मनस्तापो	१३४
२१८	मध्ये गन्धकुटीरद्वि	५७४	मरकतहरितै पत्रै	५४३
३८२	मध्ये गात्रमसी दध्ने	३४७	मरीचिवर्ज्या सर्वऽपि	५६२
१५६	मध्ये जनपद रेजु	३६०	मरीचिश्च गुरोर्नप्ता	४०३
२६१	मध्येयवनिक स्थित्वा	३६०	मरुत्कुमारसम्मूढ-	६३२
१५७	गायेरग्नमसा रेजे	३१४	मरुत्प्रहतगम्भीर-	६३०
३६४	मध्येनममयोत्थाय	२२	मरुत्सुरोऽभूच्चिरजीव-	६७
३८३	भन प्रनादमभितो	३८	मरुदेव्या सम नाभि-	३८८
४८७	मरगिजशत्रुमज्ज्यमलदयम्	५५८	मरुदेवोऽभवत्कान्त	५७
४३६	मरनीत्याफलव्यानी	१२६	मर्यादाविक्रियाहेतो-	७
१८६	मनोऽतथासकायानाम्	४६५	मल्लविक्रिया काश्चित्	३२३
२५१	मनोऽग्नितोऽर्जुन-	११५	महता सथयान्नून	३६१
११६	मनोऽग्नितोऽर्जुनि	४५६	महत्पुण्यमहो भर्तु	३८५
११६	मनोऽग्नितोऽर्जुनि	२८१	महत्सुस्मिन् पुराणाव्वी	६
१६२	मनोऽग्नितोऽर्जुनि	११७	महत्या शब्दविद्याया	८०
११८	मनाभिर् वि त्रये	२८०	महद्भिरचलोदग्रै.	४११
२८६	मनाभिर् मनोऽग्नितो	३५८	महाकरमिवोद्भूत-	५६४
३८८	मनोऽग्नितोऽर्जुनि	८६	महाकरीन्द्रममर्द-	६
४८८	मनाभिर् वि त्रये	८६१	महाकलकनैर्गति	३०६
५८८	मनाभिर् वि त्रये	३८०	महाकाग्निको मन्ता	६१८
६८८	मनाभिर् वि त्रये	२५६	महाकनैर्गति	६१६
७८८	मनाभिर् वि त्रये	१८०	महाकनैर्गति	११२
८८८	मनाभिर् वि त्रये	१८०	महाकनैर्गति	४०६
९८८	मनाभिर् वि त्रये	२८३	महाकनैर्गति	६१७

महापुराणम्

६	महामत्त्वेन तेनासौ	२८०	मुकुट कुण्डल हारो	४८
३८८	महितोदयस्य शिवमार्गदेशिन	५६१	मुकुटोद्भासिनो मेरु	१२३
३९	महीगमनत कृत्स्नाम्	३३३	मुकुटोद्भासिर्द्धासी	५६
२३५	महीतलाद् दशोत्पत्य	४१४	मुक्तात्मनोऽपि चैतन्य-	५०२
६१५	महीधरे निज राज्य-	१४१	मुक्तादामानि लम्बानि	१५७
६१६	महीभूतामधीशत्वात्	१०८	मुक्तामयानि दामानि	२३७
६१८	मही समतला रेजे	६३३	मुतालम्बनविभाजि-	५६६
१०६	महेन्द्रान्यपुरञ्चनैव	४२६	मुतालम्बनसशोभि-	५०७
२६१	महोदयमुदगाग्रम्	४०६	मुक्तावुत्तिष्ठमानस्त्व	३६३
१८१	महोदयो महोत्तुङ्ग-	८२	मुक्ताहाररुचि सोष्मा-	२७२
७१	महोर्ग स्थलमस्याभात्	२१६	मुक्ताहारेण तन्नून	३३२
६०१	मा वित्त किङ्कर भर्तु	४१०	मुत्तेतरात्मनो जीवो	५८२
३२६	मागधाद्याश्च वन्येन्द्रा	३६६	मुख सुरभिनिश्वास	२१६
२८२	मागमस्त्वमनाश्वास	१५२	मुरातोऽध्यापयन् शास्त्र	३६८
५१	मातुलान्यास्तत्रायान्त्या	१४७	मुखपट्टकजससप्त-	१२६
५००	माध्यम्यलक्षण ग्राहु	५८५	मुखपट्टकजससप्तद्	१२६
५०५	माननीया मुनीन्द्राणाम्	३००	मुखप्राङ्गणपुणोपहार-	३४१
२०८	मानमोऽस्य प्रतीचारो	२२५	मुखमस्य तसद्दन्त-	८८
१६	मानस्तम्भा सगमि प्रविमन-	५७०	मुखमस्य लसन्नेत्र-	२२३
८	मानस्तम्भान् महामानान्	५१६	मुखमस्य सुगालोकम्	३४१
६००	मानोन्मानप्रमाणानाम्	३२७	मुखमस्या मरोजाध्या	२५३
३०८	माभद् व्याकुलता लक्षित्	३८८	मुखमस्या दधे चन्द्र-	१२६
२०५	मामी च सन्निभान मे	१७६	मुखमापाण्डु गण्डान्तम्	३३७
२०८	मामुदाकुले भक्ति-	५६५	मुखेन्दुना जित नूनम्	२७०
१८६	मायानिद्रामपाकुन्य	३११	मुखेन्दुमण्डलाददेव	५६६
८१	मार्ग प्रकाशयामास	२३३	मुखेन्दुमस्या सोऽपश्यत्	१६७
६०६	मार्गप्रबोधनार्थञ्च	४४५	मुखेन्दुरेनयो कान्तिम्	३३२
६	मार्गा मार्गफलञ्चेति	४१	मुखेन्दो या द्युतिस्तस्य	३२५
६१६	मार्गणमण्डलाच्छाया	५४०	मुखेन्द्रिहृभिगकीर्णा	२१०
२६२	मार्दङ्गिस्तत्रगम्फाणादिव	६१	मुखोन्मुख विभोर्दत्त	४०१
११८	माता न भद्रा तस्य	१००	मुख्यरूपेण ज्ञानोऽस्ति	४६
८३	मानमाताप्रतिष्ठ च	११३	मुख्यस्मिन्ममभद्रस्य	३००
२८०	माता पिता न ना यान्	३६८	मुदे तवाम्भ भयाम्	३३४
२१८	माते मातृशक्ति पश्य	२४०	मरेऽस्य तमुवाच न	२७६
४८	मा स्म न्नाटि मे	५१५	मनस्य पश्य कृत्याणि	१३२
१४८	मातृशक्तिपञ्चमार्गः	१००	मनसो बान्धवता	३५
१४	माता पिता तस्य	४००	मनिर्दमवर्ग प्राप्यन्	१८२
१४	माता पिता तस्य	४००	माता पिता तस्य	४००

मेरुमृद्गममनुद्गा-	६३१	यत्र कुक्कुटसम्पात्या	७५
मेरुमन्दरानाद् देवो	४४८	यत्र कूपतटाकाद्या	७६
मेरो मृद्गो ममजनि	५६०	यत्र क्रीडाद्रयो रम्या	५१८
मेत्रीप्रनोदनाल्पम्	४५१	यत्र गन्धवहाधूतै.	१६५
मोक्षाधिरोहनि श्रेणी	६३०	यत्र तृण्या महीपृष्ठ	१६४
मोहपट्टके महत्यस्मिन्	३७८	यत्र दीर्घायुषा नृणा	१६६
मोहान्धतमसध्वम-	४५६	यत्र नातपसवाधा	१६५
मोहान्धतमसध्वमे	३६४	यत्र पुण्ड्रेक्षुवाटेपु	७५
मोहारिमन्दनालग्न-	६००	यत्र भङ्गास्तरङ्गोपु	७५
मोहारिविजयोद्योग	३७७	यत्र मत्तखवद्भृङ्गा-	५३५
मोहारिविजयोद्योग-	३८२	यत्र मन्दानिलोद्भूत-	५१८
मीनी ध्यानी मनिर्मानो	४६६	यत्र मर्त्या न सन्त्यज्ञा	८१
		यत्र वज्रमयास्थीनि	३२७
य		यत्र शालिवनोपान्ते	७४
य पाण्डुकवनोद्देशे	२८६	यत्र शृङ्गाग्रसलग्न-	७७
य. पूर्वापरकोटिभ्या	७६	यत्र सत्पात्रदानेपु	७४
य नवंजमनाम्भोधि-	१६	यत्र सौवाग्रसलग्नै	३१०
य साम्राज्यमध म्यायि-	६	यत्राकृतिगुणास्तत्र	३४४
य सुदूरोच्छ्रितै कूटै	१३४	यत्राधूय तरुन् मन्दम्	१६५
य एकशीर्षक शुद्ध-	३५२	यत्रामोदितदिग्भागै	१६५
यक्षैरदक्षिप्यत चामराली	५४६	यत्रारामा सदा रम्या	७४
यच्च नाट्ये पय स्वच्छ	३६४	यत्रोत्पन्नवता दिव्यम्	१६५
यच्चाम्भ सम्भूत क्षीर-	३६५	यत्रोत्पन्नवतामर्था	२३७
यज्वाज्यज्ज त्वमिज्या च	५७७	यत्रोद्यानेपु पाय्यन्ते	८१
यतश्च तद्विपाकज	४६०	यत्पोडशाक्षर व्रीजम्	४६६
यतो गुणधना. मन्तो	१४	यत्सम्यक्परिणामेपु	४६८
यतो गुरुनिदेशेन	२०५	यथाकालमुपायाच्च	४६०
यतो जीवत्यजीवीच्च	५८४	यथा कुलालचक्रस्य	४५
यतो दूरात्ममामन-	१२८	यथा कुलालचक्रस्य	५८७
यतोऽभ्युदयनि श्रेय-	१८	यथा कुसुमित चूत-	१५२
यतोऽभ्युदयनि श्रेयसा-	६२	यथाज्ज्ञान तवेवाभूत्	५७६
यतो यत पद धत्ते	४४६	यथान्धतमसच्छन्नान्	२०५
यता विज ह्ये भगवान्	६३४	यथा पित्तोदयाद् भ्रान्त-	२००
यत्कर्मजपणे साध्ये	६७४	यथा मत्स्यस्य गमन	५८७
यत्किञ्चिद् गच्छि तुभ्य	१५४	यथा महाध्वरत्नाना	४१
यत्प्रतिगमनमन्त्रे	८०	यथाज्जी रतिमासाद्य	२४३
यत्प्रतिगमनमन्त्रे	३१०	यथा यथान्व वर्द्धन्ते	३२१
यत्प्रतिगमनमन्त्रे	२६	यथा यथोत्तरा शुद्धि	४६८
यत्प्रतिगमनमन्त्रे	३२	यथा रतिगभूत् स्वर्गो	१२१
यत्प्रतिगमनमन्त्रे	५४०	यथाकर्म्य समुद्भूता	३३०
यत्प्रतिगमनमन्त्रे	७५	यथावमग्नन्प्राप्ति-	५०
यत्प्रतिगमनमन्त्रे	१६०	यथा विद्याफनान्वेषा	४२१
यत्प्रतिगमनमन्त्रे	१६३	यथाविधि तपन्पञ्चा	१४०

६७३	रत्नपटलमात्र-	३०१	रसास्त एव ते भावा-	३१८
५६७	रत्नदानम्विधमि	५२५	रसोपविद्ध सन् धातु	२०५
३१२	रत्नपुष्पमनाली	१२५	रागादिचित्तकालुष्य-	५७६
३०६	रत्नचित्रमहद्वेग-	४२३	रागाद्यविद्याजयनान्	४८७
१६८	रत्नकुण्डलयुग्मेन	३४६	रागाद्यशेषदोषाणा	५०४
२३	रत्नकुण्डलयुग्मेन	३४२	राजगेहादिविस्तारम्	४२५
१८७	रत्नगर्भा धरा ज्ञाना	२५८	राजतानि वभुस्तस्या	५२७
६२६	रत्नगर्भे सा भूमि	३३७	राजधानीयमेतस्या	४२३
१७४	रत्नचूर्णचयन्यस्त-	३६४	राजलक्ष्म्या पर गर्व-	८७
१७८	रत्नतोरणविन्यासा	३३८	राजविद्याश्चतस्रोऽपि	८४
१७७	रत्नत्रयमयी जैन-	६	राजवेशमाङ्गणो सान्द्र-	१५८
१७८	रत्नत्रयमयी शय्याम्	२३५	राजा सविस्मयो भूयो	१८५
१७८	रत्नत्रितयवत्वार्य-	२००	राजीवमलिभिर्जुष्टम्	२७०
१७८	रत्नपानुपु चिकीड	३२०	राज्ञा च घातितो मृत्वा	१८७
१७७	रत्नवृष्टिग्यापपत्तद्	४५४	राज्ञीनामधिरोहाय	१७७
१७७	रत्नशकं ग्वालुक्या	२१०	राज्य निष्कण्टकीकृत्य	२३१
१७८	रत्नागुभि क्वचिद् व्याप्तम्	२६५	राज्यञ्च सम्पदो भोगा	६२
१७७	रत्नागुभिर्जटिलितै	२३७	राज्यभोगात् कथ नाम	३१३
१७७	रत्नाना राशिमुत्तर्पदशु-	२६०	राज्यलक्ष्मीपरिष्वङ्गाद्	२३१
२१०	रत्नाभरणभाभार-	५२०	राज्यलक्ष्मीसम्भोग्याम्	३६३
७	रत्नाभरणमानानि	५४१	राज्यलक्ष्म्या परिमलानिम्	३६४
६०६	रत्नालोकं दृष्टपरभागे	४३६	राज्यश्रिया विरक्तोऽसि	३६४
६६६	रत्नालोकैर्विमर्षद्वि	५४१	राज्यान्ते केशवेऽतीते	१४५
५७१	रत्नै कीर्णा प्रसूनैश्च	२५८	रामाभिरमिरामाभि	११८
६७७	रत्नैर्गर्भैः सचित पण्थै	५४५	रुचिमेप्यति मद्धर्म	११३
५७७	रत्नैर्गर्भैः सचित तन्व	१५७	रुच्याहारगृहातोद्य-	४८
६१६	रत्नोपनेरगहिता	४२४	रुच्याहारगृहातोद्य	४८
५४१	रत्नपुष्पपूर्व च	६२३	रुजा यन्नोपघाताय	२४२
८०	रत्नाभमिधुनैरद्य प्रार्थ्यते	२६१	रुजाहरमिवासाद्य	४५६
२८६	रत्नाभमिधु नमार-	१०५	रुचि मूर्ध्नि मालास्य	३२५
७८	रत्नाना वाग्गुणा च	१७८	रुचिऽसौ महान् साल	५१६
५३५	रत्नादद्रेग्यमज्जर	४६०	रुपन्त्यकारण ये च	२१०
७६	रत्नगीयमिद मत्वा	३७६	रुपप्रभावविज्ञानं	२५५
७७	रत्नगीया धनोद्देशा	६२१	रुपमारोग्यमैश्वर्यं	१७१
७८१	रत्नाभ्यन्मनिभावम्	८८	रुपयावनसौभाग्यम्	३७४
८५	रत्नं न भूजानमहेनितम्	५५१	रुपलावण्यसम्पत्त्या	२५५
२०५	रत्ना पुण्यरत्नाम-	६२१	रुपसम्पदमित्युच्चै.	३४४
२०८	रत्नात् नित्यम् हिता	१७६	रुपसम्पदमुप्युपा	१२३
	रत्नात् नित्यम् हिता	५६२	रुपमवत्स्वहरण कृत्वा	२५०
	रत्ना दीप्तिरिति ज्ञानि	३४१	रुपानुरूपमेवान्य	३४४
	रत्नात् तत्त धीम्	६८१	रुप्यते यत्नमामन्दम्	२६१
	रत्नात् तत्त धीम्	६८१	रुचिकेऽन्य चयन्मालि-	३१६
	रत्नात् तत्त धीम्	१२३	रुचि प्रचलिता सेना	५७४

रेजे मणिमय दाम-	३०५	ललाटमस्य विस्तीर्ण-	८७	वशै सदष्टमालोक्य	२६८
रेजे राजीवराजी सा	६३४	ललाटादितटे तस्य	२२८	वक्तृणा तत्प्रयोक्तृत्वे	३१३
रेजेऽशोकतरुसौ	५४४	ललाटेनाष्टमीचन्द्र-	२५४	वक्ष श्रीगेहपर्यन्ते	३२६
रेजे सहैमकक्ष्योऽसौ	५११	ललित ललिताङ्गस्य	११६	वक्ष स्थलस्य पर्यन्ते	२२६
रेजे हिरण्यमयी वृष्टि	२५७	ललिततरमथास्या वक्त्र-	२८१	वक्ष स्थलेन पृथुना	१२२
रेमे रामाननेन्दुद्युति-	२२६	ललितपदविहारैर्भूविकारै	२२६	वक्ष स्थले पृथौ रम्ये	२२३
रैधारा ते द्युसमवतारेऽप्यन्त	५६०	ललिताङ्ग ब्रवीति त्वा	१५१	वक्षसा हारयाष्टि तौ	१५८
रैधारैरावतकरदीर्घा रेजे	५६०	ललिताङ्गच्युतौ तस्मात्	१३३	वक्षसि प्रणय लक्ष्मी	२३०
रैधारैरावतस्थूल-	२५७	ललिताङ्गवपु सौम्य	१३३	वक्षस्सरसि रम्येऽस्य	३२६
रोमराजी विनीला सा	२५२	ललिताङ्गश्च्युत स्वर्गात्	१४३	वक्षोऽस्य पद्मरागाशु-	२२६
		ललिताङ्गस्ततश्च्युत्वा	१४१	वक्षोभवनपर्यन्ते	२२६
ल		ललितास्ततोऽसौ मा	१४०	वक्षोलक्ष्म्या परिष्वक्तम्	२४६
लक्षणा च ध्रुवं किञ्चित्	३२८	ललिताङ्गस्य तत्रास	१३२	वज्रकाया महासत्त्वा	४८२
लक्षणानि बभुर्भर्तु	३२८	ललितोद्भटनेपथ्यो	३१४	वज्रचञ्चुपुटैर्गृध्रा	२११
लक्षणान्येवमादीनि	३२८	लवणाम्भोधिवेलाम्भो	१०६	वज्रजङ्घकरस्पर्शात्	१६०
लक्ष्मी परा विनिर्माय	१२६	लसत्कपोलसक्रान्तौ	३५४	वज्रजङ्घभवे यासौ	३२१
लक्ष्मी परामाप परापतन्ती	५४६	लसत्सुधाराशिविनिर्मलानि	५४७	वज्रजङ्घे भवे यास्य	३४६
लक्ष्मीकराग्रससक्त-	१५०	लसदशुकसवीत-	२२३	वज्रजङ्घसमासङ्गात्	१६०
लक्ष्मीमति स्वय लक्ष्मी-	१५६	लसदशुकससक्त	२५२	वज्रजङ्घस्ततो राज्य-	१७२
लक्ष्मीपतिमथोवाच	१२८	लसद्दन्ताशु तस्याय	८२	वज्रजङ्घानुजा कन्याम्	१७०
लक्ष्मीरिवार्थिना प्रार्थ्या	१५१	लसद्दशनदीप्ताशु	३८	वज्रदन्ता ह्वये सूनौ	२३२
लक्ष्मीरिवास्य कान्ताङ्गी	१२४	लसद्दुकूलपुलिन	२२६	वज्रनाभिनृपोऽमात्यै	२३१
लक्ष्मीर्निकामकठिने	३२८	लसद्दुकूलवसनै	४१६	वज्रनाभिरथापूर्णा-	२२८
लक्ष्मीवास्त्रिदशाध्यक्षो	६२३	लसद्बाहुर्महोदग्र-	३१६	वज्रनाभेर्जयागारे	२३१
लक्ष्मीवानभिषेकपूर्वकमसौ	१६६	लसद्बिन्दुभिराभान्ति	२७३	वज्रबाहु पतिस्तस्य	१२२
लक्ष्मीवान् कुजो दक्ष	१५३	लसद्वसनमामुक्तरशन	३५०	वज्रबाहुमहाराजो	१७०
लक्ष्मीसमालिङ्गितवक्षसोऽस्य	५४७	लावण्यदेवता यष्टु-	३५३	वज्रमूलवद्धरत्नबुध्नम्	५४४
लक्ष्मीसर्वस्वमुज्झित्वा	१६३	लावण्यरसनिष्यन्द-	३४३	वज्रशारास्थिरे जङ्घे	८८
लक्ष्म्या पुञ्ज इवोद्भूतो	३०५	लोक कालावतार च	२४	वज्रसहनन कायम्	४८३
लक्ष्म्याविमे जगन्नाथ-	३५४	लोकनाडीगत योग्य	२४०	वज्रसारौ दधावूरु	५६
लक्ष्यते निषधोत्सङ्गो	२६२	लोकपालास्तु लोकान्त-	५०८	वज्रस्तम्भस्थिराङ्गाय	३०६
लता इव परिम्लान-	३८७	लोकवित्त्व कवित्व च	११	वज्रागत च वज्राढ्यम्	४२३
लतागृहान्तराबद्ध-	४१२	लोकाख्यान यथोद्देश-	६८	वज्राङ्गबन्धनस्यास्य	२२६
लताङ्गञ्च लता ह्वञ्च	६६	लोकाधिक दधद्धाम-	३०७	वज्रास्थिबन्धना सौम्या	४८
लताङ्गि ललिताङ्गस्य	१५३	लोकोत्तरो लोकपति	६२८	वटवृक्ष पुरोऽय ते	२७२
लताभवनमध्यस्था	५१६	लोको देश पुर राज्य	६८	वत्सल प्राणिनामेक	७१
लताभवनविश्रान्त-	४१२	लोकोद्देशनिष्कृत्यादि-	६८	वदैतेषा फल देव-	२६३
लतेवासौ मृदू बाहू	१२५	लोको ह्यकृत्रिमो ज्ञेयो	६६	वधकान् पोषयित्वान्य-	२१०
लब्ध तेनैव सज्जन्म-	२०१	लोक्यन्तेऽस्मिन् निरीक्ष्यन्ते	६६	वधबन्धाभिसन्धानम्	४७६
लब्धसद्दर्शनो जीवो	२०१	लोहार्गलमिद लोहै	४२२	वनक्रीडाविनोदेऽस्य	३२३
लब्धावसरमिद्वार्थ	२४			वनद्रुमा षट्पदचौरवृन्दै	४३५
ललाटपट्टे विस्तीर्णै	३२५	व		वनप्रदेशाद् भगवान्	४४६
ललाटमष्टमीचन्द्रचारु-	३४७	वशाल पुष्पचूडश्च	४२६	वनलक्ष्मीरिव व्यक्त-	४१७

श्लोकानामकाराद्यनुक्रमः

विश्वसितसरसिजदलनिभनय-	५६५
विकस्वर समालोक्य	३६२
विकासि कुटजच्छन्ना	१६१
विकृष्ट कुतपन्यासो	३१३
विक्षिप्ता बाहुविक्षेपै	३१६
विक्षिप्यन्ते स्म पुण्यार्था	२६२
विचरत्त्वचरी चारु	४१२
विचारनृपलोकात्म-	३२
विचित्ररत्ननिर्माणै	५२०
विचिन्त्येति चला लक्ष्मी	१७१
विच्छाद्यता गते चन्द्रविम्बे	२६१
विजयच्छन्दहारेण	३४७
विजयोऽनन्तवीर्योऽभूत्	३४६
विजयो बुद्धिमान्	४३
विजहार मही कृत्स्ना	१०६
विजहुर्निजनीडानि	१८०
विजितकमलदलविलसदसदृश-	५६६
विज्ञप्तिमात्रवादे च	५०१
विज्ञप्तिमात्रससिद्धिर्न-	६६
विज्ञप्तिविषयाकार-	१००
विज्ञप्त्या परसवित्ते	१००
विज्ञाप्यमन्यदप्यस्ति	३१
विज्ञान स्यात् क्रमज्ञत्वम्	४५२
विज्ञानव्यतिरिक्तस्य	६६
वितर्कमिति तन्वानो	२६७
वितस्त्यन्तरपादाग्र-	३६७
वितीर्णराज्यभारस्य	३८१
वितीर्णनामुना भूयात्	३८६
विदा कुरु कुरुष्वार्य	१६६
विदिताखिलवेद्यानाम्	४०६
विदुष्विणीषु ससत्सु	१०
विद्वरलद्रुधिनो वीर-	४१२
विद्धि तद्भावि पुण्यद्धि	११३
विद्धि ध्यानचतुष्कस्य	१०७
विद्धि पङ्कधेकमह्याञ्च	१३२
विद्या कामदुधा धेनु-	३५५
विद्याधराधिवानोऽय	४१६
विद्याधरा वनन्त्येषु	४२२
विद्याधरा विभान्त्यस्मिन्	४१६
विद्याधरेन्द्रभोगेषु	१८२
विद्याधरै नदागध्या	७८
विद्या वन्द्यश्च मित्रञ्च	३५५
विद्या यमन्करी पुना	३५५
वनिभ दक्षिणावने-	१२५
वन्नी कुर्मिता वन	५१६
वन्तूरीकृत्य गोप्यन्ते	७१३
ववाववातनान् कुर्वन्	६०
वव नृन्मयो वाना	६३३
वव नृन्मनोवृष्टिम्	६३२
वग यथा न्युगधाणि	८८५
वर्ज्येन्द्रियो विमुक्तात्मा	६२३
वगतोऽन्य जनाकोशे	४८२
वमुधारा दिवो देवा	१८०
वमुग्राणिभेनारात्	२७६
वमुधा गजते तन्वि-	२७८
वमुन्धरा महादेवी	१५६
वमुमन्क वमुमती	४२६
वस्तुधर्मानुयायित्वात्	४६१
वस्तुवाहनकोटीश्च	८८६
वस्तुवाहनमवन्व	१५६
वन्त्राभरणमाल्यानि	३६१
वस्त्यो रिञ्चिदुद्भूत-	३५३
वद्विरेवेन्धने मिन्धो	२४४
वागर्थग्लसम्पूर्णम्	८६३
वाग्मुनेस्त्यक्तुतां हानि-	३७
वाग्निज्ञान समस्तीद	१००
वाटमय मरुल तन्व	३२१
वाटमनानामरोपाणा	३८
वाचनापृच्छने सानु-	४८४
वाचात्तिदपन वाच	१३२
वाचिर्न च मवाद	१०६
वाञ्छन्त्यो जीविता देव	३५८
वागवागमाने मेर	३२८
वागिष्य वागिवा यम	३६२
वागिष्यनिगानडा	७३
वातोद्भवा क्षीण्यपोधेरिव	५६१
वातव्याधि चये	२३३
वापन्ता रेजिरे पुन-	५१६
वाप्या रज्ज्वटा प्रमदमजिता	५६६
वानोरवाय ता रुडि	२५१
वाप्यता पुनश्चरुष	१५८
वाप्यता यथा दिव्या	२६१
वाप्यता यथा दिव्य	१६२
वाप्यता यथा दिव्य	१६३
वाप्यता यथा दिव्य	१६४
वाप्यता यथा दिव्य	१६५
वाप्यता यथा दिव्य	१६६
वाप्यता यथा दिव्य	१६७
वाप्यता यथा दिव्य	१६८
वाप्यता यथा दिव्य	१६९
वाप्यता यथा दिव्य	१७०
वाप्यता यथा दिव्य	१७१
वाप्यता यथा दिव्य	१७२
वाप्यता यथा दिव्य	१७३
वाप्यता यथा दिव्य	१७४
वाप्यता यथा दिव्य	१७५
वाप्यता यथा दिव्य	१७६
वाप्यता यथा दिव्य	१७७
वाप्यता यथा दिव्य	१७८
वाप्यता यथा दिव्य	१७९
वाप्यता यथा दिव्य	१८०

विद्यावान् पुरुषो लोके	३५५	विभोर्निगूढचर्यस्य	४४७	विश्वात्मा विश्वलोकेशो	६०४
विद्यावैमुख्यतो ज्ञात्वा	१०२	विभोर्मुखोन्मुखीर्दृष्टी	३८५	विश्वे ब्रह्ममहायोगे	२८३
विद्यासिद्धिं विधिनियमिता	४४३	विभ्राजते जिनैतत्ते	१६४	विपपुष्पमिवात्यन्त-	८४
विद्यासु विमुखीभाव	१०२	विभ्राणोऽप्यध्यधिच्छत्र	५६८	विषयस्यास्य मध्येऽस्ति	७७
विद्युदिन्द्रायुधे किञ्चित्	२५८	विमानमापतत् स्वर्गात्	२६३	विषया विषमा पाके	१७२
विद्युद्वन्तो महाध्वाना	६०	विमानमेतदुद्भासि	११७	विषयाननुभुञ्जान	२४३
विद्युन्नटी नभोरङ्गे	६१	विमाने श्रीप्रभे तत्र	२०६	विषयानन्वभूद् दिव्यान्-	१०१
विधाता विश्वकर्मा च	३७०	विमुक्तवर्षसम्बाधे	४८०	विषयानर्जयन्नेव	२४४
विधि स्रष्टा विधाता च	७२	विमुक्तशयना चैषा	३३५	विषयानीहते दुःखी	२४६
विधिनोपोष्य तत्रासीत्	१८३	विमुञ्च शयन तस्मात्	३३५	विषयानुभवात् पुसाम्	२४३
विधुताशेषससार-	६००	वियुतायुरसौ छाया	१६२	विषयानुभवे सौख्य	२४२
विधुमाशु विलोक्य नु	५४८	विरक्त कामभोगेषु	३८६	विषये पुण्डरीकिण्या	१४५
विधुरुचिहरचमररुह-	५६५	विरति सुखमिष्ट चेत्	५७६	विषये मङ्गलावत्या नगर्या	२१८
विधूतध्वान्तमुद्यन्तम्	२५६	विरहितमानमत्सर तवेद	५५६	विषये मङ्गलावत्या	१४०
विधृतेन सितच्छत्र-	३८४	विराजमानमुत्तुङ्गौ	४११	विषये वत्सकावत्या	१४५
विध्यापितजगत्तापा-	३६३	विरुद्धधर्मयोरेकम्	५०३	विषयेष्वनभिष्वङ्ग	४८५
विनार्हत्पूजया जातु	८१	विरेजुरप्लष्टा दूरम्	२६४	विषयैर्विप्रलब्धोऽयम्	२४५
विनिर्ममे बहून् बाहून्	२६३	विलीयन्ते यथा मेघा	२०५	विपादभयदैव्यादि-	८६
विनीलकुटिलै केशै	२२८	विलोक्य विलसत्कान्ती	३४१	विषारण्यमिद विश्वम्	२१४
विनीलैरलकैरस्या	२५४	विवक्षया विनैवास्य	२५	विष्कम्भचतुरस्राश्च	४२५
विनेयजनताबन्धु	६११	विवक्षामन्तरेणास्य	५८२	विष्कम्भादवगाढास्ता	४२४
विनोपलब्ध्या सद्भाव	१४४	विवस्वन्तमिवोद्धूत-	५६४	विष्कम्भादिकृत श्रेण्यो	४२१
विपङ्का ग्राहवत्यश्च	७६	विवाहमण्डपारम्भ	१५७	विष्टर तदलञ्चक्रे	५४३
विपच्यते यथाकाल-	२०६	विविक्तेषु वनान्नाद्रि	४६४	विष्टराण्यमरेशानाम्	५०६
विपाकविचय धर्म्यम्	४६०	विशङ्कटपटीक्लृप्त-	३८६	विष्वगद्रीन्द्रमूर्णित्वा-	२६६
विपुला निर्जरामिच्छन्	४६५	विशालोरुवक्ष स्थलस्यात्म-	५५३	विष्वगाप्लावितो मेरु	२६६
विप्रयोगे मनोज्ञस्य	४७७	विशालो विपुलज्योति	६१४	विष्वगुच्चलिता काश्चित्	२६५
विवुधा पेटुत्साहात्	६३३	विशुद्धतरमुत्सृष्ट-	४५७	विष्वग् ददृशेरे दूष्य-	१८०
विवोधोऽस्ति विभङ्गाख्य	२१७	विशुद्धपरिणामत्वात्	५३३	विसस्थुलासनस्थस्य	४८१
विभवो विभयो वीरो	६१०	विशुद्धभावन सम्यग्	२३५	विसाखप्रोष्ठिलाचार्यौ	४३
विभावरी विभात्येषा	२६१	विशुद्धलेश्य शुद्धेद्ध-	२४०	विसृज्य च पुरो दूत-	१७७
विभावसुरसम्भूणु	६०७	विशुद्धिश्चाशनस्येति	४५३	विस्तीर्णानेकशाखाढ्या	१७
विभाव्यते स्मय प्रोच्चै	५१५	विश्व विजानतोऽपीश-	२७६	विस्फुलिङ्गमयी शय्या	२१२
विभिन्नरसमित्युच्चै	३१६	विश्व विज्ञप्तिमात्र चेद्	१००	विस्रस्तकबरीबन्ध-	२५४
विभीषणनृपात् पुत्र	२२१	विश्वकर्ममत चास्मै	३५७	विस्रस्तकबरीभार-	३८७
विभु करद्वयेनाभ्या	३५५	विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो	६०५	विहगमरुतैर्नून	१८०
विभु कल्पतरुच्छाया	३२८	विश्वदिक्षु विसर्पन्ति	५६६	विहसन्निव वक्त्रेषु	३१८
विभुर्वृषभसेनाय	३५७	विश्वदृश्या विभुर्धाता	६०४	विहितनिखिलकृत्यो	१३७
विभूतमाङ्गससर्गाद्	३६१	विश्वदृश्वैतयो पुत्रो	२५७	वीच्यन्तर्वलितोद्वृत्त-	५१८
विभो कैवल्यसम्प्राप्ति-	५६२	विश्वमुडविश्वसृडविश्वेद्	६१०	वीणामधुरमारेणु -	३१५
विभो भोजनमानीत	४४७	विश्वविद्येश्वरस्यास्य	३२१	वीतरागोऽप्यसौ ध्येयो-	४८७
विभो समूलमुत्सन्ना-	३५८	विश्वव्यापी जगद्भर्ता	५७६	वीथी कल्पद्रुमाणाम्	५७०
विभोर्देहप्रभोत्सर्पे	३००	विश्वव्यापी स विश्वार्थ-	४८८	वीथीना मध्यभागेऽत्र	५३३

शुद्धो बुद्ध प्रबुद्धात्मा	६०६	श्रीपतिर्भगवानर्हन्	६०७	श्रूयते य श्रुतश्रुत्या	४४६
शुनीमिन्द्रमहे पूति-	२४३	श्रीप्रभ श्रीप्रभोपेत	४२२	श्रेणिकप्रश्नमुद्दिश्य	२७
शुभयु सुखसाद्भूत	६२६	श्रीप्रभाद्रौ तमभ्यर्च्य	२०८	श्रेणिद्वय वितत्य स्वम्	४१२
शुभा सुगन्धय स्निग्धा	२३८	श्रीमती च समाश्वास्य	१७६	श्रेण्योरयै नयोक्त-	४२१
शुभानुबन्धना सोऽय	१४६	श्रीमती गुरुणेत्युक्त्वा	१४६	श्रेण्यौ सदानपायिन्यौ	४१६
शुभाभिसन्धितो ध्याने	४७६	श्रीमती च भवतीर्थे	१८७	श्रेयसि प्रयते दान	७
शुभाशुभविभक्तानाम्	४६०	श्रीमती तत्करस्पर्शाद्	१६०	श्रेया निधिरधिष्ठानम्	६२६
शुभे दिने शुभे लग्ने	३३७	श्रीमतीतनयाश्चामी	१७२	श्रेयानय बहुश्रेयान्	४५५
शुभे दिने सुनक्षत्रे	३५६	श्रीमतीवज्रजडघादि-	४५२	श्रेयान् सोभप्रमेणामा	४५४
शुशुभाते शुभे जडघे	३४७	श्रीमती सा भविष्यन्ती	१२४	श्रेयोऽर्थ केवल ब्रूयात्	२१
शुश्रूपा श्रवण चैव	२१	श्रीमतीस्तनसस्पर्शात्	१६७	श्रोता न चैहिक किञ्चित्	२१
शूद्रा शूद्रेण वोढव्या	३६८	श्रीमते सकलज्ञान-	१	श्रोतार समभावा स्यु	२१
शून्यमेव जगद्विश्व-	६५	श्रीमत्या सह सश्रित्य	१८२	श्रोता शुश्रूषताद्यै स्वै-	२१
शून्यवादेऽपि शून्यत्व-	१००	श्रीमद्गन्धोदकैर्द्रव्यै	२६६	श्लक्ष्णपट्टदुकूलानि	१५८
शून्यालये श्मशाने वा	४८०	श्रीमद्भव्याब्जिनीना	२८	श्लक्ष्णाशुकध्वजा रेजु	५२८
शूर्पोमेयानि रत्नानि	४५५	श्रीमन्मुखाम्बुजेऽस्यासीत्	३२०	श्लाघ्य एष गुणैरेभि	१०७
शृणु देवि महान् पुत्रो	२६३	श्रीमानय नृसुरखेचरचार-	४४२	श्वमार्जारखरोष्ट्रादि-	२१६
शृणु पुत्रि तवास्माक	१३६	श्रीमान् जिनसभो	१६	श्वसुर्यस्ते युवा वज्र-	१४८
शृणु भोस्त्व महाराज-	१०१	श्रीमान् भरतराजर्षि	५७३	श्वेतकेतुपुर भाति	४२२
शृण्वत्सु मङ्गलोद्गीती	२६६	श्रीमान् वृषभसेनाख्य	५६१	श्वेतिम्ना वपुष श्वेत-	५११
शृण्वन्त कलगीतानि	२८८	श्रीमान् स्वयम्भूर्वृषभ	६०४		
शेमुप्यवदतुलादण्ड-	२१	श्रीमान् हेमशिलाघनैरपघनै	३४५	प	
शेषव्योमापगानाञ्च	३६४	श्रीवीरसेन इत्यात्त-	११	षट्कर्माणि यथा तत्र	३५६
शेषाश्च ग्रहनक्षत्र-	३५२	श्रीवृक्षलक्षणो श्लक्ष्णो	६१५	षट्खण्डमण्डिता पृथ्वीम्	१३७
शेषेभ्योऽपि स्वसूनुभ्य	३८१	श्रीश श्रीश्रितपादाब्जो	६२८	षट्चतुष्क सहस्राणि	२२५
शेषेष्वपि प्रवादिषु	५०३	श्रीषेण इत्यभूद् राजा	१११	षट्पदवृन्दविकीर्णै	४८६
शेषैरपि च कल्पेन्द्रै-	२६२	श्रीह्रीधृतिश्च कीर्तिश्च	२६५	षट्पदवृन्दविकीर्णै	५४३
शेषैरपि तथा तीर्थ-	२६	श्रुत निसर्गतोऽस्यासीत्	३२१	षडक्षरात्मक बीजम्	४६६
शेषो विधिरशेषोऽपि	५३०	श्रुत मया श्रुतस्कन्धात्	३६	षड्भिर्मासैरथैतस्मिन्	२५७
शेषो विधिस्तु निश्शेषो	५०	श्रुतकीर्तिर्महाप्राज्ञो-	५६२	षड्भेदयोगवादी य	४६८
शैशवेऽपि स सम्प्रापत्	२१८	श्रुतकीर्तेरथानन्त-	१८५	षण्मासशेषमात्रायु	२२७
शोकानिलहता काश्चित्	३८७	श्रुतदेव्याहितस्त्रैण-	३४	षण्मासानशन धीर	३६७
शोभा जडघाद्वये यास्या	२५१	श्रुतमर्याभिधान च	४८६	षण्मासानिति सापप्तत्	२५८
शोभायै केवल यस्या	८०	श्रुतस्कन्धमहासिन्धुम्	४६४	षाष्टिका कलमन्त्रीहि-	६२
श्रद्धादिगुणसपत्न्या	१८२	श्रुतस्कन्धानुयोगाना	४०	षोढा न पुनरेकैका	४७
श्रद्धादिगुणसम्पन्न	४५२	श्रुति सूनृतमाज्ञापत-	४८६	स	
श्रद्धाशक्तिश्च भक्तिश्च	४५२	श्रुतेन विकलेनापि	४८५	सदशकैविदार्यास्य	२११
श्रद्धास्तिक्यमनास्तिक्ये	४५२	श्रुतेनालकृतावस्या	२५४	सपश्यन्नयनोत्सव सुरुचिरम्	३४५
श्रित्वास्याद्रे सारमणीद्वम्	४४१	श्रुत्वा पुनर्भवद्वाच	२३	सममार्जुर्मही काश्चिद्	२६६
श्रीखण्डद्रवदत्ताच्छ-	३८६	श्रुत्वेति तत्त्वसद्भावम्	५६०	समोहकाष्ठजनित	१३२
श्रीदत्ताय नमस्तस्मै	१०	श्रुत्वेति तद्वचो दीन	३५६	सयमक्रियया सर्व-	४५४
श्रीदेवीभिर्यदानीनं	३६५	श्रुत्वेति स्वान् भवान् भूयो	१८३	सविभक्ता तयोर्लक्ष्मी-	८४
श्रीपरोऽथ दिवश्च्युत्वा	२१८	श्रुत्वोदार च गम्भीर	१०७		

न नृणां नृणां नृणां नृणां	११०	मती गोचारवेलेय	४५२
न नृणां नृणां नृणां नृणां	२६८	नतीमपि कथा रम्या	१४
न नृणां नृणां नृणां नृणां	१८४	स तु सवेगवैराग्य-	४५०
न नृणां नृणां नृणां नृणां	५३६	स ते कल्याणि कल्याण-	२७२
न नृणां नृणां नृणां नृणां	८८५	स तेजस्वी सुखानोक्त	५८
न नृणां नृणां नृणां नृणां	१३६	स तेने भक्तिमर्हत्सु	२३३
न नृणां नृणां नृणां नृणां	३२	स तै परिवृत पुत्रै	३५२
न नृणां नृणां नृणां नृणां	१०६	स तै परिवृतो रेजे	३६२
न नृणां नृणां नृणां नृणां	५५	सत्कथाश्रवणात्पुण्य	२१
न नृणां नृणां नृणां नृणां	५३३	सत्य त्व पण्डिता कार्य-	१३३
न नृणां नृणां नृणां नृणां	५२२	सत्य प्रीतिदकरो ज्यायान्	२०४
न नृणां नृणां नृणां नृणां	५३८	सत्य भूतोपमृष्टोऽय	६८
न नृणां नृणां नृणां नृणां	५६७	सत्य शौच क्षमा त्याग	३४४
न नृणां नृणां नृणां नृणां	५७३	सत्य श्रीमण्डप सोऽय	५३४
न नृणां नृणां नृणां नृणां	८६१	सत्यात्मा सत्यविज्ञान	६२२
न नृणां नृणां नृणां नृणां	८८४	सत्येव दर्शने ज्ञानम्	५८५
न नृणां नृणां नृणां नृणां	३०१	सत्योऽपि लब्धय शेषा-	५८०
न नृणां नृणां नृणां नृणां	७६	सत्वर च समासाद्य	११३
न नृणां नृणां नृणां नृणां	२६६	सत्सग्याक्षेत्रमस्पर्श-	५८३
न नृणां नृणां नृणां नृणां	६१२	सदङ्गुलितली वाहू	५६
न नृणां नृणां नृणां नृणां	२५६	सदाप्यधिनभोभाग	५१
न नृणां नृणां नृणां नृणां	३८५	सदा प्रफुल्ला वितता नलिन्य	४३८
न नृणां नृणां नृणां नृणां	६२३	सदा योग मदा भोग	६२२
न नृणां नृणां नृणां नृणां	६०३	स दीप्ततपसा दीप्तो	२३४
न नृणां नृणां नृणां नृणां	१६२	म देवदेवे निक्षिप्य	१०६
न नृणां नृणां नृणां नृणां	२२	मदेव यदिद राज्य	१७४
न नृणां नृणां नृणां नृणां	१०३	स देववलमम्पन्न	८६
न नृणां नृणां नृणां नृणां	१२३	नदोपमपि निर्दोषा	१४
न नृणां नृणां नृणां नृणां	६२०	नद्वर्शन व्रतोद्योत	२२३
न नृणां नृणां नृणां नृणां	१०३	नद्वृष्टि विनय शील-	२३३
न नृणां नृणां नृणां नृणां	२८६	नद्वृष्टि शीनमम्पन्न	४५७
न नृणां नृणां नृणां नृणां	१५७	नद्वृष्टिज्ञानचान्द्रि-	२३२
न नृणां नृणां नृणां नृणां	५८	नद्वृष्टिप यथाग्न्याय	४६१

सनीलरत्ननिर्माण-	३६७	सम भगवतानेन	८५७	ग मुनि कथमेवात्र	१८३
सन्तपालयमुद्वप्र	२५७	सम भगवतानेन	२३१	समुन्मीलितकर्मारि	६२८
स नो मातृचरस्तस्मिन्	१४१	सम भ्रातृभिरष्टाभि	२३२	समुल्लमन्नीलमणिप्रभाप्लु-	८३१
सन्तप्तस्तत्प्रतीकार	२०६	मम युवभिराहृद-	४१७	समेपलामधान् कान्तिम्	३२६
सन्तानकुसमोत्तसम्	२२३	सम वीणानिनादेन	५२१	ममेन चतुर्ग्रेण	२४०
सन्तानान्तरवत्तस्मान्न	५००	सम सुप्रविभक्ताङ्ग	२२३	स मेन्मीलिराभानि	७३
सन्तानावस्थितेस्तस्य	६४	समग्रगोपुरोदग्रै	६३१	स मेन्ग्व निष्कम्प	८०३
सन्तोषो याचनापायो	४५३	समग्रविम्बयुज्योत्सन्म	२५६	सम्पदभ्रविंलाय न	१७१
सन्ध्यारागनिभा रूप-	३७४	समग्रयीवनारम्भ-	१५०	सम्पूज्य शुचिवेषेण	८२०
सन्निष्क्रान्तावधोराय	६०१	समग्रा वैदग्धी मकल-	५६७	सम्प्रेक्ष्य भगवद्रप	८५२
सन्मति सन्मतिर्नाम्ना	५२	समचतुरस्रमप्रमितवीर्यं	५५६	सम्बुद्धोज्ज्वलवीर्यञ्च	५६२
सन्मौक्तिक वार्द्धिजलाय-	५८५	समज घातुक बालम्	२७८	सम्बोध्यमे तथ देवि	८७६
सपताको रणद्धण्टो	१३५	समता प्रोपधविधि	२२२	सम्भावयन् रुद्राचिच्च	३२३
सपत्नी श्रीसरस्वत्यो	१५३	म मन प्रणिधायान्ते	२२७	सम्भिन्नो वादकण्ड्या	६८
सपदि विधुतकल्पानोक्तहै-	३०२	समन्तत स्फुरन्ति स्म	६३२	सम्भोक्तुमक्षमा	१२
स परित्यज्य सवेगा-	१०५	समन्तभद्र ज्ञान्ताग्नि	६२६	सम्भोगजनित गेद	२८३
सपर्यया स पर्यत्य	११०	समन्तादागतत्येष	२६२	सम्भता नाभिराजस्य	२५६
सपित्रो परमानन्दम्	३२२	समन्तादुच्चरद्धप-	३८६	सम्यक्त्व दर्शन ज्ञानम्	४६६
सपुत्रदारैरन्यैश्च	४४७	समन्त्रिक ततो राज्ये	१८८	सम्यक्त्वमधिकृत्यैवम्	२०२
सपुष्कला कला-	५७	समन्त्रिभिश्चतुर्भिस्तै	८६	सम्यग्दर्शनपूतात्मा	१०६
स पुष्पकेशमस्याभा-	८३	सममाहारकेण स्यु	५८३	सम्यग्दर्शनमद्रत्न	२०१
स पूज्य कविभिर्लोकै	१२	सममृज्वायतस्थान-	३६	म यशोधर्योगीन्द्र-	१७४
सप्तभि क्षेत्रविन्यासै	७३	समयावलिकोच्छ्वा-	४६	सर सहसमन्त्रिश्च	३३८
सप्तसागरकालायु	१३६	समवादीधरद् ब्राह्मी	३५६	सरङ्गमवतीर्णोऽभात्	३१४
सप्तार्चिषमिवासाद्य	५६१	समसुप्रविभक्ताङ्गम्	२५४	सरत्नकण्टक भास्वत्	१०६
सप्ताहेन परेणाथ	१६५	समस्ता पूरयन्त्याशा	३००	सरत्नसिकता नद्यो	४२१
सप्रमोदमय विश्वम्	३१३	समा कालविभाग स्यात्	४७	सरन् सरसि सफुल्ल-	२४५
सप्रश्रयमथासाद्य	४४८	समाक्रान्तधराचक्र	३४३	सरसकिसलयप्रसन्नकृप्तिम्	४३३
सप्रश्रयमथोपेत्य	११७	स मातुरुदरस्थोऽपि	२८०	सरसा तीरदेशेषु	७७
सप्रहासमुवाचैवम्	३५४	समातृकापदान्येवम्	४६०	सरसा पुलिनेष्वेना	३३५
स बन्धुकुमुदानन्दी	१२२	समाधिना कृतप्राणत्यागा-	१२४	सरसाब्जरज पुञ्ज-	१६०
स बभार भुजस्तम्भ-	३४२	समाधिना तनुत्यागात्	२२२	सरसा लक्षणोद्भासी	२६३
स बभासे पथ पूर -	२६६	समानभावनानेन	२०५	सरसि कलममी रुवन्ति	४३६
स बलद्विर्बलाधानाद्	२३५	समा भरतराजेन	३४८	सरसिजनिभवकत्र पद्म-	५६६
स बह्मारम्भसरम्भ-	१०१	समारुध्य नभोऽशेषम्	५१३	सरसि सारसहसविकूजितै	४२६
स बाल्य एव सद्धर्मम्	२१८	समाल्य कवरीभार	३५४	सरसि हसवधूरियमुत्सुका	४३०
स विभ्रद्वक्षसा लक्ष्मी	१३६	समावस्थितकायस्य	४८१	सरस्तर कलहतसारसाकुलाम्	४३२
सभा विरचना तत्र	२२	समाश्वसिहि तद्भद्रे	१५३	सरस्वती च सोच्छिष्टे	१५३
सभा सभासुरसुरा	२२	समासादितवज्रत्वाद्	१०८	सरस्वती परिक्लेश-	३६
स भेजे मतिमान्	२३६	समाहूय महाभागान्	३६६	सरस्वती प्रियास्यासीत्	३२६
सभ्या सभ्यतमामसभ्य-	५३८	समिद्धया तपोदीप्त्या	४०६	सरास्युत्फुल्लपद्मानि	१५६
सम देववर्ये परार्ध्योपशोभात्	५५२	समुत्सृज्य चिराभ्यासात्	४८४	स राजसदन रम्य	१७१
सम पौरैरमात्यैश्च	३८८	समुद्दीपितविद्यस्य	३५७	स राजा तेन पुत्रेण	८४

१ शोभाप्रसन्नानुरागचिन्तयो	३२८	सादर च समासाद्य-	४०७
न नन्दानुरागपुष्पाङ्गम्	२३६	साधवो मुक्तिमार्गस्य	२०४
न तद्वानमानाद्य	२०२	साधारणमिदं ध्येयम्	४८८
न तन्मतिग्न्याय	५३	साधारणीमिमा विद्धि	१२०
न तन्निदिनिगिद्धि-	५६१	साधु भो भरताधीश	२५
न तर्पे न नमस्वि	६०६	साधु भो मगधाधीश	३१
न नारागोऽप्यनायागे	८८७	साध्य किमयवोद्दिश्य-	३६६
न निश्चिन्तमायोऽयम्	३७०	सानन्द त्रिदशेश्वरैस्सचकितान्	३०३
न नामनमसोऽग्न्या-	१११	सानसीन्न पर कञ्चित्	२८०
नन्पृष्टं न्ययमन्याश्च	४०७	सानुजन्मा समेतो-	५७३
नन्यान्यकृष्टपच्यानि	८१	सानूनस्य द्रुतमुपयान्ति	४४१
नन्यान्यकृष्टपच्यानि	३५८	सान्त पुरो धनर्द्धोद्धि-	२४४
नन्यान्यकृष्टपच्यानि-	४२१	सा पत्यै स्वप्नमाला ता	३६६
नन्यानीति चेदिष्ट-	६८	सापश्यत् षोडशस्वप्नान्	२५६
नन्यानीति चेदिष्ट-	२४०	सापश्यत् स्वमुखच्छायाम्	३३६
नन्यानीति चेदिष्ट-	२२३	सापि सम्यक्त्वमाहात्म्यात्	२०६
नन्यानीति चेदिष्ट-	५३२	सापि सम्यक्त्वलाभेन	२०३
नन्यानीति चेदिष्ट-	६१०	साप्यस्य मुखमासेवतु	१६६
नन्यानीति चेदिष्ट-	५५३	सा वभो वेदिकोदग्रा	५२७
नन्यानीति चेदिष्ट-	३१७	नाऽभवत् प्रेयसी तस्य	२५५
नन्यानीति चेदिष्ट-	५३६	मामन्तप्रहितान् दूतान्	६१
नन्यानीति चेदिष्ट-	११८	सा मन्द गमन भेजे	३३७
न नान्निधित वलो	५६	सामान्येनोपमान ते	१५३
न नि यममनापायात्	८८६	साम्मानेनापित स्वेन	१५४
न नि यागनिगोपायम्	८६५	सारव जलमासाद्य	३२३
न निगुरच्युतोज्ज्वल	६०६	सारासारा सारसमाना	४४१

मिता जनकशैर्गादगै	२५८	सुतोऽर्द्धचक्रिणश्चन्द्र-	१३६	सुरभिकुसुमरेणूना-	४३८
मित्रमत्स्य किलेकोऽमी	४७६	सुत्रामा सूत्रधारोऽस्या	२५६	सुरभीकृतविश्वाशै	५२५
मिताशुक्लप्रतिच्छन्ने	३६१	सुदत्तागर्भसम्भूतो	१८६	सुरयुवतिसमाजस्यास्य	४३६
मिता पयोधरा नीलै	२८७	सुदत्यौ ललितापाङ्ग-	३५४	सुरवारवधूहस्त-	३६४
मितातपत्रैर्मयूर-	१७८	सुदुर्लभ यदन्यत्र	४१	सुरवृन्दारकै प्रीतै	३८०
मिनान् घनानिह तटसञ्चिता-	३४१	सुदृष्टिर्व्रतसम्पन्नो	१०७	सुरवैतालिका पेटु	३६३
मितैर्पनैस्तटी शुभ्र-	४१३	सुदेवत्वसुमानुष्ये	२०१	सुरसरिज्जलसिक्त-	४२६
मिद्वह्मपुपेन्याशु	११३	सुधामलाङ्गी रुचिरा	५४६	सुरसिषेवितेषु निषेदुषी	४२७
मिद्विद्येन्मत मिद्व	४२०	सुधाशिना सुनाशीर-	२४०	सुरा ससम्भ्रमा सद्य	२५५
मिद्वाना सुवमात्मोत्थम्	२४६	सुवासूतिरिवोदशु	१३७	सुरा जाता विमानेशा	१८५
मिद्वार्धचैत्यवृक्षाश्च	५२८	सुधोज्ज्वलानि कूटानि	१५७	सुरानकमहाध्वान	५१३
मिद्विद्व सिद्धमद्रूप-	६१६	सुनन्दाया महाबाहु	३४६	सुरानोकहसम्भूता-	२६२
मिद्विप्रजादमोषान	२०१	सुनन्दा सुन्दरी पुत्री	३४६	सुराश्च विस्मयन्ते स्म	४५६
मिद्विधर्मा प्रकामाना	८६	सुन्दरी चात्तनिर्वेदा-	५६२	सुरासुरनरेन्द्रान्त-	५२६
मिद्व्यन्ति विविनानेन	४२०	सुन्दर्यामिसुन्दर्या	१८२	सुरासुरसभावास-	१०६
मिद्व्यो सयमगात्राया	४४५	सुन्दर्याश्च सुतोऽभूवन्	१६६	सुरेन्द्रकरविक्षिप्त-	५४०
मीमङ्गन् पञ्चमो ज्ञेय	६६	सुपक्षमाणि तयोर्नेत्रे	३३२	सुरेन्द्रकरविक्षिप्तै	३८२
मीमङ्गागर्हत्पादाब्ज-	१४६	सुप्रभा च समासाद्य	१४२	सुरेन्द्रकान्तमन्यतरयात्	४२६
मुक्कञ्चया कण्ठरागोऽस्या	२५३	सुप्रसन्न प्रसन्नात्मा	६१२	सुरेन्द्रनिर्मिता दिव्या	३८१
मुक्कञ्चयी कोकिलालाप-	३५४	सुप्रसन्नोज्ज्वला मूर्ति	३६७	सुरेन्द्रनीलनिर्माणम्	५१४
मुक्कनफलमुदार	२४७	सुप्रातमस्तु ते नित्यम्	२६२	सुरेन्द्रानुमतात् कन्ये	३३०
मुक्कती धातुरिज्याहं	६२१	सुबाहुरहमिन्द्रोऽभूद्	२२८	सुरेन्द्रैरभिषिक्तस्य	३६५
मुक्कशनेति च ग्याति	२५६	सुभद्रश्च यशोभद्रो	४३	सुरेभकटदानाम्बु-	२८७
मुक्क दुर्गानुवन्धीद	१७३	सुभाषितमहामन्त्रान्	१४	सुरेभरदनोद्भूत-	२८८
मुक्कप्रयोगमाधातुम्	२६०	सुभाषितमहारत्न-	३८	सुरै कृतादरैर्दिव्यै	३६३
मुक्कमनुगमितीद	२४७	सुभाषितमहारत्न-	१०	सुरैरावर्जिता वारा	३६५
मुक्कमेनेन मिद्वाना	२४६	सुभिक्ष क्षेममारोग्यम्	६३३	सुरैरिय नभोरङ्गात्	५६६
मुक्कगन्धया काञ्चिद्	१५४	सुभ्राता कुरनाथोऽय	४५५	सुरैर्दूरादथालोकि	५१३
मुक्कानुगानुभवन-	५००	सुमेधसावसम्मोहाद्	३५६	सुरोन्मुक्तपुष्पैस्ततप्रान्त-	५५३
मुक्कनि मुक्कत मुक्कतु	६०६	सुमेधा विक्रमी स्वामी	६२१	सुवर्णकदलीस्तम्भ-	२२३
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	३००	सुमनोऽञ्जलयो मुक्ता	३७७	सुवर्णा रुचिरा हृद्या	३६३
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	५८१	सुमनोमञ्जरीपुञ्जात्	५१८	सुवृत्तमसृणावूरु	२७७
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	११८	सुमनोमञ्जरीघ्राणै-	३४८	सुशीतलतच्छाया	३८६
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	३६७	सुमेरुमैक्षतोत्तुङ्ग-	४८८	मुश्लिष्टपदविन्यास	१५
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	६३२	सुयज्वने नमस्तुभ्यम्	३०८	मुपमालक्षण कालो	४६
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	५२७	सुयज्वा यजमानात्मा	६११	मुपुप्तसदृशो मुक्क	५०३
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	६०२	मुयशा सुचिरायुश्च	२५४	मुसहत दधी मध्य	५६
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	३८६	मुक्कजकुमुमानाम्	४७२	मुसीमानगरे जज्ञे	२१८
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	१३८	मुक्कजकुमुमानाम्	३०२	मुसीमानगरे नित्य	१४३
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	१५	मुक्कदुन्दुभयो मधुरध्वनयो	५८७	मुम्यास्ते मणिपीठेषु	५२७
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	११३	मुक्कदीर्घाग्निकैश्चिन्-	२६६	मुम्यित स्वास्थ्यभाक् स्वम्यो	६२३
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	३३८	मुक्कदीर्घाग्निकैश्चिन्-	८२६	मुस्नानमद्रगलान्युच्चै	३६६
मुक्कनि त्सुमेर्गन्ध-	२५७	मुक्कदि गौरभेयश्च	३०८	मुदमवाद्रगपर्याप्त-	३७५

स्मितमुद्भिन्नदन्ताशु-	१६७	स्वप्नज च सुख नास्ति	३७४	स्वस्थानाच्चलित स्वर्गं	२६२
स्मिताशुभिर्विभिन्नानि	३१७	स्वप्नद्वयमद पूर्वं	११२	स्वस्थाने या च सम्प्रीति	२३६
स्मिताशुमञ्जरी शुभ्रा	३४८	स्वप्नसदर्शनादेव	२६२	स्वस्वर्गस्त्रिदशावास	२५६
स्मिताशुरुचिर तस्य	३२५	स्वप्नसम्भोगनिर्भासा	३६३	स्वाङ्कारोप सितच्छत्रवृत्तिम्	२८८
स्मितैश्च हसितैर्मुग्धै	३३६	स्वप्नेऽपि तस्य तद्रूपम्	३४८	स्वाङ्गदीप्तिविनिर्बूत-	१८१
स्मितै सम्भाषितै स्थानै-	६१	स्वबन्धुनिर्विशेषा मे	१८३	स्वाधीन सुखमस्त्येव	३८६
स्मृतिर्जीवादितत्त्वाना	४६६	स्वभावतो विनैवार्थात्	७०	स्वाध्यायेऽभिरतो भिक्षु	४६४
स्मेर वक्त्राम्बुज तस्य	३४०	स्वभावनिर्मला चार्वी	२६५	स्वानुजन्मानमत्रस्थ	१८३
स्मेरवक्त्राम्बुजा रेजु-	५१३	स्वभावभास्वर तेज	३६२	स्वानुजाया विवाहार्थ	१८६
स्यादर्हन्नरिधातादि-	५०४	स्वभावभास्वरे भर्तु	५२०	स्वान्तर्नीतसमस्तवस्तु-	५६६
स्युरिमेऽधिगमोपाया-	५८३	स्वभावभास्वरे रम्ये	३८६	स्वामिना वृत्तिमुत्क्रम्य	३६८
स्रग्ध्वजेषु स्रजो दिव्या	५२३	स्वभावमधुराश्चैते	६४	स्वामोद मुखमेतस्या	२८०
स्रग्भिराकृष्टगन्धान्ध-	५४१	स्वभावमार्दवायोग-	४६	स्वायुरन्ते ततश्च्युत्वा	१४५
स्रग्वस्त्रसहसानाञ्ज-	५२८	स्वभावमिति निश्चित्य	१५	स्वायुरन्तेऽहमिन्द्रोऽभूत्	१४६
स्रग्विण शुचिलिप्ताङ्गान्	३२३	स्वभावसुन्दर रूप	४८	स्वावासोपान्तिकोद्यान-	२३६
स्रग्वि साभरणम्	५३१	स्वभावसुन्दराकारा	१६७	स्वासनापाङ्गसङ्क्रान्त-	३०४
स्रग्वी मलयजालिप्त-	३८१	स्वय ज्योतिरजोऽजन्मा-	६०५	स्वास्थ्य चेत् सुखमेतेपा	४६७
स्रग्वी सदशुक कर्ण-	३६७	स्वय धौताऽपि या धौता	२६१	स्विदिरहित विहीनमलदोष	५५६
स्रजो नानाविधा कर्ण-	१६३	स्वय निश्चितकार्यस्य	८६	स्वैरुदारनरै क्षान्ति-	४८४
स्रष्टारमन्तरेणापि	७२	स्वय प्रबुद्धसन्मार्ग	३७८		
स्रष्टा सर्गबहिर्भूत	६६	स्वयप्रभजिनोपान्ते	१६६	ह	
स्रष्टास्य जगत कश्चित्	६६	स्वयप्रभविमानेऽग्रे	१६६	हसध्वजेष्वर्भुहंसा-	५२६
स्रष्टेति ता प्रजा सृष्ट्वा	३६६	स्वयप्रभाग्रिमा देवी	११८	हसविक्रियया काश्चित्	३२२
स्रस्तस्रक्कवरीबन्ध	३३३	स्वयप्रभाननालोक-	११८	हठात् प्रकृतगूढार्थ	१४८
स्वकलावृद्धिहानिभ्या	१२६	स्वयबुद्धात् प्रबुद्धात्मा	१८२	हन्त दु खानुबन्धाना	११३
स्वच्छवारिशिशिरा सरसीश्च	५५०	स्वयबुद्धोऽपि तद्वाक्य-	११३	हयहेपितमातङ्ग-	१७६
स्वच्छाम्बुवसना वाप्यो-	८१	स्वयबुद्धोऽभवत्तेषु	८७	हरिचन्दनसम्मृष्टै	४१६
स्वच्छाम्बुसम्भृता रेजे	५१७	स्वयम्भुवे नमस्तुभ्य	६००	हरिनीलोपलच्छाया-	२६५
स्वच्छाम्भ कलिता लोके	४१०	स्वय स्म करक धत्ते	१६०	हरिन्मणिमहानील-	२५७
स्वच्छाम्भ खातिकाभ्यर्ण-	६३१	स्वरुद्भूतगन्धै सुगन्धीकृताशै	५५५	हरिन्मणीना विततान्म-	४३७
स्वतनुमतनुतीव्रा-	११६	स्वर्गप्रच्युतिलिङ्गानि	२२७	हरिरित प्रतिगर्जति कानने	४३०
स्वतनोऽपि वर्तमानाना	४५	स्वर्गभूर्निर्विशेषा ता	१२२	हरिवाहननामासौ	१८६
स्वदु खे निर्धृणारम्भा	२०४	स्वर्गस्यैव प्रतिच्छन्द	२५६	हरिश्च हरिकान्ताख्या	३६६
स्वदेहविसरज्योत्स्ना	५७५	स्वर्गापि वर्गसम्प्राप्तिम्	४६२	हर्षमर्षादिवत् सोऽयम्	४७६
स्वदोभ्यां धारयन् शस्त्र	३६८	स्वर्गावतरणे तुभ्यम्	६०१	हसन्ति केचिन्नृत्यन्ति	२८४
स्वधीतिनोऽपि तस्यासीत्	४६४	स्वर्गावतरणे दृष्ट	३१६	हसन्निवाधर काय	३४३
स्वतामव्यक्ततत्त्वानि	४६७	स्वर्गावाससमा पुर्यो	७६	हसन्निवोन्मिषद्रत्न-	५२०
स्वनीडादुत्पतन्नद्य	३३५	स्वर्गावासापहासीनि	४२२	हस्त्यश्वरथगन्धर्व-	२८४
स्वपट्टकमिद चान्यत्	१५१	स्वर्धुनीशीकरैस्तार्धम्	२६४	हस्त्यश्वरथपादात्	१७०
स्वपरोपकृता देहे	२३६	स्वविमानात्रलोकेन	२६४	हस्त्यश्वरथपादात्-	२२५
स्वपर्यङ्के कर वाम	४८०	स्वसन्निधानसम्पुल्ल-	६३२	हस्त्यश्वरथभूयिष्ठ	१७०
स्वपुण्याम्बुभिरेवाय	२३८	स्वसु पतिं स्वसारञ्च	१५४	हामाकारैश्च दण्डोऽन्यै	६५
स्वपूर्वापरकोटिभ्या	४११	स्वसुताग्रामन्येन्दु	१८७	हार नक्षत्रमालाख्य	३३२

स्मितमुद्भिन्नदन्ताशु-	१६७	स्वप्नज च सुख नास्ति	३७४	स्वस्थानाच्चलित स्वर्गं	२६२
स्मिताशुभिर्विभिन्नानि	३१७	स्वप्नद्वयमद पूर्वं	११२	स्वस्थाने या च सम्प्रीति	२३६
स्मिताशुमञ्जरी शुभ्रा	३४८	स्वप्नसदर्शनादेव	२६२	स्वस्वर्गस्त्रिदशावास	२५६
स्मिताशुचिर तस्य	३२५	स्वप्नसम्भोगनिर्भासा	३६३	स्वाङ्कारोप सितच्छत्रधृतिम्	२८८
स्मितैश्च हसितैर्मुग्धै	३३६	स्वप्नेऽपि तस्य तद्रूपम्	३४८	स्वाङ्गदीप्तिविनिर्बूत-	१८१
स्मितै सम्भाषितै स्थानै-	६१	स्वबन्धुनिर्विशेषा मे	१८३	स्वाधीन सुखमस्त्येव	३८६
स्मृतिर्जीवादितत्त्वाना	४६६	स्वभावतो विनैवार्थात्	७०	स्वाध्यायेऽभिरतो भिक्षु	४६४
स्मेर वक्त्राम्बुज तस्य	३४०	स्वभावनिर्मला चार्वी	२६५	स्वानुजन्मानमत्रस्थ	१८३
स्मेरवक्त्राम्बुजा रेजु-	५१३	स्वभावभास्वर तेज	३६२	स्वानुजाया विवाहार्थं	१८६
स्यादर्हन्नरिघातादि-	५०४	स्वभावभास्वरे भर्तु	५२०	स्वान्तर्नीतसमस्तवस्तु-	५६६
स्युरिमेऽधिगमोपाया-	५८३	स्वभावभास्वरे रम्ये	३८६	स्वामिना वृत्तिमुत्क्रम्य	३६८
स्रग्ध्वजेषु स्रजो दिव्या	५२३	स्वभावमधुराश्चैते	६४	स्वामोद मुखमेतस्या	२८०
स्रग्भिराकृष्टगन्धान्ध-	५४१	स्वभावमार्दवायोग-	४६	स्वायुरन्ते ततश्च्युत्वा	१४५
स्रग्वस्त्रसहसानाब्ज-	५२८	स्वभावमिति निश्चित्य	१५	स्वायुरन्तेऽहमिन्द्रोऽभूत्	१४६
स्रग्विण शुचिलिप्ताङ्गान्	३२३	स्वभावसुन्दर रूप	४८	स्वावासोपान्तिकोद्यान-	२३६
स्रग्वि साभरणम्	५३१	स्वभावसुन्दराकारा	१६७	स्वासनापाङ्गसङ्क्रान्त-	३०४
स्रग्वी मलयजालिप्त-	३८१	स्वय ज्योतिरजोऽजन्मा-	६०५	स्वास्थ्य चेत् सुखमेतेपा	४६७
स्रग्वी सदशुक कर्ण-	३६७	स्वय धौताऽपि या धौता	२६१	स्विदिरहित विहीनमलदोष	५५६
स्रजो नानाविधा कर्ण-	१६३	स्वय निश्चितकार्यस्य	८६	स्वैस्वारनरै क्षान्ति-	४८४
स्रष्टारमन्तरेणापि	७२	स्वय प्रबुद्धसन्मार्गं	३७८		
स्रष्टा सर्गबहिर्भूत	६६	स्वयप्रभजिनोपान्ते	१६६	ह	
स्रष्टास्य जगत कश्चित्	६६	स्वयप्रभविमानेऽग्रे	१६६	हसध्वजेष्वभुर्हसा-	५२६
स्रष्टेति ता प्रजा सृष्ट्वा	३६६	स्वयप्रभाग्रिमा देवी	११८	हसविक्रियया कश्चित्	३२२
स्रस्तस्रक्कवरीबन्ध	३३३	स्वयप्रभाननालोक-	११८	हठात् प्रकृतगूढार्थं	१४८
स्वकलावृद्धिहानिभ्या	१२६	स्वयबुद्धात् प्रबुद्धात्मा	१८२	हन्त दु खानुबन्धाना	११३
स्वच्छवारिशिशिरा सरसीश्च	५५०	स्वयबुद्धोऽपि तद्वाक्य-	११३	हयहेषितमातङ्ग-	१७६
स्वच्छाम्बुवसना वाप्यो-	८१	स्वयबुद्धोऽभवत्तेषु	८७	हरिचन्दनसम्मृष्टै	४१६
स्वच्छाम्बुसम्भृता रेजे	५१७	स्वयम्भुवे नमस्तुभ्य	६००	हरिनीलोपलच्छाया-	२६५
स्वच्छाम्भ कलिता लोके	४१०	स्वय स्म करक धत्ते	१६०	हरिन्मणिमहानील-	२५७
स्वच्छाम्भ खातिकाभ्यर्ण-	६३१	स्वरुद्भूतगन्धै सुगन्धीकृताशै	५५५	हरिन्मणीना विततान्म-	४३७
स्वतनुमतनुतीव्रा-	११६	स्वर्गप्रच्युतिलिङ्गानि	२२७	हरिरित प्रतिगर्जति कानने	४३०
स्वतनोऽपि वर्तमानाना	४५	स्वर्गभूर्निर्विशेषा ता	१२२	हरिवाहननामासौ	१८६
स्वदु खे निर्घृणारम्भा	२०४	स्वर्गस्यैव प्रतिच्छन्द	२५६	हरिश्च हरिकान्ताख्या	३६६
स्वदेहविसरज्योत्स्ना	५७५	स्वर्गापि वर्गसम्प्राप्तिम्	४६२	हर्षामर्षादिवत् सोऽयम्	४७६
स्वदोभ्यां धारयन् शस्त्र	३६८	स्वर्गावितरणे तुभ्यम्	६०१	हसन्ति केचिन्नृत्यन्ति	२८४
स्वधीतिनोऽपि तस्यासीत्	४६४	स्वर्गावितरणे दृष्ट	३१६	हसन्निवाधर काय	३४३
स्वनामव्यक्ततत्त्वानि	४६७	स्वर्गावाससमा पुर्यो	७६	हसन्निवोन्मिषद्रत्न-	५२०
स्वनीडादुत्पत्तन्नद्य	३३५	स्वर्गावासापहासीनि	४२२	हस्त्यश्वरथगन्धर्व-	२८४
स्वपट्टकमिद चान्यत्	१५१	स्वर्धुनीशीकरैस्सार्धम्	२६४	हस्त्यश्वरथपादात	१७०
स्वपरोपकृता देहे	२३६	स्वर्विमानावलोकने	२६४	हस्त्यश्वरथपादात-	२२५
स्वपर्यङ्के कर वाम	४८०	स्वसन्निधानसम्फुल्ल-	६३२	हस्त्यश्वरथभूयिष्ठ	१७०
स्वपुण्याम्बुभिरेवाय	२३८	स्वसु पति स्वसारञ्च	१५४	हामाकारैश्च दण्डोऽन्यै	६५
स्वपूर्वापरकोटिभ्या	४११	स्वसुताग्राममन्येन्दु	१८७	हार नक्षत्रमालाख्य	३३२

हारनीहारकह्वार-	२६७	हिंसानन्दमृषानन्द	४७६	हिरण्यमहास्तम्भौ	५२१
हारमुक्ताफलेष्वन्या	३१७	हिंसानृतान्यरैरात्मा-	३१	हिरण्यमहोदग्रशाखो	५२५
हारस्तस्यास्तनोपान्ते	१२६	हिंसाया निरता ये स्यु	२०६	हिरण्ययाङ्गा प्रोत्तुङ्गा	५१६
हारार्थितस्तनोपान्ता-	५१३	हित ब्रूयान्मित ब्रूयात्	१६	हिरण्ययी जिनेन्द्रार्च्या	५१६
हारिणा मणिहारेण	३०४	हिमवत शिरस किल	४२६	हतोऽय विषयैर्जन्तु	२४५
हारिमेदुरमुन्निद्रकुसुम	५२४	हिरण्यगर्भ श्रीगर्भ	६०६	हृदि मूर्ध्नि ललाटे वा	४८१
हारेण कण्ठपर्यन्त-	२२६	हिरण्यगर्भमाहुस्त्वाम्	५८०	हृदि वेपथुमुत्कम्पम्	३८७
हारेण हारिणा चारु	३८३	हिरण्यगर्भस्त्व धाता	३२६	हृषीकाणि तदर्थेभ्य	४८५
हारेण हारिणा तेन	३२६	हिरण्यगर्भो भगवान्	५७६	हेमाभ्भोजमया श्रेणीम्	६३४
हारेणालङ्कृत वक्षो	२३०	हिरण्यनाभिर्भूतात्मा	६०८	हेयमाद्य द्वय विद्धि	४७७
हारो यष्टिकलाप स्यात्	३५१	हिरण्यम समुत्तुङ्गो	२८६	हैमषोडशसोपानाम्	५१५
हास्तिनास्यपुरे स्याते	१८५	हिरण्यमहास्तम्भा	५३२	हैमैर्जालै क्वचित् स्थूलै	५४१
हिंसानन्द समाधाय	४७६				

भारतीय ज्ञानपीठ काशीके सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

[हिन्दी ग्रन्थ]

१. मुक्तिदूत [उपन्यास]--अञ्जना-पवनञ्जयकी पुण्यगाथा ।	५)
२. पथचिह्न--[स्वर्गीय बहिनके पवित्र सस्मरण और युगविश्लेषण ।]	२)
३. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियाँ--	३)
४. पाश्चात्य तर्कशास्त्र [अप्राप्य]	६)
५. शेर-शायरी [उर्दूके सर्वोत्तम १५०० शेर और १६० नज्म]	८)
६. मिलनयामिनी [गीत]	४)
७. वैदिक साहित्य--वेदोंपर हिन्दीमें साधिकार मौलिक विवेचन ।	६)
८. मेरे वापू--महात्मा गांधीके प्रति श्रद्धाञ्जलि	२॥)
९. पंच प्रदीप--[गीत]	२)
१०. भारतीय विचारधारा--	२)
११. ज्ञानगंगा--[संसारके सहान् साधकोंकी सूक्तियोंका अक्षय भण्डार ।]	६)
१२. गहरे पानी पैठ--सूक्तिरूपमें ११८ मर्मस्पर्शी कहानियाँ	२॥)
१३. चर्द्धमान [सहाकाव्य]	६)
१४. शेर-ओ-सुखन	८)
१५. आधुनिक जैन कवि	३॥)
१६. जैनशासन--जैनधर्मका परिचय तथा विवेचन करनेवाली सुन्दर रचना ।	३)
१७. कुन्दकुन्दाचार्यके तीन रत्न--	२)
१८. हिन्दी जैन साहित्यका संक्षिप्त इतिहास	२॥=)

[प्राकृत, संस्कृत ग्रन्थ]

१९. महावन्ध [महाधवल सिद्धान्त शास्त्र]--प्रथम भाग, हिन्दी अनुवाद सहित ।	१२)
२०. करलकखण [सामुद्रिक शास्त्र]--हस्तरेखा विज्ञानका नवीन ग्रन्थ ।	१)
२१. मदनपराजय--भाषानुवाद तथा ७८ पृष्ठकी विस्तृत प्रस्तावना सहित ।	८)
२२. कन्नडप्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची--	१३)
२३. न्यायविनिश्चय विवरण [प्रथम भाग]--	१५)
२४. तत्त्वार्थवृत्ति--श्रुतसागर सूरिरचित टीका । हिन्दी सार सहित ।	१६)
२५. आदिपुराण भाग [१]--भगवान् ऋषभदेवका पुण्य चरित्र ।	१०)
२६. आदिपुराण भाग [२]--भगवान् ऋषभदेवका पुण्य चरित्र ।	१०)
२७. नाममाला सभाष्य--	३॥)
२८. केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि--ज्योतिष ग्रन्थ ।	४)
२९. सभाष्यरत्नमंजूषा--छन्दशास्त्र ।	२)
३०. समयसार--[अग्नेजी] ।	८)
३१. कुरल काव्य--तामिल भाषाका पञ्चमवेद, [तामिल लिपि ।]	४)

भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस ४

ग्रह^१ ममासृवो^२ बन्धः संवरो निर्जरा क्षयः । कर्मणामिति तत्त्वार्था ध्येयाः सप्त नवाथवा^३ ॥१०८॥
 'षट्त्वद्रव्यपर्याययाथात्म्यस्यानुचिन्तनम् । यतो^४ ध्यानं ततो ध्येयः^५ कृत्स्नः पञ्चद्रव्यविस्तरः ॥१०९॥
 नयप्रमाणजीवादपदार्था न्यायभासुराः^६ । जिनेन्द्रवद्वज्रप्रसूता ध्येया सिद्धान्तपद्धतिः^७ ॥११०॥
 श्रुतमर्थभिधानञ्च^८ १० प्रत्ययश्चेत्यदस्त्रिधा । तस्मिन् ध्येये जगत्तत्त्व ध्येयतामेति कात्स्न्यतः ॥१११॥
 अथवा पुरुषार्थस्य परा^{११} काष्ठाभिधिष्ठितः । परमेष्ठी जिनो ध्येयो^{१२} निष्ठितार्थो निरञ्जनः ॥११२॥
 स^{१३} हि कर्ममलापायात् शुद्धिमात्यन्तिकीं श्रितः । सिद्धो निरामयो ध्येयो ध्यातृणा^{१४} भावसिद्धये ॥११३॥
 क्षायिकानन्तदृग्बोधसुखवीर्यादिभिर्गुणैः । युवतोऽसौ योगिना गम्य सूक्ष्मोऽपि व्यवतलक्षणः ॥११४॥
 अमूर्तो^{१५} निष्कलोऽप्येष योगिना ध्यानगोचरः^{१६} । किञ्चिन्न्यूनान्त्यदेहानुकारी जीवघनाकृतिः ॥११५॥
 निःश्रेयसार्थिभिर्भव्यैः प्राप्तनि श्रेयसः स हि । ध्येयः श्रेयस्करः सार्व^{१७} सर्वदृक् सर्वभाव^{१८} वित् ॥११६॥

है । ये सब भी ध्यान करने योग्य हैं ॥१०७॥ मैं अर्थात् जीव और मेरे अजीव आत्मव बन्ध सवर निर्जरा तथा कर्मोंका क्षय होने रूप मोक्ष इस प्रकार ये सात तत्त्व ध्यान करने योग्य हैं अथवा इन्हीं सात तत्त्वोंमें पुण्य और पाप मिला देनेपर नौ पदार्थ ध्यान करने योग्य हैं ॥१०८॥ क्योंकि छह नयोंके द्वारा ग्रहण किये हुए जीव आदि छह द्रव्यों और उनकी पर्यायोंके यथार्थ स्वरूपका बार बार चिन्तन करना ही ध्यान कहलाता है, इसलिये छह द्रव्योंका समस्त विस्तार भी ध्यान करने योग्य है ॥१०९॥ नय, प्रमाण, जीव, अजीव आदि पदार्थ और सप्तभगी रूप न्यायसे देदीप्यमान होनेवाली तथा जिनेन्द्रदेवके मुखसे प्रकट हुई सिद्धान्तशास्त्रोंकी परिपाटी भी ध्यान करने योग्य है अर्थात् जैन शास्त्रोंमें कहे गये समस्त पदार्थ ध्यान करनेके योग्य हैं ॥११०॥ शब्द, अर्थ और ज्ञान इस प्रकार तीन प्रकारका ध्येय कहलाता है । इस तीन प्रकारके ध्येयमें ही जगत्के समस्तपदार्थ ध्येयकोटिको प्राप्त हो जाते हैं । भावार्थ—जगत्के समस्त पदार्थ शब्द अर्थ और ज्ञान इन तीनों भेदोंमें विभक्त हैं इसलिये शब्द, अर्थ और ज्ञान के ध्येय (ध्यान करने योग्य) होनेपर जगत्के समस्त पदार्थ ध्येय हो जाते हैं ॥१११॥ अथवा पुरुषार्थकी परम काष्ठाको प्राप्त हुए, कर्मरूपी शत्रुओंको जीतनेवाले, कृतकृत्य और रागादि कर्ममलसे रहित सिद्ध परमेष्ठी ध्यान करने योग्य हैं ॥११२॥ क्योंकि वे सिद्ध परमेष्ठी कर्मरूपी मलके दूर हो जानेसे अविनाशी विशुद्धिको प्राप्त हुए हैं और रोगादि क्लेशोंसे रहित हैं इसलिये ध्यान करनेवाले पुरुषोंको अपने भावोंकी शुद्धिके लिये उनका अवश्य ही ध्यान करना चाहिये । ॥११३॥ वे सिद्ध भगवान् कर्मोंके क्षयसे होनेवाले अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य आदि गुणोंसे सहित हैं और उनके यथार्थ स्वरूपको केवल योगी लोग ही जान सकते हैं । यद्यपि वे सूक्ष्म हैं तथापि उनके लक्षण प्रकट हैं ॥११४॥ यद्यपि वे भगवान् अमूर्त और अशरीर हैं तथापि योगी लोगोंके ध्यानके विषय हैं अर्थात् योगी लोग उनका ध्यान करते हैं । उनका आकार अन्तिम शरीरसे कुछ कम केवल जीव प्रदेशरूप है ॥११५॥ मोक्षकी इच्छा करनेवाले भव्य जीवोंको उन्हींसे मोक्षकी प्राप्ति होती है । वे स्वयं कल्याण रूप हैं, कल्याण करनेवाले हैं, सबका हित करनेवाले हैं, सर्वदर्शी हैं और सब पदार्थोंको जाननेवाले

१ आत्मा । २ मम सम्बन्धि ममकार । जीवाजीवावित्यर्थ । अहं ममेत्येतद्द्वयमव्ययपदम् ।
 ३ पुण्यपापसहिता एते नवपदार्थाः । ४ षडनय अ०, प०, ल० । षड्रूप द० । षट्प्रकार ।
 ५ यस्मात् कारणात् । ६ ध्येय ल०, इ०, म० । ७ सप्तभङ्गिरूपविचारैर्भास्वरा । ८ वचनरचनाः ।
 ९ शब्दः । १० ज्ञानम् । ११ अवस्थाम् । १२ कृतकृत्य । १३ जित । १४—शुद्धये अ०, प०, नि०, म०, द०, इ०, स० । १५ अशरीर । १६ ध्येयगो-ल०, म०, द०, प० । १७ सर्वहित ।
 १८ सर्वदर्शी । १९ पदार्थ ।

एकविंशं पर्व

स साकारोऽप्यनाकारो निराकारोऽपि साकृतिः । 'स्वसात्कृताखिलज्ञेयः सुज्ञानो' ज्ञानचक्षुषाम् ११७
मणिदर्पणसङ्क्रान्तच्छायात्मेव^१ स्फुटाकृतिम् । दधज्जीवधनाकारम् अमूर्तो^२ ध्यचलस्थितिः ॥११८॥
वीतरागोऽप्यसौ ध्येयो^३ भव्याना भवविच्छिदे । विच्छिन्नबन्धनस्यास्य तादृग्नैसर्गिको गुणः ॥११९॥
अथवा स्नातकावस्था^४ प्राप्तो घातिव्यपायतः । जिनोऽर्हन् केवली ध्येयो बिभ्रत्तेजोमय वपुः ॥१२०॥
रागाद्यविद्या^५ जयनाज्जिनोऽर्हन् घातिना हतेः । स्वात्मोपलब्धितः सिद्धो बुद्धस्त्रैलोक्यबोधनात् ॥१२१॥
त्रिकालगोचरानन्तपर्यायो^६ पचितार्थदृक् । विश्वज्ञो विश्वदर्शी च विश्वसाद्भुतचिद्गुणः ॥१२२॥
केवली केवलालोकविशालामललोचनः । घातिकर्मक्षयादाविभूतानन्तचतुष्टयः ॥१२३॥
द्विष^७ इभेदगणाकीर्णा सभावनिमधिष्ठितः । प्रातिहार्यैरभिव्यक्तत्रिजगत्प्राभवो विभुः ॥१२४॥

अर्थात् सर्वज्ञ है ॥११६॥ वे भगवान् साकार होकर भी निराकार है और निराकार होकर भी साकार है । यद्यपि उन्होंने जगत्के समस्त पदार्थोंको अपने आधीन कर लिया है अर्थात् वे जगत्के समस्त पदार्थोंको जानते हैं परन्तु उन्हें ज्ञानरूप नेत्रोंके धारण करनेवाले ही जान सकते हैं ॥ भावार्थ—वे सिद्ध भगवान् कुछ कम अन्तिम शरीरके आकार होते हैं इसलिये साकार कहलाते हैं परन्तु उनका वह आकार इन्द्रियज्ञानगम्य नहीं है इसलिये निराकार भी कहलाते हैं । शरीररहित होनेके कारण स्थूलदृष्टि पुरुष उन्हें यद्यपि देख नहीं पाते हैं इसलिये वे निराकार हैं, परन्तु प्रत्यक्ष ज्ञानी जीव कुछ कम अन्तिम शरीरके आकार परिणत हुए उनके असंख्य जीव प्रदेशोंको स्पष्ट जानते हैं इसलिये साकार भी कहलाते हैं । यद्यपि वे ससारके सब पदार्थोंको जानते हैं परन्तु उन्हें ससारके सभी लोग नहीं जान सकते, वे मात्र ज्ञानरूप नेत्रके द्वारा ही जाने जा सकते हैं ॥११७॥ रत्नमय दर्पणमें पड़े हुए प्रतिबिम्बके समान उनका आकार अतिशय स्पष्ट है । यद्यपि वे अमूर्तिक हैं तथापि चैतन्य रूप घनाकारको धारण करनेवाले हैं और सदा स्थिर हैं ॥११८॥ यद्यपि वे भगवान् स्वयं वीतराग हैं तथापि ध्यान किये जानेपर भव्य जीवोंके ससारको अवश्य नष्ट कर देते हैं । कर्मोंके बन्धन को छिन्न-भिन्न करनेवाले उन सिद्ध भगवान्का वह उस प्रकारका एक स्वाभाविक गुण ही समझना चाहिये ॥११९॥ अथवा घातिया कर्मोंके नष्ट हो जानेसे जो स्नातक अवस्थाको प्राप्त हुए हैं और जो तेजोमय परमौदारिक शरीरको धारण किये हुए हैं ऐसे केवलज्ञानी अर्हन्त जिनेंद्र भी ध्यान करने योग्य हैं ॥१२०॥ राग आदि अविद्याओंको जीत लेनेसे जो जिन कहलाते हैं, घातिया कर्मोंके नष्ट होनेसे जो अर्हन्त (अरिहन्त) कहलाते हैं शुद्ध आत्मस्वरूपकी प्राप्ति होनेसे जो सिद्ध कहलाते हैं और त्रैलोक्यके समस्त पदार्थोंको जाननेसे जो बुद्ध कहलाते हैं, जो तीनों कालोंमें होनेवाली अनन्त पर्यायोंसे सहित समस्त पदार्थोंको देखते हैं इसलिये विश्वदर्शी (सबको देखनेवाले) कहलाते हैं और जो अपने ज्ञानरूप चैतन्य गुणमें ससारके सब पदार्थोंको जानते हैं इसलिये विश्वज्ञ (सर्वज्ञ) कहलाते हैं । जो केवलज्ञानी हैं, केवलज्ञान ही जिनका विशाल और निर्मल नेत्र है, तथा घातिया कर्मोंके क्षय होनेसे जिनके अनन्तचतुष्टय प्रकट हुआ है, जो बारह प्रकारके जीवोंके समूहसे भरी हुई सभामूमि (समवसरण) में विराजमान हैं, अष्ट प्रातिहार्योंके द्वारा जिनकी तीनों जगत्की प्रभुता प्रकट हो

१ न्यायीनीलनखिलज्ञेयपदार्थ । २ सुज्ञातो ल०, म० । शोभनज्ञान. अथवा सुज्ञाता ।

३ छायास्वरूपमिव । ४ स्फुटाकृति द०, ल०, म०, प० । ५ अमूर्तोऽपीत्यत्र परमतकथितवाटवादीनाम-मूर्तत्वचरणत्वात्मकत्वानिरासायमचलस्थितिरित्युक्तम् । ६ -ध्यातो भव्या- द०, ल०, म०, अ०, प० ।

७ परिस्पृज्ज्ञानपरिणतम् । ८ अज्ञान । ९ गुणपर्यायवद्भवम् । १० द्वादशमेद ।

नियनाकृतिरप्येव विश्वरूपं स्वचिद्गुणैः । सङ्क्रान्ता^१शेष^२विज्ञेयप्रतिबिम्बानुकारतः ॥१२५॥
 विश्वव्यापी स विश्वार्थव्यापि विज्ञानयोगतः । विश्वास्यो^३ विश्वतश्चक्षुर्विश्वलोकशिखामणिः ॥१२६॥
 ससारसागराद् दूरम् उत्तीर्णः^४ सुखसाङ्गवः^५ । विधूतसकलक्लेशो विच्छिन्नभवबन्धनः ॥१२७॥
 निर्भयश्च निराकाङ्क्षो^६ निरावोढो निराकुलः^७ । निर्व्यपेक्षो^८ निरातङ्गो नित्यो निष्कर्मकल्मषः^९ ॥१२८॥
 नवकेवललब्ध्यादिगुणारब्धवपुष्टरः^{१०} । अभेद्य^{११}सहतिर्वज्रशिलोत्कीर्ण इवाचलः ॥१२९॥
 स एव लक्षणो ध्येयः परमात्मा परः पुमान् । परमेष्ठी परं तत्त्वं परमज्योतिरक्षरम् ॥१३०॥
 साधारणमिदं ध्येयं ध्यानयोर्वर्त्म्यशुक्लयोः । विशुद्धि^{१२}स्वामिभेदात्तु^{१३}तद्विशेषोऽवधार्यताम् ॥१३१॥
 प्रशस्तप्रणिधान^{१४} यत् स्थिरमेकत्र वस्तुनि । तद्ध्यानमुक्तं मुक्त्यङ्गं धर्म्यं शुक्लमिति द्विधा ॥१३२॥

रही है, जो सर्वसामर्थ्यवान् है, जो यद्यपि निश्चित आकारवाले है तथापि अपने चैतन्यरूप गुणोंके द्वारा प्रतिबिम्बित हुए समस्त पदार्थोंके प्रतिबिम्ब रूप होनेसे विश्वरूप है अर्थात् ससार के सभी पदार्थोंके आकार धारण करनेवाले है, जो समस्त पदार्थोंमें व्याप्त होनेवाले केवल ज्ञानके सम्यन्त्रसे विश्वव्यापी कहलाते हैं, समवसरण-भूमिमें चारों ओर मुख दिखनेके कारण जो विश्वास्य (विश्वतोमुख) कहलाते हैं, ससारके सब पदार्थोंको देखनेके कारण जो विश्व-तश्चक्षु (सब ओर है नेत्र जिनके ऐसे) कहलाते हैं, तथा सर्वश्रेष्ठ होनेके कारण जो समस्त लोकके शिखामणि कहलाते हैं, जो ससाररूपी समुद्रसे शीघ्र ही पार होनेवाले हैं, जो सुगमय है, जिनके समस्त क्लेश नष्ट हो गये हैं और जिनके ससाररूपी बन्धन कट चुके हैं, जो निर्भय है, निःस्पृह है, वावारहित है, आकुलतारहित है, अपेक्षारहित है, नीरोग है, नित्य है और कर्मरूपी कालिमासे रहित है, क्षायिक, ज्ञान, दर्शन, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य, नम्यात्व और चारित्र्य इन नौ केवललब्धि आदि अनेक गुणोंसे जिनका शरीर अतिशय उत्कृष्ट है, जिनका कोई नेदन नहीं कर सकता और जो वजूकी शिलामें उकेरे हुए अथवा वजूकी शिलाओं में व्याप्त हुए पर्वतके समान निश्चल है—स्थिर है, इस प्रकार जो ऊपर कहे हुए लक्षणों में सहित है, परमात्मा है, परम पुरुष रूप है, परमेष्ठी है, परम तत्त्वं स्वरूप है, परमज्योति (चेतनज्ञान) रूप है और अविनाशी है ऐसे अर्हन्तदेव ध्यान करने योग्य है ॥१२१-१३०॥
 अभी तक जिन ध्यान करने योग्य पदार्थोंका वर्णन किया गया है वे सब धर्म्यध्यान और शुक्ल ध्यान इन दोनों ही ध्यानोके साधारण ध्येय है अर्थात् ऊपर कहे हुए पदार्थोंका दोनों ही ध्यानो में विनिर्गुण किया जा सकता है । इन दोनों ध्यानोमें विशुद्धि और स्वामीके भेदसे ही परस्पर-भेद विशेषता नमस्करी चाहिये । भावार्थ—धर्मध्यानकी अपेक्षा शुक्ल ध्यानमें विशुद्धिके अंश बहुत अधिक होने हैं, धर्म्य ध्यान चौथे गुणस्थानसे लेकर श्रेणी चढ़नेके पहले पहले तक ही रहता है और शुक्ल ध्यान श्रेणियोंमें ही होता है । इन्हीं सब बातोंसे उक्त दोनों ध्यानोमें विशेषता होती है ॥१३१॥ जो किसी एक ही वस्तुमें परिणामोकी स्थिर और प्रशसनीय एकाग्रता होती है उसे ही ध्यान कहते हैं, ऐसा ध्यान ही मुक्तिका कारण होता है । वह ध्यान धर्म्य ध्यान और

तत्रानपैत यद्धर्मत्तिद्धान धर्ममिष्यते । धर्मो हि वस्तुयाथात्म्यम् उत्पादादित्रयात्मकम् ॥१३३॥
तदाज्ञापायसस्थानविपाकविचयात्मकम् । चतुर्विकल्पमाप्नातं ध्यानमाप्नायवेदिभिः ॥१३४॥
तत्राज्ञेत्यागमः सूक्ष्मविषयः प्रणिगद्यते । दृश्यानुमेयवर्ज्यं हि श्रद्धेयाशे गतिः श्रुतेः ॥१३५॥
श्रुतिः सूनृतमाज्ञाप्यवचो वेदाङ्गमागमः । आम्नायश्चेति पर्यायैः सोधिगम्यो मनीषिभिः ॥१३६॥
अनादिनिधनः सूक्ष्मः सद्भूतार्थप्रकाशनम् । पुरुषार्थोपदेशित्वाद् यद्भूतहितमूर्जितम् ॥१३७॥
अजय्यममितं तीर्थं अनालीढमहोदयम् । महानुभावमर्थाविगाढं गम्भीरशासनम् ॥१३८॥
परं प्रवचनं सूक्तमाप्तोपज्ञमनन्यथा^{१३} । मन्यमानो मुनिर्ध्यायेद् भावानाज्ञावि^{१४}भाविताम् ॥१३९॥
जैर्न प्रमाणयज्ञाज्ञा योगी योगविदा वरः । ध्यायेद्धर्मास्तिकायादीन् भावान् सूक्ष्मान् यथागमम् ॥१४०॥
आज्ञाविचय एव स्याद् अपायविचयः पुनः । ताप^{१५}त्रयादिजन्माब्धिगतापायविचिन्तनम् ॥१४१॥

शुक्ल ध्यानके भेदसे दो प्रकारका होता है ॥१३२॥ उन दोनोंमेंसे जो ध्यान धर्मसे सहित होता है वह धर्म्य ध्यान कहलाता है । उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य इन तीनों सहित जो वस्तुका यथार्थ स्वरूप है वही धर्म कहलाता है । भावार्थ—वस्तुके स्वभावको धर्म कहते हैं और जिस ध्यान में वस्तुके स्वभावका चिन्तन किया जाता है उसे धर्म्यध्यान कहते हैं ॥१३३॥ आगम की परम्पराको जाननेवाले ऋषियोने उस धर्म्य ध्यानके आज्ञाविचय, अपायविचय, सस्थान विचय और विपाकविचय इस प्रकार चार भेद माने हैं ॥१३४॥ उनमेंसे अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थ को विषय करनेवाला जो आगम है उसे आज्ञा कहते हैं क्योंकि प्रत्यक्ष और अनुमानके विषयसे रहित केवल श्रद्धान करने योग्य पदार्थमें एक आगम की ही गति होती है । भावार्थ—ससारमें कितने ही पदार्थ ऐसे हैं जो न तो प्रत्यक्षसे जाने जा सकते हैं और न अनुमानसे ही । ऐसे सूक्ष्म, अन्तरित और दूरवर्ती पदार्थोंका ज्ञान सिर्फ आगमके द्वारा ही होता है अर्थात् आप्त प्रणीत आगममें ऐसा लिखा है इसलिये ही वे माने जाते हैं ॥१३५॥ श्रुति, सूनृत, आज्ञा, आप्त वचन, वेदाङ्ग, आगम और आम्नाय इन पर्यायवाचक शब्दोंसे बुद्धिमान् पुरुष उस आगम को जानते हैं ॥१३६॥ जो आदि और अन्तसे रहित है, सूक्ष्म है, यथार्थ अर्थको प्रकाशित करने वाला है, जो मोक्षरूप पुरुषार्थका उपदेशक होनेके कारण ससारके समस्त जीवोंका हित करनेवाला है, युक्तियोंसे प्रबल है, जो किसी के द्वारा जीता नहीं जा सकता, जो अपरिमित है, परवादी लोग जिसके माहात्म्यको छू भी नहीं सकते हैं, जो अत्यन्त प्रभावशाली है, जीव अजीव आदि पदार्थोंसे भरा हुआ है, जिसका शासन अतिशय गम्भीर है, जो परम उत्कृष्ट है, सूक्ष्म है और आप्तके द्वारा कहा हुआ है ऐसे प्रवचन अर्थात् आगमको सत्यार्थ रूप मानता हुआ मुनि आगममें कहे हुए पदार्थोंका ध्यान करे ॥१३७—१३९॥ योगके जाननेवालोंमें श्रेष्ठ योगी जिनेन्द्र भगवान्की आज्ञाको प्रमाण मानता हुआ धर्मास्तिकाय आदि सूक्ष्म पदार्थोंका आगममें कहे अनुसार ध्यान करे ॥१४०॥ इस प्रकारके ध्यान करनेको आज्ञाविचय नामका धर्म्यध्यान कहते हैं । अब आगे अपायविचय नाम के धर्म्य ध्यानका वर्णन किया जाता है । तीन प्रकारके तपा आदिसे भरे हुए ससाररूपी समुद्रमें जो प्राणी पड़े हुए हैं उनके अपायका चिन्तन करना सो अपायविचय नामका धर्म्यध्यान है । भावार्थ—यह ससाररूपी समुद्र मानसिक,

१ ध्यानद्वये । २ उत्पादव्ययध्रौव्यस्वरूपम् । ३ परमागमवेदिभिः । ४ प्रत्यक्षानुमानरहिते ।

५ अवाननम् । ६ आगमस्य । ७ सत्यस्वरूप । ८ परवादिभिः । ९ तलस्पर्शरहितम् । १० आज्ञा । ११ नन्दन—प०, ज०, म०, द०, इ० । १२ विपरीताभावेन । १३ आगमेन ज्ञातान् । १४ जाति-जलनरूप, जपवा रागद्वेषमोहरूप, जपवा आधिदैविक दैवमविकृत्य प्रवृत्तम्, आधिभौतिक भूतग्रह-मादित्य प्रवृत्तम्, आध्यात्मिकरूपम् आत्मानमधिकृत्य प्रवृत्तम् ।

तदपायप्रतीकारचित्रोपायानुचिन्तनम् । अत्रैवान्तर्गतं ध्येयम् अनुप्रेक्षादिलक्षणम् ॥१४२॥
 शुभाशुभविभवताना कर्मणां परिपाकतः^४ । भवावर्तस्य वैचित्र्यम् अभि^५सन्दधतो मुनेः ॥१४३॥
 विपाकविचयं धर्म्यम् आमनन्ति कृतांगमाः । विपाकश्च द्विधाप्नातः कर्मणामाप्तसू^६क्तिषु ॥१४४॥
 यथाकालमुपायाच्च फलप^७क्तिर्वनस्पतेः । यथा तथैव कर्मापि फलं दत्ते शुभाशुभम् ॥१४५॥
 मूलोत्तरप्रकृत्यादिबन्धस^८त्त्वाद्युपाश्रयः । कर्मणामुदयश्चित्रः प्राप्य द्रव्या^९दिसन्निधिम् ॥१४६॥
^{१०}यतश्च तद्विपा^{११}कज्ञः तदपा^{१२}याय चेष्टते । ^{१३}ततो ध्येयमिदं ध्यानं मुक्त्युपायो मुमुक्षुभिः ॥१४७॥
 सस्थानविचयं प्राहुः लोकाकारानुचिन्तनम् । तदन्तर्भूतजीवादितत्त्वान् ^{१४}वीक्षणलक्षि^{१५}तम् ॥१४८॥
 द्वीपाब्धिबलयानद्रीन् सरितश्च सरासि च । विमानभवनव्यन्तरावासनरकक्षितीः ॥१४९॥
 त्रिजगत्सन्निवेशेन सममेतान्यथागमम् । भावान् मुनिरनुध्यायेत् संस्थानविच^{१६}योपगः ॥१५०॥
 जीवभेदाश्च तत्र^{१७}त्यान् ध्यायेन्मुक्तेतरात्मकान् । ज्ञत्वकर्तृत्वभोक्तृत्वद्रष्टृत्वादौश्च ^{१८}तद्गुणान् ॥१५१॥

वाचनिक, कायिक अथवा जन्म-जरा-मरणसे होनेवाले, तीन प्रकारके सत्तापोसे भरा हुआ है । इसमें पड़े हुए जीव निरन्तर दुःख भोगते रहते हैं । उनके दुःखका बार-बार चिन्तन करना सो अपायविचय नामका धर्म्यध्यान है ॥१४१॥ अथवा उन अपायो (दुःखो) के दूर करनेकी चिन्तासे उन्हें दूर करनेवाले अनेक उपायोका चिन्तन करना भी अपायविचय कहलाता है । बारह अनुप्रेक्षा तथा दश धर्म आदिका चिन्तन करना इसी अपायविचय नामके धर्म्य ध्यानमें शामिल समझना चाहिये ॥१४२॥ शुभ और अशुभ भेदोमें विभक्त हुए कर्मोंके उदय-से ससाररूपी आवर्तकी विचित्रताका चिन्तन करनेवाले मुनिके जो ध्यान होता है उसे आगम के जाननेवाले गणधरादि देव विपाकविचय नामका धर्म्यध्यान मानते हैं । जैन शास्त्रोमें कर्मोंका उदय दो प्रकारका माना गया है । जिस प्रकार किसी वृक्षके फल एक तो समय पाकर अपने आप पक जाते हैं और दूसरे किन्हीं कृत्रिम उपायोसे पकाये जाते हैं उसी प्रकार कर्म भी अपने शुभ अथवा अशुभ फल देते हैं अर्थात् एक तो स्थिति पूर्ण होनेपर स्वयं फल देते हैं और दूसरे तपश्चरण आदिके द्वारा स्थिति पूर्ण होनेसे पहले ही अपना फल देने लगते हैं ॥१४३-१४५॥ मूल और उत्तर प्रकृतियोंके बन्ध तथा सत्ता आदिका आश्रय लेकर द्रव्य क्षेत्र काल भावके निमित्तसे कर्मोंका उदय अनेक प्रकारका होता है ॥१४६॥ क्योंकि कर्मोंके विपाक (उदय) को जाननेवाला मुनि उन्हें नष्ट करनेके लिये प्रयत्न करता है इसलिये मोक्षाभिलाषी मुनियों को मोक्षके उपायभूत इस विपाकविचय नामके धर्म्य ध्यानका अवश्य ही चिन्तन करना चाहिये ॥१४७॥ लोकके आकारका बार-बार चिन्तन करना तथा लोकके अन्तर्गत रहने-वाले जीव अजीव आदि तत्त्वोंका विचार करना सो सस्थान विचय नामका धर्म्य ध्यान है ॥१४८॥ सस्थानविचय धर्म्य ध्यानको प्राप्त हुआ मुनि तीनों लोकोंकी रचनाके साथ-साथ द्वीप, समुद्र, पर्वत, नदी, सरोवर, विमानवासी, भवनवासी तथा व्यन्तरोके रहनेके स्थान और नरकोंकी भूमिया आदि पदार्थोंका भी शास्त्रानुसार चिन्तन करे ॥१४९-५०॥ इसके सिवाय उस लोकमें रहनेवाले ससारी और मुक्त ऐसे दो प्रकार वाले जीवोंके भेदोंका जानना, कर्ता-

१ तापत्रयाद्युपायप्रतीकार । २ चिन्तो- ल०, म०, इ०, अ०, प०, स० । ३ ज्ञेयम् । ४ सजातस्य इति शेषः । ५ ध्यायत । अपि ल०, म० । ६ सम्पूर्णगमा । ७ परमागमेषु । ८ पाक । ९ सत्ताद्युपा- इ० । १० द्रव्यक्षेत्रकालभाव- । ११ यस्मात् कारणात् । १२ कर्मणा- मुदयवित् पुमान् । १३ कर्मापायाय । १४ तत् कारणात् । १५ विचार- । १६ -लक्षणम् ल०, म०, इ०, अ०, न० । १७ सस्थानविचयज्ञ । १८ तत्र त्रिजगति भवान् । १९ जीवगुणान् । यद्गुणान् ल० ॥

तेषां स्वकृतकर्मानुभावोत्थमतिदुस्तरम् । भवार्थं व्यसनावर्तं दोषयाद^१कुलाकुलम् ॥१५२॥
 सज्ज्ञाननावा सन्तार्यम् अतार्यं ग्रन्थिकात्मभिः । अपारमतिगम्भीरं ध्यायेदध्यात्मविद् यतिः ॥१५३॥
 किमत्र बहुनोक्तेन सर्वोऽप्यागमविस्तरः । नयभङ्गशताकीर्णो ध्येयोऽध्यात्मविशुद्धये ॥१५४॥
 'तदप्रमत्ततालम्ब स्थितिमान्तर्मुहूर्तकोम् । दधानमप्रमत्तेषु परा^२ कोटिमधिष्ठितम् ॥१५५॥
 सद्दृष्टिषु ययाम्नाय शेषेष्वपि^३ कृतस्थितिः । प्रकृष्टशुद्धिमल्लेश्यात्रयोपोद्बल^४वृ हितम् ॥१५६॥
 क्षायोपशमिक भाव स्वसात्कृत्य विजृम्भितम् । महोदकं^५ महाप्रज्ञैः महर्षिभिरुपासितम् ॥१५७॥
 'वस्तुधर्मानुयायित्वात् प्राप्तान्वर्थनिष्कृतम् । धर्म्यं ध्यानमनुध्येय ययोक्तध्येयविस्तरम् ॥१५८॥
 प्रसन्नचित्ता धर्मसवेग शुभयोगता^६ । सुश्रुतत्वं समाधानम् 'आज्ञाधिगमजा रुचिः ॥१५९॥
 भवन्त्येतानि लिङ्गानि धर्म्यस्यान्तर्गतानि वै । सानुप्रेक्षाच्च पूर्वोक्ता विविधा शुभभावना ॥१६०॥

पना, भोक्तापना और दर्शन आदि जीवोके गुणोका भी ध्यान करे ॥१५१॥ अध्यात्मको ज्ञाननेवाला मुनि इस ससाररूपी समुद्रका भी ध्यान करे जो कि जीवोके स्वयं किये हुए कर्मों के माहात्म्यसे उत्पन्न हुआ है, अत्यन्त दुस्तर है, व्यसनरूपी भवरोसे भरा हुआ है, दोषरूपी जल-जन्तुओंसे व्याप्त है, सम्यग्ज्ञानरूपी नावसे तैरनेके योग्य है, परिग्रही साधु जिसे कभी नहीं तैर सकते, जिसका पार नहीं है और जो अतिशय गम्भीर है ॥१५२-१५३॥ अथवा इस विषय में अधिक कहनेसे क्या लाभ है ? नयोके सैकड़ों भगोंसे भरा हुआ जो कुछ आगमका विस्तार है वह सब अन्तरात्माकी शुद्धिके लिये ध्यान करने योग्य है ॥१५४॥ यह धर्म्य ध्यान अप्रमत्त अवस्थाका आलवन कर अन्तर्मुहूर्त तक स्थित रहता है और प्रमादरहित (सप्तम गुण स्थान-वर्ती) जीवोमें ही अतिशय उत्कृष्टताको प्राप्त होता है ॥१५५॥ इसके सिवाय अतिशय शुद्धि को धारण करनेवाला और पीत, पद्म तथा शुक्ल ऐसी तीन शुभ लेश्याओंके बलसे वृद्धिको प्राप्त हुआ यह धर्म्य ध्यान शास्त्रानुसार सम्यग्दर्शनसे सहित चौथे गुणस्थानमें तथा शेषके पाचवे और छठवे गुणस्थानमें भी होता है । भावार्थ—इन गुणस्थानोंमें धर्म्य ध्यान हीनाधिक भावसे रहता है । धर्म्यध्यान धारण करनेके लिये कमसे कम सम्यग्दृष्टि अवश्य होना चाहिये क्योंकि सम्यग्दर्शनके बिना पदार्थोंके यथार्थ स्वरूपका श्रद्धान और निर्णय नहीं होता । मन्दकपायी मिथ्यादृष्टि जीवोके जो ध्यान होता है उसे शुभ भावना कहते हैं ॥१५६॥ यह धर्म्य ध्यान क्षायोपशमिक भावोको स्वाधीन कर बढ़ता है । इसका फल भी बहुत उत्तम होता है और अतिशय बुद्धिमान् महर्षि लोग भी इसे धारण करते हैं ॥१५७॥ वस्तुओंके धर्मका अनुयायी होनेके कारण जिसे धर्म्य ध्यान ऐसा सार्थक नाम प्राप्त हुआ है और जिसमें ध्यान करने योग्य पदार्थोंका ऊपर विस्तारसे वर्णन किया जा चुका है ऐसे इस धर्म्यध्यानका बार बार चिन्तन करना चाहिये ॥१५८॥ प्रसन्नचित्त रहना, धर्मसे प्रेम करना, शुभ योग रखना, उत्तम शास्त्रोका अभ्यास करना, चित्त स्थिर रखना और आज्ञा (शास्त्रका कथन) तथा स्वकीय ज्ञानसे एक प्रकारकी विशेष रुचि (प्रीति अथवा श्रद्धा) उत्पन्न होना ये धर्मध्यान के साध्य चिह्न हैं और अनुप्रेक्षाए तथा पहले कही हुई अनेक प्रकारकी शुभ भावनाएँ उसके

१ जनजन्तुसमूह । २ परिग्रहवद्भिः । ३ नयनेद— । ४ धर्म्यध्यातम् । ५ परमप्रकर्षम् ।
 ६ अक्षयशैलमनप्रमत्तये । ७ सहायविजृम्भितम् । ८ महाप्राज्ञैः ल०, म०, द०, इ०, प० ।
 ९ अन्तुसमान्वरम् । १० गुणपरिणाम । ११ आज्ञा नान्यथावादिनो जिना इति श्रद्धानम् ।
 १२ ज्ञान प्रवचनपरिणामन् नान्या ज्ञाना रुचि ।

बाह्यञ्च लिङ्गमङ्गानां सन्निवेशः^१ पुरोदितः । प्रसन्नवक्त्रता सौम्या दृष्टिश्चेत्यादि लक्ष्यताम् ॥१६१॥
 फल ध्यानवरस्यास्य विपुला निर्जरैरसाम् । शुभकर्मोदयोद्भूत सुखञ्च विबुधैश्शिताम् ॥१६२॥
 स्वर्गपर्वसम्प्राप्ति^२ फलस्य प्रचक्षते^३ । साक्षात्स्वर्गपरिप्राप्तिः पारम्पर्यात् परम्पदम् ॥१६३॥
 ध्यानेऽप्युपरते^४ धीमान् अभीक्ष्ण^५ भावयेन्मुनिः । सानुप्रेक्षाः शुभोदका भवाभावाय भावना ॥१६४॥
 इत्युक्तलक्षण धर्म्यं भगधाधीश, निश्चिन्तु । शुक्लध्यानमितो वक्ष्ये साक्षात्सुक्त्यङ्गमङ्गिनाम् ॥१६५॥
 कषायमलविश्लेषात् शुक्लशब्दाभिधेयताम् । 'उपेयिष्यदिदं ध्यान सान्तर्भेद' निबोध मे^६ ॥१६६॥
 शुक्ल परमशुक्लञ्चेत्याम्नाये^७ तद्विधोदितम् । छद्मस्थस्वामिकं पूर्वं पर^८ केवलिना मतम् ॥१६७॥
 द्वेधाद्य^९ स्यात् पृथक्त्वादि^{१०} वीचारान्तवितर्कणम् । 'तथैकत्वाद्यवीचारपदान्तञ्च वितर्कणम् ॥१६८॥
 इत्याद्यस्य भिदे^{११} स्याताम् श्रन्वया^{१२} श्रुतिभाश्रिते । तदर्थव्यक्तये चैतत् तन्नामद्वयनिर्वचः ॥१६९॥
 पृथक्त्वेन वितर्कस्य वीचारो यत्र तद्विदुः । सवितर्कं सवीचारं पृथक्त्वादिपदाह्वयम् ॥१७०॥

अन्तरङ्ग चिह्न है ॥१५९-१६०॥ पहले कहा हुआ अङ्गोका सन्निवेश होना अर्थात् पहले जिन पर्यङ्क आदि आसनोका वर्णन कर चुके हैं उन आसनोको धारण करना, मुखकी प्रसन्नता होना और दृष्टिका सौम्य होना आदि सब भी धर्म्यध्यान के बाह्य चिह्न समझना चाहिये ॥१६१॥ अशुभ कर्मोंकी अधिक निर्जरा होना और शुभ कर्मोंके उदयसे उत्पन्न हुआ इन्द्र आदि का सुख प्राप्त होना यह सब इस उत्तम धर्म्य ध्यानका फल है ॥१६२॥ अथवा स्वर्ग और मोक्षकी प्राप्ति होना इस धर्म्य ध्यानका फल कहा जाता है । इस धर्म्य ध्यानसे स्वर्गकी प्राप्ति तो साक्षात् होती है परन्तु परम पद अर्थात् मोक्षकी प्राप्ति परम्परासे होती है ॥१६३॥ ध्यान छूट जानेपर भी बुद्धिमान् मुनिको चाहिये कि वह ससारका अभाव करनेके लिये अनुप्रेक्षाओ सहित शुभ फल देनेवाली उत्तम उत्तम भावनाओका चिन्तन करे ॥१६४॥ गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहते हैं कि भगधाधीश, इस प्रकार जिसका लक्षण कहा जा चुका है ऐसे इस धर्म्यध्यानका तू निश्चय कर-उसपर विश्वास ला । अब आगे शुक्ल ध्यानका निरूपण करूंगा जो कि जीवोंके मोक्ष प्राप्त होनेका साक्षात् कारण है ॥१६५॥ कषायरूपी मलके नष्ट होने से जो शुक्ल ऐसे नामको प्राप्त हुआ है ऐसे इस शुक्ल ध्यानका अवान्तर भेदोंसे सहित वर्णन करता हूँ सो तू उसे मुझसे अच्छी तरह समझ ले ॥१६६॥ वह शुक्ल ध्यान शुक्ल और परम शुक्लके भेदसे आगममें दो प्रकारका कहा गया है, उनमेंसे पहला शुक्ल ध्यान तो छद्मस्थ मुनियोंके होता है और दूसरा परम शुक्ल ध्यान केवली भगवान् (अरहन्तदेव) के होता है ॥१६७॥ पहले शुक्ल ध्यानके दो भेद हैं, एक पृथक्त्ववितर्कवीचार और दूसरा एकत्ववितर्कवीचार ॥१६८॥ इस प्रकार पहले शुक्ल ध्यानके जो ये दो भेद हैं, वे सार्थक नाम वाले हैं । इनका अर्थ स्पष्ट करनेके लिये दोनों नामोंकी निरुक्ति (व्युत्पत्ति-शब्दार्थ) इस प्रकार समझना चाहिये ॥१६९॥ जिस ध्यानमें वितर्क अर्थात् शास्त्रके पदोंका पृथक् पृथक् रूपसे वीचार अर्थात् सक्रमण होता रहे उसे पृथक्त्ववितर्कवीचार नामका शुक्ल ध्यान कहते हैं । भावार्थ-जिसमें अर्थ व्यजन और योगोका पृथक् पृथक् सक्रमण होता रहे अर्थात् अर्थको छोड़कर व्यजन (शब्द) का और व्यजनको छोड़कर अर्थका चिन्तन होने लगे अथवा इसी प्रकार मन, वचन और काय इन तीनों योगोका परिवर्तन होता रहे उसे पृथक्त्ववितर्कवीचार कहते

१ पत्यङ्कादि । २ सम्प्राप्ति इ० । ३ प्रचक्षते इ० । ४ सम्पूर्णं सति । ५ मुहुर्मुहु । ६ मोक्षकारणम् । ७ प्राप्तम् । ८ मध्ये भेदम् । ९ निबोध जानीहि, मे मम सम्बन्धि ध्यानम् । निबोधे इति पाठे ज्ञापयामि । १० परमागमे । ११ शुक्लम् । १२ शुक्लम् । १३ पृथक्त्व-वितर्कवीचारम् । १४ एकत्ववितर्कवीचारम् । १५ भेदो । १६ सज्ञाम् ।

एक तेन विनर्कस्य स्याद्यत्राविवरिष्णुता^१ । सवितर्कमवीचारम् एकत्वाद्विपदाभिधाम् ॥१७१॥
 पृथक्त्व विद्धि नानात्व वितर्कं श्रुतमुच्यते । अर्थव्यञ्जनयोगानां वीचारः सङ्क्रमो मतः ॥१७२॥
 अथाविधान्तरं गच्छन् व्यञ्जनाद् व्यञ्जनान्तरम् । योगाद्योगान्तरं गच्छन् ध्यायतीदं वशी मुनिः ॥१७३॥
 त्रियोगः पूर्वविद् यस्माद् ध्यायत्येनं न्मनीदवरः । सवितर्कं सवीचारमतः स्याच्छुक्लमादिमम् ॥१७४॥
 ध्येयमस्य श्रुतस्कन्धवार्ध्वार्थविस्तरः । फल स्यान्मोहनीयस्य प्रक्षयः प्रशमोपि वा ॥१७५॥
 इदमत्र तु तात्पर्यं श्रुतस्कन्धमहान्वात् । अर्थमेकं समादाय ध्यायन्नर्थान्तरं व्रजेत् ॥१७६॥
 शब्दाच्छब्दान्तरं यायाद् योग योगान्तरादपि । सवीचारमिदं तस्मात् सवितर्कञ्च लक्ष्यते ॥१७७॥
 वागर्थरत्नसम्पूर्णं नय^२ भङ्गतरङ्गकम् । प्रसृत^३ ध्वानगम्भीरं पदवाक्यमहाजलम् ॥१७८॥
 उत्पादादित्रयोद्वेले सप्तभङ्गीवृहदध्वनिम् । पूर्वपक्षवशायातमतयादः^४ कुलाकुलम् ॥१७९॥

है ॥१७०॥ जिस ध्यानमे वितर्कके एकरूप होनेके कारण वीचार नहीं होता अर्थात् जिसमे अर्थ व्यञ्जन और योगोका सक्रमण नहीं होता उसे एकत्ववितर्कवीचार नामका शुक्ल ध्यान कहते हैं ॥१७१॥ अनेक प्रकारताको पृथक्त्व समझो, श्रुत अर्थात् शास्त्रको वितर्क कहते हैं और अर्थ व्यञ्जन तथा योगोंका सक्रमण (परिवर्तन) वीचार माना गया है ॥१७२॥ इन्द्रियो-
 को वश करनेवाला मुनि, एक अर्थसे दूसरे अर्थको, एक शब्दसे दूसरे शब्दको और एक योगसे दूसरे योगको प्राप्त होता हुआ इस पहले पृथक्त्ववितर्कवीचार नामके शुक्ल ध्यानका चिन्तन करना है ॥१७३॥ क्योंकि मन वचन काय इन तीनों योगोंको धारण करनेवाले और चौदह पूर्वोक्त जाननेवाले मुनिराज ही इस पहले शुक्ल ध्यानका चिन्तन करते हैं इसलिये ही यह पहला शुक्ल ध्यान सवितर्क और सवीचार कहा जाता है ॥१७४॥ श्रुतस्कन्धरूपी समुद्र के शब्द और अर्थोंका जितना विस्तार है वह सब इस प्रथम शुक्ल ध्यानका ध्येय अर्थात् ध्यान करने योग्य विषय है और मोहनीय कर्मका क्षय अथवा उपशम होना इसका फल है । भावार्थ—यह शुक्ल ध्यान उपशम श्रेणी और क्षपक श्रेणी दोनों प्रकारकी श्रेणियोंमे होता है । उपशमश्रेणी वाला मुनि इस ध्यानके प्रभावसे मोहनीय कर्मका उपशम करता है और क्षपक श्रेणीमे आरूढ़ हुआ मुनि इस ध्यानके प्रतापसे मोहनीय कर्मका क्षय करता है इसलिये सामान्य रूपसे उपशम और क्षय दोनों ही इस ध्यानके फल कहे गये हैं ॥१७५॥ यहाँ ऐसा तात्पर्य समझना चाहिये कि ध्यान करनेवाला मुनि श्रुतस्कन्धरूपी महासमुद्रसे कोई एक पदार्थ लेकर उसका ध्यान करता हुआ किसी दूसरे पदार्थको प्राप्त हो जाता है अर्थात् पहले ग्रहण किये हुए पदार्थको छोड़कर दूसरे पदार्थका ध्यान करने लगता है । एक शब्दसे दूसरे शब्दको प्राप्त हो जाता है और इसी प्रकार एक योगसे दूसरे योगको प्राप्त हो जाता है इसीलिये इस ध्यानको सवीचार और सवितर्क कहते हैं ॥१७६-१७७॥ जो शब्द और अर्थरूपी रत्नोंसे भरा हुआ है, जिसमे अनेक नयनगम्भीर तरंगें उठ रही हैं, जो विस्तृत ध्यानसे गभीर है, जो पद और वाक्यरूपी अगाध जलमे नहिन है, जो उत्पाद व्यय और ध्रौव्य के द्वारा उद्वेल (ज्वार-भाटाओंसे सहित) हो रहा है न्यान् अस्ति, न्यान् नास्ति, आदि सप्त भग ही जिसके विशाल शब्द (गर्जना) हैं, जो पूर्वपक्ष

१ अविचारयोगिता । २ अस्ति । ३ मनावाक्यायकर्म । ४ शब्दाच्छब्दान्तरम् । ५ मनो-
 वितर्कविनर्कस्य । ६ पृथक्त्वयेति । ७ शुक्लध्यानम् । ८ त्वेतन्मनीदवरा द० । ९ गच्छेत् ।
 १० शब्द । ११ उपविश्य । १२ ऋषिगणमुद्रान्तसंवेदन गम्भीरम् । प्रसृतध्यान- न०, म० ।
 १३ न्यान् अस्ति पदम् । १४ पदवाक्यमहाजलम् । १५ उत्पादव्ययमव्यय- । १६ वीक्षादिमत
 १७ अस्ति ।

कृता^१वृत्तारमुद्बोधयानपात्रैर्महर्षिभिः । गणाधीशमहार्थार्थवाहैश्चारित्रकेतनैः ॥१८०॥

^२नयोपनयसम्पातमहावातविघूर्णितम् । रत्नत्रयमयैर्द्वौ^३पैः श्रवणाढमनेकधा ॥१८१॥

श्रुतस्कन्धमहासिन्धुम् श्रवणाह्य महामुनिः । ध्यायेत् पृथक्त्वसत्तर्कवीचारं ध्यानमग्निमम्^४ ॥१८२॥

प्रशान्तक्षीणमोहेषु श्रेण्योः शेषगुणेषु^५ च । यथाम्नायमिदं ध्यानम् ग्रामनन्ति मनीषिणः ॥१८३॥

द्वितीयमाद्यवज्ज्ञेयं विशेषस्त्वेकयोगिनः^६ । प्रक्षीणमोहनीयस्य पूर्वज्ञस्यामितद्युतेः^७ ॥१८४॥

सवितर्कमवीचारम् एकत्व^८ ध्यानमर्जितम् । ध्यायत्यस्तकषायोऽसौ घातिकर्माणि शातयन्^९ ॥१८५॥

फलमस्य भवेद् घातित्रितयप्रक्षयोद्भवम् । कैवल्यं प्रमिताशेषपदार्थं ज्योतिरक्षणम् ॥१८६॥

ततः पूर्वविदामाद्ये शुक्ले श्रेण्योर्यथायथम् । विज्ञेये ज्येकयोगानां^{१०} यथोक्तफलयोगिनी ॥१८७॥

करनेके लिये आये हुए अनेक परमतरूपी जलजन्तुओसे भरा हुआ है, बड़ी-बड़ी सिद्धियोंके धारण करनेवाले गणधरदेवरूपी मुख्य व्यापारियोंने चारित्ररूपी पताकाओसे सुशोभित सम्यग्ज्ञानरूपी जहाजोंके द्वारा जिसमें अवतरण किया है, जो नय और उपनयोंके वर्णनरूप महावत्से क्षोभित हो रहा है और जो रत्नत्रयरूपी अनेक प्रकारके द्वीपोंसे भरा हुआ है, ऐसे श्रुतस्कन्धरूपी महासागरमें अवगाहन कर महामुनि पृथक्त्ववितर्कवीचार नामके पहले शुक्ल-ध्यानका चिन्तन करे । भावार्थ—ग्यारह अग और चौदह पूर्वके जाननेवाले मुनिराज ही प्रथम शुक्लध्यानको धारण कर सकते हैं ॥१७८-१८२॥ यह ध्यान प्रशान्तमोह अर्थात् ग्यारहवे गुणस्थान, क्षीणमोह अर्थात् बारहवे गुणस्थान और उपशमक तथा क्षपक इन दोनों प्रकारकी श्रेणियोंके शेष आठवे, नौवे तथा दसवे गुणस्थानमें भी हीनाधिक रूपसे होता है ऐसा बुद्धिमान् महर्षि लोग मानते हैं ॥१८३॥

दूसरा एकत्ववितर्क नामका शुक्लध्यान भी पहले शुक्लध्यानके समान ही जानना चाहिये किन्तु विशेषता इतनी है कि जिसका मोहनीय कर्म नष्ट हो गया हो, जो पूर्वोक्त जानने-वाला हो, जिसका आत्मतेज अपरिमित हो और जो तीन योगोंमेंसे किसी एक योगका धारण करनेवाला हो ऐसे महामुनिका ही यह दूसरा शुक्लध्यान होता है ॥१८४॥ जिसकी कषाय नष्ट हो चुकी है और जो घातिया कर्मोंको नष्ट कर रहा है ऐसा मुनि सवितर्क अर्थात् श्रुतज्ञान सहित और अवीचार अर्थात् अर्थ व्यजन तथा योगोंके सक्रमणसे रहित दूसरे एकत्ववितर्क नामके बलिष्ठ शुक्लध्यानका चिन्तन करता है ॥१८५॥ ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय इन तीन घातिया कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होनेवाला तथा समस्त पदार्थोंको जानने वाला अविनाशीक ज्योतिस्वरूप केवल ज्ञानका उत्पन्न होना ही इस शुक्ल ध्यानका फल है ॥१८६॥ इस प्रकार ऊपर कहे अनुसार फलको देनेवाले पहलेके दोनों शुक्ल ध्यान ग्यारह अङ्ग तथा चौदह पूर्वके जाननेवाले और तीन तथा तीनमेंसे किसी एक योगका अवलम्बन करनेवाले मुनियोंके दोनों प्रकारकी श्रेणियोंमें यथायोग्य रूपसे होते हैं । भावार्थ—पहला शुक्ल ध्यान उपशम अथवा क्षपक दोनों ही श्रेणियोंमें होता है परन्तु दूसरा शुक्ल ध्यान क्षीण-मोह नामक बारहवे गुणस्थानमें ही होता है । पहला शुक्ल ध्यान तीनों योगोंको धारण करने वालेके होता है परन्तु दूसरा शुक्लध्यान एक योगको धारण करनेवालेके ही होता है, भले ही

१ अवतरणम् । २ महासार्थवाहो बृहच्छ्रेष्ठी एषा महासार्थवाहास्तै । ३ नयद्रव्यार्थिकपर्या-
पार्यिक । उपनय नैगमादि । सम्पात सम्प्राप्ति । ४ वडवाग्निनिवासकुण्ड । ५ प्रथमम् ।
६ अपूर्वकरणानिवृत्तिकरणसूक्ष्मसाम्परायेण । ७ मनोवाक्कायेष्वेकतमयोगत । ८ पूर्वश्रुतवेदिन ।
९ उपमारहिततेजस । १० —मेकत्वध्यान— अ०, प०, स०, इ०, ल०, म० । ११ निपातयन् ।
१२ त्रियोगानामेकयोगानाम् । पुसामित्यर्थ । १३ पूर्वोक्तफलस्य योगो ययोस्ते ।

